

श्री भुवनेश्वरी पीठ, गोंडल - सौराष्ट्र.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, GONDAL, Saurashtra, (India).

ગાંગુર જી સ્થાપના કરેલ પાંચમી પાછળે પાંચમી



CATALOGUE & INDEX
of
MANUSCRIPTS

हस्तलिखित ग्रन्थसूचि

May 1660

वेणु २०११

श्री भुवनेश्वरी पीठ, गोंडल-सौराष्ट्र.
इस्तलिखित ग्रन्थानां
अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	ग्रन्थ संख्या	पृष्ठ तः पृष्ठ पर्यंत
१	वेदाः	२१८	१ थी ७
२	निरुक्तं मीमांसा शास्त्रं	५४	७
३	न्यायशास्त्रं	५४	८ थी ९
४	उपनिषदः	२०४	९ थी ११
५	वेदांतः	७६	१२ थी १३
६	व्याकरणं	११०	१४ थी १६
७	योगः	१४	१७
८	गीता	३४	१७ थी १८
९	इतर गीता	३८	१८ थी १९
१०	आयुर्वेदः	१७५	१९ थी २३
११	कामशास्त्रं	३३	२४
१२	धातुवादः	४८	२५ थी २६
१३	तंत्रं	५२९	२६ थी ३८
१४	धर्मशास्त्रं स्मृतिः	१४३	३९ थी ४२
१५	ज्योतिषं	५०५	४३ थी ५६
१६	काव्यं	१३४	५७ थी ६०
१७	नाटकं-चम्पु	२७	६० थी ६१
१८	अलंकारः	५२	६१ थी ६२
१९	कोशः	३०	६३
२०	नीतिः राजनीतिः	३३	६४
२१	जैनधर्मः	५२१	६५ थी ८१
२२	गुजराती भाषा	१४२	८२ थी ८९
२३	महाभारतं	१८	८९ थी ९०
२४	पुराणं	१२	९१ थी ९३
२५	हिंदी-भाषा	८९	९४ थी ९७
२६	मराठी भाषा	११	९८
२७	शुद्धादित संवदायः	३३६	९८ थी १०७
२८	कर्मकांडः	४७०	१०८ थी १२०

॥ वक्तव्य ॥

श्री भुवनेश्वरी पीठ, गोंडल सौराष्ट्र—(काठीआवाड) भारत

हस्तलिखित ग्रन्थोंका सूचीपत्र केडलोग विनियोग

संभूष्य सदपत्यवत् परकराद् रक्ष्यं च सुक्षेत्रवत्। संशोध्यं वणितांगवत् प्रतिदिनं वीक्ष्यं च सन्निवृत्त॥
वध्मं वध्यवदक्ष्यं न च हि विस्मर्य हरेर्नामवत्। नैवं सीदति पुस्तकं किल कदाप्येतद् पुरुषा वचः॥

१ यह केडलोग (सूची) जलदीसे तैयार कर छापा गया है। हस्तलिखित ग्रन्थोंके लिये जितनी जिज्ञासा होती है आवश्यक जानकारी सब इस सूचीमें आ जाती है। ग्रन्थ नाम, कर्ताका नाम, दीक्षाकार दीक्षाकारका नाम, भाषा, पत्र संख्या, लेखन मिति साल तिथि इसमें छापा गया है। साथ जिसजिस ग्रन्थ में जो विशेष हाल या साहित्य इतिहास या अन्य दृष्टिसे आवश्यक ज्ञेय वस्तु होती है वह भी टिप्पणीमें दी गई है। यह सूची-केडलोग होनेसे दुसरे कई संग्रह स्थानोंकी तरह इसमें प्रत्येक ग्रन्थका प्रारंभका, मध्यका और समाप्तिका आवश्यक उल्लेखनीय वस्तु और प्रत्येक ग्रन्थके पत्रका भाषा उर्बा चौका नहि दिया है। यह दिया होता तो १२० पृष्ठका यह केडलोग ३००० तीन हजार पृष्ठका हो जाता।

२ इस केडलोगमें २८ विषयके २८ विभाग हैं।

३ इस सूचीमें २८ विभाग-विषयोंकी ८००० पुस्तकें हैं। कई पुस्तक ऐसी भी हैं कि लिस्टमें वह एक पुस्तक हि चढ़ी है परंतु उस पुस्तकमें दो पांच इस या न्यूनाधिक पुस्तक लिखी होती है। ऐसी अंतर्गत पुस्तकों कि संख्या भी बहु संख्यामें हो जाना संभव है। इस गणनासे यह सूची प्रायः ८००० आठ हजार पुस्तकोंकी है।

४ भारतकी हस्तलिखित पुस्तकेंमें यह विशेषता है और ध्यान देनेकी बात है कि पत्रोंमें जो अंक लिखा होता है वह पत्रकी दोनो बाजु न लिखकर एकबाजु-हि होता है अर्थात् वर्तमान अंग्रेजी पद्धतिके अनुसार २०० पृष्ठकी पुस्तक इस हस्तलिखित पुस्तककी रीतिसे १०० पत्रकी होती है। इस प्रकार इस सूचीमें छपी पत्र संख्या दोनो बाजु मिलकर १ के हिसाबसे समझना चाहिये।

५ हम आगे भिन्न २ स्थानोंमें बिकरी पड़ी हुई हस्तलिखित पुस्तकोंका संग्रह करना चाहते हैं। कई जगह हस्तलिखित पुस्तक निकम्मी पड़ी हुई हैं और वह कब पस्तोंमें चली जायगी, या खिगोकर मोरल लोग (घाघ्य भग्नेका) डोपला बना देगी, या घामिक बुद्धिसे नही तात्काव हरियामे बहा दो जायगी, या उद्धो-जंतुका भक्ष्य होगी, कंठ नहि सकते। इसलिये पुण्यवानोंको चाहिये कि अपने घनका उपयोग कालके सुखमें भक्ष्य बननेका तैयार नहोतहां बिकरी पड़ी हुई पुस्तकें अपनेको जुड़ा कर योग्य सुरक्षित स्थानमें पहुँचानेकी राह देख रही है, जुड़ाकर सुरक्षित करनेसे करें। इस पुण्य कार्यमें हस्ते परहस्ते जो सहायक होंगे उनका भी हिस्सा है। हजारों हस्तलिखित पुस्तकें जहां तहां पड़ी हैं हमें मात्तुम है-संग्रह करना हमारा ध्येय है। भारतवर्षमें अनेक स्थानोंमें पुस्तकोंका ढोडा बड़ा संग्रह बिखरा हुआ है। जिनकी संख्या लाखोंकी हो सकती है। यदि अधिक अनुकूलता होगी तो भारतसे लाखों हस्तलिखित पुस्तकोंका संग्रह हम कर सकेंगे। जो देशके उद्योगमें बड़ा उपकारक होगा।

६ इस सूचीमें छपी हुई सब विभागोंकी सब पुस्तकें या किसी एक विभागकी पुस्तकें देखनेके इच्छुक सरकारी या निगसरकारी संस्था, कमीटी समिते या व्यक्ति जो हो उनके चाहिये कि जो पीठमें आकर देखें। किसी भी स्थानको पुस्तकें भेजनेका नियम नहि है। किसी प्रदर्शन एकसीबीधत या अन्य समारोहोंमें आनेजाने आदिका खर्च देना स्वीकार करने पर भी पुस्तकें भी पीठके बाहर नहि भेज सकते। फिर भी पाठस्थानकी खास आज्ञा मिलनेसे अपवाद रूपसे पुस्तकें बाहर भेजी जा सकती हैं।

७ इस सूचीमें नहि छपी है ऐसी बंगाली तेलुगु तामीळ टीबेटीयन भाषा भाषा या लिपिकी कागजपर या कपड़ेपर लिखा हुई ताडपत्र पर सुई या भारसे सेंकदे धर्ष पर खुरबकर खोबी हुई माध्वकारक रीतिसे लिखी हुई पुस्तकोंका संग्रह भी भी पीठमें है जिनका सूची बनाना छप्य न होनेसे इस सूचीमें छपी नहि है।

गोंडल-सौराष्ट्र (काठीआवाड)

अधिकारी,

संवत् २०१६ वैशाख कृष्ण ८ (ता. १८-५-१९९०)

श्री भुवनेश्वरी पीठ, गोंडल

Prologue

Shri Bhuvaneshwari Pith, Gondal, Saurashtra,

Catalogue of Manuscripts

संभूष्यं सदपत्यवत् परकराद् रक्ष्यं च सुसंभवं । संशोध्यं व्रजितांगत् प्रतिदिनं वीक्ष्यं च सम्प्रियवत् ॥
वृष्यं वक्ष्यवदभुष्यं न च हि विस्मयं हरेर्नामवत् । नेचं सीदति पुस्तकं किञ्च कदाप्येतद् गुण्यं च यः ॥१॥

- 1 This Catalogue has been unlike the Catalogue of other institutions, as it has been prepared and printed in haste and was to contain only the names and brief details of the manuscripts. Still however, it supplies all those details which are necessary to be known for the manuscripts. It gives: Name of the Manuscript, Author's name, Name of the Commentary, Commentator's Name, Language, Number of Pages, Date of Writing in Indian or Christian Era, Besides the above details, if there is anything conspicuous about a manuscript from literary, historical or other point of view, it has been given in the footnote. Being only a catalogue it does not give necessary excerpts from the beginning, the middle and the end of the manuscripts, dimensions of pages etc. as the Catalogues of some other institutions do. Had this been done, this Catalogue of 124. pages would have gone to 3000 pages.
- 2 This catalogue contains twenty eight divisions on twenty eight different subjects.
- 3 There are about 8000 books of twenty eight, subjectwise divisions of this catalogue. Some of this manuscripts are such that in print they bear only one name; but inside they contain 2-5-10 or more manuscripts. The number of such composite manuscripts is great in number. If these be taken into account, this Catalogue deals with 8000 manuscripts.
- 4 It is a special and conspicuous feature of the Indian manuscripts that their pages bear the number only on one side and not on both the sides. The Aryans do not follow the present western system of numbering the pages on both the sides. Viewed in this light, 100 pages of a manuscript really come to 200 pages according to the modern method of numbering. The number of pages of each manuscript listed in this Catalogue should thus be understood as one page for both the sides.
- 5 After management of the books shown in this catalogue, we are of the opinion to re-collect the books lying scattered in various places. It cannot be said when such manuscripts lying uncared for anywhere will be sold off as waste paper, or will be used for making baskets by ignorant women, or will be thrown off in rivers, streams or the sea through religious instincts or will be eaten off by moths and white ants. We wish to further collect, to bring to a safe place and to provide for a better protection and preservation of those manuscripts, which lie scattered in unknown places awaiting destruction from Time. Persons helpful in this task will share the merit of a benevolent work. If financial means permit, we aim at collecting thousands of mss. which, we know, are lying unlooked at present in different parts or storehouses of Bharatvarsha. This collection will give greater part for welfare of Bharatvarsha.
- 6 Government, Semi-Government or non-government institutions, Committees or their individual members, if they wish to see in person all or any manuscript from this catalogue, should come to Shri Pith in Gondal. As a rule, manuscripts from our Granth Bhandar are not sent outside Gondal for perusal or for display in any exhibition or a museum. In other words, books or manuscripts are not sent outside Shri Pith; still however if the Pith Sthan thinks it proper, it will be done so as a special case.
- 7 It has not been possible to include in this Catalogue some of our manuscripts in Bengali, Tamil, Telugu Malayalam Tibetan Language or script. They are wonderful mss. hundreds of years old on paper or cloth or carved on parchment with a needle and filled with ink.

Gondal, Saurashtra, (Kathiawad) India.

18th May 1960.

Adhikari,
SHRI BHUVANESHWARI PITH, GONDAL.

Subject: VEDAS

વિષય વેદા: ।

ક્રમાંક Serial No.	ગ્રંથ નામ Name of the Work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Comments	પનાખી No. of Leaves	માળા- લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ: Scribe & Date
ઋગ્વેદ સંહિતા						
૧	પ્રથમાઠક	સંપૂર્ણ	—	૧૪૨	વેદનામરી	સંવત ૧૯૧૮ મિતિ કાર્તિક ૬૩
૨	દ્વિતીયાઠક	"	—	૧૯૫	"	સં. ૧૯૧૮
૩	તૃતીયાઠક	"	—	૧૯૮	"	સં. ૧૯૧૮ માસ ૧૨ કુમ્ભાર તારે
૪	ચતુર્થાઠક	"	—	૧૫૫	"	સં. ૧૯૧૨ મિતિ વૈશાખ ૫૫
૫	પંચમાઠક	"	—	૧૪૪	"	સં. ૧૯૧૨
૬	ષષ્ઠાઠક	"	—	૧૩૧	"	સં. ૧૯૧૨
૭	સપ્તમાઠક	"	—	૧૪	"	સં. ૧૯૧૮ કાર્તિક ૫૫-૧૨
૮	અષ્ટમાઠક	"	—	૧૧૮	"	સં. ૧૯૧૮ વૈશાખ ૫૫
ઋગ્વેદ સંહિતા ઉપમાસરા:						
૯	પ્રથમાઠક	સંપૂર્ણ	—	૧૧૪	"	સંવત ૧૮૪૫ વૈશાખ ૫૫
૧૦	દ્વિતીયાઠક	"	—	૧૫૧	"	સં. ૧૮૪૫
૧૧	તૃતીયાઠક	"	—	૧૧૨	"	સં. ૧૮૪૫
૧૨	ચતુર્થાઠક	"	—	૧૦૪	"	સં. ૧૮૪૫ તામ્રલિપિ: હાથુ પનાચરંગમાલેન
૧૩	પંચમાઠક	"	—	૧૦૯	"	સં. ૧૮૪૫
૧૪	ષષ્ઠાઠક	"	—	૧૧૫	"	સં. ૧૮૪૫
૧૫	સપ્તમાઠક	"	—	૧૦૩	"	સં. ૧૮૪૫ અમાસ ૩૩ ગુરી
૧૬	અષ્ટમાઠક	"	—	૧૦૮	"	સં. ૧૮૪૫ રમાલેન
ઋગ્વેદ સંહિતા પ્રથમાઠક						
૧૭	દ્વિતીયાઠક	"	—	૯૬	"	સં. ૧૮૦૦ આવક
૧૮	તૃતીયાઠક	"	—	૯૮	"	સં. ૧૮૦૦ માસ ૪ કુમ્ભાર તારે
૧૯	ચતુર્થાઠક	"	—	૧૦૧	"	સં. ૧૮૦૧ વાહરેન મુકુરેન
૨૦	પંચમાઠક	"	—	૮૬	"	સં. ૧૮૦૧ કાલકુલ ૬૬-૧
૨૧	ષષ્ઠાઠક	"	—	૮૬	"	સં. ૧૮૦૦ માસ ૪ કુમ્ભાર તારે
૨૨	સપ્તમાઠક	"	—	૧૨૮	"	સં. ૧૮૦૦ માસ ૪ કુમ્ભાર તારે
૨૩	અષ્ટમાઠક	"	—	૧૨૪	"	સં. ૧૮૦૧ વૈશાખ ૫૫-૧૨
ઋગ્વેદ સંહિતા અષ્ટમાઠક						
૨૪	પ્રથમાઠક	"	—	૧૪૫	"	સં. ૧૮૦૦ વર્ષે માસ ૩૩ ગુરી
૨૫	દ્વિ. નક્ષિ	"	—	૧૩૫	"	સં. ૧૮૦૦ વર્ષે માસ ૩૩ ગુરી
૨૬	તૃતીયાઠક	"	—	૧૩૫	"	સં. ૧૮૦૦ વર્ષે માસ ૩૩ ગુરી
૨૭	ચતુર્થાઠક	"	—	૧૩૫	"	સં. ૧૮૦૦ વર્ષે માસ ૩૩ ગુરી
૨૮	પંચમાઠક	"	—	૧૩૫	"	સં. ૧૮૦૦ વર્ષે માસ ૩૩ ગુરી
૨૯	ષષ્ઠાઠક	"	—	૧૩૫	"	સં. ૧૮૦૦ વર્ષે માસ ૩૩ ગુરી
ઋગ્વેદ સંહિતા સપ્તમાઠક						
૩૦	અષ્ટમાઠક	"	—	૧૮૧	"	સં. ૧૮૦૦ વર્ષે માસ ૩૩ ગુરી

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, GRANTH-BHANDAR, GONDAL, (Saurashtra) INDIA.
Subject VEDAS **विषयः वेदाः ।**

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author	टीका	पत्राणि	भाषा- लिपिः	लेखक-मितिः
Serial No.	Name of the work Title	संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Date.
ऋग्वेद संहिता						
३३	प्रथमाष्टकं अ०	संपूर्ण	—	४१	देवनागरी	संवत् १९०० अ।
३४	तृतीयाष्टकं	"	—	१८	"	सं. १५० प्रा.
३५	पञ्चाष्टकं	"	—	१८	"	सं. १८५० प्रा.
३६	षष्ठ्याष्टकं अ०	"	—	७७	"	सं. १०१५ प्रा.
३७	सप्तमाष्टकं पदानि	"	—	३२	"	सं. १९१३ समवेद्येष्टवेद १ पुष
३८	ऋग्विधान	"	गणेश (१)	२१९	"	गणेश गोखलेन लिखिता संवत्
३९	अष्टवेदानुक्रमणी अथुत्तम	"	—	४९	"	सं. १९१८ वै. पू. ११ रविवारे
४०	सर्वानुक्रमः	"	—	६३	"	सं. १७०२ शाके ११४६
४१	वेदानुक्रमणी	अपूर्ण	—	५८	"	अधिक भाषादे कृष्ण ३० चंदे
४२	प्राचीनशास्त्रे माध्यं उभयदाचारं	"	—	७०	"	सं. १९१९ कागण ६४ १३२०
	कृतं आनन्दपुरवास्तव्य (२)	"	—	७०	"	संवत् १९०० प्रा
४३	आपस्तंब भोत सूत्रं (कृष्ण ऋग्वेदे)	संपूर्ण	—	३३५	"	"
४४	आश्वलायन गृह्यसूत्रं अ० ४	"	—	५६	"	सं. १९१८ वै. पू. ११ सुगो
४५	आश्वलायन भोत सूत्रं	"	—	१३४	"	सं. १९१९ अनादिवद ११ ज्ये
	पुनर्वचनम् अ० १	"	—	६२	"	सं. १९१८ वै. पू. ११ सुगो
४६	उत्तरपट्टकम् अ० १	"	—	७१	"	सं. १८३२ माघ १४ १३ पुष
४७	आश्वलायन भोत सूत्रं	"	—	७१	"	सं. १८३२ माघ १४ १३ पुष
	पुनर्वचनम् अ० १	"	—	७०	"	सं. १८३३ कागण ७ अथर्व
४८	उत्तरपट्टकम् अ० १२	"	—	२७	"	सं. १८३३ प्रा.
४९	गृह्यसूत्रं अ० ४	"	—	३१	"	सं. १७०० प्रा.
५०	भोत सूत्रं अ० २	"	—	११७	"	सं. १७०० प्रा.
५१	आश्वलायन सूत्रस्याख्या	अपूर्ण	—	४५	"	सं. १९१९ कृष्ण अष्ट
५२	पितृदेव ब्राह्मण प्रथमपंचिका	संपूर्ण	—	५२	"	सं. १९१९ कागण १५
५३	द्वितीयपंचिका	"	—	५३	"	सं. १९१९ माघ शुक्ल १ अथर्व
५४	तृतीयपंचिका	"	—	४०	"	सं. १९१९ वै. पू. ११ सुगो
५५	चतुर्थपंचिका	"	—	५३	"	सं. १९१९ माघ ११ रविवारे
५६	पंचमपंचिका	"	—	४८	"	सं. १९१९ वै. पू. ११ सुगो
५७	षष्ठपंचिका	"	—	५८	"	सं. १९१९ वै. पू. ११ सुगो
५८	सप्तमपंचिका	"	—	२८	"	सं. १९१९ वै. पू. ११ सुगो
५९	अष्टमपंचिका	"	—	२२	"	सं. १९१९ वै. पू. ११ सुगो
६०	नवमपंचिका	"	—	१७	"	सं. १९१९ वै. पू. ११ सुगो
६१	दशमपंचिका	"	—	१८	"	"

(१) गणेशगोखले लिखिता टीका टीका रचित गोखले इत्युप नामक कृष्ण अष्ट सुतः । (२) आश्वलायनसूत्रं वेदवेदवेदवेद
 कृती भाष्य

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल-सौराष्ट्र.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, GRANTH BHANDAR, GONDAL (Saurashtra) INDIA.

Subject: VEDAS

विषय: वेदाः ।

क्रमांक Serial NO	ग्रन्थ भंडार Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टोका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि Language & Script	लेखक-मिति Scribe & Date
६३	सहापंचिषा	अपूर्ण	—	२१-४३	देवनागरी	
६४	शाङ्खायन गृह्यसूत्र ऋग्वेदीय अ० १ तः ६	संपूर्ण	—	३९	संस्कृत	शाके १०१२ वैशाख कृष्ण १ चंद्रे
६५	आरण्यक अ० १ तः १३	"	—	३९	"	संवत् १८०३ वैशाख वदी १
६६	ऋक्मारण्यक अ० १ तः १३	"	—	१३	"	सं. १८०३ प्रा.
६७	पञ्चमानसूक्त अ० विष्णुसूक्त अ० ४	"	—	४४	"	शाके १००३ सं. १८३९
६८	पञ्चमान अ० ४	"	—	६१	"	शाके १४३७
६९	६१ मंत्रात्मक ऋग्वेदीय	"	—	३९	"	संवत् १७०० प्रा
७०	पञ्च गनेष्टिः आधानप्रयोगः	"	—	७	"	संवत् १६०० प्रा.
७१	वापीयसूक्त वाजपेयेयक्षत्रं	"	—	१२	"	संवत् १८३० भाद्रपद १० मृगश
७२	वाग्मनसूक्त	"	—	३४	"	सं. १९०० प्रा
कृष्ण यजुर्वेदः						
७३	तैत्तिरीय संहिता प्रथमाष्टकं	संपूर्ण	—	७६	"	सं. १८७१
७४	द्वितीयाष्टकं नास्ति	"	—		"	
७५	तृतीयाष्टकं	"	—	५४	"	सं. १८७१ वर्षे चैत्र १३ मृगश
७६	चतुर्थाष्टकं	"	—	६५	"	सं. १८७१ चैत्र कृष्ण ६ रवि
७७	पंचमाष्टकं	"	—	७८	"	सं. १८७२ चै. शुक्ल १० सौम्ये
७८	षष्ठाष्टकं	"	—	६१	"	सं. १८७२ चै. शुक्ल ७ रवि
७९	सप्तमाष्टकं	"	—	५३	"	सं. १८७२
८०	तैत्तिरीय संहिता उत्तमाक्षराः द्वितीयाष्टकं	"	—	४८	"	सं. १८०० प्रा
८१	चतुर्थाष्टकं	"	—	५४	"	" " " "
८२	पंचमाष्टकं	"	—	४२	"	" " " "
८३	षष्ठाष्टकं	"	—	३६	"	" " " "
८४	सप्तमाष्टकं	"	—	२९	"	" " " "
८५	तैत्तिरीय संहिता प्रथमाष्टकं	"	—	८३	"	संवत् १७३१ वर्षे
८६	द्वितीयाष्टकं	"	—	५८	"	" " "
८७	तृतीयाष्टकं	"	—	४४	"	" " "
८८	चतुर्थाष्टकं	"	—	७१	"	सं. १७३१ अश्विनमासे (१)
८९	पंचमाष्टकं	"	—	९९	"	" " " "
९०	षष्ठाष्टकं	"	—	९७	"	सं. १७३१ व. अभिनवदश शुक्ले
९१	सप्तमाष्टकं	"	—	६८	"	सं. १७३१
९२	तैत्तिरीय आरण्यकं ५० प्रश्नानि	"	—	६७	"	सं. १७४० वर्षे कार्तिक शुद्धि ११ शनी।
९३	तैत्तिरीय ब्राह्मणं	"	—	९९	"	सं. १८३२ चैत्र शुद्धि ८ रवि
९४	प्रथमाष्टकं प्रथमकाण्डः द्वितीयाष्टकं द्वितीय काण्डः	"	—	९८	"	संवत् १७०० प्रायः

(१) अश्विन मासे कृष्णपक्षे ५ शुक्ले । औरंगनगर मन्वे सुवातरे ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र.
SHRI BHUVANESHWARI PITT. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (Saurashtra) INDIA

Subject : VEDAS

विषयः वेदाः।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
९५	तैत्तिरीय ब्राह्मणं तृतीयाष्टकं तृतीयकाण्डः	संपूर्ण-	—	७२	देवनागरी संवत् १७१० कात्थिन शुद्ध संस्कृत १० सोम-	
९६	मंत्रावहणप्रयोगः	"	—	५१	" सं. १९०८ कर्तिक शुद्ध २ आदिपंचमारे	
९७	भौतसर्वस्वं बौधायन कलस्य व्याख्या	अपूर्ण	—	१०	" संवत् १८०० प्रायः	
९८	मापस्तम्ब रुद्राध्यायः	संपूर्ण	—	११	"	
९९	शतब्रह्मोय तैत्तिरीयश्रौतिका	"	—	१८	"	
यजुर्वेदः						
१००	यजुर्वेद संहिता अ० अध्यायाः	"	—	२८४	" संवत् १८५० वर्षे भाषण (१)	
१०१	, पुस्तकाकार पत्राणि ४० प्रश्नाः उत्तमाक्षराः इत्येकेतर शताध्वयु (२)	"	—	४३१	" इति श्री यजुर्वेदकाठके चरक शाखायां इतिमिकायां पञ्चसि- स्थानकं नाम एकादशे (३)	
१०२	" २० अध्यायाः	"	—	१४८	" सं. १७१८ वर्षे कार्तिक (४)	
१०३	" २२ अ० वाजसनेयीसंहिता	"	—	१४८	" सं. १६०० प्रा.	
१०४	" अ० १ तः १०	"	—	१०८	" सं. १५०० प्रा.	
१०५	" अ० १ तः ११	"	—	८५	" सं. १८०० प्रा.	
१०६	" अ० २१ तः ४०	"	—	१०९	" सं. १७२१ वर्षे उषःप्रभाते कृष्ण अमावास्या यां शनि-	
१०७	वासनेयी	"	—	३७	" सं. १६११ वर्षे श्रेष्ठ कृष्णे १ सोमे	
१०८	वाजसनेयी संहितायाः अनुक्रमणीये पंचमोऽध्यायः	"	—	७६	" सं. १४०० प्रा.	
१०९	यजुर्वेदस्य सर्वानुक्रमणी अ० १ तः ५ उत्तमाक्षर तथा अनुशाकतावर्णः	"	कारवायनहता	३०	" सं. १८६८ शाके १०२४ द्वितीय वैशाख शुक्ल २ औमे	
११०	सर्वानुक्रमणी अ० ५ कंडिका ११६	"	—	५२	" सं. १९१२ कात्थिन वरी १ रवौ के शुक्ल हरिरामात्मज मायाकरेण	
१११	सर्वानुक्रमणीभाष्यं कर्ता भगवान् कारवायनः	अपूर्ण	—	१६	" संवत् १७०० प्रा.	
११२	यजुर्विधान	"	—	४०	" सं. १६०० वर्षे कार्तिक वदि ७ सोमे	
११३	शनपथ ब्राह्मणं हविर्यज्ञ प्रथमकाण्डः ब्रा. ३७ कंडिका ८३८	संपूर्ण	—	९५	" संवत् १८८७ मार्गशीर्ष शुक्लपक्षे १२ शनि शेषपुर मन्थे लिखितं	
११४	" द्वितीयकांडं ब्रा. २४ कं ५४९ तृतीयं नास्ति।	"	—	६३	" सं. १९०४ आषाढ व १ शुभे	
११५	" चतुर्थकांडं ब्रा. २५, कं. ४७१	"	—	८०	" " " "	
११६	" पंचमकांडं ब्रा. २५, कं. ४७१	"	—	६४	" सं. १९०४ मार्ग. वद १ शुभ लि. दशैशानोपरशुत मोरारजी	
११७	" षष्ठकांडं ब्रा. २७ कंडिका ५३०	"	—	७१	" सं. १९०४ मार्ग. वद १ शुभ	

(१) भाषण शुद्ध ३ शुभवासरे, नूतनपुरे (जामनागर) कौशिक्य ज्ञातिना आचार्य सामजी देवराज पठा १०७ मिति संवत् १८५० चैत्र
मासे शुद्ध ५ शुभवासरे (२) शाखाध्वयुःशा प्रमेरभिन्ने श्री यजुर्वेद काठके चरक शाखायां पञ्चमेधा नाम पंचमोऽध्यायः। (३) एकादश
संपूर्ण। संवत् १७७५ प्रा. (४) कार्तिक मासे शुद्ध २ शुभे नवमावास्तवे सागरकातीय पंचमेधा श्री ५ स्वामी दासारामहरिहरेण।

५

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडाल - सौराष्ट्र.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, GRANTH BHANDAR, GONDAL, (Saurashtra) INDIA.

Subject : VEDAS

विषय : वेदाः ।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
११८	शतपथ ब्राह्मण सप्तमं ब्रा. २ कं. १९८ हस्तघटनाम	संपूर्ण	-	१२	देवनागरी	संवत् १८८७ अधिकमास कृष्ण संस्कृत १२ भाद्रपदसरे
११९	" अष्टमं कंडिका ब्रा. २६ कं. ४३७	"	-	६१	"	संवत् १९१४ फाल्गुन वद १२ शनी
१२०	" संचिकानाम नवमं कंडिका	"	-	५१	"	सं. १९४४ पौष वद ५ भीमे
१२१	" दशमं कंडिका	अपूर्ण	-	२३	"	" "
१२२	" उत्तमोत्तमाक्षराः पंचमं प्रपाठकः ब्रा. ३३ कं. ५४२	संपूर्ण	-	८५	"	सं. १५६१ अभिन वदि ११
१२३	कात्यायनी सूत्रं अ. ५ पार्श्वभाषा	"	-	४४	"	सं. १९०० प्रा.
१२४	कात्यायन सूत्रं कात्यायन श्रौत सूत्रं	"	-	१७५	"	सं. १९५१ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्र १० शनि
१२५	कात्यायन सूत्र पद्धतिः १६ अ.	"	-	२७	"	सं. १९०० प्रा.
१२६	पारस्कर गृह्यम.प्य	"	-	७	"	सं. १८४७ भाद्रपद शुक्र १४
१२७	आरण्यक ब्राह्मणं	अपूर्ण	-	३६	"	सं. १७३१ माघ शुदी १ भीमे
१२८	गायत्री ब्राह्मणं	"	-	१	"	सं. १७०० प्रा.
१२९	गायत्री भाष्यं	"	-	३	"	सं. १८९९ प्रा
१३०	बृहद्ब्राह्मणे आषाढकंडिका	"	-	१४	"	सं. १८७३ आषाढ शु ८ सोमे
१३१	अग्निचयन प्रयोगः	"	-	४१	"	सं. १८७९ प्रा.
१३२	अग्निष्टोमे अच्छावाक् प्रयोगः ।	संपूर्ण	-	१७	"	सं. १८०० प्रा
१३३	अग्निष्टोमे ब्रह्मगच्छंश्चांसि प्रयोगः	"	-	१७	"	सं. १८०० प्रा
१३४	अग्निष्टोमे गैत्रावरुण प्रयोगः	"	-	१३	"	" "
१३५	अग्निष्टोमे सोमवक्ष्यविदेहः आष.	"	-	४	"	" "
१३७	अग्निष्टोमे हौत्र प्रयोगः	"	-	८७	"	सं. १९०५
१३७	अग्निष्टोमे स्थापन होममंथाः	"	-	१९	"	सं. १८९० प्रा
१३८	अनामकं सूक्तम्	"	-	३	"	सं. १८०० प्रा
१३९	"	"	-	३	"	सं. १८९० प्रा
१४०	अनुवाक संख्या (पुनर्वेदपुनर्वेद संख्या)	"	-	९	"	सं. १९४१ भाद्र शु. १३ पुषे कच्छ भुव गोपालजी मदन
१४१	" (कात्यायनोक्त)	"	-	८	"	सं. १९१५ भा. शु ४ भीमे लि. व्यास वनम की गोवर्धन
१४२	अश्वमेध पद्धतिः	अपूर्ण	-	४४	"	सं. १७२१ फा. शु ११ गुरी
१४३	आमहयण प्रयोगः	संपूर्ण	-	९	"	सं. १७२५ प्रा.
१४४	आज्यशक्लं	अपूर्ण	-	४	"	सं. १८०० प्रा.
१४५	आनो भद्रा (शंतिपाठ)	संपूर्ण	-	२	"	सं. १९२५ प्रा.
१४६	"	"	-	२	"	सं १८०० प्रा.
१४७	उन्नेतृत्व प्रयोगः	"	-	२	"	"
१४८	किच्छन्दीयं	"	-	२	"	सं. १९११ ग. कं. गोपी ईशजी सुत पीठ
१४९	कुण्डलितिकः	"	-	४	"	सं. १९१५ आषाढ कृष्ण ५ गुरी संमनेरस्वेव विठ्ठलीखितेन ।
१५०	कौकिली सौत्रामणिः	"	-	१	"	सं. १९०० प्रा.
१५०	प्राक्स्तुतप्रयोगः (अग्निष्टोमे अग्निष्टोमे)	संपूर्ण	-	५	"	शाके १९४४ वे. ३ ८ वि. गनेशजीखित ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडाल-सौराष्ट्र.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, GRANTH BHANDAR, GONDAL (Saurashtra) INDIA
Subject: VEDAS विषय: वेदाः ।

क्रमांक Serial NO	ग्रन्थ भंडार Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि Language & Script	लेखक मिति Scribe & Date
१५२	घनपदानि	अपूर्ण	-	१	देवनागरी	सं. १९३० प्रा [अक्षरमंडित तारा
१५३	खरण व्यूहः	संपूर्ण	-	५	संस्कृत	सं. १९१७ प्राच क. ११ डे. ४
१५४	"	"	-	६	"	सं. १९११ का व. ८ भौम बुध
१५५	"	"	-	३	"	सं. १८४३ भा. शु. १ बुध
१५६	चातुर्मासि ग्रहस्थितिः	"	-	८	"	सं. १८८२ ज्येष्ठ शु. १ गुरो
१५७	चातुर्मास्य प्रयोगः वेदायन उत्तमलिपिः	"	-	६५	"	सं. १८८३ भास्विन व प्रतिपदा
१५८	चातुर्मास्य द्वौत्रप्रयोजः	अपूर्ण	-	१०-२१	"	सं. १९१३ वै. क. ८ बुध
१५९	चातुर्मास्य द्वौत्रप्रयोगः	संपूर्ण	-	१७	"	शाके १९९१ आषा. शु. ७ व. ३
१६०	"	अपूर्ण	-	२३	"	शाके १९९१
१६१	छन्द (वैशाख)	संपूर्ण	-	७	"	सं. १८९९ प्रा
१६२	तत्पुरुष सूक्तं	"	-	२	"	सं. १९१९ प्रा
१६३	दण्डः	अपूर्ण	-	१ तः १७	"	सं. १८४० प्रा
१६४	दशपौर्णमासः आपस्तम्बीय	संपूर्ण	"	१९	"	सं. १८१९ प्रा
१६५	दशपौर्णमास पद्धतिः आपस्तम्बशास्त्रा	"	-	६६	"	सं. १८९० प्रा
१६६	दशपौर्णमास प्रयोग	"	-	१२	"	सं. १७०० प्रा [अक्षरमंडित
१६७	"	"	-	३१	"	सं. १८१९ भाष अष्टमी शु. ४
१६८	दशपौर्णमासयोद्धौत्र (कम्बेरीय)	"	-	१५	"	सं. १८७० प्रा
१६९	दशपौर्णमासेष्टिः	अपूर्ण	-	९	"	सं. १७३० आषा. शु. ९ (१)
१७०	पशुबन्ध प्रयोगः	संपूर्ण	-	२६	"	सं. १८१९ प्रा
१७१	पौर्णमासेष्टिः	"	-	२४	"	सं. १९९६ पौष वरी ७ (२)
१७२	पुरुषसूक्त सुवर्णामिष्टिः	"	-	५	"	सं. १९९१ प्रा [दशमी मंदवावरे
१७३	पुरुषसूक्त-मिष्टि प्रकाश	"	-	६	"	सं. १९०२ भाषा. भा. कृष्णपक्षे
१७४	बौधायन आधान प्रयोगः-उत्तमाक्षरा	"	उत्तमाक्षरा	६६	"	सं. १८८३
१७५	बौधायन दशपौर्णमास प्रयोग	"	उत्तमाक्षरा	६०	"	सं. १८८२ वै. लि.
१७६	मंडल ब्राह्मणे तृतीय प्रपाठकः	"	-	६	"	सं. १८५७ वै. शु. १३ शु. १
१७७	"	"	-	९	"	सं. १७९९ वै. शु. ३ वै. १
१७८	"	"	-	३	"	सं. १९११ प्रा
१७९	मंत्र संकलनी	"	-	१५	"	सं. १८४३ भा. शु. १० रवि
१८०	"	"	-	१८	"	सं. १९१० प्रा
१८१	महान्यासः	"	-	२१	"	सं. १८८५
१८२	महायतद्वौत्र	अपूर्ण	-	१२२	"	सं. १७९३ प्रा
१८३	मैत्रायणप्रयोगः	संपूर्ण	-	२८	"	सं. १७०० प्रा
१८४	मैत्रायण यज्ञभागः	"	-	११७	"	सं. १९०० प्रा
१८५	रुद्रजपः सांख्यनखासांख्यनिनाम्)	"	-	१०	"	सं. १७५२ भा. शु. ९
१८६	" माध्यमिनीप संविता	"	-	२०	"	सं. १९०२ पुरुषसूक्त वर्ष मिष्टि प्राति

(१) शु. ९ बुधे स्तंभतीथे आभ्यन्तर नागर ज्ञातीय काशी मृत अभिमुक्तेश्वरेण (२) पौष वरी ७ भौमे द्विवेदी तापो पुत्र विधामेव लि.

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, GRANTH BHANDAR, GONDAL, (Saurashtra) INDIA.

Subject VEDAS NIRUKTAM

विषयः वेदाः । निरुक्तं मीमांसा सांख्यं

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author	टीका	पत्राणि	भाषा- लिपिः	लेखक-मितिः
Serial No.	Name of the Title	संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leave.	Language & Script	Scribe & Date.
१८७	रुद्रनाथं (चमक भाष्यं)	सायणाचार्यं चमकभाष्यं	देवनागरी	२२	सं. १८५९ का. शु. १० रवौ	
१८८	रुद्रा (यजुर्वेदी)	सायणाचार्यं	संस्कृत	२१	इति सायणाचार्यं विरचिते (२)	
१८९	शर्मवर्मगणः	ओक्तिः	-	१	सं. १९५९ आषाढ शु. ७ (३)	
१९०	शिवायवैदीयम्	संपूर्ण	-	८	सं. १९२५	
१९१	सन्ध्याभाष्यम् (गायत्रीभाष्यम्)	भाष्यं	-	२०	सं. १८०० [अध्यास अत्रारामरेण	
१९२	सप्तशतप्रयोगः	प्रयोगः इत्युप-(४)	-	३०	सं. १८२५ चै शु ९ मौमे	
१९३	सोमयाज्ञानम्	संपूर्ण	-	२१	सं. १८२२ आषाढ शुदि	
१९४	सोमे ब्रह्मत्वप्रयोगः उत्तमाध्यायः	-	-	११	सं. १८१९ प्रा.	
१९५	सोम हौत्र प्रयोगः	-	-	४२	सं. १८०० प्रा	
१९६	सौर अग्रमर्षणं	-	-	८	सं. १७३५ प्रा	
१९७	गारुडकर गृह्यसूत्रं	-	-	४३	सं. १६०० प्रा	
१९८	"	-	-	X	X	
१९९	सामवेद संहितायाः पत्राणि	अपूर्ण	-	X	X	
२००	सामवेदीयरुद्रा	-	-	२५	सं. १७०० प्रा	
निरुक्तं						
२०१	निरुक्तं पूर्वषट्कम्	-	-	११७	कृष्णभट्ट तैत्तिरीय लिखितं ।	
२०२	निरुक्तं उत्तरषट्कम्	-	-	१३१	सं. १९१८ पौष वद १२ मंदि	
२०३	निरुक्तं पूर्वाध्यायं अ० १	-	-	६५	सं. १९१८ का शु १४ शुके	
२०४	निरुक्तं उत्तरषट्कं	-	-	६१	सं. १६७८ मा शु १४ भुवंगपुर	
२०५	निरुक्तवृत्तिः	-	-	४	(भुज)दत्ते वैकुण्ठसुतस्य श्रीरामस्य	
२०६	नैरुक्तं उत्तराध्यायः	त्रयोदशोऽध्यायः	-	११	सं. १८३२ प्रा	
२०७	निघण्टु पञ्चाध्यायी (वेदांगं)	संपूर्ण	-	२३	सं. १८३१ मा. शु ११ शुके (५)	
२०८	शिक्षा (पाणिनीया)	-	-	८	सं. १९१९	
२०९	तत्रार्थ-पूर्वमीमांसा	अपूर्ण अतिप्राचीनं शुद्धं	-	१३७	सं. १९१९ प्रा	
२१०	तत्रार्थवार्तिक व्याख्या-पू. मी.	संपूर्ण सोमेश्वर विरचिता-	-	२५	शाके १४१० आश्विन वद ५	
२११	"	प्रथमोऽध्यायः	-	१२५	शुके संवत् १९४५	
२१२	मीमांसार्थप्रदीपः	अपूर्ण	-	१६	सं. १९५३ मर्षे पौषवदि ५	
२१३	सांख्यसप्तमीमुदी व्याख्या	संपूर्ण वाचस्पतिमिश्रकृता-	-	४५	पाणि । सोमयाजी भट्ट (६)	
२१४	सांख्यसप्तमिः	ईश्वरकृष्ण चिता	-	४	सं. १८१६ प्रा	
२१५	सांख्यसप्तमिः	आचार्यमाढर मुनि-	-	५७	सं. १७३५ प्रा	
२१६	मीमांसाभाष्यम् प्रथमाध्यायः	शास्त्रभुजिकृतं	-	१०	सं. १४६३ वर्षे का. ११ शुके	
२१७	शास्त्रदीपिका पू. मीमांसा	सायणाचार्य मिश्रकाशिका टीका	-	२०७	शाके १४१० आश्विन शु. १० सोमे	
२१८	प्रले कर्वातिक काशिका टीका	सायणाचार्य काशिका टीका	-	२७५	सं. १७०८ वर्षे का. १२ रवि	
					सं. १४४५ वर्षे आश्विनशुक्लपञ्चमी	



(१) विरचितः । यजुः संहितायां चतुर्थकाण्डे एकादशोऽनुवाकः । (२) विरचिते वेदाध्यायप्रकाशे यजुः संहितायां चतुर्थकाण्डे सप्तप्रकाशके चमकभाष्ये एकादशोऽनुवाकः (३) शु ७ शुके ङल मध्ये वि. व्यास विषयवृत्तात्मज कृष्णेन । (४) नामकः चंद्रचूड भट्टः । संपूर्ण (५) शुके बिल्वेध्वममध्ये दत्ते कानजी आत्मज रघुनाथेन । (६) भट्ट माधवात्मज भट्ट सोमेश्वर विरचिता ।
अध्यायकणी नाम्नी टीका प्रथमाध्यायस्य द्वितीयपादः ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्त लिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल-सौराष्ट्र.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, GRANTH BHANDBAR, GONDAL, (Saurashtra) INDIA
Subject: NYAYAS विषय न्यायशास्त्रं ।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the Work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or incomplete	टीका Commentary	पन्नाणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
१	अनुमानमणिदीधितिः सटीका	संपूर्ण महाबाबू	खुराचक्रता	८६	देवनागरी	संवत् १५१९ प्रा
२	अनुमानपरिच्छेदः	अपूर्ण	-	६९	संस्कृत	सं. १७०० प्रा
३	अभाववर्णनः (शि.ज.) उत्तनाक्षर	संपूर्ण	-	६७	"	सं. १५११ प्रायः
४	अर्थवाच्यार्थिकम्	अपूर्ण	-	१७	"	सं. १६०६ प्रायः
५	आख्यातवादः टीपणी	संपूर्ण खुरेश मटवाबू	-	२१	"	संवत् १७३१ वर्षे
६	कणाद रहस्य (गङ्गानुमुक्ताहारः)	"	-	१०	"	सं. १६६१ भाद्र कृ. २ औष
७	किरणावलिः उत्तमलिपि	अपूर्ण वदवनः	-	१०६	"	सं. १२३१ प्रायः
८	कुपुमांजलिः (न्यायकुसुमांजलिः)	संपूर्ण पंडित उदयनः	-	१२६	"	सं. १६६२ भाषाव. शु. प्रति- पदायां ए. ओवागशिकासेन (I)
९	नंगाचरी टीका	" आनन्दाज्ञानयतिकृता	-	१२३	"	सं. १५१९ प्रा
१०	तर्कपरिभाषा उत्तमलिपिः	" केशव	-	१२	"	सं. १२४९ प्रा
११	तर्कप्रकाशः तर्कप्रतिबंधरविचारः	"	-	६	"	सं. १७०८ प्रा
१२	तर्कभाषा	"	-	३५	"	सं. ११४९ प्रा
१३	तर्कसंग्रहः दीपिका टीका	"	-	७	"	सं. १८०१ प्रा
१४	"	" अन्नमहोपाध्यायः	-	२६	"	सं. १७९१ अक्षर कु. ११
१५	"	"	-	२२	"	सं. १७९५ प्रा
१६	तर्कसंग्रहः मूलं	" अन्नम् मटकृत	-	१३	"	सं. १८१९ प्रा
१७	तर्कसंग्रहसूत्रम्	"	-	१०	"	सं. १८१९ पोप शु. ११ मंगल
१८	तर्कसंग्रह दीपिका टीका	" अन्नम् मटकृता	-	१७	"	सं. १८३० का. शु. ८
१९	तर्कामृतं	" जगदीश	-	७	"	सं. १७४९ प्रा
२०	तर्कामृततरंगिणी टीका	" मुकुन्द मट	-	३७	"	सं. १७११ प्रा
२१	"	अपूर्ण	-	४५	"	सं. १८१४ प्रा
२२	तार्किकरक्षा व्याख्यानसार संग्रहः	" वादराज	-	६४	"	सं. १६७९ प्रा
२३	त. व. शोभिः	संपूर्ण	-	३	"	सं. १७०३ प्रा
२४	दिनकरीसिद्धांत मुकाबली मुकाबली प्रकाशः	" श्री महाद्वज मट बाणकुण्ठारमज (2)	-	१५०	"	सं. १८३० भाषाव. भा. काव्या महापुराणी
२५	दिनकरी कारिकावली	"	-	८६	"	सं. १८१५ प्रा
२६	द्रव्यसार संग्रहः	" खुरेश मटवाबू	-	१०६	"	सं. १७०० प्रा
२७	"	अपूर्ण	-	३४	"	सं. १८४०
२८	निश्चयनिरुक्तिः	संपूर्ण खुरेशकृता	-	२	"	सं. १७५९ प्रा
२९	न्याय चंद्रिका	" देवावभट	-	३५	"	सं. १८११ प्रा
३०	न्याय प्रत्यक्षं	अपूर्ण	-	२०-२८	"	सं. १७३४ प्रा
३१	न्याय बोधिनी तर्कसंग्रह टीका	संपूर्ण गोवर्धनाचार्यकृता	-	६४	"	सं. १५०० प्रा
३२	न्यायरक्षामणिः प्रथमा० तृतीयपादः	" अप्पयकीलितः	-	१०८	"	सं. १४८१ प्रा
३३	" (न्याय चंद्रिका)	अपूर्ण	-	५८	"	सं. १७५० प्रा
३४	न्यायवाचस्पतिः	"	-	४९	"	सं. १७४९ प्रा
३५	न्यायसारः उत्तमलिपिः	"	-	३	"	सं. १९११ प्रा
३६	न्यायसिद्धांतः	"	-	४९	"	सं. १९०४ प्रा
३७	पदार्थदीपः वनमीमांसा	संपूर्ण वंपकनाथमिश्र	-	९	"	सं. १९०४ प्रा
३८	भाषापरिच्छेदः	"	-	१०	"	सं. १७४३ प्रा [भीरवासेरे]
३९	"	"	-	७	"	सं. १७४५ अविडनासेरु. पक्षे

(1) ओवागशिकासेन लिखितं धर्मप्रतिपत्ति सही अक्षर ११५५ । वनवासारमजेन पुष्पिष्ठेन लिखितं

(2) महादेवमट कृते: मुकाबली प्रकाशः

SHRI BHUVNESHWARI PITH, Mrs. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: NYAYAS, UPANISHADAS विषय: न्यायशास्त्रं । उपनिषद्

Subject: NYAYAS, UPANISHADAS विषयः न्यायशास्त्रं । उपनिषदः

—

१	अध्यापनोपनिषद्	संपूर्ण	-	८	देवनागरी	सं. १८०३ प्रा.
२	अष्टाई उपनिषद्	"	-	१	संस्कृत	सं. १९१५ प्रा.
३	अष्टागोपनिषद् अष्टाष्टक	"	-	१	"	सं. १९१५ प्रा.
४	तः ५९ अथर्ववेदोपापनिषद्: (5)	"	-	९२	"	सं. १७०८ वर्ग नं. व. ७७७
	५० उपनिषद्:					लिखित नागर हातीस बहेता (8)
५	तः ५८ आरण्यक उपनिषद् १	"	-	८४	"	सं. १९९५ माघ शुद्ध प्रति.
	संहितोपनिषद् २					पदि मंदवासे भद्रोपाक-
	आश्वलायनोपनिषद् ३					पौनेष भद्र गदाचरेक लिखित
५९	तः ११७ उपनिषद्: मुंडकादि	"	-	१५९	"	सं. १८०७ प्रा.
११८	उपनिषद्: ४९ उपनिषद्:	"	-	४	"	सं. १०९९ प्रा.
११९	"	"	-	३५	"	सं. १०१५ वर्ग नं. ७७७
१२०	आठुनिषद् उपनिषद्	"	-	१	"	सं. १०१५ प्रा. [जिने हरे]
१२१	"	"	-	३	"	सं. १८०१ प्रा. [लिखित]
१२२	ईशावास्योपनिषद् (7)	"	शांकरभाष्योपेता	१३	"	सं. १८६० प्रा.
१२३	" रहस्यसंहिता	"	ब्रह्मण्यदसरसूती	५	"	सं. १८१० प्रा. [लिखित]

(१) भद्राचार्य' रचिता । (२) श्यामाङ्ककार भद्राचार्यः । (३) (इत्यपरं नाम) । (४) (मुक्तावलिः इत्यपरं नाम) । (५) मुक्तकोपनिषद् च प्रश्नोपनिषद्, ३ ग्रन्थोपनिषद्, ४ धुरिणोपनिषद्, ५ सुल्लिकोपनिषद्, ६ क्षित्तोपनिषद्, ७ क्षित्तोरगनिषद्, ८ गर्भोपनिषद्, ९ मोक्षोपनिषद्, १० ब्रह्मविशेषोपनिषद्, ११ प्राणाग्निहोत्रोपनिषद्, १२ मातृकुम्भोपनिषद्, १३ गैतथ्याख्य प्रकरणं, १४ गैतथ्य आयुर्वेद वंशे, अद्वैतात्म्यप्रकरणं इत्युपदेशस्य आलापः, १५ शारदाख्य प्रकरणं, १६ नीलकण्ठ, १७ नीलकिन्दु, १८ मल्लकिन्दु, १९ केशकिन्दु, २० ध्यानकिन्दु, २१ तेजकिन्दु, २२ योगतत्त्वविशेषो, २३ योगतत्त्व, २४ सम्पादो, २५ आश्चर्य, २६ कटककुम्भः, २७ पिप्पली, २८ आम्र, २९ रुक्मिण्डपूर्व तापिनी, ३० श्री ३३ मोक्षोपनिषद्, ३४ रुक्मिण्डस्तोत्रतापनी, ३५ कठस्थान्याख्या पूर्ववर्ती, ३६ कठस्थान्याख्या उत्तरवर्ती, ३७ केयूर, ३८ नारायण, ३९-४० बुधनारायण, ४१ गरुड, ४२ हंस, ४३ परमहंस, ४४ आनन्दबालो, ४५ सुप्तबाली, ४६ माहरी, ४७ काळापि, ४८ श्रीरामपूर्वातापनी, ४९ श्री रामउत्तरतापनी, ५० कैटव्योपनिषद्, ५१ जागृतोपनिषद्, ५२ आश्वमेधोपनिषद्, ५३ श्री कृष्णनुत दयाराम धोलकापुर मध्ये (७) पाञ्चरात्र विधौपनिषद् (८) ज्येष्ठ शुद्ध २ द्वये हरे कविरामदेव लि

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્તલિખિત ગ્રન્થ મંડાર, ગોંડલ-સૌરાષ્ટ્ર.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) India.

Subject: UPANISHADAS

વિષય: ઉપનિષદ: ।

ક્રમાંક Serial NO	ગ્રન્થ મંડાર Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પૃષ્ઠાણિ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ Language & Script	લેખક મિતિ Scribe & Date
૧૨૪	ઈશાવાસ્યોપનિષદ મૂલ	સંપૂર્ણ	-	૨	દેવનાગરી	સં. ૧૯૧૫ કા. શુ. ૧૧ ગુરો
૧૨૫	" મૂલ	"	-	૧	સંસ્કૃત	સં. ૧૯૧૫ પ્રા.
૧૨૬	પેતરેયોપનિષદ ઉત્તમાક્ષરા:	"	-	૪	"	સં. ૧૯૧૬ ચે. શુ. ૩ શાનો
૧૨૭	"	અપૂર્ણ	-	૪	"	સં. ૧૯૧૫ પ્રા.
૧૨૮	કઠોપનિષદ	સંપૂર્ણ	શાંકરભાષ્ય	૨૫	"	સં. ૧૮૮૦ પ્રા.
૧૨૯	કાઠકોપનિષદ	"	ભાષ્યોપેતા	૭	"	સં. ૧૭૦૬ પ્રા.
૧૩૦	કઠવલ્લી મૂલ	"	-	૧૧	"	સં. ૧૯૭૯ પ્રા.
૧૩૧	"	"	-	૭	"	સં. ૧૯૦૩ પ્રા.
૧૩૨	"	"	-	૯	"	સં. ૧૯૩૧ ચે. વર ૧ રવો
૧૩૩	" સામવેદી	"	-	૧૬	"	સં. ૧૯૪૦ પ્રા.
૧૩૪	કૃષ્ણોપનિષદ સામ વેદી	"	-	૬	"	સં. ૧૮૫૮ આવળ વધી ૧
૧૩૫	કેનોપનિષદ	"	શાંકરભાષ્ય	૧૮	"	સં. ૧૮૦૭ પ્રા.
૧૩૬	"	"	-	૧૫	"	સં. ૧૮૦૮ પ્રા.
૧૩૭	"	"	ભાષ્યોપેતા	૧૮	"	સં. ૧૮૧૦ પ્રા.
૧૩૮	"	"	સલકારભાષ્ય	૧૦	"	સં. ૧૮૧૨ પ્રા.
૧૩૯	"	"	-	૨	"	સં. ૧૯૩૧ ચેત્ર
૧૪૦	"	"	સલકારોક્ત	૧	"	સં. ૧૯૬૬ પ્રા.
૧૪૧	કૈવલ્યોપનિષદ ૧ નિરાલબોપનિષદ	"	-	૪	"	સં. ૧૭૧૧ ડા.
૧૪૨	ગણપત્યુપનિષદ	"	-	૫	"	સં. ૧૮૦૨ પ્રા.
૧૪૩	"	"	-	૩	"	સં. ૧૮૫૧ના માર્ગ.કુ ૧૦ભીમે
૧૪૪	"	"	-	૫	"	સં. ૧૮૯૭
૧૪૫	"	"	-	૫	"	સં. ૧૯૧૩ પ્રા.
૧૪૬	"	અપૂર્ણ	-	૨	"	સં. ૧૯૧૪ પ્રા.
૧૪૭	ગોપીચંદ્રોપનિષદ	સંપૂર્ણ	-	૪	"	સં. ૧૯૨૫ પ્રા.
૧૪૮	ચિત્યુપનિષદ	"	-	૨૬	"	સં. ૧૭૮૦ પ્રા.
૧૪૯	"	"	-	૧૨	"	સં. ૧૮૯૭ કા. ૧૭૩૧*
૧૫૦	ચાંદ્રોપનિષદ	"	-	૨	"	સં. ૧૯૫૪ [કાશીકેત્ર
૧૫૧	હાંદોગ્યોપનિષદ	"	શાંકરભાષ્ય	૧૧૫	"	સં. ૧૭૪૫ પૌષ વધી ૧ ગુરો
૧૫૨	" મૂલ	"	-	૧૬	"	સં. ૧૮૧૭ પ્રા.
૧૫૩	" મૂલ	"	-	૭	"	સં. ૧૯૩૫ ચેત્ર
૧૫૪	તૈત્તરીયોપનિષદ મૂલ ઉત્તમાક્ષરા:	"	-	૫૬	"	સં. ૧૭૮૧વચે'વૈશાખમાસે(૧)
૧૫૫	" સત્તરા	"	-	૧૦	"	સં. ૧૯૩૬ ચેત્ર શુદ્ધ ૨ રવો
૧૫૬	નાલ્લિહુ ડગ ૧૦ મૂલ	"	-	૨	"	સં. ૧૮૩૮ માર્ગ.કુ. ૧ મુગ
૧૫૭	નારાયણોપનિષદ મૂલ	"	-	૨	"	સં. ૧૯૦૬ કાલગુન શુ. ૧
૧૫૮	"	"	-	૨	"	સં. ૧૯૦૮ ય્યે. શુ. ૧ ગુરુ(૨)
૧૫૯	"	"	-	૨	"	સં. ૧૮૩૮ વૈશાખ મસ્યે(૩)
૧૬૦	"	"	-	૫	"	સં. ૧૮૧૧ રામલક્ષ્મણજી
૧૬૧	"	"	-	૫	"	સં. ૧૭૮૧ પ્રા.
૧૬૨	નિરાલબોપનિષદ મૂલ	"	-	૧૧	"	સં. ૧૮૪૧ પ્રા.
૧૬૩	પ્રશ્નોપનિષદ સભાષ્યા	"	ભાષ્ય	૪	"	સંવત ૧૯૯૬ પ્રા.
૧૬૪	" મૂલ	"	-	૭	"	સં. ૧૯૩૫ ચે. કુ ૧ રવો

(૧) શુક્લપદ્મે સમ્પન્ન રવિવાસરે (૨) લિ. હામેદરનજ રજાએ (૩) શામજીકુત હરિકુળ લિ.

Subject : UPANISHADAS

विषय : उपनिषद् ।

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
Serial No.	Name of the work (title)					
१६५	प्रश्नोपनिषद् मूल	संपूर्ण	—	१३	देवनागरी	संवत् १९०९ प्रा.
१६६	"	"	—	१	संस्कृत	सं. १९२५ प्रा.
१६७	यद्वृत्तग्रन्थोपनिषद्	अपूर्ण	—	२२ श्री ६५	"	सं. १९३५ प्राय
१६८	बृहदारण्यक्योपनिषद्	संपूर्ण	—	७८	"	सं. १८३९ वर्षे वै. शु. ८ (१)
१६९	"	"	—	८२	"	सं. १८८३ माघ सिते ५ गुरौ
१७०	"	"	—	६५	"	सं. १८९५ आश्विन शुक्ल ७ (२)
१७१	"	"	—	६७	"	सं. १९०९ शाके १७७४ (३)
१७२	" सध्याख्या	"	मिताक्षराभाष्य (४)	५७	"	सं. १८१३ प्रायः
१७३	" ६ अ०	"	—	२२	"	सं. १८९९ आश्व. शु. १ कार्तिक
१७४	" ८ अ०	"	—	३५	"	" "
७५	" ३ अ०	"	—	९	"	सं. १८७१ प्रा.
१७६	ग्रन्थोपनिषद्	"	—	४	"	सं. १८३५ प्रा.
१७७	भावनेोपनिषद्	"	—	२	"	सं. १७९९ प्रा.
१७८	भृगुपनिषद्	"	—	४	"	सं. १८३५ प्रा.
१७९	मण्डूक्योपनिषद् आथर्वणोपनिषद्	"	—	१	"	सं. १९६५ प्रा
१८०	" सभाष्या	"	शांकरभाष्य (५)	१०	"	सं. १९७० प्रा.
१८१	" मूल	"	—	५	"	सं. १९३२ प्रा.
१८२	" सभाष्या	"	शांकरभाष्य	१६	"	सं. १७३१ प्रा.
१८३	" मुंडकोपनिषद्	"	—	३	"	सं. १९६६ प्रा.
१८४	"	"	—	६	"	सं. १७६० प्रा.
१८५	" १ आंडुक्योपनिषद् २	"	—	८	"	सं. १९३५ चैत्र वद ११ मौजे
१८६	"	"	—	१२	"	सं. १९४०
१८७	राधातापनी उपनिषद्	"	—	२	"	सं. १८५३ प्रा. कृष्ण ४ (६)
१८८	रामतापनी	"	प. प. आनंदवन	३६	"	सं. १७०५ प्रा.
१८९	रामोत्तरतापनी	"	—	१४	"	सं. सं. १७०५ प्रा.
१९०	"	"	—	१५	"	सं. १७१५ प्रा.
१९१	रामोपनिषद्	"	—	३	"	सं. १७६२ प्रा.
१९२	वज्रसूत्रोपनिषद्	"	—	७	"	सं. १७९७ प्रा.
१९३	"	अपूर्ण	—	६	"	सं. सं. १७८० प्रा.
१९४	वनदुर्गेतिगिरि आथर्वणरहस्ये	"	—	१४	"	सं. १८४० ना अषाढ शु. ३ बुधे
१९५	वातुदेवोपनिषद् १	संपूर्ण	—	४	"	सं. १८४८ प्रा. १९४८ प्रा.
१९६	रामोपनिषद् २	"	—	१५	"	सं. १८७५
१९७	शिर उपनिषद् शिवाथर्वणोपनिषद्	अपूर्ण	—	१२	"	सं. १९३५ प्रा.
१९८	शिवोपनिषद्	संपूर्ण	—	६	"	सं. १८३१ प्रा
१९९	इयामोपनिषद् १	"	आथर्वणे सौमत्यग्रंथे ३	"	"	सं. १८३५ प्रा.
२००	फाली उपनिषद् २	"	—	१०	"	रा. १८३३ प्रा.
२०१	अलासुक ३	"	—	५	"	सं. १९४५ प्रा.
२०२	श्रीकृष्णोपनिषद्	अपूर्ण	शंकराचार्य	५	"	१७०९ प्रा.
२०३	संक्षिप्तोपनिषद्प्रकरण	पूर्ण	—	७	"	१८८६ ग्राह्य शु. १ पानि
२०४	हनुमत्-उपनिषद्	"	—	२	"	१९५५ प्रा.

[illegible]

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : VEDANTAS

विषय : वेदांतः ।

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पन्नाणि No of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
Serial No.	Name of the work (title)					

वेदांतः

१	अध्यात्मरामायणमूलं सप्तकांडाः	संपूर्ण	—	१३७	देवनागरी संवत् १९१५ ना वषे माघमासे	संस्कृत श्रुतपक्षे प्रोतिपत्ता गुरौ लिखित
	सर्गाः १४ ग्रन्थाव ४२००					
२	"	"	—	४००	" सं. १७९४ भाद्र शु. ४ गुरौ	
३	" उत्तम लिपि	"	—	४४२	" सं. १८६९ प्रा.	
४	"	" चतुर्थ विस्तीर्णा (2)	—	९८	" सं. १८४१ ना भद्रमासे (3)	
५	"	" बासकावे ४	—	९५	" सं. १८११ प्रा.	
६	महोत्त रत्न	अपूर्ण कृष्णाचार्य पुत्रवेकट	—	६८	" सं. १७३९ प्रा.	
७	अध्यात्ममाला मानसमृतिः	संपूर्ण कृष्णाचार्य पुत्रवेकट	—	१४	" सं. १९१८ प्रा.	
	" मध्यवेदांत	" कुमार कृति	—	८	" सं. १८६९ प्रा.	
८	" मध्यवेदांत	" कृष्णाचार्य	—	८	" सं. १८६९ प्रा.	
९	अपरोक्षानुभूतिः	" मराठी समश्लोकी टीका	१४	" सं. १८३४ प्रा.		
१०	" मूल	"	—	१०	" सं. १९०५ प्रा.	
११	" मूल	"	—	११	" सं. १९१२	
१२	अष्टवक्रगाथा सटीका	" अवधूतानुभूति निदेशरानं वक्रताटीका	५६	" सं. १७३३ वर्षे वर्षे पंच शुद्ध १ (4)		
१३	"	" विदेशर जीका	—	४४	" सं. १७३३	
१४	"	अपूर्ण	—	२५	" सं. १९३६	
१५	आत्मबोधः	संपूर्ण	—	३	" सं. १७७४ वर्षे अश्विन शु. (5)	
१६	" प्रवरण	" शंकराचार्य	—	१८	" सं. १७४६ वर्षे दिवेश्वर लिखित	
१७	"	" शंकराचार्यः संस्कृत टीका (6)	१५	" सं. १९३३ प्रा.		
१८	गोविदाष्टक सटीक (7)	" आनंदगिरिः संस्कृत टीका	१५	" सं. १९१० प्रा.		
१९	जीवन्मुक्ति महोत्सवः					
२०	तत्त्वबोधः प्रति २	" शंकराचार्य बाहुरैवेन्द्र-बानी	२	" सं. १९१३ वर्षे शुचिमासे तिथि १ शुद्ध		
२१	तात्पर्यबोधिनी प्रति १	" रामकृष्णः चित्रदीप व्याख्यान	४६	" सं. १७७५ वर्षे जेष्ठ शुद्ध ५ (8)		
२२	हेतुसिद्धांतविद्योत्तम	" ब्रह्मानंदसरस्वती	३६	" सं. १७५८ वर्षे लिखित		
२३	न्यायमाला	" व्यासोपा	—	२५	" सं. १८१२ प्रा.	
२४	पंचवशी सटीका	" रामकृष्ण रवितानाटक	६०	" सं. १९०३ प्रा.		
२५	पंचपादका विवरण समन्वयसूत्र	" प्रकाशालम (9) [४ वीपिटीका	१९६	" सं. १४७६ प्रा.		
२६	"	अपूर्ण	—	१०९	" सं. १९३५ का. १५ शुद्ध (10)	
२७	पंचीकरणवार्तिक	संपूर्ण सुशेखराचार्य	—	७	" सं. १९३९ प्रा. जयापुरा (11)	
२८	"	"	—	६	" सं. १८३२ वर्षे भावण (12)	
२९	प्रक्रिया कोमुदी	अपूर्ण	—	५७	" सं. १८३५ प्रा.	
३०	प्रणवभाष्य	संपूर्ण	—	२	" सं. १८७१ प्रा.	
३१	प्रत्यक्षतत्त्वविवेकः	अपूर्ण मूलसह व्याख्या (13)	११	" सं. १७५७		
३२	प्रबोधमंजरी	संपूर्ण प. प. वैकुण्ठविष्णु	—	११	" सं. १७०० वर्षे इतिषी नृप (14)	

(1) श्रीद्वावत्यां कृत्तिसप्तकुंडमये वैष्णव कान्धरदासः (2) कांक्ष्यंतं (3) श्रुतपक्षे ११ गुरौ मांशुकुंके वास्तव्य उदीर्य ज्ञाति भट लीला-रेण लिखितः (4) रविवासरे स्वामी श्रुतदासजीनाथ पंथी डोरमासे (5) १ गुहदिने मङ्गलशुभेन (6) सत्त्वोपानंद कृता प्रतीकिकाख्या (7) जीवन्मुक्ति महोत्सव १, जन्मजन् २, नृहरिवदक ३, उन्मत्तालापवतक ४, शिवपूजावतक ५, (8) शुद्धे उमापाल ज्ञातीय ज्योतिर्विद्वान्वात्मवेन हरिणा लिखितं सूरपुरे (9) भगवत्कृतेः 10 केसीमि लिखितं (11) मासे जोशी परमाणंदनं (12) शुद्ध ४ सोमे रतनजी गौरीजी (13) भारतीयो विचारधारायां लिखित 14 विक्रमाब्द समयातीत संवत् १७१७ वर्षे मार्गशीर्ष शुद्ध ४ शमी लिखितम् ।

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રન્થ મંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર.

SHRI BHUVANESWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: VEDANTAS

વિષય : વેદાંત ।

ક્રમાંક Serial No	ગ્રન્થ નામ Name of the Work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પૃષ્ઠાણ No of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ: Scribe & Date
૩૩	પ્રલોચનુષાકર: ૧૦૦ આર્ચાદીપુ	સંપૂર્ણ: શંકરાચાર્ય	-	૧૩	દેવનાગરી	સંવત ૧૮૪૧ પ્રા.
૩૪	બ્રહ્મવિદ્યાશીર્ષા પદ્ધતિ:	વ. ર. વિશ્વમય મુનિ	-	૭	સંસ્કૃત	સં. ૧૮૦૫ વર્ષે લિ.
૩૫	બ્રહ્મવાદ નિરૂપણ	અપૂર્ણ	મત્રનાથ ટીકા	૭	"	સં. ૧૯૪૦
૩૬	બ્રહ્મસૂત્ર મૂલં ૪૦૦ સ્વરૂપ	સંપૂર્ણ અ. ૪	-	૨૨	"	સં. ૧૭૪૦ યો. ૫. ૫ મુદ્રણસરેક
૩૭	બ્રહ્મસૂત્ર માધ્ય ટીકા શ્રી (૧)	-	-	૧૧૫	"	સં. ૧૯૦૫ પ્રા. [અલિખિત]
૩૮	બ્રહ્મસૂત્રવૃત્તિ:	અપૂર્ણ	-	૧૩૭	"	સં. ૧૯૯૦ પ્રા.
૩૯	બ્રહ્મસૂત્રાણિ	સંપૂર્ણ	-	૨	"	શાકે ૧૩૪૮ પદાનવે (૨)
૪૦	"	"	-	૨૧	"	સં. ૧૯૫૦
૪૧	મણિરત્નમાલા પ્રત્યામ ૨૬૦૦	"	ગુરુ. ટીકા	૧૧૧	"	સં. ૧૮૯૭ માગંસીર્ષામાસે (૩)
૪૨	મહાવાક્યવિવેક:	"	-	૩	"	સં. ૧૯૦૨
૪૩	સુસુમ્ન પ્રકરણ	"	-	૨	"	સં. ૧૯૧૮ ફલગુણ કુળ્ય ૧૨ મુબી
૪૪	યોગવાસિષ્ઠ:	અપૂર્ણ	-	૬૦	"	સં. ૧૯૫૦ પ્રા.
૪૫	"	"	મુનસરદેશ	૪૦	"	સં. ૧૮૯૭ પ્રા.
૪૬	"	"	-	૧૧	શારદા લિપિ	સં. ૧૦૬૯ પ્રા.
૪૭	યોગશાસિષ્ઠસાર: પ્રત્યામ ૨૨૪	સંપૂર્ણ:	-	૨૧	દેવ સં.	સં. ૧૦૭૩ વર્ષે માગંસીર્ષામાસે (૪)
૪૮	વજ્રસૂત્રી	" શાકરાચાર્ય	-	૩	"	સં. ૧૯૧૦ પ્રા
૪૯-૫૦	ચિદ્રત્નપ્રભાવક ૧ નિર્ગમ્યશક ૨	"	-	૧૧	"	સં. ૧૯૦૨
૫૧	વાક્યવિવૃત્તિ:	અપૂર્ણ	-	૪૧	"	સં. ૧૭૧૧
૫૨	વેદમુક્તિ: શ્રુતિગ્રન્થ	"	-	૪૭	"	સં. ૧૮૩૨
૫૩	વેદાંત તત્ત્વ	"	-	૫૫	"	સં. ૧૭૬૧ પ્રા.
૫૪	વેદાંત પરિમાણ	"	-	૨૭	"	સં. ૧૯૧૨
૫૫	વેદાંતસાર: સટીક	સંપૂર્ણ	સુબોધિની મામ્ની (૫)	૮૮	"	શાક ૧૫૧૦ મુદ્રિતમાસે (૬)
૫૬	"	" વ. ૫ સદાનંદ:	-	૧૫	"	શાકે ૧૭૭૮ યજ્ઞમાસે (૭)
૫૭	"	"	-	૨૧	"	સં. ૧૯૧૧ પ્રાક: મિથેલી (૮)
૫૮	"	" શુદાનન્દકૃત	-	૧૧	"	સં. ૧૮૯૧ જે. છ. ૧ ચર્માનન્દકર્તા
૫૯	"	"	-	૧૩	"	સં. ૧૮૩૫ પ્રા
૬૦	"	"	-	૧૬	"	સં. ૧૯૧૧ પ્રા.
૬૧	૮: ૧૭ શક્તિપરાક્રમ: ૧ (૭)	"	-	૨૫	"	સં. ૧૯૩૧
૬૨	વ્યાસ ગુણાદ્યક	"	-	૩	"	સં. ૧૯૪૦
૬૩	શારીર મીનાંતા સમાધ્ય	" ભીષ્મ કરાચાર્ય મધ્ય	૫૦૦	"	"	સં. ૧૮૮૧ શાકે ૧૭૪૫ (૧૦)
૭૦	"	અપૂર્ણ	-	૧૨૨	"	સં. ૧૮૩૬ પ્રા.
૭૧	શ્રીકંઠમાધ્ય	સંપૂર્ણ શ્રીકંઠ (૧૧) શ્રીકંઠશિવાચાર્ય	૧૮૭	"	"	સં. ૧૭૪૮
૭૨	શ્રુતિમૂલં સંગ્રહાચ્ય પ્રકરણ	" પૂર્ણ (૧૨)	૫૮	"	"	સં. ૧૮૪૦
૭૩	સંસ્કૃતપ્રદ: બ્રહ્મનિરૂપણ	" કમીરવંશી	-	૪૧	"	સં. ૧૯૫૨ યો. ૫. ૫ મુદ્રણ (૧૩)
૭૪	સિદ્ધાંત જ્યોત્સ્વ: ત. ડી. સિ.	"	-	૨૮	"	સં. ૧૯૧૫ રાવલ જ્યોત્સ્વના રમણ
૭૫	સિદ્ધાંતચિન્તુ: સત્માધ્ય:	" શ્રીમદ્ગુણ સંસ્કૃતી	-	૩૪	"	સં. ૧૮૩૧ પ્રા.
૭૬	હસ્તામાલક	" પરમામંદ મિશ્ર:	-	૧૪	"	સં. ૧૯૧૧

(૧) શ્રી આનંદતીર્થ નિર્ણયિતરય બ્રહ્મસૂત્ર માધ્યસ્ય અવતીર્થ નિર્ણય ટીકા (૨) ગામવે પીઠાલિપિદ્વયમાં ચક્રાણિ દ્વયે (૩) માગંસીર્ષામાસે કુળ્ય અમાસાદ્યા બુધે ગોંડલપ્રામે વ્યાસ ઓ ૫ શિશ્યાંકારણજ ૪૦૫ માધ્યમીદાત્મજેન લિખિત । અરેમપ્રામે રાવાશિયાજ અરેખા દેવ દેવાગીધિજયરાજ્ય વર્તેતે મુદ્રણજ્યો નયુમી સાનુજ: વર્તેતે (૪) માધ્યમમાસે પિતૃપક્ષે ૫ રવિવિને સમિતનગરે શિશિરાશ્વાતીય કુળજીમુદ્રણ અગજીમનેન લિખિત (૫) નામ્ની સંસ્કૃત ટીકા વૃત્તિ ૪૦૫ સરસ્વતી (૬) શિશિમાસે અનુવર્તિ તિથી આર્ચવવાસરે (૭) યજ્ઞમાસે શુભ પૂર્ણિમાર્ચ ગોપાલ સહા । નમ મટેન શરૂ । (૮) વિદેશીનાન સંસ્કૃતે માધ્ય. છ. સોમ (૯) શક્તિપરાક્રમ: ૧ અવશેષ: ૧, અલિસારણ ૨, મુદ્રિકા-મેદનાક્રમ: ૪, અવસ્થા વ્યવસ્થા ૫ પ્રત્યક્ષ ૬, મારતાલિપિ સં. ૭, ૧૦. ૧૭૪૫ આશ્વિન કુળ્ય શુક્રે ૨ (૧૧) શ્રીકંઠશિવા-ચાર્ય નિર્ણયિત રમણીનાંતા (૧૨) પૂર્ણ પ્રત્યામંદ સંસ્કૃતી (૧૩) માગંસીર્ષા ૧૫ મુદ્રણ ગુજરાતવેરાવરે વામ તાલમે લિખિત રાણેગવિવા

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રન્થ ભંડાર, ગોંડલ - સોરાષ્ટ્ર.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: VYAKARAN

વિષય : વ્યાકરણ ।

ક્રમાંક	ગ્રન્થ નામ	કર્તા Author	ટીકા	પૃષ્ઠાણિ	ભાષા-લિપિ	લેખક-મિતિ:
Serial No	Name of the Work (Title)	સંપૂર્ણ-અસંપૂર્ણ Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Date

વ્યાકરણ ।

૧	અષ્ટાધ્યાયી	સંપૂર્ણ પાણિનીયા	-	૪૨	દેવનાગરી	સંવત ૧૬૩૮ પ્રા.
૨	"	" પાણિનીય સૂત્રાણિ ૩૮૧૬-	-	૪૮	સંસ્કૃત	સં. ૧૮૬૧ શાક ૧૭૩૮(1)
૩	"	"	-	૫૮	"	શાક ૧૭૪૨ પૌષ શુક્ર ૨
૪	"	"	-	૪૧	"	સં. ૧૮૭૧ પ્રથમ પૌષ શુ (2)
૫	"	"	-	૧૧૦	"	સં. ૧૯૧૯ વૈશાખ શુદ ૧૧
૬	અતિપ્રકારિકા સટીકા	"	-	૫	"	સં. ૧૯૩૦ પ્રા.
૭	અર્થવદ્ધાતુરપ્રત્યય:	"	-	૩	"	સં. ૧૯૫૪ વૈશાખ શુદ ૧૧ વળી
૮	અવ્યયાર્થા: સ્વરાદિનિપાતા:	"	-	૩	"	સં. ૧૭૩૮ પ્રા.
૯	કાતંત્રં દોર્ગસિદ્ધિ સહિત	"	-	૪૦	"	સં. ૧૯૬૭ મચ શુ. ૫
૧૦	કારક પ્રયોગ:	"	-	૫૩	"	સં. ૧૮૫૭ 'એ' લિપીકૃત
૧૧	કારક પ્રક્રિયા	"	-	૩૦	"	સં. ૧૮૬૭ પ્રા.
૧૨	કાશિકા વિચરણ પંચિકા	" કિનેમ્સે પિ (3)	-	૪૯	"	સં. ૧૯૭૫ પ્રા. સં.
૧૩	કૃતપ્રત્યયાન્તા: શબ્દા:	"	-	૪	"	સં. ૧૯૧૬ પ્રા.
૧૪	ચિંતામણિ શબ્દ:	"	-	૨૮	"	સં. ૧૯૧૦ પ્રા.
૧૫	ઘાતુતરંગિણી લોપજ ઘાતુપાઠ પંચિકા	" લોપજ મહાશ્વક: (4)	-	૬૧	"	સં. ૧૮૭૩ મૃ. પીપ્પા સિ ૧૮૭૫
૧૬	ઘાતુપાઠ:	"	-	૧૯	"	સં. ૧૭૪૦ પ્રા.
૧૭	૧ " ૨ પ્રયોગ વિવેકસંગ્રહે કારકચર્ચા	" મીમંસેનકૃત: વરચર્ચકૃત	-	૨૦	"	સં. ૧૯૨૫ પૌષ કૃ ૧૪ ચંદ્રે
૧૮	ઘાતુપાઠ:	"	-	૧૮	"	સં. ૧૯૧૮ પ્રા.
૧૯	ઘાતુરૂપાવલી	"	-	૧૪	"	સં. ૧૭૦૪ પ્રા.
૨૦	"	"	-	૧૬	"	સં. ૧૯૧૨ તપસ્વે શુક્ર ૨ મુલે
૨૧	નજૂનાદ ટિપ્પણી	" દ્વાપર:	-	૩૩	"	સં. ૧૭૭૨ પ્રા.
૨૨	પદ્મમંજરી ભાગ ૧	" હરદસામિભ:	-	૫૮	"	સં. ૧૯૦૮ પ્રથમ માસપદ(5)
૨૩	" ભાગ ૨	"	-	૧૧૪	"	સં. ૧૯૦૮ માસપદીય શુદ ૧૫
૨૪	" ભાગ ૩	"	-	૬૭	"	સં. ૧૯૦૯ પૌષ શુદી ૧૫ વંદે
૨૫	" ભાગ ૪	"	-	૫૩	"	સં. ૧૯૧૮ જ્યેષ્ઠ વસ ૧૩ રતી
૨૬	"	અસંપૂર્ણ	-	૭૮	"	સં. ૧૭૪૪ પ્રા.
૨૭	પ્રોટ મનેરમા પૂર્વાર્થ (6)	સંપૂર્ણ શ્રી મહેજી સીક્ષિત	-	૧૮૧	"	સં. ૧૮૫૩ રવિથી વદશત્રવ(7)
૨૮	" ઉત્તરાર્થ	"	-	૧૭૭	"	સં. ૧૮૫૪ મિતિ
૨૯	પરિભાષેન્દુસંહત	" શ્રી નાગોજી મદ	-	૮૧	"	સં. ૧૮૫૬ મિતિ
૩૦	"	"	-	૪૯	"	સં. ૧૮૩૨ મિતિ દ્વિતી (8)
૩૧	"	"	-	૭૦	"	સં. ૧૭૩૧ વાક્યન કૃત્ત(9)
૩૨	"	"	-	૬૩	"	સં. ૧૯૩૮ પ્રા.
૩૩	પરિભાષા વિચરણ	"	-	૨૮	"	સં. ૧૯૮૧ પૌષ શુદ ૧૯
૩૪	પરિભાષા વિવૃત્તિ વ્યાકરણ	"	-	૩૭	"	સં. ૧૮૬૯ પ્રા.
૩૫	પૂર્વપાણિનીય	"	-	૧	"	સં. ૧૮૩૫ પ્રા.
૩૬	પ્રક્રિયા કોમુરી	" રામચંદ્રાચાર્ય:	-	૧૦૫	"	સં. ૧૯૨૦ વાર્ષિક કૃત્ત(10)

(1) ૧૭૩૪ શ્રાવણ વસ ૫. મુલવાસરે (2) શુદ ૫ સામે ધિવૃક્ત રવે રામોદશુત હરજીવ (3) કિનેમ્સે સરવેરીય વિચિત્રા (4) મહાશ્વક શ્રી હર્ષકીર્તિ વિચિત્રા (5) માસપદ વદ ૬ મુલ પ્રા. કમરે (6) પૂર્વાર્થ સિવાંત કોમુરી વ્યાકરણ (7) વદશત્રવ પ્રમાણત્ર શ્રી સ્વમીય સુરે: સુતના. શ્રી મહેજીસીક્ષિત વિચિત્રાનાં મનોમાર્ગ પૂર્વાર્થ સમાપ્ત (8) રવિ મીમંસે વ્યાકરણ નામ સતીગર્મજ નાગોજી મદકૃત: (9) કૃત્ત ૧૩ મીમે. રવિત્રી મદ સપામ્યાચ ન મદ શિવમદુત સતી. જ નાગોજી મદકૃત: (10) શુદ ૧૪ ભાગો દ્વિતી રમચંદ્રાચાર્ય વિચિત્રાનાં પ્રકેશકોમુરી કૃત્ત સમાપ્ત ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल-सौराष्ट्र.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: VYAKARAN

विषय: व्याकरण ।

क्रमांक Serial NO	ग्रन्थ भंडार Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक मिति Scribe & Date
३६	प्रक्रिया कौमुदी व्याख्या भाग १ तथा २	संपूर्ण रामचंद्राचार्य	रामानुजा(1)	११६ ७३	देवनागरी संस्कृत	भाग १ सं. १५०१(2) भाग २
३७	"	" कुष्माचार्यसुतः	-	१११	"	सं. १७०२ सहस्रमासे(3)
३८	प्रक्रिया सारः	" काशीनाथः	-	४२	"	सं. १६८४ वर्षे भाद्रपदा(4)
३९	प्रयोगसूत्रिका पद्यात्मक व्याकरण	" राजाजामदेव 5)	-	११	"	सं. १८८८ काल्युग वद ५(6)
४०	प्रयोग विवेकसंग्रहः	" वरकपेः ज्योत्स्नाभ्याख्या	-	६१	"	सं. १८११ प्रा.
४१	मत्स्यसिद्धांत कौमुदी	" चविठी कंटीर दराजकृत -	-	१३९	"	सं. १८१० प्रा.
४२	महाभाष्य प्रदीपः पतंजली(7)	" जगद्वन्तु केयटकृतः -	-	९९	"	सं. १७२१ प्रा.
४३	" तृतीयाध्यायस्य प्रथमपादः	अपूर्ण	-	३२	"	सं. १७२१ प्रा.
४४	" अष्टमाध्यायः	"	-	३८	"	सं. १७३७ प्रा.
४५	" व्याख्या पतंजलीभाष्योपरि	" नागेशभट्टः सतीशिवसुतः	-	१६१	"	सं. १६९५ प्रा.
४६	लघुशब्देन्दुशेखरः सिद्धांत(8)	" नागेशभट्टः(9) सिद्धांत(10)	-	१०८	"	सं. १७२९ प्रा.
४७	" टीका	"	टीका	२५०	"	सं. १६४३ प्रा.
४८	" समाधाता	"	-	२०३	"	सं. १६७३ प्रा.
४९	" अवधाता	"	-	१३६	"	सं. १७२७ प्रा.
५०	लक्षणावलिः	संपूर्ण श्रीगणेश(11)	-	५	"	सं. १९१५मा कार्तिक वद(12)
५१	विश्वघ मुल्लमंडन टीका	"	-	१७	"	सं. १७१२ भाद्रपद शुद्ध(13)
५२	विभक्त्यर्थः	"	-	९	"	सं. १७२१ प्रा.
५३	वृत्तिवार्तिक	अपूर्ण विहित	-	१७	"	सं. १७४२ म च कुण्ड १२ सोमे
५४	वैदवाकरणभूषणं अत्र(14)	" कौंडमद्वक्त	-	३२७	"	सं. १९२१ ज्येष्ठमासे सिद्धे(15)
५५	" सारः	" पद्मनाभः प्रमाण(16)	-	५८	"	सं. १८३४ प्रा.
५६	" स्फोटकारः	"	-	३८	"	सं. १७०१ प्रा.
५७	"	"	-	४१	"	सं. १७०४ प्रा.
५८	" सारस्य कसिटीका	" कौंड पंडितः संतु(17)	-	४६	"	सं. १८२१ प्रा.
५९	शक्तिप्रहः	"	-	८	"	सं. १७३५ प्रा.
६०	शक्तिवाक्यः	अपूर्ण	-	१४	"	सं. १७०२ प्रा.
६१	शब्दकोस्तुभः प्रथमाध्याय(18)	संपूर्ण भट्टोजीभट्टेन(19)	-	२७३	"	सं. १६९९ प्रा.
६२	" प्रथमाध्यायस्य(20)	" प्रथमाध्यायः (21)	-	११३	"	सं. १९०९ प्रा.
६३	शब्दखण्ड (श. सि)	"	-	३९	"	सं. १७९३ प्रा.
६४	शब्द रत्न	अपूर्ण	-	५४	"	सं. १६५७ प्रा.
६५	शब्दरूपवल्ली	संपूर्ण	-	२१	"	सं. १८५४ प्रा.
६६	शब्दव्युत्पत्तिः	"	-	११	"	सं. १९०९ महा व. १२ शुद्धे
६७	शब्दशक्ति प्रकाशिका	अपूर्ण रामचंद्र	-	३१	"	सं. १८३२
६८	शब्देन्दुशेखर काव्यता(22)	संपूर्ण चंद्रकला व्याख्या	-	६१	"	सं. १८७९ माघ शुद्ध ११
६९	" टीका	"	-	११८	"	सं. १८३५ प्रा. [रामानुजासरे
७०	" व्याख्या	"	-	६४	"	सं. १९८४ प्रा.

(1) रामानुजाचार्य सुतुषी वृत्तिवाच्य विरचिता (2) १५७३ आमहायन शुद्ध ५ शुद्ध (3) सहस्रमासे शुद्ध ६ जीवदिने । इति श्री-
मत्स्यसंहसपरिभाषकाचार्य पू पा. श्री गोपालाचार्य शिष्य कुष्माचार्यसुत रामचंद्राचार्य विरचिता । (4) भाद्रपदा पंचम्यां श्री
पुष्पावती नगरी (5) राजाजामदेव चौहानकृत (6) वद ५ चंद्रावती वदन चंद्रचक्रेश्वरीर श्री विक्रमांक तत्त्वज्ञान ग्रन्थ । चौहान
वंश तिलकः पठनाधि नाथो राजापर जयति वैष्णवदेवनामा ॥२॥ (7) पतंजली महाभाष्योपरि (8) सिद्धांतकौमुदी टीका अत्र ननु सक्त
पर्याप्त (9) नागेशभट्टः सतिशिवसुतः (10) सिद्धांतकौमुदी टीका (11) श्रीगणेश काव्यसीयरचिता (12) वद ८ सोमे अत्र चक्र
तस्या मत्र कालिदासेन (13) शुद्ध ५ सोमे नवानगरमध्ये लिखिता (14) अत्र भट्टोजीभट्टेन कविः (15) सिद्धे पूर्ण शुद्धमासे
(16) प्रमाण पाराशर पारीण धुरीण रंगोजी भट्टाचार्य कौंडमद्वक्त (17) कौमुदीपुत्र देवगोपालाचार्य विरचिता काव्यटीका (18) प्रथमाध्यायस्य
प्रथमे पादे नवमाहिक (19) भट्टोजीभट्टेन लक्ष्मीधर सुतनाकृत (20) प्रथमाध्यायस्य चतुर्थ पादे चतुर्माहिक (21) प्रथमाध्यायस्य समाप्तः
पार्श्व (22) काव्यता व्याख्या अखिल पण्डित सार्वभौम जगत्सर्व कुम्भारवर्तक श्रीमद्वैदिकभाष्यम भरविभिन्न कविपदा चंद्रकला व्याख्या

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્તલિખિત ગ્રન્થ મંડાર, ગોંડલ-સૌરાષ્ટ્ર.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, MSS. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: VYAKARAN

વિષય: વ્યાકરણ ।

ક્રમાંક Serial NO	ગ્રન્થ મંડાર Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાણ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક મિતિ Scribe & Date
૭૧	સાચીમાળ્ય	અપૂર્ણ	-	૧૧	દેવનાગરી	સંવત ૧૮૧૦ પ્રા.
૭૨	શાસ્ત્રિક વિચાર:	સંપૂર્ણ	-	૧	સંસ્કૃત	સં. ૧૮૩૨ પ્રા.
૭૩	સમ્યામરણ: રસમાલા ટીકા	અપૂર્ણ ૧ ઉલ્લાસ	-	૧૪૧	"	સં. ૧૧૬૧ ડી.
૭૪	સંસ્કૃત મંજરી	સંપૂર્ણ મહાદેવત્રિપાઠી	-	૮	"	સં. ૧૮૧૧ પ્રા.
૭૫	સમાસ ચંદ્રિકા	"	-	૮	"	સં. ૧૧૦૩ પ્રા.
૭૬	સમાસ તત્ત્વ	અપૂર્ણ	-	૧૭	"	સં. ૧૮૬૧ પ્રા.
૭૭	સમાસસૂત્ર વ્યાખ્યા સિ. કૌ.	"	-	૧	"	સં. ૧૮૦૪ પ્રા.
૭૮	સાર સિદ્ધાંત:	"	-	૬૧	"	સં. ૧૬૪૦ પ્રા.
૭૯	સાંસ્કૃત વ્યાકરણ (૧)	સંપૂર્ણ પરમહંસ (૨) દ્વિતીયી કથામંક ૭૦	"	"	"	સં. ૧૭૧૪ વર્ષે ઝેટ્ટ શુ ૨
૮૦	"	"	મઠીદાસમઠ (૩) ૩૦૭	"	"	સં. ૧૧૦૧ વ. ક. ૧ મૌ.
૮૧	"	"	"	૧૦૬	"	સં. ૧૧૨૬ માષ વ. ૧ ગુહ (૪)
૮૨	"	"	આસ્વાત (૫) ૧૦૦	"	"	સં. ૧૪૦૬ માષ ક. ૧ સોમે
૮૩	"	"	"	૫૭	"	સં. ૧૮૮૧ શ્રાવણ કૃષ્ણ ૫ ગુહ
૮૪	"	"	૧-૨ આશ્વિતિ: ૧૦૭	"	"	સં. ૧૭૩૬ પ્રા.
૮૫	"	"	૧ આશ્વિતિ: ૫૭	"	"	સં. ૧૮૨૬ ડી
૮૬	"	"	૨-૩ આશ્વિતિ: ૨૮	"	"	સં. ૧૭૧૩ શ્રી. શુ રાધા ત્રિપો. મૌ
૮૭	"	"	૧ આશ્વિતિ: ૫૮	"	"	સં. ૧૮૨૧ વા.
૮૮	"	"	૨-૩ આશ્વિતિ: ૪૯	"	"	સં. ૧૯૨૬ ડી.
૮૯	"	" શ્રી (૬)	તદ્વિત પ્રતિભા ૩૯	"	"	સં. ૧૧૦૪ ડી.
૯૦	"	"	આસ્વાત પ્રતિભા ૫૪	"	"	સં. ૧૮૮૬ માર્ગ કૃષ્ણ સોમે
૯૧	"	"	પ્રથમાશ્વિતિ: ૨૯	"	"	સં. ૧૭૧૦ આશાઢ વ. ૨ મૌ
૯૨	"	અપૂર્ણ	સિદ્ધરામાવલી ટીકા ૨૧	"	"	સં. ૧૯૩૧ ડી.
૯૩	"	"	"	૧૫	"	X X
૯૪	"	"	"	૧૨	"	X X
૯૫	"	"	પ્રથમાશ્વિતિ: ૩૪	"	"	સં. ૧૯૩૧ વા.
૯૬	"	"	"	૪૫	"	સં. ૧૯૧૯ વા.
૯૭	"	"	-	૩૧	"	સં. ૧૯૦૪ વા.
૯૮	સિદ્ધાંત ચંદ્રિકા	"	-	૫૯	"	સં. ૧૮૩૧ વા.
૯૯	"	"	-	૨૭	"	સં. ૧૮૧૧ વા.
૧૦૦	સિદ્ધાંત કોમુદી	" પૂર્વાર્ધ પ્રથમાશ્વિતિ: ભાગ ૧	૧૨૯	"	"	સં. ૧૮૩૨ વા.
૧૦૧	"	ઉત્તરાર્ધ	ભાગ ૨ ૧૭૬	"	"	"
૧૦૨	"	તુલિયાશ્વિતિ:	ભાગ ૬ ૧૦૯	"	"	"
૧૦૩	"	પૂર્વાર્ધ	ભાગ ૧ ૧૬૧	"	"	સં. ૧૯૧૪ વા.
૧૦૪	"	ઉત્તરાર્ધ	ભાગ ૨ ૧૪૬	"	"	"
૧૦૫	" પ્રોઠ મનોરમા વ્યાખ્યા	પૂર્વાર્ધ	ભાગ ૧ ૩૯	"	"	સં. ૧૮૧૦ આશાઢ વદ ૧
૧૦૬	"	ઉત્તરાર્ધ	ભાગ ૨ ૨૧૨	"	"	સં. ૧૮૧૧ આશ્વિન
૧૦૭	"	પૂ. ઉત્તરાર્ધ	ભાગ ૧-૨ ૩૦૦	"	"	સં. ૧૮૪૪ વા.
૧૦૮	" સુવોચિની વ્યાખ્યા	તિગત-પર્યત	અવકાશકૃપા ૭૪	"	"	સં. ૧૮૧૫ કાર્તિક વદ ૨
૧૦૯	"	વૈદિકલક્ષ્ણ:	-	૨૧	"	સં. ૧૮૬૬ વા.
૧૧૦	"	કોપર્યવપર્યત	-	૫૭	"	સં. ૧૮૬૬ વા.

(૧) વ્યાકરણ (સારસ્વતી પ્રતિભા) મૂલમાત્ર (૨) પરમહંસ પરિમાર્જકાચાર્ય અનુભૂતિ (વસ્તુમાર્જકાચાર્ય: ઉત્તમાધારા: (૩) મઠીદાસમઠ વ્યાખ્યા (૪) ગુહવાઘરે લિખિત રાજકુળે રાજકોટ મ.એ રાવલ પ્રાણશંકર વિષયમાન ગટાચંકર (૫) આસ્વાત પ્રતિભા ૨-૩ આશ્વિતિ: (૬) અનુભૂતિ, સ્વરૂપાચાર્ય:

SHRI BHUVANESHWARI PLTH. MRS. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: YOGA / GITA विषयः योगः / गीता ।

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author	टीका	पत्राणि No. of Leave,	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date.
Serial No.	Name of the work Title	संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	Commentary			

योगः ।

१ गोरक्षस्तक	संपूर्ण	२०३ अंशक *	१० वेदनागरी	घं. १८७१ प्रा.
२ जोगारंभः	"	[* गो.स्तंभ]	१३ संस्कृत	घं. १८९५ शांके १०६० ÷
३ द्वादशशब्दविधिः (ध्यानश्रमाभिः)	—	—	१० "	घं. १८३२ अष्टादश. १० (१)
४ पंचनाडी पंचप्रकाशः	अपूर्ण	—	८ "	सं. १०६९ प्रा. ÷ माघ छ. १ मीमे
५ युद्धजयोपायः	"	—	३ "	सं. १८७५ प्रा.
६ योगप्रदीपः (हानार्णवोत्तरांतः)	"	हिंदी टीका	८६ "	हिंदी घं. १९३९ माद्रा वद ३ (२)
७ योगशास्त्रं हैमो	संपूर्ण	—	१६१ "	घं. १०४५ वेद. छ. ७
८ स्वरज्ञानदीपकः मूक गृह गुज.	संपूर्ण	—	१७ "	सं. १८६३ प्रथम भा. वद ८ गुज
९ स्वरोदय मूलभाज	"	—	७५ "	घं. १८३७ भा. छ. २ गुज
१० स्वरोदयशास्त्रं	"	अपूर्ण गुजराती टीका	१६ "	घं. १८४९ प्रा.
११	"	—	१३ "	सं. १९४० प्रा.
१२ सरोदा हिन्दी	संपूर्ण	—	७ "	घं. १९०० प्रा.
१३ सरोदा (गोरखी) चोपडी	"	—	१०० "	गुजराती घं. १८६५ प्रा.
१४ ज्ञानदीपकः १३१ अंशो	अपूर्ण	—	१३ देव.	घं. सं. घं. १९१३ प्रा.

गीता ।

१	श्रीमद् भगवद् गीता ७२१ (३)	संपूर्ण	मूलभाषा	११	सं. १२११ वर्षे उद्भूत (६)	
२	कादमीरशाठानुशासिनी	"	मूलभाषा	३१	सं. ११११ दिनांक १००० प्रा.	
३	मोक्षान्नोपलिखिता	"	"	२०	सं. १११५ मास १ (६)	
४	"	"	मूलभाषा न्यास X	२४	सं. १११२ दिनांक १ (६)	
५	"	"	प्राचीना [X] भाषागदिता	३७	सं. १११२ सा. दि. १००० प्रा.	
६	"	"	अ० ४ मूलसह (7)	२-८०	सं. १७०२ वर्षे कार्तिक-शु. (३)	
७	"	"	—	१६	सं. १७४८ दिनांक १८ मेने	
८	"	"	अपूर्ण	१३	सं. १७७४ दि. शु. २ शुक्र	
९	"	"	मुद्रासंज्ञान संहिता	—	१७३	सं. १८०९ मा. व. ११
१०	"	"	मूलभाषा न्यास (9)	५२	सं. १८१८ मा. भा. शु. १० (10)	
११	"	"	—	६३	सं. १८२१ मास ६ शु. १२	
१२	"	संपूर्ण	मूलसह (11)	२२९	सं. १८४१ सा. दि. १००० (12)	
१३	"	"	श्रीवरी टीकाशुद्धा	१४७	सं. १८४५ मा. भा. (13)	
१४	"	"	श्रीवर स्वाामी (14)	११९	सं. १८५७ सा. दि. १००० (14)	
१५	"	"	अ० ११ —	३४	सं. १८९० मास ६ शु. ८	
१६	"	"	मूलसह प्रथमाभा टीका	४२२	सं. १८८८ दिनांक १० शु. १०	
१७	"	"	मूलभाषा न्याससंज्ञान संहिता	४८	सं. १९१२ सा. १०१० (16)	
१८	"	"	श्रीवरी टीका	१५५	सं. १९२१ प्रा.	
१९	"	अपूर्ण	—	५०	सं. १८०० प्रा.	

(1) शु. १० लि. प्रणपुतीजी छत्रपुर (2) वर ३ जैन योगशास्त्र शुभचर्चा १ रवि (3) ७९३ अक्षरों का कारकीर्ण ठातुवालि (4) ज्येष्ठ शुक्र ५ मंगलाक्षर पाठनाथी गणपतप्रसादेन स्तम्भतये लिखित प्रतिदिने १९५० वर्षे वैश्व पुण्य स्थान पुनर्विद्विषयका (5) शु. १ प्रतिदि मंदवासरे (6) वद ६ बार शुभ । लि. बाबुरेण कायस्थ (7) मूलमहसंतत टीका सविता (8) शु. १३ वा. कौण्यपाठ लिखित कल्याण । (9) नासपान संहिता । (10) शु. २ तेमनगरे । मयुरे वारसत इति जे १ पुजेन लिखित । (11) मूलमहसंतत तथा जूनी गुजराती टीका (12) १७०६ क. व. १ मयी धनी (13) माथे हजयके मयी सोमवारे (14) स्वाधीकृत सुवैधिनी टीका (15) १७२१ ज्ये. शु. १ रविवासरे (16) कात १ वद १ सोम ७ शुभ पुस्तक लिखित नामतरे श्री पूजे करमाने ।

श्री मुवनेश्वरी पीठ, हस्त लिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सोराष्ट्र.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, MS. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: GITA, IATAR GITA विषय : गीता । इतर गीता ।

क्रमांक Serial No	ग्रन्थ नाम Name of the Work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि Language & Script	लेखक-मिति Scribe & Date
२०	श्रीमद् भगवद् गीता	संपूर्ण	-	७३	देवनागरी सं. १७०० प्रा.	
२१	" उत्तमाक्षरा तथा (१)	"	पुस्तिकाकारा -	१३५	संस्कृत सं. १८०० प्रा. पत्र ११, २४, ७	
२२	"	"	-	८२	" सं. १८०० प्रा. पत्र ११, १०	
२३	"	"	बालभेषजी सं. टीका	१५६	" सं. १९४५ प्रा.	
२४	"	"	मूलग्रह गुणरातो टीका	१७५	" सं. १८६५ प्रायः	
२५	" तथा (२)	संपूर्ण	न्यासयोगानुता	१३२	" सं. १८२२ प्रायः	
२६	"	अपूर्ण	मूलग्रह गुणरातो (३)	६४	" सं. १९५० प्रायः	
२७	"	संपूर्ण	-	१०१	" सं. १९९० का. शु. ७ म. तिजाना	
२८	" १९ तयः अध्यायः	"	-	३५	" सं. १७२४ वर्ग पुस्तिका ३२	
२९	"	अपूर्ण	सुबोधिता टीका	५७	" सं. १७०८ प्रायः	
३०	"	"	प्राचीनभाषा	२२	" सं. १९३२ प्रायः	
३१	"	संपूर्ण	न्यासयोग संहिता	४६	" सं. १९०१	
३२	गीतामोहाख्यं	अ. १८	-	४०	" सं. १८७७ भाग. व. १३ रविमोहा	
३३	"	"	-	६७	" सं. १९८० भाग शु. १० मीने	
३४	"	अपूर्ण	-	१८	" सं. १८०० प्रा.	

इतर गीता ।

१	अर्जुन गीता (१०५ श्लोकाः)	संपूर्ण	१६	सं. १८५० प्रा. १०
२	अष्टावक्र गीता	"	२७	सं. १९५० प्रा. १०
३	ईश्वर गीता	अपूर्ण	८४	सं. १८५० प्रा. १०
४	अर्जुन गीता (१०५ श्लोकाः)	संपूर्ण	१५	सं. १८८० प्रा.
५	गुणेश गीता, ५५ भाष्य ५५ श्लोका (४)	"	२२	सं. १८८० प्रा. ५५ १३, १४, १५
६	शुद्धगीता	"	४	सं. भाषागुर्वरी * २४, १८, ५, २५
७	१०५ (१०५ श्लोकाः)	अपूर्ण	३	१०५ सं. X
८	१०५ (१०५ श्लोकाः)	अपूर्ण	१८	सं. १८१० प्रा.
९	१०५ (१०५ श्लोकाः)	अपूर्ण	२३	" " "
१०	१०५ (१०५ श्लोकाः)	"	४	" " "
११	दशगीता	"	१	सं. १८५० प्रा. १३ २४
१२	मादवगीता	अपूर्ण	४	सं. १९१४
१३	१०५ (१०५ श्लोकाः)	"	५	सं. १९१४ पुष्पेताम मासे कु. ८ भा. १२
१४	पांडवगीता	"	५	सं. १९१४ का. १८२५ (५)
१५	"	"	५	सं. १८४९ उदे. १२ (६)
१६	"	"	५	सं. १८१० प्रा.
१७	"	अपूर्ण	२	सं. १९१० प्रा.
१८	"	"	१	सं. १८०० प्रा.
१९	"	"	१	"
२०	ब्रह्मगीता (१०५ श्लोकाः)	अपूर्ण	२५	सं. १९१३ प्रा.
२१	" (१०५ श्लोकाः)	अपूर्ण	१	X

(1) तथा (१) सहस्रनाम स्तोत्र (२) गोप्यस्तवः (३) अनुसूतिः (४) गणेशप्रीतिः (५) तथा (१) विष्णुसहस्रनाम (२) श्रीगणेशस्तवः (३) वेदानुसूतः (४) गणेशप्रीतिः (५) गुजराती टीका अ० ५ पृ० (६) गुडरा तथा (१) नारायणकवच (भागवत) (२) सप्तश्लोकी गीता (३) रामगीता (शुक्लात्मभाष्ये) (४) हनुमानकवच (५) कर्मणश्चक्र (नारदतंत्र) (६) अर्जुन गीता (७) १२१ त्रयीक श्रुत १५ सुरी । (८) श्रुत ११ मंत्र । ७. स्त्री भद्राबाई गोरक मध्ये ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, MSS. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: IATAR GITA. | AYURVEDA विषयः इतरगीता । आयुर्वेद ।

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author	टीका	पत्राणि	भाषा- लिपिः	लेखक-मितिः
Serial No.	Name of the work Title	Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves.	Language & Script	Scribe & Date.
२१	भीम गीता	अपूर्ण	जुनी गुजराती	११	देवनागरी	संवत् १८२० प्रा.
२३	"	"	गुजरातीभाषा काव्य	३	संस्कृत	सं. १८१० प्रा.
२४	यम गीता (जम गीता)	संपूर्ण	भाषा	४	"	सं. १७१५ प्रा.
२५	"	अपूर्ण	-	३	"	सं. १८५० प्रा.
२६	राम गीता । सटीका	संपूर्ण	-	१७	"	सं. १९०१ आश्विन शु. ११
२७	" (अर्थात्सामाज्ये)	-	-	१५	"	सं. १८९० प्रा.
२८	वसिष्ठसार गीता (योगवसिष्ठ)	अपूर्ण	-	१७	"	सं. १८७० आश्व वद २ रवि
२९	शिव गीता	"	-	४	"	सं. १८५० प्रा.
३०	सप्तश्लोकी गीता	"	-	४	"	सं. १८१० प्रा.
३१	सती गीता स्वामीनारायण (१)	संपूर्ण स्वामी (२)	जुनी गुजराती	१५०	"	सं. १९१० स्व भाग. शु. गुजराती
३२	शिष्ट गीता	अपूर्ण	-	१	"	सं. १८४८ मार्गशीर्ष शु. १५ रवी
३३	सप्तश्लोकी गीता	"	-	३	"	X X
३४	सरल गीता श्री वल्लभ संप्रदाय	श्रीतमकुत	भाषा	४४	"	सं. १९४२ स्व भाषा वद (३)
३५	ज्ञान गीता (४)	संपूर्ण नरहरिकृता	-	४१	"	सं. १८८९ मार्ग. शु. मेला कुबेर
३६	अष्टाशक गीता	"	मूल्सह हिंदीटीका	४७	"	सं. १९०७ प्रायः
३७	ब्रह्म गीता (गुरुपुराणे)	"	-	१	"	X X
३८	नारद गीता	"	-	४	"	X X



आयुर्वेद ।

१	अकसंकेत उपचार	संपूर्ण	-	७५	मोदी गुज	संवत् १९७५ प्रा.
२	अष्टांगसंग्रहः आयुर्वेदः	"	-	४०	गुज. लिपि	सं. ३००२
३	अनुपागमजरी	"	-	१८	संस्कृत	सं. १८२७ चैत्र शु. ५ गुप (६)
४	"	अपूर्ण	-	४	"	सं. १८७५ प्रा.
५	अभ्यवेद्यकं शांतिहोषः	संपूर्ण	नकुलपांडवकृतः गुजराती टीका	४९	"	सं. १७३२ वर्षे भाषा (६)
६	"	"	-	४३	"	सं. १८४१ मार्ग. शु. साके (७)
७	अभ्यवेद्यकं शांतिहोषः	"	-	१३९	"	सं. १७४९ वर्षे भाषा वद (८)
८	अभ्यवेद्यकं शांतिहोषः	"	-	३५	"	सं. १९११ वर्षे
९	अष्टांगसंग्रहः सप्तस्थान	"	-	४५	"	सं. १८०५ भाषा वद (९)
१०	"	संक्षिप्त	-	१५	"	X X
११	आधेयसंहिता शरीरसंहिता	संपूर्ण आधेयभाषिते	-	१८२	"	सं. १९५५ प्रा. हिमाली (१०)
१२	"	अपूर्ण	-	३६	"	सं. १९५१ प्रा.
१३	"	"	-	११	"	सं. १८३९ प्रा.
१४	आयुर्वेद महोदधिः	"	-	३३	"	सं. १९०१ प्रा.
१५	ओषधिसंग्रहः	संपूर्ण	-	१३	गुजराती	सं. १९१९ प्रा.
१६	ओषधि कल्पलता	"	-	७	भाषा	सं. १८६१ प्रा. भाषा प्रति लिपिः
१७	कर्मविपाकः सहायकः	"	-	२७९	देव. सं.	सं. १९१९ वर्षे वर्षे (११)

(१) स्वामीनारायण संप्रदायस्य उत्तम वेदक (२) स्वामी गुजराती विरचितः (३) वद ३६ वर्षे भाषा वद (४) भाषा वद (५) भाषा वद (६) भाषा वद (७) भाषा वद (८) भाषा वद (९) भाषा वद (१०) भाषा वद (११) भाषा वद

Subject: AYURVEDA

विषय : आयुर्वेद ।

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पन्नाणि No of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
Serial No.	Name of the work (title)					
१८	कर्मविपाकः सूर्यसिद्धिः	संपूर्ण	-	९	देवनागरी	सं. १८५१ ना. व. २२ शीमुक
१९	कवचलता अक्षपानी १ (१)	"	-	२७	संस्कृत	संस्कृत १९९३ वर्षे
२०	कालिका	"	-	१७	"	सं. १९९० प्रा.
२१	काश्यपसंहिता	"	-	४९६	"	सं. १९९० ना. क. सुगुन (२)
२२	"	"	-	२९९	"	सं. १९९१ मार्ग. शु. ११ रवी
२३	केयदेवनिघंटुः	"	-	१५५	"	सं. १९५२ ना. व. शि. शु. (३)
२४	केशव कल्याण	"	-	२२५	हिंदी	सं. १९९३
२५	कौतुकचिन्तामणिः प्रथम १२५	"	-	११७	देव. सं.	सं. १९९० का. शु. १० शुक्र
२६	गदानमः	अपूर्ण सोढलः	-	१००	"	सं. १९९२
२७	गदसंजीवनी १ (४)	संपूर्ण	-	५०	"	"
२८	गदसुपुराणांतर्गत आयुर्वेद	"	-	९९	"	सं. १९८५ भाद्र. शु. ५ शनि
२९	"	"	-	१५५	"	सं. १९९० वर्षे
३०	गुणपाठः शरीरसूत्रगुणपाठः (५)	" रावण शास्त्रमन्त्रअवधूतः	-	५६	"	सं. १९९० वर्षे महासात
३१	गोस्वामीवेदुः	"	-	२५	गुज. भाषालिपि	सं. १९९३
३२	गोरक्षसंहिता मन्त्रतन्त्रवेदक	"	-	३००	"	सं. २००५
३३	गोरजीशाल	"	-	१०१	देव. भाषागु. सं.	१९९७ भा. व. शु. ११ मीने
३४	घटगण्ड वपवार	"	-	५०	"	सं. १९०५ प्रा.
३५	घमत्कार चिन्तामणिः	" विनाकर	-	३३	देव. सं.	सं. १९९० वर्षे ताजोराम
३६	चिकित्साकलिका सटीका	अपूर्ण तीव्रकृता चंद्रकृता टीका	१२८	"	सं. १९०३ वर्षे वै. शु. (६)	
३७	"	"	१३१	"	सं. १९१५ प्रा.	
३८	चिकित्सातिलक	संपूर्ण	-	१३१	"	सं. १९१५ महासात
३९	चिकित्सावृत्तसागर	" देवीदास	-	७६६	"	सं. १९५५ भा. व. १० ताजोराम
४०	चिकित्सासागर	" शरीरान् गोपालदास	-	५०	"	सं. १९०५ पौ. सासे शुक्र १० शुक्र
४१	ज्वरगायत्री	"	-	७६	"	सं. १९०३
४२	ज्वरविचार गुजराती	"	-	१२	गुजराती	सं. १९५० वसा. शु. १२ शुक्रमुद्राचरदे
४३	तमस्तु स्तोत्र	"	-	४	देव. सं.	सं. १९३९
४४	तारीशाल वैदक आषीन प्राकृत	"	-	२८	गुजराती	सं. १९५५ भा. व. १० ताजोराम
४५	तांबूलमाहात्म्य	"	-	२	संस्कृत	सं. १९५३ भा. व. १० देव. शु. (७)
४६	त्रिधातिः सं. १९६	" शार्ङ्गचरकता	-	३१	"	सं. १९५५ पौ. शु. (८)
४७	उपबन्ध कवि वैद्यक मराठी	"	-	१४	मराठी	भा. व. १९५३ पौ. शु. १२
४८	वाक्ष्यामूर्ति निघंटु	"	-	१३७	संस्कृत	सं. १९९३ महासात
४९	विवाकर पञ्चति	अपूर्ण	मूलमह गुण.	६	"	सं. १९०५ प्रा.
५०	घन्यंतरि चिकित्सा मूलमह गुण.	संपूर्ण	"	२८	"	सं. १९०५ भा. व. १० शुक्रमुद्राचरदे
५१	घन्यंतरिघंटु	"	-	१००	प्राकृत	सं. १९१५
५२	घन्यंतरि निघंटु औषधो (९)	"	-	२७	संस्कृत	सं. १९५२ वर्षे वै. शु. (१०)
५३	"	"	-	५०	"	सं. १९५५ भा. व. १० ताजोराम

(1) उपपानीय १ कृष्णवर्णकल्पः २, श्वेतोदरः १, श्वेतवर्णः १, हरद्वीपका निघण्टुः १, (2) कर्पूरः १, प्रवि-
तोजः (3) छद् ६ मंगलवार औषधीनां नामानि संस्कृते गुणैर्क सौति गुणक संस्कृते ६ वर्तः (4) मर्यादीनी १, पिप्लवः
१, दिव्यविषयः १, (5) शरीरस्य गुणपाठः औषधीनां नामाः (6) छद् १५ छि अनेन वैटपत्तने वाक्साह भिन्नं महामय प्रतिपत्तौ
(7) वद २ शुक्र अहमवपुरे वाक्साह भी ७ महमुदविषय सज्ये (8) कृष्ण ११ मंवाहरी नोटसंज्ञिभूत यक्षेवर मंवाहपुरे ।
तस्यपदमज्ज, सांग व्रद्धिभिः क्षीपति त्रिनेत्रं त्रिपुरां च तस्य ॥ यामयिभिः वैद्युदे त्रिनेत्रोपवरच्छिदे च विपत्तिः चक्र ॥ १३७
(9) औषधीविधानचित्तमणि निघण्टु नाममात्रा (10) छद् ११ गुरो नयामि यन्त्र विमर्दिदेवः ॥

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્તલિખિત ગ્રન્થ મંડાર, ગોંડલ-સૌરાષ્ટ્ર.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA

Subject : AYURVEDA

વિષય : આયુર્વેદ :

ક્રમાંક Serial No	ગ્રન્થ મંડાર Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાણ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ Language & Script	લેખક મિતિ Scribe & Date
૧૫	યોગરત્નાકર	સંપૂર્ણ : જ્ઞાનસાગર :	ભાષા પદ્ય	૨૯૯	ભાષા પદ્ય	સં. ૧૭૧૯માં રચ્યો છે. *
૧૬	"	"	"	૩૧૮	"	સં. ૧૮૦૮ [૧૭૭૪ પ્રા.
૧૭	"	"	"	૨૯૪	"	સં. ૧૭૭૫ પ્રા.
૧૮	"	અપૂર્ણ :	-	૧૨૧	"	સં. ૧૮૧૧
૧૯	યોગસમુચય : વ્યાસગણપત :	સંપૂર્ણ :	-	૪૦	"	સં. ૧૧૧૫ના મા. વ. ૧૪(1)
૨૦૦	યોગદ્યુતક	"	-	૧૩	સંસ્કૃત	સં. ૧૭૧૧ પ્રા.
૨૦૧	"	"	-	૧૩	"	સં. ૧૮૧૧ પ્રા.
૨૦૨	" ગુર્જર ટીકા	"	ગુર્જર ટીકા	૩૧	"	સં. ૧૮૧૫ના ક.વ. ૧૧ થી
૨૦૩	" સંસ્કૃત ટીકા	"	સંસ્કૃત ટીકા	૨૬	"	સં. ૧૯૦૭ના આશો. વદ ૧૦
૨૦૪	" ગુજ. ટીકા	"	ગુજ. ટિપ્પણી	૩૨	"	સં. ૧૯૦૮ પ્રા.
૨૦૫	યોગીશ્વર :	" સોમદત્તરચિત :	-	૩૭	દેવ. સં.	સં. ૧૮૨૫ના કાલ્પાન શુદ્ધ(2)
૨૦૬	રત્નપ્રકાશ વૈષ્ણવા :	" કુશમ્બી ચરિત :	-	૫૧	"	સં. ૧૬૧૪ ડા. શુદ્ધ ૧૨(3)
૨૦૭	રત્નાકર યોગગ્રન્થ :	"	-	૪૨૮	"	સં. ૧૯૧૨ વર્ષે મદ્ર સાગ
૨૦૮	રસદીપિકા [રત્નાકરોપચયોક	" અનંતાચાર્ય :	-	૭	"	સં. ૧૮૧૫ માહ કૃષ્ણ ૧૪ રવિ
૨૦૯	રસમેષજ કલ્પદીપિકા	"	-	૫૫	"	સં. ૧૯૧૪ વર્ષે મદ્રસાગ
૨૧૦	રસમંજરી	અપૂર્ણ કાલિનાથ :	-	૧૦	"	સં. ૧૮૧૭ પ્રા.
૨૧૧	રસરત્નમણિમાળા	વે.વાવાભાઈ સંપ્રદેશ :	-	૩૧૦	"	સં. ૧૯૧૦ માર્ગશીર્ષ
૨૧૨	રસરત્નસમુચય	નિલમાચરિત :	-	૪૦૯	"	સં. ૧૯૧૧ વર્ષે ચત્ત્યાન શુદ્ધ(4)
૨૧૩	"	"	-	૮૪	"	સં. ૧૯૧૧ ચત્ત્યાનશુદ્ધ, મદ્રસાગ
૨૧૪	રસરત્નાકર : રસકંઠ(6)	પાવંતીપુત્ર નિલમાચરિત :	-	૩૫૩	"	સં. ૧૯૧૨ માગ. શુ. ૧૨૦
૨૧૫	" ઉપદેશ ૧૪	"	-	૫૦	"	સં. ૧૮૦૦ [શ્રીમતિ તંજોરાત્
૨૧૬	" રસકંઠ(6)	"	-	૧૮૭	"	સં. ૧૯૦૭ પ્રા.
૨૧૭	રસરત્નાકરસંસ્કૃત રસાવનનકંઠ :	"	-	૩૯	"	સં. ૧૯૫૦
૨૧૮	" ઉપદેશ ૮	"	-	૨૨	"	સં. ૧૫૧૧ પ્રા.
૨૧૯	રસરત્નાકર : નાગાશુકીય	સંપૂર્ણ :	-	૭૫	"	સં. ૧૯૦૦
૨૨૦	રસરાસલક્ષ્મી	"	-	૪૭	"	સં. ૧૯૧૨ વર્ષ
૨૨૧	રસસંકેત કલિકા	"	-	૧૬	"	સં. ૧૯૫૦ વર્ષ
૨૨૨	રસસાર :	"	-	૧૩૨	"	સં. ૧૯૧૧ વર્ષ
૨૨૩	રામમુગ્ધક	"	-	૧૨૦	"	" "
૨૨૪	રામવિનોદ ભાષાપદ્ય	" રામચંદ્ર :	-	૧૧૫	દિવ્ય	સં. ૧૭૧૧ પ્રા.
૨૨૫	"	" [સં. ૧૭૧૦	-	૧૪૪	"	સં. ૧૮૪૮ પ્રા.
૨૨૬	"	"	-	૫૧	"	સં. ૧૮૧૦ના દિવ્ય રે. (7)
૨૨૭	" નિદાન	" મધ્યેરચિત :	-	૨૩	"	સં. ૧૯૪૦ માહ શુદ્ધ ૧ રવિ
૨૨૮	વધુગલરત્નમાળા પાકશાલ	"	-	૬	"	સં. ૧૭૧૫
૨૨૯	વંશ્યાવરતિકાર પેગંબર પ્રયોગ	"	-	૩	"	સં. ૧૮૧૧
૨૩૦	વિષલિકિરણ	"	-	૧૦	"	સં. ૧૯૧૧
૨૩૧	વીર સિંહાવલોકન	અપૂર્ણ	-	૧૧૯	દેવ. સં.	સં. ૧૯૬૦
૨૩૨	વૈદ્ય રત્નમાળા મંત્ર તંત્ર વંત્ર	સંપૂર્ણ	-	૫૦	ગુજરાતી	સં. ૧૭૧૧
૨૩૩	વૈદ્યક રત્નાવલી [વૈદ્ય	અપૂર્ણ	-	૩૯	સં. ગુજ.	સં. ૧૫૮૦

(1) વદ ૧૪ સૌમ્ય રાવક ચટાકર (2) શુદ્ધ ૧ રવિ ચં.માતમચે મદ્રા. લેખકરાય (3) શુદ્ધ ૧૨ શુક્ર. કે. મિતિ સં. ૧૮૧૧ માસ શુદ્ધ ૨ મુષ લેખકામ મચે (4) ચત્ત્યાનશુદ્ધ ચં.ગલકલા તંજોરાત્ (5) રસકંઠ, રસેશ્વરકંઠ, રસાવનનકંઠ (6) રસ-કંઠ, રસેશ્વરકંઠ રસાવનનકંઠ (7) વૈશાલ શુદ્ધ ૧ ગુરૂ બી. ધાંડલિ ચંદ્રે લિખિત મીમંસી સં. ૧૭૧૦ના અપરંગ શાહરાત્ને કાશ્મીરકોટક મચ્છીય ચિત્તિહરુદી શિષ્ય પદ્ય કીર્તિનદ શિશ્યરામચંદ્રચરિત રચિત

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work Title	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves,	भाषा- लिपिः Language & Script	लेखक-मिति Scribe & Date.
१३४	वेदक सारसंग्रहः वैद्य साधे (1) संपूर्णः	-	-	१८६ गुज.	लिपि संवत् १९११ सप्तम्याः कागदाः	
१३५	वैद्य जीवनं मूलसह गुजराती (2) ,,	केलिबराज* गुज. टीका	५८-२५ मूलसह गुज. सं. १९१७ पोष वद ४ पुणे *			
१३६	,, मूलसह संस्कृत टीका	,, [* पुस्तकाकार संस्कृत टीका (3) ४२ संस्कृत	सं. १८९२ वर्षे का. शु. १५ मौमे			
१३७	,, ,,	,, मूलसह गुजराती	२८ देव सं. सं. १८९१ प्रा.			
१३८-१३९	,, १, नागनिदानं २ +	,, दिवाक-सुवि सुनु -	२३ ,, सं. १९११ मद्रासाद			
१४०	,, [+ केलिबराजीव	,, + केलिबराजस्य -	४६ ,, सं. १९१० तंजिराद			
१४१	,, खंडित	अपूर्णः	X	X	X	X
१४२	१: १४७ वैद्यमनोराजः १, (4) संपूर्णः	केशव वैद्य	-	१२९-५३ हिंदीपथ	सं. १९११ ना वर्षे महा (5)	
१४८	,, नयनसुख	,, केशवदाससुत*	-	३० ,,	सं. १९१३ दे. व. १ मंगल	
१४९	,, रत्नाकाश (6) ,,	[* नयनसुखसुत -	-	१७ ,,	सं. १८७४ केशवराज (7)	
१५०	,, ,,	,, १७० १७० पथ -	-	१० ,,	सं. १८९१ ना कागज वद (8)	
१५१	,, ,,	अपूर्णः	-	२५ ,,	सं. १८८५ प्रा.	
१५२	वैद्यबल्लभः ,,	संपूर्णः इतिहासि	गुज टीका	३४ सं. गु. टीका सं. १८२५ प्रा.		
१५३	,, ,,	अपूर्णः	सं. टीका	१५ संस्कृत सं. १७९९ माद्र. शुद्ध		
१५४	,, उत्तमधराः	संपूर्णः	गुज. टीका	१५ ,,	सं. १७९९ वर्षे लि.	
१५५	,, ,,	,,	,	२१ ,,	सं. १८४४ वर्षे का. व. १३ *	
१५६	,, ,,	,,	,	२० ,,	सं. १८९० ना महा वद ५ *	
१५७	,, ,,	अपूर्णः	,,	१५ ,,	सं. १८८५ प्रा. * बार वृक्षपत	
१५८	,, ,,	संपूर्णः	-	६१ ,,	सं. १९१७ ना वैद्य शु. १ पुणे (9)	
१५९	वैद्यशंकरः	,,	-	१३ ,,	सं. १९१० ना माघ शुद्ध १३ X	
१६०	मन्त्रचिकित्सा	,,	-	३ गुजराती सं. १९८१ प्रा. [X लि. रामोदर		
१६१	व्याधिनिग्रहः मूल	,, विश्रामवतिः	-	६० संस्कृत सं. १८७३ ना वर्षे माद्र. व. १७ शुद्धे		
१६२	,, ,,	,,	-	२१ ,,	सं. १८७२ ना वर्षे वैद्य शु. ५ गुरी	
१६३	,, मूलसह गुज. टीका	,,	गुज. टीका	४५ ,,	सं. १९०९ रा वर्षे सुगंधिर शुद्ध १३ X	
१६४	,, मूल	,,	-	३२ ,,	सं. १९४७ ना ज्येष्ठ शुद्ध १ मौम	
१६५	शार्ङ्गचर संहिता	,,	-	८३ ,,	सं. १८९९ कागज शु. रवि	
१६६	,, ,,	अपूर्णः	-	१३० ,,	सं. १४७९ प्रा.	
१६७	,, ,,	,,	-	११५ ,,	सं. १९८५ प्रा.	
१६८	सिद्धनिघण्टु प्रकाशः	संपूर्णः वैद्यदेव टीका संस्कृत	६८	सं. १९११		
१६९	सुलभप्रयोग प्रकाशः उत्तमधरा* ,,	रामोदरविज १४ आपराध टीका	१५१	सं. १०१९ ना शर्तक शु. १ मौम		
१७०	सुश्रुत संहिता [* ग्रन्थग्र ४२२५	10 निबंधसंग्रह *	१३६	सं. १९२८ प्रा.		
१७१	,, खंडिता	[* टीका वृद्धनाथाय* कृता	२५	सं. १९००		
१७२	स्कन्ध संहिता वाह्यग्रन्थः	,,	-	४०७	सं. १९१२ वर्षे	
१७३	हरीतक्यादि निघण्टु	,,	-	२१	सं. १९१२ वर्षे	
१७४	हृदय प्रवेशः	,,	-	३३	सं. १२१४	
१७५	क्षेमकुलहल इति मन्त्रा- (11) संपूर्णम् पाकशास्त्र ग्रन्थः -	-	-	७६	सं. १८९५ ना शाके १७९० (12)	

(1) साधे संवत् १९११ वा. १५ मस्य (2) गुजराती साधे बीजा प्रयोगो उत्तमधरा (3) टीका कोणेरीमह वैद्य पुत्र १६ मह (4) वैद्यमनोराज १, वैद्यनिदान २, रात्रिनिदान वैद्यचिन्तामणि मूलसह गुजराती ३ कालज्ञान मूलसह गुजराती ४ व्याधिनिग्रहः मूलसह गुजराती ५, धन्वन्तरि निघण्टु अपूर्ण ६, (9) महा वद १८ शनेठ लिपिकृत पत्र ७४ मिति (6) रत्नाकाश संवत् १९४९ शुचिमासे शुद्ध २ शुक्रवार (7) केशवराजसुत-नयनसुख किमुग्रन्थ आभिकंद शुभनगर गिरिदत्ते नरवरराज नरेन्द्र ॥ ८० अंकवेद समेक्षनी सुकल्पशु शुचिमास ॥ तिथि द्वितीय शुक्रवारपुनि पुष्य वद शुभवार ॥ (8) वद ६ पुष्य तद्वर्षादि चंद्र अक्षर दने सेठ आभ्युदय श्री जगन्नाथदेव (9) पुष्य शुभवारपुनी जोशी भाईशंकर (10) वृद्धनाथकृत्या निबंधसंग्रहग्रन्थ (11) मन्त्रा-श्रमजेन विहितः क्षेमकुलहल ग्रन्थः विष्णुसेन क्षपराजवेदेन क्षेत्राभ्यां उत्तमधराः (12) १७९० पीष शुभ १ चंद्रावसरे वासिष्ठ विश्वाययुना पीठाभ्युदय लिखित ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्त लिखित ग्रन्थ भंडार, गौडाल - सा.रा.पट.

SHRI BHUVANESHWARI PITIL, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

SUBJECT: KAMSHASTRAM

॥ विष्णुः ॥ कोमशाखः

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कृता Author	टीका	पत्राणि	लिपिः	लेखक-मितिः
Serial No.	Name of the work (Title)	Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language Script	Scribe & Date
१	कामशास्त्र	संपूर्ण महाकवि कल्याणमल्ल	गुज. टीका	४९	देवनागरी	संवत् १७१० प्रा. इति श्री (१)
२	" मूलसूत्र गुजराती	"	"	७९	संस्कृत	सं. १९२३ वशाख शु १६ (२)
३	" मूलः	"	"	४६	"	सं. १९२४ माघ शु ११ (३)
४	" मूलसूत्र गुजराती	"	गुज. टीका	१२५	"	सं. १९१५ प्रा.
५	" मूलः	"	"	१०१	"	सं. १९१९ वर्ष माघशर वद (४)
६	"	"	"	९७	"	सं. १९१९ मार्ग व. ३ सोम
७	"	"	गुज. पद्य	९५	"	सं. १९१२ [* तजोरात]
८	कामशास्त्रसार भाषापरम	"	"	१४४	देव. गुज. लिपि	सं. १९८१ मूल प्रत परची (३)
९	कामशास्त्र	"	"	५९	संस्कृत	सं. १९९० भाद्र. शु. १० मंगल
१०	कौकिलजरी	" आनन्दकवि	"	७	भाषापरम	सं. १९८८ का माघ. शु. वरषा
११	कौकिलसूक्तो भाषा	अपूर्ण	"	४	गुजरा	सं. १९७३
१२	"	"	"	११०	गुजरापद्य	सं. १९३४ प्रा.
१३	"	"	"	६८	"	सं. १८९८ शके १७३३ श्री (६)
१४	"	"	"	१९	"	सं. १८०१ प्रा.
१५	कौकिलसूक्त	संपूर्ण आनन्दकवि	"	१७	भाषापरम	सं. १९८१ माघ व. ५ शु (७)
१६	"	अपूर्ण	"	७८	"	सं. १६१५ प्रा.
१७	"	"	"	३५	"	सं. १९२५ प्रा.
१८	गुणसार	संपूर्ण हरनामकवि	"	८७	"	सं. १९१० प्रा.
१९	"	"	"	५७	भाषापरम	सं. १९१५ प्रा.
२०	पञ्चसामक	अपूर्ण	"	१६	संस्कृत	सं. १८३३ प्रा.
२१	पञ्चसामक	"	"	३०-४८	"	सं. १९८५ भाद्र. शु १३
२२	मर्वतकामरत्न	संपूर्ण	"	८९	"	सं. १९९० आशु व. ७ सोम महाशिव
२३	मन्त्रपञ्चसहित	"	"	१६	"	सं. १९९३ ना. का. शु. २ रा
२४	रतिरहस्य १३ परिच्छेद	"	"	६६	"	सं. १८१२ ज्येष्ठ कृ १३ कान
२५	"	"	"	१०१	"	सं. १६१२ प्रा. [* तजोरात]
२६	"	"	गुजराती टीका	९७	"	सं. १९११ मार्ग व. ३ सोम
२७	"	"	"	५२	"	सं. १९११ माघ कृ ५ वनि तजोरात
२८	वात्स्यायन कामसूक्त	"	इति श्री (८)	१३३	"	सं. १८७९ फाल्गुन शु ११
२९	"	"	"	८९	"	सं. १९१० प्रा.
३०	"	संपूर्ण	"	१८६	"	सं. १९१० भाद्र. शु. १० मंगल
३१	स्मरदीपिका	"	"	५	"	सं. १८९०
३२	"	"	"	१३	"	सं. १९९१ मार्ग. व. ३ सोम तजोरात
३३	"	"	"	२६	"	सं. १९९० भाद्र. शु. १० मंगल

(1) इति श्री लाङ्कान चित्तविनोदाय कर्पूरवशातप महाविभी कन्यागमः विरचितः (2) शुद्ध १ मुद्रकं खतं चोषो वैचर इत्यु रेवाधो आलिया (3) शुद्ध ११ कुपं श्रीपशमणोकि (4) वरुं सैमि इति श्री मल्लेश्वर्यातप श्री लाङ्कान विनोदाय कन्यागमः विरचित संजोरुत (5) पंथो गुत्रातो केशुराम उताग (6) पीष कुण १२ मंदो इति पंचदशैकं केशुराम ग्रन्थः समाप्तः (7) पुत्र लि. अस्तोत्राजो वरदानपुं (8) श्री वात्स्यायनीयकमपुत्र टीकाया जयमंगलभिराया निरुतांग निरुकांतैष शुद्धते व्रपदाभिधान न यशोधरेण एकवकृत सूत्र वाग्याया वैशिके पण्डेऽधकरणे पण्डेऽध्यायः ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्त लिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र.

SHRI BHUVANESVARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : DHATUVAD

विषय : धातुवादः ।

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author	टीका	पत्राणि	भाषा- लिपिः	लेखक-मितिः
Serial No.	Name of the work (Title)	1- Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Script & Date

धातुवादः ।

१ ज्ञान-वृत्त्यः	संपूर्ण औरवसोणी	हस्ताक्ष ३१७ ९०७	देव सं.	संवत् १९०८	गोंडाराट
२ "	"	[*] लेख सं. १९४० ३१०	"	सं. १९०८	महाराट
३ "	अपूर्ण १५ उद्देश्य	-	१९१	"	सं. १९०८ महाराट
४ अद्विष्ट-वद्विष्टः	" पाव' सीपुत्र नित्यनाथविदः-	२४०	"	सं. १९११	महाराट
५ " रसाल कुरातगतः)	"	-	१४७	"	सं. १९१२ नी प्रतिने आचारे (१)
६ " "	"	-	२२२	"	नारायण प्रभाकर विनोद (२)
७ मध्यकल्पः (हृदयामनांतर्गतः)	नागजुनः	-	६०	"	सं. १९०८ पोष शुद्ध भा (३)
८ गोरजी धातुवादः	जैनः	-	१२९	"	नारायण प्रभाकर विनोद (४)
९ भोडीजी धातुवादः	"	-	११८	गुज. अक्षर	नारायण प्रभाकर विनोद (५)
१० गोरजी वेदु' धातुवादः	"	-	१२८	"	सं. १९०९
११ गोरक्षनाथीपद्धतिः	गोरक्षनाथः	-	४५	म. गुज. मिश्र	सं. १९०९ नारायण (६)
१२ "	"	-	७०	"	भवान राजानी बीजी प्रतनो (७)
१३ गोरक्षसंहिता	वेदक मंत्रांत	-	१५	भाषा	सं. १९४८ वर्षे चैत्र शु. (८)
१४ जीगुण धातुवादः	"	-	१८	भाषा गुज. मिश्र	सं. १९२१ नी प्रत उपरबी (९)
१५ टंकारा धातुवादः	"	-	४-१	मिथ गुज. मार.	जुनी प्रत उपरबी उतारो (१०)
१६ तंत्रसारः	"	-	२३	"	सं. १९४५
१७ विशाल धातुवादः	देव. गुज. १-१५ सं. गुज. मार मिश्र	सं. १९११	जुनी प्रत उपरबी	उतारो	
१८ धातुवृत्तः (हृदयामनांतर्गतः)	संपूर्ण नागजुनः	-	११२	सं. अक्षर गुज. मूळ प्रत	सं. १९२५ (११)
१९ धातुकोटक	"	-	१	सं. १९०१	वेदकी अक्षरबी कच्छ +
२० परशुरामप्रतंत्र (धातुकोटकेपरमाय)	नित्यान सीव	-	४९	सं. १९१०	म. [मिथरायणा
२१ प. र. हृदयः (हृदयामनांतर्गतः)	नागजुनः	-	२४५	सं. लिपि गुज. सं. १९०१	मार्च. स. संवत् (१२)
२२ "	"	-	२४४	देवनागरी मूळ प्रत	१९०९ उतारो (१३)
२३ पारव योगशास्त्र	"	-	१२	संस्कृत	सं. १००१
२४ "	"	-	३०	"	ता. १-२-१५ महाराट
२५ "	"	-	३९	"	सं. १००१
२६ औरवसिद्धिकल्पः	"	-	२१	लिपि गुज. नारायण प्रभाकर	विनोद (१४)
२७ रत्नपटलम्	"	-	६०	"	सं. १९०८ दे. राजवेद बी. का. शास्त्री
२८ रत्नपटलसमुच्चयः	"	-	४६	सं. गुज. मिश्र. सं. १९१८	दे.
२९ रत्नकंठकी	महर्षि	-	५	"	सं. १९८५ म.
३० रत्नकामधेनुः	हृदयामनांतर्गत मूळभाषा	म. ५५०० २८०	संस्कृत	सं. १-२-१९२१	लेखक (१५)

- (१) आचारे (नारायण प्रभाकर विनोदनी) गुजराती अक्षरे लक्ष्यो सं. १९०९ भाषा शुद्ध ११ लेखक राजवेद जी. का. शास्त्री (२) ना. विनोद वदेदरायणाजी सं. १९१२ नी. भाषा शुद्ध ११ प्रतिने आचारे संस्कृत अक्षरे लक्ष्यो सं. १९०८ ना. वैशाख शु. १५ लेखक राजवेद जी. का. शास्त्री (३) भा. पुस्तक नागपुरशास्त्र म. व. देवदेवी प्रत उपरबी उतारो लेखक राजवेद जी. का. शास्त्री (४) ना. विनोदना पुस्तक उपरबी उतारो संवत् १९०९ लेखक जीवाम कालिका शास्त्री (५) ना. विनोदना पुस्तक उपरबी सं. १९०९ (६) नारायण प्रभाकर विनोदनी प्रत उपरबी उतारो वैशाख जी. का. शास्त्री भवान राजा शिरका इनामदार कछुधुर्गेनी पोषी उपरबी नारायण प्रभाकर वेदकी लेवी पोषी उपरबी भा. उतारो राजवेद जी. का. शास्त्री (७) प्रतनो उतारो सं. १९०८ (८) शुद्ध ६ लिपि गुज. १ नी. ओजोवाणी दे (९) उपरबी उतारो सं. १-२-१९१० ना. वैशाख शु. लेखक जी. का. शास्त्री (१०) उतारो संस्कृत भाषाजी संवत् १९१५ भाषा गुजराती भाषाजी संवत् १९१० (११) १९१० ना. विनोदना पुस्तक उपरबी उतारो सं. १९०९ लेखक राजवेद जी. का. शास्त्री (१२) संवत् १९०९ नी. नारायण प्रभाकर विनोदनी प्रत उपरबी लेखक जी. का. शास्त्री (१३) उतारो सं. १९१० लेखक समनलाल नाथो शास्त्री (१४) ना. विनोदनी प्रतनो उतारो सं. १९०९ लेखक राजवेद जी. का. शास्त्री (१५) लेखक स्वामी हरिहरप्रसाद अक्षरर ।

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રંથ મંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: DHATUVAD | TANTRAM વિષય : ધાતુવાદ : તંત્ર ।

ક્રમાંક	ગ્રંથ નામ	કર્તા Author	ટીકા	પૃષ્ઠા	ભાષા-લિપિ:	લેખક-મિતિ:
Serial No.	Name of the work Title	સંપૂર્ણ-અસંપૂર્ણ Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves.	Language & Script	Scribe & Dte
૩૧	રસકોમુદી	જ્ઞાનચંદ્ર રચિતા	-	૩૦	દેવ સં.	તા. ૧-૧૧-૧૯૩૪ મદ્રાસાલ
૩૨	રસરંજન			૨૭	"	મદ્રાસાલ તા. ૧૮-૮-૧૯૩
૩૩	રસહરયતંત્ર	ગોવિંદાચાર્ય મુશાવરોચિની ટીકા	૧૧૪	"	સંવત ૧૯૧૬	
૩૪	રસેન્દ્ર મંગલ	અસંપૂર્ણ		૩૭	"	સં. ૧૯૧૬
૩૫	રામદાસ ધાતુવાદ:	"	-	૬૧	મરાઠીમિશ્ર સં. ૧૯૧૦	નારાયણ પ્રમાકર (1)
૩૬	વૈદ્યભાસ્કરોદય:	"	-	૧૫	સંસ્કૃત તા ૧-૧-૧૯૩૫	આમા (2)
૩૭	" (હરતાલ કલ્પ)	"	-	૫	સં. ગુ. જ. મરાઠીનારાયણ	માકરનીપ્રતવપરથી (3)
૩૮	શિલોદક (અનુદાચલે)	"	-	૧૫	અક્ષર ગુજ. સં. ૧૯૧૧ની	બોપરી ઉપરથી
૩૯	" (રેવતાચલે)	"	-	૧૦	ગુજરાતી સં. ૧૯૧૧ની	બોપરી ઉપરથી
૪૦	શિલોદ સ્થાનાનિ	"	-	૨૫	ગુજરાતી સં. ૧૯૦૧	
૪૧	શ્વેતાશ્વકવચ: ૧ રિંગની (4)	"	-	૯-૭	સંસ્કૃત સં. ૧૪૭૫	પ્રા.
૪૨	સતધાતુ કવચ: (રુદ્રામલાન્તમતઃ) અસંપૂર્ણ:		નાગાર્જુન:	૧૦૧	"	સં. ૧૯૦૧ નારાયણ પ્રમાકર (5)
૪૩	"	"	-	૧૧૨	"	સં. ૧૯૧૦ માહ છુદ (6)
૪૪	સ્વર્ણતંત્ર	"	-	૭૦	સં. અક્ષરગુજ. નારાયણ પ્રમાકર	વિનેદની (7)
૪૫	" ૨ અપરાખિતાવિયા	"	-	૧૩	"	સં. ૧૯૮૦
૪૬	"	"	-	૧૫	"	સં. ૧૯૧૧ની પ્રત ઉપર (8)
૪૭	સ્વર્ણપટક	"	-	૬	સંસ્કૃત સં. ૧૦૦૨	જૂની પ્રત ઉપરથી (9)
૪૮	પ્રકીર્ણ ધાતુવાદસ્ય પુસ્તાનિ		-	X	X	X

તંત્ર

૧	મહાકવચ ૧, ૨, ૧ પત્ર ૨, ૧, ૬	અસંપૂર્ણ	-	૧૦	દેવનાગરી સંવત ૧૯૧૬	પ્રા.
૨	અકુટાગમ: અ. ૭, શ્લોક ૪૩૧	"	-	૩૪	સંસ્કૃત સં. ૧૬૮૫	આષાઢ વદ (10)
૩	આનંદકવચ	અસંપૂર્ણ	-	૩૮	સં. ૧૦૩૮	[મુનીનવગચોલર
૪	આશ્વયેયોગસૂત્રમાહાત્મ્ય	અસંપૂર્ણ: નાગાર્જુનાચાર્ય:	-	૧૧	સં. ૧૬૧૭	વર્ષે અચલગચલે
૫	" [૩૩માહારા મુદ્રામાત્રા	"	-	૫	સં. ૧૯૦૧	કચ્છવિદ્યા બેલગીરવપરથી
૬	"	"	-	૪૫	સં. ૧૯૧૧	ચે. છુદ. ૧૭૫૯ (11)
૭	" સદીકા	"	ગુનાકર શ્વેતાશ્વરી	૯૦	સં. ૧૯૧૮	૭૫૯ છુદ ૧૨ (12)
૮	"	"	[મિશુરખિતા વિદિત:	૮૪	સં. ૧૯૧૮	૭૫૯ છુદ ૨ બુલે:
૯	" સદીકા	અસંપૂર્ણ	" સંસ્કૃત શ્લોક	૧૪	"	સં. ૧૫૧૧ પ્રા. [ચે. જી. કા.:
૧૦	"	"	"	૧૩	મરાઠી	સં. ૧૫૧૧ પ્રા. [ચે. જી. કા.:
૧૧	આસુરી કવચ:	અસંપૂર્ણ	-	૪	દેવ સં.	સં. ૧૮૪૦ કાર્તિક વ. ૧૨
૧૨	"	"	-	૪	"	સં. ૨૦૦૫ આષાઢ શુદ્ધ ૧ શુક
૧૩	આદિક તાંત્રિક	"	-	૪૬	"	સં. ૧૯૪૮ના પૌષ કૃત્ત ૨ સુગ
૧૪	"	અસંપૂર્ણ	-	૨૬	સં. ૧૯૨૧	પ્રા.

(1) પ્રમાકર વિનેદની પ્રત ઉપરથી ઉતારો, કે. રાજવૈદ્ય જી. કા. શાસ્ત્રી (2) આમા શાસ્ત્રી બોધવાલ તરફથી મળ્યું (3) ઉપરથી ઉતારો સં. ૧૯૦૮, કે. રાજવૈદ્ય જી. કા. શાસ્ત્રી (4) ૧ રિંગની, ૨ અંગવિદ્યા, ૩ ગાસરીવિદ્યા, ૪ કાંચીવિદ્યા, ૫ સુરવિદ્યા (5) પ્રમાકર વિનેદની પ્રત ઉપરથી (6) છુદ ૪ ડેચક મનુલાલ નામથી શાસ્ત્રી, નારાયણ પ્રમાકર વિનેદની મૂળ પ્રત સં. ૧૯૩૫ના ઉતારો (7) ના. વિનેદની પ્રત ઉપરથી સં. ૧૯૦૧ (8) ઉપરથી ઉતારો સં. ૧૯૦૧ (9) કાશીવાલ વિદ્યા યોગવાર પાદ બેલગીર ઉપરથી કચ્છ વિદ્યા (10) ઉપરથી ડેચક રાજવૈદ્ય જી. રામ, કાશીવાલ શાસ્ત્રી (11) કચ્છ વિદ્યા બેલગીર ઉપરથી અકુટાગમ મહાકવચ યોગવાર સમુચ્ચે દેશર પાર્શ્વતો સંવાદે સતમોખ્યાય: (12) ૧૨ બુલે થી અપરિકલમને દ્વારે મિર્નવપર્ણવિદે વર્ષે રચિતા ગુનાકરેજ શ્વેતાશ્વરી મિશુરખિતા વિદિત:

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: TANTRAM

विषय: तंत्र।

क्रमांक Serial No	ग्रन्थ नाम Name of the work (title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
१५	उद्धृष्टातंत्र उद्धामरतंत्र	संपूर्ण	-	४६	देव सं.	संवत् १३०० प्रा.
१६	उल्लूककल्पः	-	-	४	"	सं. ११०५
१७	कनकाधारा लक्ष्मी स्तोत्र	अपूर्ण	-	४	"	सं. १३०७ वर्षे
१८	कर्णपिशाचिनी	संपूर्ण	-	४	"	सं. ११३५ व्नेष्ट शुक्र १ रवि
१९	कुलाचार्यतंत्र, कल्पवृक्ष	" परशुराम	-	२२	"	सं. ११६०
२०	कामेश्वरीमत	"	-	५	"	सं. ११९५ प्रा.
२१	कातवीर्य कवच	"	-	१७	"	सं. ११२० प्रा.
२२	" उद्धामरे	"	-	१३	"	सं. १६४८ माघ पूर्णिमा ३ रवि
२३	"	"	-	३०	"	सं. ११७० प्रा.
२४	" दामरतंत्र	"	-	१०	"	सं. १७८० प्रा.
२५	कातवीर्यजुनि दीपदान (१)	"	-	१९	"	सं. १११० प्रा.
२६	कातवीर्यस्तवराजः	"	-	१२	"	सं. १८१० प्रा.
२७	" स्तोत्र प्यावादि	"	-	१०	"	सं. १८७८
२८	४९ कालिकाकवच स्तोत्राणि	"	-	१३०	"	सं. १८९० प्रा.
५०	" [* संख्या २२	"	-	५	"	सं. ११४५ प्रा.
५१	"	" अनु नाथ कर	-	१	"	सं. १८१५
५२	कालिकावैरिहण कवच	"	-	७	"	सं. ११५० प्रा.
५३	"	"	-	x	"	x x
५४-५५	कालिकाकवच १ (२)	" कालमेरव	-	६	"	सं. ११४५ प्रा.
५६	कालिकादीपदान	"	-	५	"	सं. १८१० प्रा. [सं. १ रवि
५७	कालिका सहस्रनाम	"	-	२५	"	सं. १८३३ वर्षे भाषाढ
५८	"	"	-	१३	"	सं. १८३५ वैशाख शु. १४ सोम
५९	कालीपुष्पाष्टोदास्यासः	"	-	१३	"	सं. १८३५ प्रा.
६०	कालोपटल	"	-	३	"	सं. १८३५ प्रा.
६१	कालीपुष्पाष्टोदास्यासः	"	-	१	"	सं. १८४२ प्रा.
६२	कालोमशानी सहस्रनाम	"	-	११	"	सं. १८३१ प्रा.
६३	कालो स्तोत्र	"	-	४	"	सं. १८३५ प्रा.
६४	क्रिकणी स्तोत्र	"	-	१	"	सं. १९८०
६५	कुत्रिका स्तोत्र	"	-	८	"	सं. १९३५
६६	कौलार्णव तंत्र उद्धारण तंत्र	"	-	५७	"	सं. १७९० प्रा.
६७	"	"	-	५	"	सं. १८०९ प्रा.
६८	"	"	-	४३	"	सं. १९९९ प्रा.
६९	क्रमदीपिका	" केवलाचार्य	-	५६	"	सं. १८०९ माघ शुक्र २ सोम
७०	" सदीका	" प्रभाष्याख्यामिश्रितः	-	७७	"	सं. १९८४ " १ रवि
७१	"	अपूर्ण ४ पटलानि. [सं. हरिवर्तिका	-	७९	"	सं. १८०३ प्रा.
७२	गणपतिपदाक्षरी कवच	संपूर्ण	-	४	"	सं. १९५३ वैशाख शुक्र १५
७३	"	" १४	-	७	"	सं. १९०१ प्रा. व. १४ शुक्र
७४	"	" १७	-	२१	"	सं. १८९५ प्रा.
७५	" संकष्टवृक्षी पूजन २	"	-	१९	"	सं. १८९५ कार्तिक वद+
७६	" कवच	"	-	३	"	सं. १८१३ [+१३ शुक्र
७७	" चित्तामणिविधिः	"	-	१	"	सं. १९१८

(१) दीपमान पूजन प्रयोगः पुरास्करण (२) कालिकाकवच १, दक्षिणकालिकाकवच १, उद्धारणकवच १,

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રંથ ભંડાર, ગોંડલ - સારા હદ.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Man. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: TANTRAM

વિષય: તંત્ર

ક્રમાંક Serial No	ગ્રંથ નામ Name of the work (title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અસંપૂર્ણ Complete or incomplete	ટીકા Commentary	પાનાણ No of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ: Scribe & Date
૭૮	ગણપતિ પદકિ:	સંપૂર્ણ લેખનાય: સંવત ૪	-	૧૦	દેવ સં. સંવત ૧૭૫૭ વાલક ૧ મ (1)	
૭૯	પૂનનવિધિ: ૧, કવચ ૧;	[X ૧૭૪૧ વર્ષે રચિત]	-	૫	સં. ૧૮૧૧ વાગધાર વદ ૧૧ મીમે	
૮૦	લુપ્ત ચાંન	"	-	૩	સં. ૧૮૬૦ પ્રા.	
૮૧	દક્ષિણવજ્ર પ્રયોગ:	"	-	૩	સં. ૧૯૧૫	
૮૨	સહજનામ	"	-	૪	સં. ૧૭૨૧	
૮૩	"	" પદ્યપુરાણે	-	૧૨	સં. ૧૮૧૨ દિ. ભા. શુ. ૧૧ રવિ	
૮૪	સ્તોત્ર સર્વીય સપ્રયોગ	"	-	૨	સં. ૧૯૨૧ પ્રા. શામળી વનમાલી	
૮૫	ગણેશ સ્તોત્ર શારદા તિલકે	"	-	૧	સં. ૧૭૮૫ પ્રા.	
૮૬	ગણેશ પંચરત્ન વેદીરહસ્યે	"	-	૩	સં. ૧૯૨૧ પ્રા.	
૮૭	ગણેશ પંચરત્ન	"	-	૧	સં. ૧૯૦૪ પ્રા.	
૮૮	નાયત્રી કવચ	" અવત્તવ સંહિતા	-	૪	સં. ૧૯૧૧	
૮૯	"	" સ્થાનાયકે	-	૫	સં. ૧૯૧૧ કુંભાર વદ ૮ મંગલ	
૯૦	"	" અવત્તવ સ્તો. ૧૫	-	૪	સં. ૧૯૧૫ માહ શુ. ૨ રતી	
૯૧	"	" સ્તો. ૬૦	-	૫	સં. ૧૮૫૧ વાલક વદ ૧૦ રતિ	
૯૨	કવચ ૧, અશાસત ૧, પટલ ૧	" સ્થાનાયકે	-	૨	સં. ૧૮૨૭ કુંભાર	
૯૩	કવચ	"	-	૪	સં. ૧૯૧૫ વર્ષે	
૯૪	"	" વિષ્ણુવાળકે	-	૨૩	સં. ૧૯૧૫ વર્ષે	
૯૫	"	"	-	૪	સં. ૧૮૧૮ વાલક શુ. ૧૨ (2)	
૯૬	પાંચાલ	"	-	૧૬	સં. ૧૮૧૧ વર્ષે	
૯૭	"	" કવચ ૧, હવચ ૧ (2)	-	૭૨	સં. ૧૮૧૩ વર્ષે કુળ ૧૨ વગી	
૯૮	"	"	-	૨૧	સં. ૧૮૪૨ વર્ષે કુળ ૫ મીમે (4)	
૯૯	પટલ	"	-	૧૪	સં. ૧૯૧૧ પ્રા.	
૧૦૦	પંચરત્ન	"	-	૩	સં. ૧૭૮૦ પ્રા.	
૧૦૧	કવચ	"	-	૯	સં. ૧૮૧૫ વાલક કુળ ૫ મીમે	
૧૦૨	કવચ ૧, હવચ ૨	"	-	૫	સં. ૧૮૫૧ વાલક વદ ૧૪	
૧૦૩	સહજનામ	"	-	૧૭	સં. ૧૯૧૫ પ્રા.	
૧૦૪	કાવચી: માહારાજ: મહર્ષિ	"	-	૧૬	સં. ૧૯૧૫	
૧૦૫	સહજનામ ૧, વાપમેચન ૨ સંપૂર્ણ ચિદવિષ્ણુવાળકે	"	-	૯	સં. ૧૮૨૫ પ્રા. ૧	
૧૦૬	સહજનામ	"	-	૨૦	સં. ૧૯૧૫ માહ શુ. ૭ મીમે	
૧૦૭	"	"	-	૧૫	સં. ૧૮૫૨ વર્ષે કુ. ૧ રતિ	
૧૦૮	"	"	-	૯	સં. ૧૮૧૨ પ્રા.	
૧૦૯	"	"	-	૩	સં. ૧૮૧૭	
૧૧૦	સ્તવાચ	" સ્થાનાયકે	-	૮	સં. ૧૮૦૮	
૧૧૧	"	"	-	૧૫	સં. ૧૯૨૫ માહ શુ. ૮ મીમે	
૧૧૨	"	" સ્થાનાયકે	-	૫	સં. ૧૯૨૭ કુંભાર	
૧૧૩	સ્તોત્ર	"	-	૪	સં. ૧૮૫૧ વાલક કુ.	
૧૧૪	૧૧૩ સંપૂર્ણ સ્તોત્રાણ ૧૩	"	-	૪૬	સં. ૧૯૫૧	
૧૧૫	હવચ	"	-	૯	સં. ૧૯૧૫ માહ શુ. ૪ મીમે	
૧૧૬	"	"	-	૫	સં. ૧૮૦૮ પ્રા.	

(1) મંગલ નિ. લેખનાયકૃત વિષ્ણુદેવ (2) શુદ્ધ ૧૩ પ્રકરણસ્વરૂપ મહામંત્રીકૃત મહેશ્વર (3) સ્તવાચી: સહજનામ ૧
રૂપનિષદ. સ્તોત્ર તર્પણ નાપમેચન (4) મીમે કુળદેશે કુળગરે દરિકામ્બેન.

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: TANTRAM

विषय: तंत्र।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
१२९	गायऽयः विविध देवतानां (१) संपूर्ण	"	-	०	देवनागरी संस्कृत १९३९	
१३०	गारुडोपनिषद्	"	-	२	संस्कृत सं. १९१५ प्रा.	
१३१	गुरुकवचं	"	-	२	" सं. १८३५ प्रा.	
१३२	गुरुपटलं	" सदाशिव	-	२	" सं. १९५९	
१३३	"	"	-	९	" सं. १८७९	
१३४	गोपाल संतान प्रयोगः ग्रन्थाः ४	"	-	३८	" सं. १९३९	
१३५	त्रिलोक्य मंगल कवचं	"	-	३२	" सं. १९११	
१३६	घटाकर्ण कल्पः	"	-	३७	" सं. १९८२ ज्येष्ठ शु. १४ गुप्त	
१३७	चक्रन्यास कवचं १	"	-	९	" सं. १८३५	
१३८	त्रिपुरा कवचं २	"	-	१५	" सं. १९१२	
१३९	चक्रार्चन पत्राणि:	"	-	२	" सं. १९१३	
१४०	चंडोपयोगः	"	-	३	" सं. १९०७ भाद्रपद शु. ९	
१४१	चंडो होममंत्र विधानं	" कात्यायनी तंत्रे	-	१	" सं. १९११ भाद्रपद शु. ८ होम	
१४२	चंडोपूजनं	"	-	३	" सं. १८५०	
१४३	चंडी स्तुतिः	"	-	१	" सं. १९०३	
१४४	चंडीविधानं	"	-	११	" सं. १८७८	
१४५	चंडी हृदय कीलकं	"	-	८	" सं. १९१९ [* सेने तजसंज्ञा	
१४६	चंडीपाठः षोडशांग दुर्गासंप्रसादी	"	-	११२	" सं. १९१९ वर्षे अषाढ, व. १०*	
१४७	"	"	-	१३५	" सं. १७१७ अश्विन शु. १३ रवी	
१४८	"	"	-	८८	" सं. १७९० प्रथम भा. शु. १४ शुक्र	
१४९	" पूर्ण ७०० मंत्राः	"	-	५६	" सं. १७७५ भा. शु. शुक्र	
१५०	"	"	-	१०६	" सं. १७८४ मार्गशीर्ष शु. १ शुक्र	
१५१	"	"	-	१४३	" सं. १८०८ का. व. ८ शुक्र	
१५२	"	"	-	४७	" सं. १८१८ भाद्रपद शु. ९ मीने	
१५३	"	"	-	९६	" सं. १८८५ मार्ग शु. १५ रवी	
१५४	" उत्तमपाठः	"	-	९४	" सं. सं. ३८९३ प्रा.	
१५५	"	"	-	१०५	" सं. १८९५ प्रा.	
१५६	"	"	-	७९	" सं. १९०३ भाद्रपद शु. १० रवी	
१५७	"	"	-	१४६	" सं. १८१५ प्रा.	
१५८	"	"	-	१७८	" सं. १८९५ प्रा.	
१५९	" ७०० मंत्राः	"	-	१००	" सं. १७५०	
१६०	"	"	-	१००	" सं. १९१५ के. जी. क.	
१६१	"	"	-	१२६	" सं. १९१५	
१६२	"	"	-	१००	" सं. १९१५	
१६३	रहस्यत्रयं चंडीपाठे	"	-	१२	" सं. १७९० प्रथम भा. शु. १४ शुक्र	
१६४	देवीकवचं	"	-	८	" सं. १९२५	
१६५	कवचं भगवता कीलकं	"	-	१०	" सं. १९२५ का. शु. शुक्र	
१६६	कवचं	"	-	११	" सं. १९१४	
१६७	ज्वालामालिनी स्तुतिः	"	-	४	" सं. १८१० प्रा.	
१६८	ज्वालामुखी पटलं	"	-	७	" सं. १८४८	
१६९	" सहस्रनाम	"	-	१०	" सं. १८४९	

(१) देवतानां अग्नि गायत्री, शिव गायत्री, राम गायत्री, रुद्रिह, हनुमान, गणेश, दुर्गा, लक्ष्मी, नारायण गायत्री:

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્તલિખિત ગ્રંથ ભંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, MSS. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAUBASHTRA) INDIA.

Subject : TANTRAM

વિષય : તંત્ર.

ક્રમાંક: Serial No.	ગ્રંથ નામ Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાણિ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ: Scribe & Date
૧૭૦	તંત્રગદ્યા: મહાકાવિકાશ:	સંપૂર્ણ	-	૪	દેવનાગરી મંથત ૧૯૦૪	
૧૭૧	તંત્રગદ્યા: ઉત્તમપ્રયોગ:	"	-	૫	સંસ્કૃત સં. ૧૭૧૨	
૧૭૨	તંત્રાધિકારી નિર્ણય:	" મથેજીવીક્ષિત	-	૨૧	" સં. ૧૮૭૪ ફાલ્ગુન શુદ્ધ ૧ લિ *	
૧૭૩	તાંત્રિક પૂજનવિધિ	" કુલાર્ણવ	-	૧૧	" સં. ૧૮૩૫ [કેશવવીક્ષિતેન દાદયા]	
૧૭૪	" મુખયોગસમાપ્તિ	"	-	૭	" સં. ૧૭૩૫ વર્ષે વેળનાથ લિ.	
૧૭૫	" સંધ્યા	"	-	૬	" સં. ૧૮૫૫	
૧૭૬	તારા કવચ	" યોગિનીતંત્ર	-	૨	" સં. ૧૮૮૨ કાર્તિક શુદ્ધ ૨ ફુલરામેન	
૧૭૭	ત્રિકુટા રહસ્ય	" રહ્યામલે	-	૧૯	" સં. ૧૮૦૭ પ્રા.	
૧૭૮	ત્રિપુરસુંદરી કવચ ૧, હૃદય ૨,	" લલિતાપાશ્યાને	-	૧૦	" સં. ૧૯૩૫ પ્રા.	
૧૭૯	" કવચ	"	-	૫	" સં. ૧૮૧૦ પ્રા.	
૧૮૦	" સર્વસિદ્ધિ કવચ	"	-	૧૦	" સં. ૧૭૭૮ પ્રા.	
૧૮૧	" સહ્યામલા	" રહ્યામલે	-	૫	" સં. ૧૯૩૬	
૧૮૨	"	"	-	૬	" સં. ૧૯૪૦	
૧૮૩	" તાપિની	અપૂર્ણ શ્રીતાપિની ઉપનિષદ	-	૧૯	" સં. ૧૯૦૫ [નર્મદાતીરે યુક્તર્ણવ]	
૧૮૪	" પંચમી સ્તવરાજ:	સંપૂર્ણ	-	૯	" સં. ૧૯૨૩ આશ્વિન વદ ૨ સોમ	
૧૮૫	" પૂજાપદ્ધતિ:	"	-	૨૧	" સં. ૧૯૩૦ માઘ વદ ૧૩ સુગ	
૧૮૬	" મલિદામવિધિ	"	-	૩	" સં. ૧૭૯૬	
૧૮૭	" યજ્ઞનક્રમ: ઉત્તમ:	"	-	૩૬	" સં. ૧૯૪૧ શ્રી મુનેશ્વરી પૂજા	
૧૮૮	" વેદાધાર્ણવ્યાસ:	"	-	૩	" સં. ૧૯૨૫ [પદ્ધતિ]	
૧૮૯	" સાધન, પૂજાપદ્ધતિ:	"	-	૩૨	" સં. ૧૮૫૨	
૧૯૦	" સ્તવરાજ:	"	-	૧૦	" સં. ૧૯૪૫	
૧૯૧	" સ્તોત્ર ૧૨૮ શ્લોક: (1)	"	-	૫૦	" સં. ૧૯૪૮	
૧૯૨	" સ્તોત્ર-મહાકવચ	"	-	૨	" સં. ૧૮૩૫	
૧૯૩	ત્રિપુર સુંદરી સૌમાય કલ્પલતિકા	"	-	૪૬	" સં. ૧૯૫૦	
૧૯૪	ત્રિપુરા સ્તોત્ર	" શ્રીમાત્રિપુરેપરાત્પરતરે	-	૮	" સં. ૧૮૧૫	
૧૯૫	" સ્તોત્ર: શ્યામલા	" દેવસ્યેવશરાસન	-	૬	" સં. ૧૮૦૫	
૧૯૬	ત્રિપુરા સૌમાય હૃદય	" શિવરહસ્યે	-	૧૦	" સં. ૧૯૨૧ માઘ વદ શુદ્ધ ૧ રવિ (2)	
૧૯૭	ત્રિલોક્ય મોહન કવચ	અપૂર્ણ રહ્યામલે	-	૨	" સં. ૧૭૦૭	
૧૯૮	"	સંપૂર્ણ	સંસ્કૃત ટીકા	૧૫	" સં. ૧૯૩૬	
૧૯૯	"	"	-	૨	" સં. ૧૯૨૭ માઘ વદ શુદ્ધ ૧ સોમ	
૨૦૦	ચર્ચા કલ્પ:	" આદિત્યપુરાણે	-	૪	" સં. ૧૮૬૫	
૨૦૧	ત્વરિતા કવચ:	"	-	૧	" સં. ૧૯૫૮	
૨૦૨	દક્ષાપ્રેયતંત્ર	"	-	૪૦	" સં. ૧૯૦૬ કાર્તિક પુ. ૨ પુરી (3)	
૨૦૩	"	"	-	૨૬	" સં. ૧૯૩૩ કા. શુ. ૫ કુષે (4)	
૨૦૪	દક્ષિણકાલી જગમંગલ	"	-	૫	" સં. ૧૯૩૭ પ્રા.	
૨૦૫	" પદ્ધતિ:	અપૂર્ણ	- ૨૧ ત: ૪૨	૧	" સં. ૧૯૩૩ પૌષ ક. ૧ (5)	
૨૦૬	દક્ષિણાવર્તન સંસ્કૃતિ:	સંપૂર્ણ	-	૧	" સં. ૧૯૪૧	
૨૦૭	દુર્ગાપૂજા	"	-	૨	" સં. ૧૮૨૫	
૨૦૮	" પ્રયોગ:	"	-	૫૪	" સં. ૧૮૭૮ આવળ મુબી	
૨૦૯	" માનસીપૂજા	"	-	૨	" સં. ૧૯૫૮ અધિક આવળ (6)	

(1) શ્લોક: ઉત્તમકાવ્ય ૧, આરતી ૨ (2) શ્રી નર્મદાતીરે યુક્તર્ણવ સુત મનાઈને (3) પુરી આચાર્ય હરિશંકર સુત પ્રાગ્જાનકરે લિ. (4) કુષે લે. અવપરામત્તમ (5) કૃષ્ણ ૧ રવિ લિ. નૌરમપુરે આચાર્ય દેવરામસુત રતનજીકેન (6) આવળ કૃષ્ણ ૧ મૌને ગોસ્વામી દ્વારા કૃષ્ણેન સંપ્રદીવા લિખિતા ૫.

क्रमांक Serial No	ग्रन्थ नाम Name of the Work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
२१०	दुर्गापूजा स्तुति:	संपूर्ण अर्जुन	-	४१	देवनागरी संवत् १९११ वैशाख शु. ५ सिद्धवार	
२११	" स्तोत्र "	"	-	२	संस्कृत सं. १८२५	
२१२	देवताना मंत्राः	"	-	१३	" सं. १८१३	
२१३	देवी चरित्र	" रुद्रयामले	-	२२	" सं. १८९९ वर्षे महवसन्तेन	
२१४	" त्रिमूर्ध्यानां	"	-	१३	" सं. १८४०	
२१५	" नीलाजनं अरती	"	-	५	" सं. १९५९	
२१६	" त्रिशतीनामावली	"	-	३०	" सं. १९५०	
२१७	" सहस्रनाम	अपूर्ण	-	५	" सं. १८३३	
२१८	" सूक्त	संपूर्ण	-	१४	" सं. १८२१ भाद्रपद शुद्ध २	
२१९	" न्यासध्यानादिब्रह्म उक्तम्	" तंत्रशारे	-	१०	" सं. १८३९	
२२०	" "	"	-	४	" सं. १९७४ आश्विन शुद्ध १५	
२२१	"	अपूर्ण	-	१२	" सं. १८००	
२२२	" स्तुति:	संपूर्ण	-	८	" सं. १९१०	
२२३	" स्तोत्राणि गणपति (१)	" पुस्तिका	-	४५	" सं. १९४५	
२२४	धूम्रावती प्रयोगः भद्रकाली प्रयोगः	"	-	३	" सं. १८३५	
२२५	नवग्रहो पञ्चति:	अपूर्ण	-	४	" सं. १८४५	
२२६	" प्रतिष्ठापूजन	संपूर्ण	-	१ ओकीपु	" सं. १९०४	
२२७	मन्त्रदुर्गा हवन पञ्चति:	अपूर्ण	-	५	संस्कृत सं. १९१३ भा. आश्विन शुद्ध ११ सुग	
२२८	नवरात्रि पूजन कथा	संपूर्ण	-	३२	" सं. १८९९ का. शुद्ध १३ औमे	
२२९	नवरात्र माहात्म्य १, (२)	" रुद्रयामले	-	१५	" सं. १८७३ मार्ग. शु. ११	
२३०	नवार्णवविधिः १, नवार्णवविधिः २	"	-	१८	" सं. १८७३ मार्ग. शु. ११	
२३१	" पुराण	"	-	१३	" सं. १९१८ फाल्गुन कृष्ण (३)	
२३२	" विधान	"	-	२५	" सं. १९३९	
२३३	निधिप्रदीप	"	-	४०	" सं. १९९५	
२३४	वसिष्ठ कवचं प्रयोग मोहन	" महासंहिता	-	४	" सं. १९१२	
२३५	" [वैष्णवधर्म प्रतिष्ठापद्धतौ]	"	-	३	" सं. १८२५ प्रा.	
२३६	" पंजर	"	-	८	" सं. १९१२ प्रा.	
२३७	" परिचर्या	" आचार्य कृष्णदेवः	-	१२	" सं. १८५३	
२३८	" मन्त्राभ्यासः	"	-	३	" सं. १९५१	
२३९	" मालास्तोत्र	"	-	७	" सं. १९००	
२४०	" स्तवराजः	"	-	९	" सं. १९०१	
२४१	वसिष्ठायुताक्षरी १, (४)	"	-	३८	" सं. १८५९	
२४२	पंचमीस्तवराजः	" रुद्रयामले	-	१९	" सं. १९८१ फा. व. ११ गुरी	
२४३	पंचमुखी हनुमान कवच	"	-	३	" सं. १९१६ जेठ वद ८	
२४४	पद्मावती कवचः ३६ यंत्रसहितः	"	-	३८	" सं. १८४५ प्रा.	
२४५	पद्मावती प्रयोगः	"	-	१	"	
२४६	" स्तोत्रं प्रयोग	"	-	२	"	
२४७	" स्तोत्रं जैनी उत्तमोत्तम (५)	"	-	२	" सं. १८५० कार्तिक शुद्ध १०	

(१) गणपति मंत्रराज स्तोत्र १, चानुडा स्तोत्र २, लघुस्तव स्तोत्र ३, महालक्ष्मीपंजर स्तोत्र ४, राजराजेश्वरी स्तोत्र ५, कामाक्षा स्तोत्र ६, कालात्रिपुरा स्तोत्र ७, सिद्धलक्ष्मी स्तोत्र ८, चंद्राक्ष स्तोत्र ९, वाराही स्तोत्र १०, आहुद्वारराम स्तोत्र ११ (२) माहात्म्य १, नवरात्र कलशस्थ. १ दि २, नवरात्र ध्वनविधिः ३ नवरात्र ध्वनपद्धतिः ४, (३) कृष्ण ११ औमे गिरिजापुर विष्णुचरसमीपे (४) वसिष्ठायुताक्षरी १, वसिष्ठ मंत्रकवच २, वसिष्ठकवचः ३ (५) उत्तमोत्तम राजेन्द्रचन्द्राई २, हेमनाथजीहोरी ३ ।

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્તલિખિત ગ્રંથ મંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર ।

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: TANTRAM

વિષય : । તંત્ર ।

ક્રમાંક	ગ્રંથ નામ	કર્તા Author	ટીકા	પત્રાણિ	ભાષા-લિપિ:	લેખક-મિતિ:
Serial No.	Name of the work Title	સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves.	Language & Script	Scribe & Date
૨૪૮	પદ્યાવતી સ્તોત્ર	સંપૂર્ણ	-	૬	દેશનાગરી	સંવત ૧૮૭૩ જ્યેષ્ઠ વદ ૬ *
૨૪૯	" જેની	"	-	૪	સંસ્કૃત	સં. ૧૮૯૩ ફાલ્ગુન વદ ૧૩ શની
૨૫૦	" વસમ પ્રયોગ:	"	-	૫	"	સં. ૧૮૯૩ પ્રા. [*અકબરાબાદમધ્યે
૨૫૧	" મહામંત્ર ગમિતં ૪૬ + , [મંત્રા: મંદાકાતાવા	-	-	૧૮	"	સં. ૧૯૪૫
૨૫૨	" સ્તોત્ર સંપ્રયોગ	"	-	૨	"	સં. ૧૯૦૭
૨૫૩	પાત્રાસાદન	અપૂર્ણ	-	૨	"	સં. ૧૯૩૨
૨૫૪	પ્રત્યંગિરા-કાલીપ્રત્યંગિરા	સંપૂર્ણ	-	૧૦	"	સં. ૧૯૧૭ કા. શુ. ૯ શુક્રે
૨૫૫	"	" કુજિકાતને	-	૭	"	સં. ૧૯૧૫ વે. શુ. ૧૧ શુક્રે
૨૫૬	" સ્તોત્ર	"	-	૧૩	"	સં. ૧૯૧૬ વે. શુ. ૧૫
૨૫૭	" પ્રયોગ: વલિદાન	"	-	૫	"	સં. ૧૯૧૭
૨૫૮	"	"	-	૪	"	સં. ૧૮૩૭ માધવસ્વામિદે ૫ શની
૨૫૯	પ્રત્યંગિરાકાલી પ્રયોગ:	"	-	૮	"	સં. ૧૯૩૧
૨૬૦	"	અપૂર્ણ	-	૪	"	સં. ૧૯૦૧ વૌષ. ક. ૧ શુક્રે
૨૬૧	" વિપરીતપ્રત્યંગિરા સ્તોત્ર	સંપૂર્ણ મેરવતમે	-	૨	"	સં. ૧૯૨૧
૨૬૨	" સ્તોત્ર [:-પીતાંબરાણ	" શંકેશ્વરશૂલપાણિ:	-	૫	"	સં. ૧૯૪૫
૨૬૩	" સ્તવ: [:-ગંગામુખી	"	-	૪	"	સં. ૧૯૫૨
૨૬૪	ગંગામુખી સદ્ગુણામ :-	"	-	૧૦	"	સં. ૧૮૦૪
૨૬૫	" સાધન	" જયશંકરચામડે	-	૭	"	સં. ૧૮૨૯
૨૬૬	" સ્તોત્ર	" નારદ	-	૩	"	સં. ૧૮૪૮
૨૬૭	"	"	-	૩	"	સં. ૧૯૫૩ માધ શુદ. ૮ શુક્ર
૨૬૮	"	"	-	૧ જોડીશુ	"	સં. ૧૯૩૩ જ્યેષ્ઠ ૫ શંક્રે
૨૬૯	શટુકમૈરવ પટલ આપદુષ્ટારક	" વિશ્વશરોદારે	-	૮	"	સં. ૧૮૨૨ માધ. વદ ૦))
૨૭૦	" સ્તવરાગ:	" શ્રદ્ધામહે	-	૮	"	સં. ૧૮૫૦
૨૭૧	" સ્તોત્ર	"	-	૧૮	"	સં. ૧૯૩૦
૨૭૨	" સદ્ગુણામ	"	-	૮	"	સં. ૧૮૨૨ માધ. વદ ૦))
૨૭૩	" અષ્ટોતરશત	"	-	૧	"	સં. ૧૯૪૫
૨૭૪	"	"	-	૨	"	સં. ૧૮૨૧
૨૭૫	" વપાસનાલિપિ	સંપૂર્ણ	-	૧	"	સં. ૧૮૧૭
૨૭૬	" સ્તવરાગ:	" શ્રદ્ધામહે	-	૩	"	સં. ૧૮૦૫
૨૭૭	" સ્તોત્ર (આપદુષ્ટારક)	"	-	૯	"	સં. ૧૮૫૫ વર્ષે શુદ. ૧૩
૨૭૮	" સ્તવરાગ: (,,)	"	-	૧૦	"	સં. ૧૯૧૫ વે. શુ. ૭ શોમ
૨૭૯	શટુક સીપદાનલિપિ: ૧, (1)	" શ્રદ્ધામહે	-	૧૧	"	સં. ૧૮૦૯
૨૮૦	" સીપદાન	"	-	૭	"	સં. ૧૮૧૪ માધ. શુ. ૫ શુક્ર
૨૮૧	" " ૧, શંખા ૧, (2)	"	-	૨૬	"	સં. ૧૮૧૬
૨૮૨	શાલા કવચ	" શ્રદ્ધામહે	-	૩	"	સં. ૧૯૦૧ ૧ શાકે ૧૦૬૬ કા.વ. ૧ શુક્ર
૨૮૩	"	" શારદાતિલકે	-	૨	"	સં. ૧૯૦૪ અશ્વિન શુદ. ૯ રવિ
૨૮૪	" પૂજાપદ્ધતિ:	"	-	૩૨	"	સં. ૧૮૨૭ મા. શુદ. ૮ શોમે
૨૮૫	" સ્તોત્ર	" શંકરાચાર્ય:	-	૨	"	સં. ૧૯૪૧
૨૮૬	" અષ્ટોતરશત	"	-	૨૬	"	સં. ૧૯૪૧
૨૮૭	" પૂજાપદ્ધતિ:	અપૂર્ણ	-	૧૩	"	સં. ૧૯૫૨

(1) સીપદાનલિપિ ૧, શટુકસ્તવપુરુષર્ચ ૨, ૩ ત્રિપુરસુરર્ચ પૂજન શેમ (2) શંખા ૧, શ્રદ્ધાપદ્ધતિ ૧, વપાસનાલિપિ ૧, ગાયત્રીકવચ ૫, માલામંત્ર: ૬, નાયત્રી કવચ ૭, શટુકકવચ ૮, શરદાલિપિ: ૯, શટુકશ્લોક ૧૦

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રંથ ભંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : TANTRAM

વિષય : તંત્ર ।

ક્રમાંક	ગ્રંથ નામ	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાણ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ: Scribe & Date
Serial No	Name of the Work (Title)					
૨૮૮	વાલા હૃદય	સંપૂર્ણ જાતનાવરતને	-	૪	દેવનાગરી	સંવત ૧૯૪૧
૨૮૨	" પદ્ધતિ:	"	-	૧૪	સંસ્કૃત	સં. ૧૮૧૦ પ્રા.
૨૯૦	" "	"	-	૧૯	"	સં. ૧૬૮૧ પ્રા.
૨૯૧	" "	"	-	૪	"	સં. ૧૬૪૨
૨૯૨	" પ્રયોગ:	"	-	૧	"	સં. ૧૬૨૨
૨૯૩	" પદ્ધતિ	"	-	૧૨	"	સં. ૧૬૦૪
૨૯૪	વાલા ત્રિપુરાયાત્રીલોક્ય વિજય ÷	" રૂઢવામલે	-	૩	"	સં. ૧૬૫૦
૨૯૫	વાલા ઘાણપ્રયોગ: [÷ નામ કવચ "	"	-	૩	"	સં. ૧૮૧૫
૨૯૬	" સહસ્રનામ	અપૂર્ણ	-	૪	"	સં. ૧૬૪૫
૨૯૭	" "	સંપૂર્ણ રૂઢવામલે	-	૨૩	"	સં. ૧૮૩૧ પ્રા.
૨૯૮	" "	અપૂર્ણ	-	૧૦	"	સં. ૧૬૫૫
૨૯૨	" સ્તવરાજ:	સંપૂર્ણ રૂઢવામલે	-	૧	"	સં. ૧૬૫૪
૩૦૦	" પ્રયોગ:	"	-	૩	"	સં. ૧૬૫૪
૩૦૧	" ત્રિપુરાસ્તવ:	"	-	૩	"	સં. ૧૮૪૯
૩૦૨	" મંત્રોપચારા	અપૂર્ણ	-	૨	"	સં. ૧૬૫૬
૩૦૩	" કવચ	" ગૌરીતંત્રે	-	૨	"	સં. ૧૬૨૫
૩૦૪	ભગવતી સ્તુતિ:	"	-	૨	"	સં. ૧૮૩૩
૩૦૫	" પદ્યગુણાંજલિ:	"	-	૨	"	સં. ૧૮૧૫
૩૦૬	" "	સંપૂર્ણ	-	૫	"	સં. ૧૮૩૧
૩૦૭	મદ્રકાલી કવચ	"	-	૨	"	સં. ૧૬૦૨
૩૦૮	" સ્તોત્ર	"	-	૨	"	સં. ૧૬૨૫
૩૦૯	" મહાની કવચ	" રૂઢવામલે	-	૧	"	સં. ૧૬૧૬ પ્રા.
૩૧૦	" હંસગુરુ	"	-	૪	"	સં. ૧૬૫૦
૩૧૧	" સહસ્રનામ	"	-	૧૪	"	સં. ૧૬૨૮
૩૧૨	" "	"	-	૨૧	"	સં. ૧૭૪૦
૩૧૩	" "	"	-	૧૨	"	સં. ૧૬૧૧ જ્યેષ્ઠ વદ ૧૨ મોમે (૧)
૩૧૪	" "	" રૂઢવામલે	-	૨૪	"	સં. ૧૬૭૫
૩૧૫	" " પદ્ધતિ:	" ગો. શિવાનંદ	-	૮	"	સં. ૧૮૫૨ કા. શુદ્ધ. ૧ મૌમ
૩૧૬	" " અપૂર્ણ	"	-	૩૫	"	સં. ૧૬૧૬
૩૧૭	ભુવનેશ્વરી મહાપૂજાપદ્ધતિ: સંપૂર્ણ	"	-	૨૬	"	સં. ૧૬૧૬ પૌષ કૃષ્ણ (૨)
૩૧૮	" લઘુ પૂજાપદ્ધતિ:	"	-	૩૭	"	સં. ૧૬૨૧ કા. શુ. ૫ રાજવૈશ.
૩૧૯	" નિર્વાચનાવિધિ:	" આગમેષા	-	૧ જોડીકુ	"	સં. ૧૬૨૧ કા. [જ્યેષ્ઠ. કા. લિ
૩૨૦	" સહસ્રનામ	"	-	૧૦	"	સં. ૧૬૧૧
૩૨૧	" સ્તોત્ર ચંચન્મૌલિક (૩)	" પૃથ્વીચરાચાર્ય ગુલામિX	-	૨૫	"	સં. ૨૦૦૦ અષાઢ શુ. ૫
૩૨૨	" "	" [X ૧ ઘનામ	-	૩	"	સં. ૧૮૧૦ના પૂર્વે શાકે(૪)
૩૨૩	ભરવપદ્માવતી કવચ: ઉત્તમાવતી:	" મન્નિરેણાચાર્ય	-	૭૬	"	સં. ૧૬૪૨ પ્રા. કૃષ્ણ
૩૨૪	" ૪૭ વંત્રસહિત:	"	-	૩૧	"	સં. ૧૧૩૬ પ્રા.
૩૨૫	" સટીકા	" પત્રાણિ ૨૯	-	૧૧૯	"	સં. ૧૬૮૨ આષાઢ શુ. ૧૫ †
૩૨૬	" " અપૂર્ણ	"	-	૨૮	"	સં. ૧૬૧૩ રાજવૈશ કો.કા. લિ. મે.
૩૨૭	મંડાલિત્રામણિ: શાવરમંત્રશાલ	" પાર્શ્વતીપુત્ર નિત્યનાથશિવ	-	૪૬	"	સં. ૧૬૧૫ આષાઢ શુ. ૧ સોમે (૬)
૩૨૮	" "	"	-	૨૮	"	સં. ૧૮૨૫

(૧) મોમે ગોવિંદજીયુત કચરા મુજનગર (૨) કૃષ્ણ ૦) પુરો મંત્રિનગરે ત્રિવેદી દુર્ગમજાતમંત્ર નિષ્ક્રમાયેલ લિ. (૩) ચંચન્મૌલિક હેમમંડલયુતા કૃષ્ણાવિષ્ણોક ૪૯ (૪) શાકે ૧૭૧૨ શ્રાવણ વદ ૧૨ સોમે સ્વદેશ પ્રજાદેવ્યે લિ. ૨મે કચરા મુતકેવલેન ૧૦ સોમે લિ. રાજવૈશ જી. કા. ગોંડલ.

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રંથ ભંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: TANTRAM

વિષય: તંત્ર.

ક્રમાંક Serial No.	ગ્રંથ નામ Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અસંપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાણ No of Leaves	ધારા- લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ: Scribe & Date
૩૨૯	મંત્રસંહિ: રસરત્નાકરે મંત્રસંહિ:	અસંપૂર્ણ: પાનંતીપુત્ર *	-	૧૮૨	દેવનાગરી	સં. ૧૯૯૧ મદ્રાસાત
૩૩૦	"	" [નિત્યનાયસિદ્ધ ૨૦ પટલા:	-	૧૧૯	સંસ્કૃત	સં. ૧૯૭૫ના આધાર કુળે ૧]
૩૩૧	" ભાષા	"	-	૧૯	"	સં. ૧૮૨૯
૩૩૨	મંત્રચિંતામણિ: સિદ્ધિ સારણી † સંપૂર્ણ	"	-	૫૭	"	સં. ૧૯૧૪ પ્રા. ઉત્તમાશ્રમ
૩૩૩	મંત્રતંત્રસંગ્રહ: [ગોપાલાદિદાસાશ્રમ	"	-	૧૮૮	"	સં. ૧૯૦૮ પોષ વદ ૮
૩૩૪	મંત્રસંગ્રહ: [†વ્યક્તિ:	"	-	૯	"	સં. ૧૯૪૮
૩૩૫	" દેવતાનાં ગાયત્ર્ય:	"	-	૨૪	"	સં. ૧૯૧૦
૩૩૬	મંત્ર-મોષધસંગ્રહ:	"	-	૮૨	મારવાડી ગુજ	સં. ૧૭૫૧ પોષ. શુ. ૧
૩૩૭	"	"	-	૧૦૦	દેવ સં.	સં. ૧૭૨૧ પ્રા.
૩૩૮	"	"	-	૪૦	"	"
૩૩૯	મંત્રપરિભાષા	"	-	૭	"	સં. ૧૯૧૨
૩૪૦	મંત્રાણી ક્રમધાવ્ય:	"	-	૮	"	સં. ૧૯૨૧
૩૪૧	મંત્ર ભાગવત ટપાલ્યા	" નીલકંઠ:	-	૨૦	"	સં. ૧૭૨૩ ચૈ. શુદ્ધ ૧૦
૩૪૨	મંત્રતંત્રાવલિ:	" ગોહીજી	-	૩૬	"	સં. ૧૭૨૩
૩૪૩	મંત્રમહોદધિ:	અસંપૂર્ણ તરંગ ૨૫ પંચત	-	૧૭૮	સંસ્કૃત	સં. ૧૭૪૧ પ્ર.
૩૪૪	"	" તરંગ ૧ પંચત	-	૧૦૩	"	સં. ૧૮૪૮ પ્રા.
૩૪૫	મંત્રાણી વ્યસન સંગ્રહ:	"	-	૪	"	સં. ૧૭૫૧
૩૪૬	મહાગણપતિ સદ્ગ્રંથનામ ૧, (૨) સંપૂર્ણ સ્ત્રવામહે	"	-	૬	"	સં. ૧૮૦૨
૩૪૭	મહામંત્રાલોક	"	-	૬	"	સં. ૧૯૦૨ ઉચ્છેદ ક. ૨૨
૩૪૮	મહામૃત્યુંજય મંત્ર:	"	-	૨	દેવ સં.	સં. ૧૯૯૧ આધાર શુ. ૮ સુ.
૩૪૯	" પ્રયોગ:	"	-	૧	"	સં. ૧૭૧૫ આશળ શુ. ૭ સુ.
૩૫૦	મહાલક્ષ્મી અષ્ટક	"	-	૧	"	સં. ૧૮૫૦
૩૫૧	" પૂજન	"	-	૩	"	સં. ૧૮૧૮
૩૫૨	મારવાડી મંત્રશાસ્ત્ર મંત્રતંત્ર †	" [તંત્રાધિકારી બીજવ	-	૧૬૨	મારવાડી	સં. ૧૩૨૧ પ્રા.
૩૫૩	" નો ઉત્તારો નોંધ	"	-	૨૫૭	"	સં. ૧૯૧૦
૩૫૪	નાટકાન્યાસ:	"	-	૨	દેવ સં.	સં. ૧૮૪૧
૩૫૫	માયાબીજ કલ્પ: ઉત્તમાશ્રમ:	"	-	૫	"	સં. ૧૫૬૧
૩૫૬	માતંગી કલ્પ	અસંપૂર્ણ	-	૨	"	સં. ૧૮૫૪
૩૫૭	નાટકાદિ યોદ્યાન્યાસ:	અસંપૂર્ણ	-	૫	"	સં. ૧૮૧૦
૩૫૮	મૃત્યુંજય કલ્પ	" મેરવતંત્ર	-	૧૨	"	સં. ૧૯૨૮
૩૫૯	મૃત્યુંજય કલ્પ: પટલ	" મેરવતંત્ર	-	૪	"	સં. ૧૯૨૮
૩૬૦	" પ્રયોગ:	"	-	૨	"	સં. ૧૭૮૨ પ્રા. શુદ્ધ. ૧
૩૬૧	"	"	-	૭	"	સં. ૧૭૨૫ પ્રા.
૩૬૨	"	"	-	૪	"	સં. ૧૭૬૫ પ્રા.
૩૬૩	" પૂજાવ્યક્તિ:	"	-	૩	"	સં. ૧૯૨૮
૩૬૪	" વિશાન	"	-	૩	"	સં. ૧૯૫૧
૩૬૫	"	"	-	૭	"	સં. ૧૯૨૮ પ્રા. શુ. ૧ ત
૩૬૬	"	" મંત્રમહોદધી	-	૧૧	"	સં. ૧૮૧૦ માંચ વદ ૧૪
૩૬૭	"	" મેરવતંત્ર	-	૩	"	સં. ૧૯૨૮
૩૬૮	"	અસંપૂર્ણ	-	૨	"	સં. ૧૯૦૨
૩૬૯	" સ્તોત્ર	અસંપૂર્ણ માક ડેવનિરખિત:	-	૫	"	સં. ૧૯૧૭

(૧) કુળે સંવત ૧૯૬૫ વર્ષે લિખિતપુસ્તિકાઓ રેગેય પ્રાંતેના લિખિત રાજવૈષ્ણવ ગોંડલ. મહાશક્તિ મુદ્રા અગ્રણ્ય પ્રતિ બધી અન્યાસદ્ધ સંપિતાસ્તે (૨) અગ્ર સદ્ગ્રંથનામ ૧. મહાગણપતિ પટલ ૨, મહાગણપતિ સ્તોત્ર ૩. મહાગણપતિ કલ્પ ૪.

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રન્થ ભંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : TANTRAM

વિષય : તંત્ર.

ક્રમાંક:	ગ્રન્થ નામ	કર્તા Author	ટીકા	પાનાણિ	ભાષા-લિપિ:	લેખક-મિતિ:
Serial No.	Name of the work (Title)	Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Date
૩૭૦	યત્ર ચિતામણિ: ૧૨ (1)	સંપૂર્ણ	-	૨૫	દેવનાગરી	સંવત ૧૮૫૮ના વર્ષે શાકે (2)
૩૭૧	યક્ષિણી સાધન વિમળા (3)	"	-	૬	સંસ્કૃત	સં. ૧૯૦૫
૩૭૨	યોગિની ધીરનામાનિ	"	-	૧	"	સં. ૧૭૭૭ પ્રા.
૩૭૩	રમસ્વલા સ્તોત્ર	"	-	૪	"	સં. ૧૮૫૪
૩૭૪	"	"	-	૨	"	સં. ૧૮૩૬
૩૭૫	રાજગાંગેશ્વરી સ્તોત્ર	"	-	૧	"	સં. ૧૯૧૨ અષાઢ શુદ ૧૨ વૃષે
૩૭૬	રાધા કલ્પ ૧ પ્રતી	" પ્રદ્યામલે	-	૨	"	સં. ૧૮૩૬ના પોષ વદ ૪ શુક્રે
૩૭૭	" સદ્ગનામ ઉત્તમોત્તમાક્ષર:	" પ્રદ્યામલે	-	૩૪	"	સં. ૧૮૧૩ ઉત્તમોત્તમાક્ષર
૩૭૮	રામ પદ્ધતિ:	"	-	૧૨	"	સં. ૧૮૧૨ પ્રા.
૩૭૯	લઘુ સપ્તશતી સ્તોત્ર	"	-	૫	"	સં. ૧૯૩૧
૩૮૦	લઘુસ્તવ્ય : શ્લોક ૨૧	"	-	૧	"	સં. ૧૫૧૬ પ્રા.
૩૮૧	"	"	-	૩	"	સં. ૧૭૪૮ માષ કૃ. ૧૦ રવિ
૩૮૨	"	"	-	૫	"	સં. ૧૮૧૨ પ્રા.
૩૮૩	"	" સશ્લોક	સશ્લોક	૧૦	"	સં. ૧૮૬૨ આ. શુ. ૫ શની (4)
૩૮૪	" શ્લોક ૨૨ ન્યાસપદ્યન પદ્ધતિ	"	-	૩	"	સં. ૧૮૭૬ વૈશ શુદ ૨ શુરો
૩૮૫	" શ્લોક ૨૧	"	-	૪	"	સં. ૧૮૭૭ પ્રા.
૩૮૬	" શ્લોક ૨૧	"	-	૪	"	સં. ૧૮૮૧
૩૮૭	" વિદ્યુત્તિસદ્ધિ	"	-	૧૨	"	સં. ૧૮૮૧ના આ. શુ. ૨ (5)
૩૮૮	" શ્લોક ૨૧	"	-	૬	"	સં. ૧૮૧૧ પ્રા.
૩૮૯	" શ્લોક ૧ અષ્ટપૂર્ણ સ્તોત્ર ૨	"	-	૨૧	"	સં. ૧૯૨૦ના વૈ. શુ. ૧૨ રવો
૩૯૦	" શ્લોક ૨૫	"	-	૫	"	સં. ૧૯૨૭ [દશેમુલજીદામોદરેન
૩૯૧	" શ્લોક ૨૩	"	-	૧૦	"	સં. ૧૯૩૬ રા. ચૈત્ર વદ ૬
૩૯૨	" શ્લોક ૨૫	"	-	૫	"	સં. ૧૯૩૬ પ્રા.
૩૯૩	" શ્લોક ૨૫	"	-	૫	"	સં. ૧૯૪૧ માષ કૃષ્ણ ૧૨ મીમ
૩૯૪	" શ્લોક ૨૭ ન્યાસપદ્યન	"	-	૬	"	સં. ૧૯૫૦ તપસ્વિશ્યામાઘમ્યાંકવિવાર
૩૯૫	" પ્રયોગ: ૧, વાઘાત્રિપુરા પ્રયોગ:	"	-	૩	"	સં. ૧૯૧૬ શાકે ૧૭૮૪
૩૯૬	લલિતા ત્રિશતી	"	-	૧૪	"	સં. ૧૯૬૫ પ્રા.
૩૯૭	"	"	-	૯	"	"
૩૯૮	લલિતાચંદન ચંદ્રિકા	અપૂર્ણ સંપિદાન દક્ષતા	-	૨૬	"	"
૩૯૯	" સ્તોત્ર	સંપૂર્ણ	-	૬	"	સં. ૧૭૯૦
૪૦૦	" ચંદ્રિકા	"	-	૨૯	"	સં. ૧૯૮૫ વૈ. શુ. ૫ સૌમ્ય
૪૦૧	" વિધિ:	" બાલકૃષ્ણસુત નામાનાથ વિરચિતા	-	૧૬	"	સં. ૧૯૪૫
૪૦૨	"	" રુચિહાસ દત્તપદ્ધતિ ભાસ્કરાનંદનાચક્રત: ૧૦	-	૧૦	"	સં. ૧૮૩૬
૪૦૩	લલિતા સદ્ગનામ મૂલ	" અગત્યદયગ્રીવ સંવાદે -	-	૪૧	"	સં. ૧૭૮૧ પ્રા.
૪૦૪	"	"	-	૩૧	"	સં. ૧૯૧૩ પ્રા.
૪૦૫	"	"	-	૪૦	"	સં. ૧૯૬૧
૪૦૬	"	"	-	૨૬	"	સં. ૧૯૬૨
૪૦૭	" સમાપ્ત	" ભાસ્કરાનંદ (9)	-	૬૧	"	સં. ૧૯૫૩ આ. શુ. ૧૫ શુરો
૪૦૮	" લલિતાસ્તવ:	" દુર્વાસાકૃત:	-	૨૬	"	સં. ૧૮૧૫ વૈશ વદ ૪ શુક્ર
૪૦૯	" લક્ષ્મી સ્તોત્ર	"	-	ઓઢીયુ	"	સં. ૧૯૦૩

(1) યત્ર ૧૨ તંત્રમંડા આયુર્વેદ સંસ્કૃત: (2) શાકે ૧૭૯૪ વૈશ વદ ૮ રવો શ્રી ધોરાજી મધ્યે (3) વિમળા મનોરમા સિતાસ્વા દેવધિવા વિઙ્ગનાથ સાધન (4) શની કેવલાક્ષરકથન અર્ધમાત્ર પ્રતીતયે । કલુષવ્યથો વૃત્તિ સ્વસ્થ શામલો મનઃ ।।૧।। (5) શુદ ૨ મનુ કલ્કશ્લેષ મુજનમરે દવે શ્રી ૫ કચરા તસ્પાત્મજેન કેવલેન (6) ભાસ્કરાનંદનં શ્રીમુનાથ દિપ્તિપ્રાપ્તુવં.

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्त लिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र ।

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: TANTRAM •

विषय : । तंत्र ।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work Title	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
४१०	लक्ष्मी नृसिंहसंघादि १ (१) संपूर्ण	-	-	५३	देवनागरी	संवत् १८५४
४११	लक्ष्मीव्रतविधि:	"	-	१	संस्कृत	सं. १८४१ प्रा.
४१२	लक्ष्मी हव्य	" आथर्वणरहस्ये	-	१६	" शाके १७५६ भाद्रपद वद १२ औमे	
४१३	"	अपूर्ण "	- ८ तः	१६	" सं. १८२८ भादे सितेपक्षे १ चद्रे	
४१४	"	" "	-	४	" सं. १८६४ प्रा.	
४१५	वनदुर्गा कवच	संपूर्ण हनुमानदे	-	१६	" सं. १८१७ प्रा.	
४१६	वर्णन्यास.	"	-	१	" सं. १९८१ प्रा.	
४१७	वसोधारा	"	-	७	" सं. १७९० ना ज्येष्ठ वद ४ रवौ *	
४१८	वागोश्वरी स्तोत्र	"	-	३	" सं. १८४० [* स्तुभतीर्थ	
४१९	वांछा कल्पलता	"	-	१०	" सं. १९६९	
४२०	"	"	-	११	" सं. १८४५	
४२१	"	"	-	८	" सं. १९२५	
४२२	वाणीस्त:	"	-	८	" सं. १८५८ वर्षे हा शु. १०५	
४२३	वाराहचिंतामणि:	"	-	६	" सं. १८४१ प्रा. [१२ विवासरे	
४२४	वाराही निमहाष्टक	"	-	२	" सं. १८८२	
४२५	वाराही तंत्र	"	-	१४	" सं. १८४५	
४२६	"	"	-	१५	" सं. १८६५	
४२७	वायुपुण्यविद्यानायः आयुः*	" [X परीक्षातांत्रिकी	-	१	" सं. १८३९	
४२८	विजयावाग्वादिनी स्तोत्र	"	-	८	" सं. १९१९	
४२९	विनायक शक्ति	"	-	५	" सं. १८६९ चैत्र वद १० गुरी	
४३०	विश्वामयुगचर्चा राजपद्धति	"	-	१	" सं. १९२९	
४३१	"	"	-	२	" सं. १९६३	
४३२	विष्णु कवचादीनि	"	-	२५	" सं. १९३५	
४३३	वीरभद्रस्तत्र	"	-	११	" सं. १९३९ प्रा.	
४३४	वीरमंत्रः	"	-	२	हिंदी सं. १८१२	
४३५	वेदोचनी प्रयोगः	"	-	१	" सं. १९६५	
४३६	शक्ति पंचाक्षर विधि:	"	-	१	" सं. १९२५	
४३७	शतचंडी विधान	"	-	३४	" सं. १७७४ भाद्रप. कृष्ण १४ शनी	
४३८	"	"	-	३३	" सं. १७८० प्रा.	
४३९	" पद्धति:	"	-	३०	" सं. १८५३ वै. शु. ७ सेमे नीतमपुरे	
४४०	"	"	-	३६	" सं. १८५९ भा. शु. ११ (४)	
४४१	"	"	-	४०	" सं. १९२१ भाषा वद २ (३)	
४४२	" सहस्रचंडी	"	-	२	" सं. १८०३	
४४३	संक्षेपविधि:	"	-	५	" सं. १९११	
४४४	शत्रुंजय वशीकरणशास्त्र सागर *	" [संस्कृत मंत्रतंत्र संग्रह	-	१७	देव सं. १९७८ भाषा शुद ४	
४४५	शरभ पद्धति:	"	-	३५	संस्कृत सं. १९९२ का. क. १(४)	
४४६	शरमेश्वर सहस्रनाम	"	-	८	" सं. १८९८ भा. शु. ३ शुक्ल	
४४७	शक्तिस्तव	"	-	४	" सं. १८६१ प्रा.	
४४८	शापानुग्रहः	"	-	५	" सं. १९०६	

(१) संध्यादि १, उत्तमा: सूक्ष्माक्षरा: पटल २, उत्तमा: सूक्ष्माक्षरा: स्तवराज ३, उत्तमा: सूक्ष्माक्षरा स्तवमंत्र ४, उत्तमा: सूक्ष्माक्षरा कवच उत्तमा: सूक्ष्माक्षरा: मङ्गस्तोत्र ५, उत्तमा सूक्ष्माक्षरा: पञ्चरं ६, उत्तमा: सूक्ष्माक्षरा: मंत्रस्तोत्र ८, उत्तमा: सूक्ष्माक्षरा: पटल ९ (२) शुद १३ शनी गोंडलपुरे व्यास माधवजीदात्मजेन (३) शुद २ औमे । लि. इवे मेघजीसुत देवनंदनेन शरामपत्ने (सरधार) (४) क. १ संवत् १८१० वद्योय प्रतिकाधारेण.

क्रमांक Serial No	ग्रन्थ नाम Name of the Work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
४४९	शिवकवच १ सर्वांग (१)	संपूर्ण	-	२१	देवनागरी सं. १८०८ प्रा.	
४५०	" स्कन्दे	"	-	२	संस्कृत सं. १७८५ आ. कुण १	
४५१	" "	"	-	५	" सं. १८२२ कात्यायन वद ११ रवी	
४५२	शिवचरित्य तंत्र	" अक्षितः	-	५	" सं. १९०९ प्रा.	
४५३	शिव पञ्चाक्षर पद्धतिः	"	-	२	" सं. १८०४	
४५४	" पूजनप्रयोगः	"	-	४०	" सं. १९१९ आश्विन	
४५५	" "	"	-	३	" सं. १८९५ मार्गशीर्ष वद २३ शनि	
४५६	" सहस्रनाम	"	-	२१	" सं. १९५७ पीप शुद्ध ५ शनि	
४५७	शोषानुमह स्तोत्र	"	-	२	" सं. १९२२	
४५८	" २ प्रति	"	-	३	" सं. १९९५ ले. राजवैद्य गोडक	
४५९	शुकावरण पूजा	"	-	१	" सं. १७३५	
४६०	इयाम् रहस्य	अपूर्ण पूर्णान्वगिरि	-	१४	" सं. १८९५	
४६१	श्रीकण्ठ मातृका न्यासः (२)	संपूर्ण	-	३	" सं. १७३५	
४६२	श्री वक्रोद्वारः	"	-	३	" सं. १९३९ प्रा.	
४६३	श्रीविद्या रहस्य त्रिष्टुटी रहस्य	" [*भामाधिर विरचिता	-	४२	" सं. १९५० आषाढ १४ गुरी	
४६४	विद्या पूजापद्धतिः	" वासुकुण्डल अक्षयगमैज-	-	१४	" सं. १९९९ मार्गशीर्ष शुद्ध ५ शनि	
४६५	श्रीविद्या स्तवरात्र पंचमी*	" सत्रयामले	-	२२	" सं. १८९९ मार्गशीर्ष शुद्ध ५ शनि	
४६६	श्रीविद्या [Xस्तवराः	" हवामीनागस्य	-	७	" सं. १९५२	
४६७	श्रीलुक्विधान	"	-	३	" सं. १७५३ प्रा.	
४६८	"	"	-	८	" सं. १९९८	
४६९	"	"	-	१३	" सं. सं. १९९० कर्तिक शुद्ध ५	
४७०	"	"	-	४	" सं. १९५० प्रा.	
४७१	"	"	-	३	" सं. १८२० आ. वद २ शनि	
४७२	"	" १० प्रति	-	८३	" सं. १९९० शनिवार	
४७३	"	अपूर्ण	-	१८	" सं. १९४५	
४७४	षडंगनामदेवी स्तोत्र	"	-	२	" सं. १९५०	
४७५	षोडशमूल विद्या	"	-	२	" सं. १८४५	
४७६	सप्तान कामेश्वरी कवचः*	संपूर्ण [+उत्तर प्रयोगः	-	५	" सं. १९०३ अषाढ वद २ शनि	
४७७	सप्तशती प्रयोग पूजनविधिः	" [सप्तचंदिकादि कर्मणि-	-	३	" सं. १९२२ प्रा.	
४७८	सप्तशती कवचः चण्डिकापूजनादि	" मार्कण्डेयपुराणे	-	११	" सं. १८९५ प्रा.	
४७९	" प्यान स्तोत्र	"	-	३	" सं. १९९९ ज्येष्ठ कुण्ड ५	
४८०	" न्यासविधिः	"	-	३	" " "	
४८१	" प्रयोगः	"	-	१३	" सं. १९१५ प्रा.	
४८२	" सार्धनवचं प्रयोगः	"	-	१	" सं. १८०५	
४८३	" मंत्र विभाजन	" कात्यायनीतंत्रे	-	११	" सं. १८३१	
४८४	" विधानं नवचं पद्धतिः*	" विमलमं (नाथविचिता)	-	८४	" सं. १७३९	
४८५	" [चण्डोपनिषद् अपूर्ण] [तारामंत्रि तरंगिणीसं	संपूर्ण	२३तः	७१	" सं. १८९९	
४८६	" मंत्राणां निर्णयः	संपूर्ण कात्यायनीतंत्रे	-	२८	" सं. १७९० ज्येष्ठ कुण्ड १ शनि	
४८७	संयोजनतंत्र	"	-	२०	" सं. १९२६ आश्विन कुण्ड ७ शनि	
४८८	संविद्विधि उत्कीर्णविधिः	"	-	३	" सं. १९४३ प्रा.	
४८९	सरस्वती स्तोत्र १, संपर्गमः १,	" तादृकस्येनकृतः	-	५	" सं. १८९९ ज्येष्ठ कुण्ड १३	
४९०	सर्वमंत्रोत्कीर्ण स्तोत्र	"	-	३	" सं. १८२० प्रा.	

(१) सर्वांग न्यासपानं वदसंज्ञां कामप्रयोगः सर्वांगः १ उत्तमोत्तमः तंत्रप्रयोगः (२) न्यासः श्री कला मातृका न्यासः श्रीपीठ न्यासः

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, MSS. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.
Subject : TANTRAM विषय १३: तंत्र ।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका- Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
४९१	साध्यायन तंत्र १० पटल	संपूर्णम् बहुविधः गमे	-	६३	देवनागरी	सं. १८१६ प्रा.
४९२	सिद्धसागर तंत्र ७ पत्राणि	"	-	२	संस्कृत	सं. १५०२ प्रा.
४९३	सुरासन कवच	"	-	३	"	सं. १८१२ आधिन व. १४ तमि
४९४	मूर्ध्नुतिः उत्तमकाय मंदाकांतयो *	जोषवतीसुत सांस्कृता सांस्कृता टीका	१४			१९८२ चैत्र शुद्ध १२ रवि
४९५	सूर्य कवच [* ५० श्लोकाः	महायामले	-	३	"	सं. १८४१ प्रा.
४९६	सोदय लक्ष्मी लक्ष्मीघर टीका	"	लक्ष्मीघर	३३	"	सं. १९८२ चैत्र
४९७	" संस्कृत टीका	"	संस्कृत टीका	६०	"	सं. २००५ का. वद १४ (१)
४९८	५०६ मूलमंत्रा अन्यानि ७ (२)	"	-	४६	"	सं. १८३६ मा. वरहे अष्टाव (२)
५०७	सौभाग्य करपलतिका पद्यतु (४)	"	-	-	-	-
५०८	सोममंत्राः	"	-	८	"	सं. १८५७ आ. शु. १ मीमा
५०९	रूपप्रविद्या	"	-	३	"	सं. १९१२ कातवीर्य (५)
५१०	रत्नेश्वरी प्रयोगः १, (६)	"	-	-	भोलीयु	सं. १९५९ माघ शु. ९
५११	हृत्प्रीत पञ्जर	"	-	८	"	१८३७ प्रा.
५१२	हृत्प्रीत तंत्र	"	-	७	"	सं. १५९८ चैत्र वद १ गुरी (७)
५१३	हृत्प्रीत तंत्र तंत्रावली पलित	[मंत्रतंत्र ज्योतिष	-	४३	"	सं. १७८५ प्रा.
५१४	हनुमान पंचमुखी पंचांग (८)	[विवरक	-	१४	"	सं. १८११
५१५	हनुमान कवच	"	-	९	"	सं. १९५३ भाद्रपद कृष्ण
५१६	"	"	-	४	"	सं. १९०५ मार्ग वद ४ शुक्ल
५१७	"	"	-	१३	"	सं. १८०७ प्रा.
५१८	"	"	-	३	"	सं. १८९५ प्रा.
५१९	" स्तवराजः	"	-	५	"	सं. १८८१
५२०	हनुमान स्तोत्र	"	-	४	"	सं. १८१३ वीर्य शु. ५ गुरी
५२१	"	विभीषणचोक्त	-	२	"	सं. १८८१
५२२	" दीपदानविधिः	सुदर्शन मल हिता	-	४	"	सं. १८४० मा. का. वद १०
५२३	" मंत्रोद्धार १ दीपदान २ (६)	"	-	१७	"	सं. १८५४
५२४	हनुमान दुःख	अथर्वणोक्त	-	६	"	सं. १८८७
५२५	"	"	-	२०	"	सं. १८९५
५२६	" मंत्र उज्य स्तोत्र	"	-	५	"	सं. १९१५ आ. वद १२ शुक्ल
५२७	" मंत्राः भास्वत मंत्राः	"	-	८	"	सं. १९०५
५२८	" शिवहरेकमंत्र पद्धतिः	सुदर्शन	-	१२	"	सं. १८९५
५२९	श्रेष्ठपाल बलिदान (१०)	"	-	६	"	सं. १८४९



(१) वद १४ सेमे संवत् १८४४ वर्ष मार्गशीर्ष शुद्ध २ मंगलवारे लिखित सहाई जयपुरमन्त्रे श्री राधाबिराज श्री चनाइ प्रसादतिह राज्ये। अस्या अवतरण (२) अन्यानि ७ हस्तलिखित पुस्तकानि संति (३) अष्टावमासे शुद्ध ५ शुक्ल कृष्णेश्वर का. मानत्रो लिखित (४) पद्यतु तंत्रे १९४ अक्षेतिपुर सुंदरी भौमात्म करपलतिका (५) कातवीर्य स्तोत्रस्वायं लेखकः तत्र मिलिरस्ति (६) प्रयोगः १, दक्षिणकाली प्रयोगः २, कालीयंत्र पंदरीशोबंत्रः (७) गुरी पृ परमविमलगणि शिष्यमुनिविधि विमलेन (८) पंचांग, हनुमान करच, हनुमान पद्धति हनुमान पटल, हनुमान सहस्रनाम, हनुमान मंत्रो (९) दीपदान २, सुदर्शनविधि पंचायुवास्तोत्राणि ३, महागणपति मंत्रः ४, बालामात्रातुष्टानप्रकरः ५, बालाशिवपुरसुंदरी कवच ६, बालाशोतरात ७, गुह्यमन्त्र ८, पात्रग्रहण ९, हनुमत्प्रयोगः १० (१०) बलिदान श्रेष्ठपाल पृ. ५., बटुक पृ. ६., गणपति पृ. ६., योगिनी पृ. ६.,

श्री मुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल-सौराष्ट्र.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: DHARMASHASTRAM SMRITIH विषयः धर्मशास्त्रं स्मृतिः।

क्रमांक Serial NO	ग्रन्थ भंडार Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टोका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक मिति Scribe & Date
१	अत्रिस्मृतिः	संपूर्ण अत्रिऋषिः	-	१८	देवनागरी खत १९१७ प्रा.	
२	आंगिरस स्मृतिः	"	-	४	संस्कृत सं. १९३७ प्रा.	
३	आचार तिलकः	"	-	३१	" सं. १९४१ प्रा.	
४	आधान प्रायश्चित्त	अपूर्ण	-	३	" सं. १७५४ प्रा [३] के कचरा मुत केवल	
५	आशौचदशक भाष्य	संपूर्ण हरिहरः	-	२१	" सं. १९७८ आशौ घृ ४ ले. लक्ष्मीधर	
६	आशौचदशक भाष्य	" विश्वानेधर	-	९	" सं. १८९६ भाद्र. शुद्ध १२ सोमे ३	
७	आशौचनिर्णयः	" भट्टोजीदीक्षित.	-	७	" सं. १८८३ ले. लक्ष्मीधर	
८	"	"	-	५	" सं. १८९७ प्रा.	
९	उपदेश पंचक	" श्रीशंकराचार्यः	-	४	" सं. १९१८ वैशाख वसंतपक्षे ८ सोम	
१०	ऊर्ध्वदेहिक पत्रतिः	" रघुरामः	-	३६	" सं. १८९१ ज्येष्ठ शुद्ध ७ सोमे (१)	
११	ऋषिजातुतिः	"	-	११	" सं. १८९० प्रा.	
१२	कात्यायनसूत्र	" कर्कोपाध्यायः	-	३५	" सं. १८३३ वीथ कुम्भे खतिवि (२)	
१३	कार्तिक कृत्य	"	-	५	" सं. १८७१ प्रा.	
१४	कालनिर्णयः मूलसह प्राप्त टोका	"	-	११	" सं. १८८९ प्रा.	
१५	" मूलः	" अनंतदेवः	-	१८	" सं. १७९६ प्रा.	
१६	" कारिका	अपूर्ण माधवाचार्यः रामभट्टो वयस्य	५८		" सं. १८०२ प्रा.	
१७	"	संपूर्ण	-	१३८	" सं. १९४८ भाद्रौ वद ४	
१८	" शीषिका	" रामचंद्राचार्यः (३)	१२१		" सं. १७०३ प्रा.	
१९	"	"	-	७६	" सं. १९२२ श्री शुक्लनगर (४)	
२०	" कारिका	"	-	१०	" सं. १८०९ प्रा.	
२१	" शीषिका	" रामचंद्राचार्यः	२८		" सं. १९३५ प्रा.	
२२	" सिद्धांतः सटीकः	" रघुरामा	रघुराम	१३५	" रचनाकाल संकत १७१० वा (५)	
२३	" गुप्तर टोका	"	-	१८	" सं. १८३५ चैत्र वद ५ गुप्त	
२४	"	"	-	५०	" सं. १९२७ भा.	
२५	कालमाधवः	" माधवाचार्यः	-	९७	" सं. १७५९ प्रा.	
२६	कृत्तरमाधवः	अपूर्ण रामचन्द्र	-	४५	" सं. १७९२ प्रा.	
२७	केदार केलासनमन	संपूर्ण	-	२८	" सं. १९६९ प्रा.	
२८	गंगाधर पत्रतिः	" गंगाधर	-	८५	" सं. १७२५ आषाढ कुम्भ ७ (६)	
२९	गुह्यविवरण	" कर्कोपाध्यायः	-	४१	" सं. १९९७ वर्षे महा शुद्ध २ (७)	
३०	गौतमीय धर्मशास्त्र	" गौतमः	-	२४	" सं. १५५४ वर्षे हि. भाषण X	
३१	"	" गौतमः	-	१६	" सं. १९३६ प्रा. [खद १० सोमे	
३२	गौतम विधुतिः	अपूर्ण हरदत्तः	-	९०	" सं. १५५२ प्रा.	
३३	खमत्कार चिंतामणिः	संपूर्ण भूपति मिश्रः	-	२०	" सं. १९३० प्रा.	
३४	तिथिनिर्णयः	" भट्टोजीदीक्षितः	-	४५	" सं. १८९६ आषाढ शुद्ध १५ (८)	
३५	तिथिनिर्णयः	"	-	२	" सं. १९२२ भाद्रपद कुम्भ १३ (९)	
३६	तीर्थरत्नाकरः रामप्रसादाय	"	-	२४	" सं. १९४१ प्रा.	
३७	तीर्थस्नान प्रायश्चित्त	"	-	१२	" सं. १९३९ चैत्र शुक्ल ४ सोम	
३८	तुलापुष्टप दान पत्रतिः	" नारायणभट्टः	-	४१	" सं. १९५० कार्तिक वद ६ शुक्ल	

(1) रामे लि हरिरामसुत गोवंजो तस्यात्मज दवे कचरा भुज कच्छ (2) धतिवि जौम के. व्यास शिवरामसुत आदिताम व्यास तुलसी (3) रामचंद्राचार्यकृता तथसुत, चंडिदाचार्यकृता विवरणेपेठा (4) भुजनवर वास्ताम जौमचंद्रादि दवे भी ५ कचरा गोविंदजी तथसुत दवे केमलेन (5) १०००ना वैशाख शुक्ल १ गुंवारे कयरामसुत रजुरामेन टीका कृता भुजनवर वासिना संवत १८५८ मार्गशीर्ष शुद्ध १ शुक्ल दवे हरेश्वरसुत ईश्वरेण लिखित। (6) कृष्ण १ जौम के. शिवेरी कृष्णजी (7) शुद्ध २ रवौ दवे शामापटमाव लिखित ईश्वर निवासी व्यास जेरामकेन (8) शुद्ध १५ शुक्ले लि. व्यास कृष्णाजी वैष्णव (9) कृष्ण १३ रवौ के. रामकाळ जौमो

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्त लिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल- सा.रा.व.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.
Subject : DHARMASHASTRAM SMRITI विषय १४: धर्मशास्त्र स्मृतिः।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
३२	विश्वतः प्रह्लाद की मूल +	संपूर्ण [+ आचार्य निर्णयः -		३	संस्कृत संवत् १९९२ भाद्रपद कृष्ण १४	
४०	समाध्या	भट्टाचार्यः	उत्तमाक्षराः	१८	सं. १९६३ प्रा. [हरिवल्लभेन	
४१	"	"	-	२५	सं. १७७८ प्रा.	
४२	"	"	-	१४	सं. १८४९ शुद्ध ९ शनी लि. (1)	
४३	गुजर टीका	"	-	७	सं. १८९७ का. वद ९ भौमे ले. लक्ष्मीधरः	
४४	संस्कृत टीका	"	-	२३	सं. १८८९ मार्गशीर्ष शुद्ध १२	
४५	"	"	-	१७	सं. १८८९ चैत्र कृष्ण १२ बुधे (2)	
४६	"	"	-	२१	सं. १८८९ चैत्र शुद्ध ११ रवी	
४७	"	"	-	२२	सं. १८९५ प्रा. [+ ले. गोविंदरामः	
४८	त्रिदशली सेतुसारः	भट्टोमेधरसुत भट्टनारायणेन		२०	सं. १५७१ प्रा. नागभट्टसुतः	
४९	"	"	-	६८	सं. १८२१ प्रा. [+ लक्ष्मीधरेण लि.	
५०	दत्तक प्रीतिशा	नंदपंडितः	-	२८	सं. १८५२ का. शुद्ध ११ शनी	
५१	दक्षः श्रुतिः दक्षधर्मशास्त्र	रघुनाथः	-	१७	सं. १८६१ प्रा.	
५२	दानखंड	दक्षः उत्तमाक्षराः	-	९	सं. १६३७ चैत्र शुद्ध १२ मृगौ	
५३	दानखंडिका	"	-	५	सं. १८३७ प्रा. [+ कृष्ण १४ बुधे	
५४	"	दिनकर भट्टः	-	८३	सं. १९०६ शाके १७७३ कार्तिक ४	
५५	दानमयूखः दानमयूखभास्करः	निलकण्ठभट्टः पंडितः (३)	-	६०	सं. १९१० भा. क. ३ शनि जगन्नाथेन	
५६	"	अपूर्णः	-	१८९	सं. १७५३ वर्षे लिखित	
५७	वायभाग निर्णयः द्वायतरः	संपूर्णः रघुनाथ भट्टाचार्यः	-	१३७	सं. १८२० प्रा.	
५८	"	"	-	३६	सं. १८५७ भाद्रपद शुद्ध १	
५९	तुर्मरणे प्रायश्चित्त	"	-	२९	सं. १८४९ प्रा.	
६०	देव्यल स्मृतिः देवल धर्मशास्त्र	देवल ऋषिः	-	२१	सं. १८७२ ना. वर्षे आश्विन (४)	
६१	द्विजाचारशास्त्र	अपूर्णः याज्ञवल्क्यः	-	४	सं. १९३७ चैत्र कृष्ण अमावास्या	
६२	निर्णय तरंग	संपूर्णः शिवनन्दनाथः देवशः	-	१५	सं. १९१८ प्रा. [= शनिदिने	
६३	निर्णय मंजरी उत्तरनिर्णय मंजरी	गंगाधर भट्टः	-	१५	सं. १८४५ पौष शुद्ध १५ रवी	
६४	निर्णयसारः	राघवभट्टः	-	१५	सं. १८६६ शाके १७३९ अमास (5)	
६५	निर्णयसिद्धांतः	"	-	२५	सं. १८७५ कार्तिक कृष्ण	
६६	निर्णयामृत	अपूर्णः स्वर्णसेनमहोपाधेय विरचितः	-	१९२	सं. १९०८ प्रा.	
६७	निर्णयोद्धारः	संपूर्णः राघवाचार्यः	-	२२	सं. १९८१ प्रा. दुर्डीराजेन लि.	
६८	निर्णय सिद्धांत व्याख्यान	रघुरामकृष्ण व्याख्या	-	१२४	सं. १८५८ गौडकृष्ण भाद्रपद शुद्धे	
६९	"	"	-	१०८	सं. १८९१ चैत्र वद ९ भौमे (6)	
७०	"	"	-	४८	सं. १८३५ प्रा.	
७१	नर्णय लिख्यः	कमलाकरभट्टः पद (8)	-	१३५	सं. १८७८ आपा. शुद्ध शरत्का (7)	
७२	"	कमलाकरः (10)	-	५५५	सं. १९८३ चैत्र शुद्ध (9)	
७३	"	प्रथम परिच्छेदः	-	५७	सं. १८८४ भाद्रपद कृष्ण १० बुधे	
७४	"	द्वितीय परिच्छेदः	-	११९	सं. १९४६ भाद्रपद शुद्ध ४ रवी	

(1) लि. गोडल मध्ये माधवजीसुत वासुदेवेन (2) बुधे भुजंगनगरे हरिकृष्णेन लि. (3) पंडित श्रीरत्नल.मीधरसुत वाकरमहात्म्यः (4) आश्विन कृष्ण ८ बुधे ले. आचार्य भगवानजीसुत नथु (5) व्यास माधवजी सुतेन गोडलपुरे लि. (6) भौमे सरकार वास्तव्य अष्ट जीवणसुत जगन्नाथेन (7) वरेजा मध्ये वसंतरामशर्मणा (8) पदवाक्य प्रमाण पारावारीश्वर रामेश्वर भट्टसुत धीरामकृष्ण भट्टात्म्य दिनकर भट्टसुत कमलाकर भट्टः (9) शुद्ध रामनवम्या सुवर्णसेन-दे दुर्डीरामेन (10) कमलाकरभट्टः श्री रामेश्वर भट्टसुत नारायण भट्टः तत्सुत रामकृष्णभट्टः तत्सुत दिनकर भट्टः तत्सुत अनुजः कमलाकर भट्टः।

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રંથ ભંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર ।

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : DHARMASHASTRAM SMRITI વિષય ધર્મશાસ્ત્ર સ્મૃતિ: ૧૪: ।

ક્રમાંક	ગ્રંથ નામ	કર્તા Author	ટીકા	પત્રાણિ	ભાષા-લિપિ:	લેખક-મિતિ:
Serial No.	Name of the work Title	સંપૂર્ણ-અસંપૂર્ણ Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Dte
૭૭	પરમહંસચરિત્રમ્:	અપૂર્ણ વિદ્યેશ્વરાચાર્ય:	-	૬૦	દેવનાગરી	સંવત ૧૭૭૬ કાશ્મીર શુદ ૧
૭૮	પરાશરસ્મૃતિ: પરાશરમુનિ*	સંપૂર્ણ પરાશર: [*પ્રણીત ધર્મશાસ્ત્ર]	-	૨૫	સંસ્કૃત	સં. ૧૬૨૭ વર્ષ
૭૯	મધવીય વ્યાખ્યા	" ૨	-	૨૧૪	"	સં. ૧૭૯૮ પ્રા.
૮૦	પારાશર (ધર્મશાસ્ત્ર) સ્મૃતિ	" "	-	૨૦	"	સં. ૧૬૫૦ પૌષ કૃષ્ણ વૃષે
૮૧	પારસ્કર ગૃહ્યસૂત્ર હરિહરવ્યાખ્યા	" પારસ્કર:	-	૪૬	"	સં ૧૮૮૭ માત્ર. કૃષ્ણ ૧ ચુદ (1)
૮૨	પુરુષાર્થ ચિંતામણિ: પુરુષાર્થ (2)	" આઠવલે ઉપનામક(3)-	૩૩૪	"	સં. ૧૬૭૮ પ્રા.	
૮૩	પ્રયોગ રત્ન	" મહેરમેશ્વર મારાવળા	-	૧૮૮	"	સં. ૧૮૬૧ પ્રા.
૮૪	પ્રાયશ્ચિત મુક્તાવલિ:	" દિવાકર: [†મદ્દક્ત	-	૬૮	"	સં. ૧૮૪૧ પ્રા.
૮૫	"	" મહાદેવમદ્દક્ત દિવાકરમદ્-	-	૨૧૬	"	સં. ૧૯૦૧ શ્રાવણ વદ ૧૦ (4)
૮૬	પ્રાયશ્ચિતેન્દુગીચર	અપૂર્ણ	-	૬૨	"	સં ૧૭૦૮ પ્રા.
૮૭	સૂદત્પારાશરી (૧૧૧૧)×	સંપૂર્ણ [×સૂદત્પારાશર સ્મૃતિ]-	-	૭૩	"	સં. ૧૮૧૭
૮૮	" (ઉત્તરાશ્વ)	"	-	૮૦	"	સં. ૧૮૧૭ આષાઢ શુદ ૭ (5)
૮૯	માનવધર્મશાસ્ત્ર ઉત્તરાશ્વ	" ચુદ (યજુર્સંહિતાતર્ગત)	-	૧૬૧	"	સં. ૧૬૨૮ વર્ષ માર્ગશીર્ષ (6)
૯૦	મનુસ્મૃતિ: મીમંસાકા	અપૂર્ણ	-	૨૭	"	સં. ૧૭૨૬
૯૧	મનોરમાં પદ્ધતિ અનુક્રમણિકાસંહિતા સંપૂર્ણ	"	-	૭૦	"	સં. ૧૮૮૬ લે. વ્યાસ વાસુદેવ ગોંડલ
૯૨	મન્મથાલ નિર્ણય:	"	-	૮	"	સં. ૧૮૪૮ માર્ગ. શુદ ૧૧ (7)
૯૩	મહાપ્રલય નિર્ણય: કમવિપાકમંથ	" મદનપાલશુભે માધાતા	-	૪૯૬	"	સં. ૧૬૬૨ની પ્રત ઉપરથી (8)
૯૪	યાજ્ઞવલ્કય ધર્મશાસ્ત્ર (9)	"	-	૬૩	"	સં. ૧૬૨૮ શા. શુદ ૭ શુભ (10)
૯૫	યાજ્ઞવલ્કય મિતાશ્રુતા	" વિજ્ઞાનેશ્વર મદ્દક્તા	-	૨૧૭	"	સં. ૧૮૨૪ માર્ગ. ક. ૨ મૌમ
૯૬	યાજ્ઞવલ્કય સ્મૃતિ: મિતાશ્રુતા	" [†મિતાશ્રુતા ટીકા	-	૯૬	"	સં. ૧૬૨૧ પ્ર [†પ્રથમ અધ્યાય
૯૭	" ૧૧ પ્રકરણાં	"	-	૨૫૩	"	સં. ૧૮૨૫ પ્રા.
૯૮	" અપરાક સ્વદહારાધ્યાય:	" વિજ્ઞાનેશ્વરકૃતા મિતાશ્રુતા	-	૧૩૬	"	સં. ૧૮૨૧ પ્રા. [† મિતાશ્રુતા ૧)
૯૯	" ૨ મૌમ	"	-	૨૮૯	"	સં. ૧૮૨૧ પ્રા.
૧૦૦	" સ્વદહારાધ્યાય:	" મૂલમાત્ર:	-	૨૯	"	સં. ૧૮૦૯
૧૦૧	" ૩ અધ્યાય:	"	-	૨૬	"	સં. ૧૮૧૫ પૌષ ક. ૮ મૌમ (11)
૧૦૨	" આષાઢાધ્યાય:	"	-	૨૨૩	"	સં. ૧૮૧૨ પ્રા.
૧૦૩	યાજ્ઞવલ્કય સ્મૃતિ	"	-	૨૯	"	સં. ૧૮૨૪ શા.વદ ૧ શનિ લે. મૂલેવ
૧૦૪	યમસ્મૃતિ અધ્યાય ૫	"	-	૮	"	સં. ૧૬૨૮ વ. (12)
૧૦૫	કુષુપરાશરી પારાશરીય ધર્મશાસ્ત્ર	" સદાશિવ:	-	૪૪	"	સં. ૧૬૨૬ આષાઢ કૃષ્ણ (13)
૧૦૬	લિંગાર્ચન ચંદ્રિકા	" સદાશિવ:	-	૮૩	"	સં. ૧૮૧૦ માગશિર વદ (14)
૧૦૭	વણિકુકુલોત્પત્તિ:	" (કંદપુરાણાતર્ગત)	-	૧	"	સં. ૧૬૨૧ મીમાલો વૃષા પૌષા ઉત્પત્તિ
૧૦૮	વિવાદચન્દ્ર:	" મહામહેાપાધ્યાય નિશ્ચ	-	૬૭	"	સં. ૧૮૫૩ માત્ર કૃષ્ણ (15)
૧૦૯	ત્રિશિષ્ટાચાર-ચ પ્રોલય:	" પ્રયોધાનંદ સરસ્વતી	-	૮	"	સં. ૧૮૨૧
૧૧૦	વિધ્યાદય ધર્મશાસ્ત્ર	" કાન્તા સરસ્વતી	-	૨૭	"	સં. ૧૬૦૩ દિ. આશ્વિન કૃષ્ણ (16)

(1) શ્રી મુજનગરે સામિક દ્વિતી હરિકૃષ્ણેન શામાત્મજેન લિ: (2) પુરુષાર્થ પ્રમાણક ચિતામણિ: કાલકાવ (3) ઉપનામક: શ્રી રામકૃષ્ણ સુત્ર વિષ્ણુમદ્દક્તા: (4) વદ ૧૦ શનિ ગોકુલમંથે: લેલક મદ્દ ત્રિકમજી (5) શુદ ૭ શ્રાવણ વદ ૧ શનિ લે. મૂલેવ (6) માર્ગશીર્ષ માસે કૃષ્ણ ૧૦ શુક્રવારે: અત્રિ-આગિરસ દક્ષ સ્વતિ લેલકે: (7) શુદ ૧૧ મૌમ લિ: વદે શ્રેષ્ઠ હરદેવાળી: (8) ઉપરથી ઉત્પાદ્યું સં. ૧૯૧૭ માર્ગ શુદ ૧૫ શનિ લે. વ્યાસ મદ્દક્તર ગોપાલજી-વાલ્મીકી-માત્રિવાગ્દાતા: (9) ધર્મશાસ્ત્ર યાજ્ઞવલ્કયસ્મૃતિ તૃતીયાધ્યાયપર્યંત (10) શુદ નં ૮૯ વાલો ના લેલક લે. (11) મૌમ કૃષ્ણવદે મુજનગરે અત્રિદેવી: વદે સામજોપત્ર હરિકૃષ્ણેન (12) નં. ૮૯ વાલો ના લેલક લે. (13) કૃષ્ણ ૧૨ ચુદ વદે રત્નજોષ વામોદર: (14) વદ ૧૨ મૌમ લે. ગોંડલસ્થ વ્યાસ વાસુદેવાત્મજ વનમાલી (15) કૃષ્ણ ૧૧ રતિ કાશ્યાં: લે. દિવાકર મદ્દ: (16) કૃષ્ણ ૭ શ્રાવણ વદે હરિદત્તસુત્ર વદે વૈકુંઠ મુજનગરે: ।

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્તલિખિત ગ્રંથ ભંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર

SHRI BHUVANESHWARI PITH, MS. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA

Subject: DHARMASHASTRAM SMRITIH વિષય: ધર્મશાસ્ત્ર સ્મૃતિ: ૧૪

ક્રમાંક Serial No	ગ્રંથ નામ Name of the Work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અસંપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાણિ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ: Scribe & Date
૧૧૧	વિષ્ણુમત્તિ ચંદ્રોદય:	અસંપૂર્ણ: સુવિહારણ્ય	-	૧૫૬	દેવનાગરી	સંવત ૧૪૧૫ પ્રા.
૧૧૨	વિષ્ણુસ્મૃતિ: (વર્ણવ ધર્મશાસ્ત્ર)	સંપૂર્ણ	-	૬	સંસ્કૃત	સં. ૧૬૩૭ નં. ૮૧ પ્રમાણે લેખ
૧૧૩	વ્યાસ સ્મૃતિ:	" વેદવ્યાસ	-	૧૦	"	સં. ૧૬૩૮ લેખક નં. ૮૧ પ્રમાણે
૧૧૪	શાંખ સ્મૃતિ:	" શાંખાશ્રયિ:	-	૫	"	સં. ૧૬૩૭ "
૧૧૫	શાંખલિખિતા સ્મૃતિ:	"	-	૩	"	સં. ૧૬૩૭
૧૧૬	શાંખ સ્મૃતિ: (શાંખપ્રણીત ધર્મશાસ્ત્ર)	" અથવા ૧૮	-	૨૫	"	સં. ૧૭૨૦ માદ્ર. કુળ ૫ પ્રા.
૧૧૭	શાંતિકમલાકર:	" કમલાકરમહા:	-	૧૩૮	"	સં. ૧૮૧૧ પ્રા.
૧૧૮	શાંતિમયુક્ત: આસ્કરપ્રધાતગત:	" નીલકંઠમહાશંકરમિત્ર:	-	૧૦૪	"	સં. ૧૮૨૫ કે. રંગનાથ
૧૧૯	શુદ્ધિ ધર્મશાસ્ત્ર	અસંપૂર્ણ	-	૮૬	"	સં. ૧૫૪૪ પ્રા.
૧૨૦	શુદ્ધિ મયુક્ત:	સંપૂર્ણ નીલકંઠ:	-	૧૨	"	સં. ૧૭૫૧ કા. વદ. ૧૫
૧૨૧	શુદ્ધકમલાકર:	" કમલાકરમહા:	-	૨૧૯	"	સં. ૧૮૬૬ શાંકે ૧૭૩૪ (૧)
૧૨૨	"	"	-	૧૪૩	"	સં. ૧૮૦૨ શાંકે ૧૯૬૬ (૨)
૧૨૩	શ્રાદ્ધ કલ્પ:	" હેમાદિ:	-	૬૧	"	સં. ૧૫૧૦ કા. શુદ્ધ ૧૧૫૫
૧૨૪	શ્રાદ્ધ નિર્ણય:	"	-	બોલિયું	"	સં. ૧૯૨૫ પો. શુ. ૧૨ શાંતિ
૧૨૫	"	"	-	"	"	સં. ૧૯૨૫ પ્રા. [અમદાવાદ શાંતિ]
૧૨૬	સંવત્કરસ્મૃતિ: (સંવત્કરપ્રોક્ત) †	" સંવત્કર શ્રાવિ:	-	૧૦	"	સં. ૧૯૨૭ વર્ષે પેત્ર શુદ્ધ (૩)
૧૨૭	" વ્યાસ યમસ્મૃતિ:	" " ધર્મશાસ્ત્ર	-	૧૨	"	સં. ૧૯૪૨ કા. શુ. ૧૪ ગુપ્તશાંતિ
૧૨૮	સમયમયુક્ત:	અસંપૂર્ણ નીલકંઠ:	-	૩૨	"	સં. ૧૮૨૭ પ્રા.
૧૨૯	સંસ્કાર નિર્ણય:	સંપૂર્ણ ચન્નપૂર્ણ મહા:	-	૧૪૪	"	સં. ૧૭૯૬ મા. વદ ૧૦ સુદ
૧૩૦	સંસ્કાર આસ્કર:	" નીલકંઠાચાર્ય મહાશંકર:	-	૧૦૩	"	સં. ૧૭૯૭ પ્રા.
૧૩૧	સંક્ષિપ્તપ્રાયશ્ચિત્તવિધિ:	"	-	૪	"	સં. ૧૯૦૬ વેત્ર શુદ્ધ ૧
૧૩૨	સાપિંડપ્રકરણપત્રતા	" સ્વામિનિ દેવ:	-	૧૫	"	સં. ૧૭૮૧ પ્રા. કે. કાશી બાલકૃષ્ણ
૧૩૩	સાપિંડપ્રકરણ:	" મોગોબીમહા:	-	૧૨	"	સં. ૧૮૦૧ પ્રા. કે. કાશીબાલ
૧૩૪	સારસંપ્રદ:	" [નારાયણવેદવિદ્યલિખિતા]	-	૬૩	"	સં. ૧૮૪૧ પ્રા.
૧૩૫	સુવોષ પદ્ધતિ:	" વાલ્મીકી સુત: (4)-	-	૧૨	"	સં. ૧૯૨૨ માર્ગ કુળ ૬
૧૩૬	સુતક્રમિકા સુ (વિદ્યાશ્રીરામસ)	" વિદ્યાનેશ્વર:	-	૧૬	"	સં. ૧૯૧૨
૧૩૭	સુતક નિર્ણય:	" મહોબીમહા:	-	૬	"	સં. ૧૮૪૧ કા. શુ. ૬ રવિ
૧૩૮	સંમયજ્ઞાની પ્રાયશ્ચિત્તવિધિ:	" [પ્રાચીનપ્રાયશ્ચિત્તવિધિ]	-	૨૫	"	સં. ૧૮૧૧ પ્રા.
૧૩૯	સ્મૃતિસારસંપ્રદ:	"	-	૪૮	"	સં. ૧૫૫૫ વર્ષે મા. વ. (૬)
૧૪૦	"	"	-	૧૩	"	સં. ૧૮૭૨ કા. શુ. ૧૫ (૬)
૧૪૧	સ્મૃત્યર્થકાર:	" બોધરાજાચાર્ય	-	૮૦	"	સં. ૧૮૪૧ કા. શુ. ૧૫
૧૪૨	દારીત્ર્યસ્મૃતિ: (દારીત્ર્યપ્રોક્ત) †	" દારીત્ર્ય [ધર્મશાસ્ત્ર]	-	૬	"	સં. ૧૯૨૧ વર્ષે ૮૧ વાલકૃષ્ણ આર્ચે
૧૪૩	જ્ઞાનતિલક	" કુળ નારદ સંવાદ (7)	-	૪	"	સં. ૧૮૦૧ પ્રા.

(1) ૧૭૨૪ અવધ શુદ્ધ ૧ ગુરુ કે. રંગનાથ દેવાસન આત્મારામ દેવેન (2) ૧૯૬૬ પોષ શુદ્ધ ૧ મોડ કે. મોડી પરશુરામ (3) શુદ્ધ ૬ રવિ પ્રતિપદકાન્તસારણ નં. ૮૧ પ્રમાણે લેખક (4) સુત મિશ્રનાથકૃતા સર્વસંસ્કારકારિકા (5) વદ ૧૨ ગુરુ રાજાધિરાધી માનુવિજય રાજમે ટીકાઈ પ્રામવાસ્તવ્ય બૌદ્ધીય મદ નરોત્તમેન લિખિત (6) શુદ્ધ ૧૫ ગુરુ લેખક મોડી રેશરવતુ કદવીરામેન (7) વંશ: ગુપ્તદિમા પ્રજ્ઞાંબુરાજાતગત:

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखितग्रन्थभंडार, गोंडल - सौराष्ट्र।

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: JYOTISH

विषय: ज्योतिष: १५:।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
ज्योतिष ।						
१	भगवत्संज्ञिताः	अपूर्ण	-	२	देवनागरी	संवत् १९१० प्रा.
२	अतर्कशा महादशा	संपूर्ण	-	८	संस्कृत	सं. १९०४
३	अष्ट २२	अपूर्ण	-	३	"	सं. १९४५ प्रा.
४	अमृतकुंभः ग्रहलिखनक्रमः	संपूर्ण	रामसुत नारायणविरचित	३३	"	सं. १८७९ फाल्गुन वद ९ सोमे
५	"	अपूर्ण	-	१४	"	सं. १९०९ साके १४७२ माघ०
६	अवहकडाचक्र	संपूर्ण	-	४	"	सं. १९०५ प्रा. [शुक्र १० शुके
७	अष्टोत्तरी महाशरा फल	"	-	११	"	सं. १८९१ आश्विन शुद्ध ७ चंद्र
८	आयतशर	अपूर्ण	-	८	"	सं. १८४१
९	आयुर्वायाभ्यासः द्वितीयः	"	-	३	"	सं. १९०९
१०	इष्टकालशोधन	संपूर्ण	-	६	"	सं. १८८९ माघ शुक्ल ९ सोम
११	उद्देश्यमादीपः	अपूर्ण	-	२	"	सं. १८१२
१२	उद्देश्यात शांतिकर्म	संपूर्ण	-	५	"	सं. १८९९
१३	करण कुतूहल उत्तमाक्षराः	"	-	१२	"	सं. १८०१ वर्ष मार्गशीर्ष १
१४	करण केसरी [आयुर्वेद विभागे	"	-	१७	"	सं. १८०४ प्रा. [शुद्ध ४ सोमे
१५	कर्मविपाकः महावैद्यः X	" माध'ता कर्ता	-	२७५	"	सं. १८३९ वर्षे ज्येष्ठ मासे (१)
१६	" स्वर्णिम संवादः	"	-	१४	"	सं. १९२३ आश्विन १ सोम्ये
१७	तः २० कर्मविपाकः ३ ग्रन्थाः	"	-	३	"	सं. १९१९ प्रा.
१८	कवकी सम्प्रकुंडली	"	-	१	"	सं. १९०१
१९	कामधेनु पद्धतिः	" श्लोक १५२	-	१०	"	सं. १८०४
२०	"	" श्लोक २९०	-	२०	"	सं. १९१७
२१	" ५	अपूर्ण	-	X	"	X X
२२	कुहकप्रकरण	-	-	५	"	सं. १९५० प्रा.
२३	केशवजी आत्मक वैदिकेशजी पद्धतिः	संपूर्ण	-	११	"	सं. १९१४ वैशाख वद २ सोम
२४	केशवजी पद्धतिः गीता	" केशव वैदिकेशजी विवाकर (२)	-	३१	"	सं. १९०९ वैशाख वद ५
२५	"	"	-	४८	"	सं. १८८३ मा फाल्गुन (३)
२६	" मूल	"	-	८	"	सं. १९१५
२७	कौमुदी लीलावती	"	-	७	"	सं. १९०२ प्रा.
२८	जातचक्र	"	-	१	"	सं. १८०४
२९	खानखाना जम्माक्षर अक्षर +	" [३ भाग सं. १९१३ भाग	-	१	"	सं. १८१० प्रा.
३०	खेटक तरंगिणी	" केशवजी शास्त्री आमनगर	-	५	"	सं. १९०९ प्रा.
३१	खेट भूषण	" रामचंद्र	-	१	"	सं. १८५९
३२	खेटकलिङ्गः रचनाकाल सं. १९३५	" दिनकर	-	८	"	सं. १८९३ वर्षे मा. शुद्ध (४)
३३	गणक भूषण	अपूर्ण समरसिंहकृत (५)	-	१८	"	सं. १९५० प्रा.
३४	गणक मण्डन मूल (६)	" संपूर्ण वेदांगरायपुर (७)	-	२६	"	सं. १९१४ मा. शुद्ध (८)
३५	" ग. म.	अपूर्ण	-	२०	"	सं. १९८१ साके १५०९ का. १५
३६	गणमुक्त सूत्राद्याः १ +	संपूर्ण [गणसाधन	-	१२	"	सं. १८९८ प्रा.

(१) मासे शुक्लपक्षे प्रतिपदिनी समिवाचरे (२) विवाकर वैदिकेशजी विद्वान् वैदिकेशजी टीका । टीकाया रचनाकालः साके १५४० ममसि शुक्ले कुच (३) फाल्गुन कृष्णपक्षादि कि. भट जय तथा नाम मोरारजी सरदार (४) शुद्ध १९ सोम शिवपुरवास्तव्य उदीय सप्तम्यातीय पंड्या हरिश्चत विवाकरसुत रत्नेश्वरेण सिद्धे । (५) समरसिंहकृत रचनाकालः संवत् १९१३ (६) मूल अभ्यासः ८. विषयः अनुक्रमणी सहित (७) वेदांगरायपुर नंदिकेश्वरकृत अपूर्ण (८) शुद्ध १ शुक्ले लिपिकृत बंकपुरी मध्ये बंकनेर । इति श्री वेदांगरायमाह्वय नंदिकेश्वर विरचिते गणकमण्डने अष्टमोऽध्यायः कि. म. केवलचंद्र

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखितग्रन्थभंडार, गोंडल - सौराष्ट्र

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA

Subject: JYOTISH

विषय : ज्योतिष १५

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
४०	गणित पंचविंशो रचनाकालः	संपूर्ण कांभुदासः मूलसह गुजरी-		१४	देवनागरी	संवत् १८७४ प्रा.
४१	गुरुवार फल [= १५८७ शकवर्षे		-	१	संस्कृत	सं. १७९४ ज्येष्ठ शुद्ध ४ मंग
४२	गुजरी	"	-	१	"	सं. १८५५ प्रा.
४३	"	"	-	१	"	सं. १५८०
४४	ग्रहगोचरः	"	-	१०	"	सं. १९०९ शके १७७५ (१)
४५	ग्रहण दीपिका	"	-	१५	"	सं. १९१० प्रा.
४६	ग्रहण लिखितक्रमः	" रामनारायण कापिल X -	-	१६	"	सं. १८९० काफिका ग्रामे (२)
४७	ग्रहण कर्तव्यता	" [X विरचित	-	भोकोगु	गुजरी	सं. १९५१ प्रा.
४८	ग्रहण विचारः	"	-	७	"	सं. १८९१
४९	ग्रहणाधिकारः	"	-	३	दे. सं.	सं. १७९८ वर्षे शके १५९३
५०	ग्रहण फलं जीजातक	"	-	५	"	सं. १७९५ [सं. शुद्ध १५९५
५१	ग्रहणविचारः	"	-	३	"	सं. १८४५
५२	ग्रहभाव प्रकाशः	"	-	१६	"	सं. १८८१ प्रति ४
५३	ग्रहभाव फलं	"	-	१०	"	सं. १८०९
५४	ग्रहाणां द्वादशवशात् उपस्थाः	"	-	७	"	सं. १८१०
५५	ग्रहलाघवश्च केवला टीका	" केतवः (३) इति श्री देवज्ञ (४)	-	५९	"	सं. १८९९ वर्षे शके (५)
५६	ग्रहलाघव टीका	"	-	४७	"	सं. १९०९ ना वर्षे शके (६)
५७	"	"	-	२१	"	सं. १९१९ प्रा.
५८	" मूल १९ अधिकाराः	"	-	३०	"	शके १५०९ प्रथमपत्रे मितिः
५९	" मूल १८ अधिकाराः	"	-	१३	"	सं. १९०९ ना वर्षे शके ७
६०	" मूल १४	"	-	१९	"	सं. १८९० ना वर्षे शके (८)
६१	" मूल १६	"	-	३७	"	सं. १९४९ ना वर्षे शके १७८८
६२	" मूल ९	"	-	१४	"	सं. १९१५ [सं. चैत्र कृष्ण ११ शेष
६३	मराठी टीका	" अधिकार १ मराठी टीका	-	५९	"	शके १७९३ कार्तिक शुद्ध
६४	गणितोदाहरण	"	-	५	सं. सं.	सं. १९१४ प्रा.
६५	गदाहरण	"	-	१२	"	सं. १९५१ प्रा.
६६	अधिकाराः मूल	"	-	११	"	सं. १८४५
६७	गुणनिकायश्च गणित	"	-	८	"	सं. १९३८ अषाढ १४ १३ शमी
६८	गुणनलिकायश्च गणित	"	-	१०	"	सं. १९३८ ना शीव वद
६९	गणितानुक्रमः	" श्रीमगुर्वेमुति साधनावे	-	७	"	सं. १९३८ अषाढ शुद्ध १० शुभ
७०	ग्रहशीघ्रसिद्धिः इतिभो (९)	" तै. त्रिविक्रम (१०)	-	२७	"	सं. १९३८ वर्षे शके (११)
७१	ग्रहसिद्धिः उत्तमाक्षाराः	" महादेव	-	२९	"	सं. १९३८ वर्षे शके १० शमी
७२	ग्रहसामर्थ्य रचनाकालः (१२)	" बलिराजसुत रामेन	-	२३	"	सं. १९०९ शके १९०९ (१३)

(१) १७७५ ज्येष्ठ शुद्ध १३ शुक्र जोषी भीम हरि मुर्वई मध्ये लक्ष्म्यां छे (२) ग्रामे संवत् १९१५ मज्जि कापुल कृष्ण प्रथमपत्रे लिखितः संवत् १८८९ वर्षे ग्रहण लेख क्रमोऽनेन विरचितः (३) केवल देवज्ञात्मक गणेश देवज्ञातः मराठी (४) देवज्ञात दिसाशरात्मक विधानाय विरचित प्रिद्धांतरहस्योदाहरण टीका (५) शके १७५९ अषाढ शुद्ध ८ शुद्धे श्री भुवनेश्वरमठे मोठ ज्ञातीय दवे श्री ५ प्रमंजुसुत कल्याणजी येन लिखितः गोळमास निवाकिनी गुणपदद्वान्नमचौरतः स्वात्मीयतयादिकरस्वतन्त्रः श्री विश्वनाथादयः तेनेदं प्रसलाघवश्च गणित स्पष्टीकृतं तदुक्तं चोप्यं सराजुगणके स्वलिखितं (६) शके १७७९ प्रथम आश्विन शुद्ध १ चंद्र । इति पातोदाहरणं चतुर्दशोधिकारः । (७) शके १७७९ आश्विन वद १ शुद्धी (८) शके १७९५ उपरांत २९ प्रथम चैत्रमासे कृष्ण दशम्यां शुभवासरे लपितं भुवनेश्वरी उदीच्य दवे श्री ५ गोळपीसुत कर्चराजी (९) इतिभो कापुलदात्मक त्रिविक्रमसंविद्विरचिते ग्रहशीघ्रसिद्धौ मिथकाधिकाः । (१०) त्रिविक्रम रचित्र रचनाकालः संवत् १७७९ ना शमी ९ वर्षे (११) शके प्रथम अषाढ वि. ९ श. गोळलपुरमध्ये उदीच्य ज्ञातीय म्याध विचरामात्मक माधवजी सत्सुवाशुदेवेन अति संप्रयोजकित (१२) रचनाकालः संवत् १५९५ तद्दोमासि शिव २ रवी (१३) १७७९ अश्विन पक्षे २ शुद्धे मोर्ली नास्तम्ब उदीच्यज्ञाति पं. देवासुत पं. शिवदाससुतः

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्त लिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : JYOTISH 15

विषय : ज्योतिषः १५ ।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date	
७३	प्रहाराणां चक्रप्रयोजनं	संपूर्ण	-	ओळीयु	देवनागरी	संवत् १९२९ वर्षे	
७४	प्रहाराणां मध्यमक्रिया स्पष्टक्रिया *	" [* सोराहरण	-	९	संस्कृत	सं. १७८९ साके १९५४ वैशाख	
७५	प्रहाराणां दृष्टि हलं	अपूर्ण	-	११	"	सं. १९३० प्रा. [* शुभ १४ गुरी	
७६	" मंदफलं शीघ्रफलं कोषका	संपूर्ण	-	१८	"	सं. १९०७ प्रा.	
७७	चंद्रार्क सटीका उत्तमाक्षराः	" दिनकरानाथ मूलसह	गुर्जर टीका २८	"	सं. १७३७ वर्षे	साके १९०२ (१)	
७८	"	"	-	१७	"	सं. १८२० वर्षे	साके १९८९ (२)
७९	" संक्रा टीका	"	-	१२	"	सं. १८५२ वै. वर्ष १४ (३)	
८०	चंद्रार्क रवि पंचांग *	" [साधनाथ उपकरणमि	-	९	"	सं. १७४५ कार्तिक वद ११ गुरी	
८१	चंद्रार्क मूल	"	-	४	"	सं. १९३७ साके १८०२	
८२	"	"	-	४	"	सं. १८३४	
८३	"	"	-	३	"	सं. १९१९ प्रा.	
८४	"	"	-	३	"	सं. १८५७ भाद्रपद ९ रवी	
८५	"	"	-	२	"	सं. १८७८ व. सा. १७४३ क. भुवनगरे	
८६	"	"	-	२	"	सं. १९७० भाद्रपद ३ शुक्र	
८७	समस्कार चिंतामणिः सटीका	" भट्टनारायणः अम्बवाय	टीका (४) १९	"	सं. सं. १९४७ चैत्र कृष्ण ९ रवी (५)		
८८	" उत्तमाक्षराः	"	" २५	"	सं. १८९९ साके १७९० (६)		
८९	" गुर्जर टीका	"	गुर्जर टीका १३	"	सं. १७९९ वैशा. वद २ कंदमपुरमणे		
९०	" मूल उत्तमाक्षराः	"	-	४	"	सं. १८९९ मार्गशीर्ष वद २ रवी	
९१	"	"	-	१०	"	सं. १८९९ प्रा.	
९२	"	"	-	९	"	सं. १८९४ भाद्रपद १७ (७)	
९३	"	"	-	१२	"	सं. १९३९ वर्षे	साके (८)
९४	"	" नारायण मठः अम्बवाय	(९) १३	"	सं. १९११ वर्षे	साके (१०)	
९५	चित्तचमत्कारः प्रकाशः प्रश्न, मन्त्रः	"	-	२	"	सं. १७५४ प्रा. इतिमी (११)	
९६	चूडामणिसारः	अपूर्ण	-	४	"	सं. १७९४ चैत्र शुद्ध ११ रवी	
९७	चौरपरीक्षा	"	-	२	"	सं. १७०२ प्रा.	
९८	छिका ककुन	"	-	२	"	सं. १८९० प्रा.	
९९	अल्लोयनः	अपूर्ण	-	१८	"	सं. १९११ प्रा.	
१००	जन्मपत्रीछाया	संपूर्ण	-	१२८	"	सं. १८११ प्रा.	
१०१	जन्मपत्रीनी वार्ता समजण	संपूर्ण	-	२२	गुर्जरी	सं. १८४१ भाद्रपद ७ रवी	
१०२	जन्मपत्री विचार	"	-	१	"	सं. १९४२ वैशाख वद ७ रवी	
१०३	जन्मपत्री वर्षफल करवानी पद्धति	" गुजराती	-	१७	"	सं. १८७९ प्रा.	
१०४	जन्मपत्री भाषाध्यायः	"	-	२१	"	सं. १९०५	
१०५	जन्मपत्री पद्धतिः	"	-	२३	देवनागरी संस्कृत	सं. १८०० कान्हाल शुद्ध (१२)	
१०६	जन्मपत्री गणितक्रमः +	" [+ अक्षोत्तरीक्रमेण	ओळीयु	"	सं. १७९० प्रा.		
१०७	जन्मपत्री करवानी विधि गुर्जरी	"	-	९	गुर्जरी	सं. १८९०	
१०८	"	"	-	१०	"	१८९०	

(1) १९०२ प्रथम भाद्रपद शुद्ध १ रवी द्वितीयापनेमिति (2) १९०९ प्रथम वैशाख शुद्ध शुद्ध (3) शुद्ध १४ गोंडल मध्ये माघवर्जिष्ठत व्यास वासुदेवेन पूर्वे करेडी वास्तुधन (4) अम्बवाय टीका प्रबोधप्रदीपा टीका धर्मेश्वर साकरीनिकमः (5) रवी गोंडल व्यास माघवर्जिष्ठत वासुदेवेन लि. (6) १७९० प्रथम महा कृष्ण १३ शुक्र लि. रावलमूल, लखनगढ़ नोमणी. (7) शुद्ध १ रवी मठ जयकृष्ण सोक्षितेन लि. (8) साके १७८९ प्रथम कार्तिक शुद्ध ११ मठ जयकायात्मय मठ मुरारिना लि. (9) अम्बवाय टीका धर्मेश्वर मालवीयकृता टीका (10) साके १७७९ प्रथम भाद्रपद शुद्ध ५ शुक्र लि. इमे केवल कचरा मुव (11) इतिश्री देवस चक्रचूडामणि श्री. स्व. स्व. सार्वभौम विरचिते चित्तचमत्कारः प्रकाशे प्रश्नप्रश्ने आगामिमव सुतीव प्रश्न स्तवक समाप्त (12) शुद्ध ११ रवी लि. दवे नाना गोवा.

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્તલિખિત ગ્રન્થ મંડાર, ગોંડલ-સા રાષ્ટ્ર.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : JYOTISH 15

વિષય : જ્યોતિષ ૧૫

ક્રમાંક	ગ્રન્થ નામ	કર્તા Author	ટીકા	પનાળિ	ભાષા-લિપિ:	લેખક-મિતિ:
Serial No.	Name of the work	સંપૂર્ણ-અસંપૂર્ણ Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Dte
૧૦૨	જગતુત્પત્તિ:	સંપૂર્ણ	-	૩	દેવનાગરી સંવત ૧૮૮૭ વૈશાખ શુદ ૭	
૧૧૦	જાતક ચંદ્રિકા જન્મપત્રી (1)	„ યાત્રિકનાથ	-	૨૫	સંસ્કૃત સં. ૧૯૩૪ જ્યેષ્ઠ શુદ ૨ રવિ x	
૧૧૧	જાતક પદ્યતિ: સતમાધરા: †	„ [†મૂલસહ ગુજરી-	-	૯	„ સં. ૧૮૨૧ પ્રા. [†રામચંદ્રપ્રાને	
૧૧૨	„	„	-	૭	„ સં. ૧૭૯૬ પ્રા.	
૧૧૩	„	„	-	૪	„ સં. ૧૮૧૦ પ્રા.	
૧૧૪	„	„	-	૫	„ સં. ૧૯૩૧ જ્યેષ્ઠ શુદ ૫ ગુરુ	
૧૧૫	જાતક યોગિની	„	-	૧૮	„ સં. ૧૯૦૫ પ્રા.	
૧૧૬	જાતકામરણ મૂલ	„ ડુંઢીરાજકૃત	-	૧૧૪	„ સં. ૧૮૪૧ શાકે ૧૭૦૭ (2)	
૧૧૭	„	„	-	૧૧૯	„ સં. ૧૮૫૨ વૈશાખ શુદ ૨ (3)	
૧૧૮	„ મન્યાપ્ર ૧૯૧૧	„	-	૧૫૨	„ સં. ૧૮૯૦ વૈશાખ શુદ ૫ રવિ	
૧૧૯	„	„	-	૧૭૭	„ સં. ૧૯૧૦ વૈશાખ શુદ ૪ ગુરુ	
૧૨૦	„	„	-	૧૬૬	„ સં. ૧૯૪૫ ટંકારા મધ્યે (4)	
૧૨૧	જાતકાલંકાર: પ્ર. ૭૫૦ સટીક:	„ ગણેશદેવશકૃત: શુદ્ધ હરિ (5)	૫૯	„ સં. ૧૯૧૫ માર્ગશીર્ષ વદ (6)		
૧૨૨	„	„	સંસ્કૃત ટીકા	૩૫	„ સં. ૧૮૮૭ અષાઢ વદ ૮ ધોમે	
૧૨૩	મૂલ:	„	-	૧૮	„ સં. ૧૯૦૫ શાકે ૧૭૦૭ વદ (7)	
૧૨૪	સટીક:	„	-	૩૩	„ સં. ૧૯૫૨ પ્રા. કે. મોપાલજી	
૧૨૫	„	અર્જુન	-	૧૭	„ સં. ૧૮૪૦ પ્રા. [†અનનાભી ગોંડલ	
૧૨૬	„	„	બોલીયુ	૧૭	„ સં. ૧૯૧૧ પ્રા.	
૧૨૭	જ્યોતિર્વિદ્યામરણ સટીક (8)	સંપૂર્ણ મહાકવિ કાલિદાસ: શ્રી (9)	૩૩૬	„ સં. ૧૯૦૧ શાકે ૧૭૦૪ (10)		
૧૨૮	જ્યોતિષ સંગ્રહ (11)	„ મૂલસહ ગુજરી	૧૨૦	„ સં. ૧૯૩૫ કામ્ય શુદ (12)		
૧૨૯	જ્યોતિષસાર સંગ્રહ પ્રભોત્તરી	„	-	૪૮	„ સં. ૧૮૯૧ વૈશાખ શુદ ૧૫ ગુરુ	
૧૩૦	„	„	-	૩૫	„ સં. ૧૮૯૦ પ્રા. [†અનનાભી ગોંડલ	
૧૩૧	„	„	-	૧૮	„ સં. ૧૮૫૬ પ્રા.	
૧૩૨	„ સતમાધરા:	„	-	૫	„ સં. ૧૫૦૭ પ્રા.	
૧૩૩	„ મૂલ સહ મરાઠી	„ મૂલસહ મરાઠી ટીકા	૨૨	„ સં. ૧૯૫૨ પ્રા.		
૧૩૪	જ્યોતિષ સારોચાર: જ્યોતિષશાસ્ત્ર	„ હર્ષકીર્તિસુરિ	-	૭૪	„ સં. ૧૮૨૪ માર્ગશીર્ષ વદ ૩ રવિ	
૧૩૫	તરવરંચાલિકા [†સંગ્રહ:	„ ધીપતિ	-	૯	„ સં. ૧૯૪૧ વૈશાખ શુદ ૪ (13)	
૧૩૬	તાજિક કીસ્તુમ	„ શાલકુળમંદ મહાદેવભાસ્કર - ૩૩	-	„	„ સં. ૧૯૦૪ શાકે ૧૭૦૭ (14)	
૧૩૭	તાજિક નીલકંઠી વર્ષવંશ સંજ્ઞાતંત્ર	„ નીલકંઠદેવશ ટીકાકાલ શાકે	૩૬	„	„ સં. ૧૮૪૧ અષાઢ વદ ધોમે	
૧૩૮	„ સટીક	„ [†૧૫૫૧ વિશ્વનાથ	૧૦૭	„	„ સં. ૧૮૯૧ બી. ગોંડલપુર (15)	
૧૩૯	તાજિક પદ્યતિ: મૂલ	„ કેશવદેવશ	-	૪	„ સં. ૧૯૦૧ માર્ગશીર્ષ શુદ ૧	
૧૪૦	તાજિક ભૂષણ મૂલ સતમાધરા:	„ ડુંઢીરાજાસાગર ગણેશ †	૧૮	„	„ સં. ૧૭૩૫ પ્રા. [†અનનાભી ગોંડલ	
૧૪૧	„	„ [† દેવશકૃત -	૩૨	„	„ સં. ૧૮૪૬ વૈશાખ શુદ (16)	

(1) જન્મપત્રી તથા પ્રભવપત્રીના ગ્રન્થ છે (2) ૧૭૦૭ અષાઢ વદ ૧૧ શુક્રે અયોધ ગોંડલપુર મધ્યે ઉદયમ્ જાણીય વાહુદેવેન
(3) શુદ ૨ મંગલ ગોષ્ઠી રવિશુક્ર ઉદય (4) ટંકારામધ્યે રાવલ જ્યેષ્ઠરામ રચનાય (5) હરિમહાશકૃત ટીકા (6) વદ ૧
ધોમે લિ. શુદ્ધ નરદે રાજારામ (7) ૧૭૦૪ના વૈશાખ શુદ ૧૧ ગુરુ કે. રાવલ જ્યેષ્ઠરામ રચનાય (8) સટીક ગ્રન્થાપ્ર ૧૦૦૦
વશ સહસ્ર હિતિયો કવિશુદ્ધ વૃદ્ધામણી શ્રી કવિકાલિદાસોદિતે જ્યોતિર્વિદ્યામરણે સુપરિકાશક વર્ષવો નામદ્વારિચિત્તમેષ્યાય:।
જ્યોતિષ રત્નમાલા પદ્યતુ રત્નમાલા નં. ૩૧૩ પ્રતિકા: સટિયિતા: (9) શ્રી માર્ગશીર્ષ શિરિષિત ટીકાયાયુત: ટીકા રચનાકાલ: સંવત
૧૭૯૯ (10) ૧૭૦૪ વૈશાખ કૃષ્ણ ૧૦ ધોમે શરામુર્તિ ચરપાર કિલિસ મિત્ર સહીય દેવે મેષજીમુત દેવવદ (11) સંગ્રહ
૧ પ્રકોળકોષ્ટક. ૨ ચંદ્રાશી કોષ્ટક ૧ ત: ૧૦ ૩ મહાદેવી કોષ્ટક ૫ ત: ૧૦ ૪ શાલકોષ મૂલ ગુજરાતી ટીકા ૭૫
ત: ૮૭, ૫ મહાદેવી વિચિ ૮૭, ત: ૧૧૧, ૬ સ્વરોચ્ચ: મૂલ સહ ગુજરાતી ૭૧૩ ત: ૧૧૭ (12) શુદ ૧૪ શુક્રે નિર્ણયિત
રાજકોટ મધ્યે (13) શુદ ૪ ગુરુ ગોંડલવાસ્તવ્ય મટ ગોપાલજી વનમાઠી (14) ૧૭૦૭ વૈશાખ શુદ ૧ ચંદ્ર (15) ગોંડલપુર
જાહેજા રૂંદેવોજી વિજયરાયે લિ. બ્યાસ માધવજીદાસન (16) વદ ૧૦ શુક્રે બોલી રવિશુક્ર ઉદયેન લિ.

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखितग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र।

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : JYOTISH 15

विषय : ज्योतिषः १५।

क्रमांक Serial No	ग्रन्थ नाम Name of the Work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपिः Language & Script	लेखक-मितिः Scribe & Date
१४२	ताजिक भूषणं मूल	संपूर्ण	-	३४	देवनागरी	सं. १८५९ साके १७१२ (१)
१४३	" "	"	-	३८	संस्कृत	सं. १८५९ प्रा.
१४४	" "	"	-	३७	"	सं. १८५८ वर्षे साके (२)
१४५	ताजिकभूषणे चर्चमाध्यायः	"	-	मोळीयुं	"	सं. १९३५ मद्रासरीराम
१४६	ताजिकसारः भूक	" हरिभट्ट	-	३९	"	सं. १८०५ प्रा [श्रीमती गोंडल
१४७	" गुर्जर टीका	" गुर्जर टीका	-	३९	"	सं. १८२१ प्रा. उत्तमाश्रितः
१४८	" मूलः	"	-	३३	"	सं. १८४१ वर्षे साके (३)
१४९	" मूलः	"	-	९	"	सं. १८९० पोष व. ९ मौम (४)
१५०	" सटीकः	" त्रिविक्रमकृता संस्कृतटीका	-	३१२	"	सं. १८९० वैशाख शुद्ध (५)
१५१	" मूलः	"	-	३३	"	सं. १८९० भाषात कृष्ण (६)
१५२	" मूलः	"	-	५७	"	सं. १९११ प्रा. वि. (७)
१५३	तिथिकल्पद्रुमः	"	-	३	"	सं. १८१० वर्षे साके (८)
१५४	"	"	-	१४	"	सं. १८९५ प्रा.
१५५	तिथिकेन्द्र कोष्टकाः	"	-	२८	"	सं. १८९८
१५६	तिथिकेन्द्र फल कोष्टकाः (९)	"	-	१०	"	सं. १८३५
१५७	तिथिचिंतामणिः सटीकः	"	-	५-११ कोष्टक	"	सं. १९३२ का. वद-कृष्ण
१५८	कोष्टक	" वैद्यकगणेशः	-	२०-३३	"	सं. १९३१ रायक ज्योतिषाराम
१५९	" "	"	-	११-३३	"	सं. १९४५ [रामनाथदत्त कारावासी
१६०	तिथिमंजरी कोष्टक	"	-	२०-१०-३३-५३	"	सं. १९४५
१६१	तिथिरात्र	"	-	४	"	सं. १९०७
१६२	तिथिसारणी	" त्रिविक्रमः	-	३	"	सं. १८९० प्रा. दवे कपरा गोंडल
१६३	"	"	-	७	"	सं. १८८३ भाषात वद (१०)
१६४	इष्टिसारणी	"	-	५	"	सं. १८३१ प्रा.
१६५	ब्राह्मणभाषा विचार	" ब्रह्मणः	-	२९	"	सं. १८४१ प्रथम भाषित (११)
१६६	" निष्कर्षः	"	-	मोळीयुं	"	सं. १९०२ प्रा.
१६७	" विचारः	"	-	१२	"	सं. १८९० प्रा.
१६८	ब्राह्मणवर्गाः सकोष्टकाः	"	-	मोळीयुं	"	सं. १९११ प्रा.
१६९	नरपञ्चिकायां स्वरोदयः	" [सर्वतोभद्रक-	-	१३	"	सं. १९०३ स्वर्णवर्णः
१७०	" सटीका स्वरोदयटीका	" नरहरकृता	-	२३	"	सं. १८२० ज्येष्ठ शुद्ध ६ रवि
१७१	" "	अपूर्ण	-	१८ तः ३३	"	सं. १८१८ साके १५८४
१७२	नक्षत्रसंज्ञा प्रकरणं	संपूर्ण	-	३	"	सं. १९०१ प्रा.
१७३	नागज्योतिषि शर्मरंज-	" [संस्कृतिकलाविश्व-	-	११	"	सं. १९५१ नागश्रीवर्ण शुद्ध
१७४	नाडीलक्षणलोकपट्टिः सटीका (१२), लक्ष्मणतन्त्रः रामिवाकः-	"	-	२४	"	सं. १८५९ साके १०५९ (१३)
१७५	नाडीचक्रं	"	-	मोळीयुं	"	सं. १९३५
१७६	नाडीलक्षणानां मूलं ९० श्लोकाः	"	-	१४	"	सं. १८१५

(१) १७१२ ज्येष्ठ शुद्ध ३ सोम गोंडलमध्ये भाष्यजीवित बाह्यदेव (२) साके १७१४ वैशाख शुद्ध ५ गुरी व्यास देवजीवित मोठा तथा जुठा (३) साके १७६० प्रथम भाष्यवद वि. १० गुरी श्री गोंडलपुरमध्ये व्यास भाष्यजीवित (४) मोळीयुं दवे गोविंदजी भुज (५) शुद्ध ११ रवी लि. मगधान हीरजी घोरजीमध्ये (६) शुद्ध १४ रवी मगधान (७) लि. केदाराम दगधान राजकोटमध्ये (८) साके १९०९ भाष्यवद शुद्ध ६ शुद्ध ल जोनाभाई रत्नजी (९) कोष्टकाः नक्षत्र केन्द्र फल कोष्टकाः । कोष केन्द्र फल कोष्टकाः (१०) वद १३ शुद्ध लि. दवे शामाभज हरिकृष्ण (११) भाषित शुद्ध १० साके गोंडलपुरी व्यास बाह्यदेव लि. (१२) सटीका ग्रन्थ रचनकालः संवत् १९३१ ज्येष्ठ शुद्ध १ सोमवारे उत्तमनरे महामहाराष्ट्रराज्यमितेन लक्ष्मणतन्त्रे रात्रिकायेन रचिता । (१३) १७१६ कारतक शुद्ध १४ सोमवारे गोंडलमध्ये व्यास भाष्यजीवित लिखित भाष्य विजयराजे श्री जयेश्वर इन्द्रजी देवजी वसंते गुराज्ये कुंवरवद राजकुमारजी गुरुभाई वर्तते

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્તલિખિત ગ્રંથ મંડાર, ગોંડલ-સૌરાષ્ટ્ર.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA), INDIA.
Subject: JYOTISH 15 વિષય: જ્યોતિષ: ૧૫.

ક્રમાંક Serial NO	ગ્રંથ મંડાર Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાવિ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક મિતિ Scribe & Date
૧૭૭	નારચંદ્ર: ટીકા	સંપૂર્ણ નારચંદ્રાચાર્ય ટીક ગુજરાતી	૨૭	દેવનાગરી સંવત ૧૭૧૨ માગશિર શુદ્ધ (1)		
૧૭૮	મૂલ ઉત્તમાક્ષરા:	નારચંદ્રોપાધ્યાય:	-	૧૭	સંસ્કૃત સં. ૧૭૦૨ વર્ષે વૈશાલ (2)	
૧૭૯	નારચંદ્રી સટીકા	વત્તમશરા:	-	૧૧	સં. ૧૫૬૬ પ્રા.	
૧૮૦	નરસિંહ પદ્ધતિ:	અપૂર્ણ	-	૧૦	સં. ૧૫૮૮ વર્ષે શાકે (3)	
૧૮૧	નિર્ણય ગ્રંથ:	"	-	૧૮	સં. ૧૧૨૬ પ્રા.	
૧૮૨	પંચપક્ષો	"	-	૧૦	સં. ૧૧૧૧ બાલકાલ-શુ. ૨ મૌમે	
૧૮૩	પંચાંગ કરવાની રીત	"	-	બોઝીયુ ગુજરાતી-દેવ. સં. ૧૧૪૫ પ્રા [મ્યાસ નાના વચ્ચાનો]		
૧૮૪	પક્ષોપતન સાહિત્ય	[અક્ષરપદ્ધતિ ઉપદેશનવિધિ-]	-	૨૦	દેવનાગરી સંસ્કૃત સં. ૧૧૧૦ પ્રા.	
૧૮૫	પાતસારણી	અપૂર્ણ	-	૪	સં. ૧૭૧૭ પોષ કૃત્ત ૫ ગુરો	
૧૮૬	પારાશરી હોરા	"	-	૪	સં. ૧૮૫૧ પ્રા.	
૧૮૭	પ્રશ્ન ચૂડામણિ: ચક્રોક્ત: સંપૂર્ણ	"	-	૯	સં. ૧૮૧૪ પ્રા.	
૧૮૮	પ્રશ્નદ્વાર ગ્રંથ:	અપૂર્ણ	-	૨૫	સં. ૧૭૩૨ પ્રા.	
૧૮૯	પ્રશ્નનિધિ: સટીકા: રચનાકાલ: સંપૂર્ણ અયદ્યદેવસ:	"	-	૩૫	સં. ૧૮૦૩ પ્રા.	
૧૯૦	પ્રશ્ન પ્રશ્નોપ: (લઘુ) [શાકે ૧૫૧૬, મહાદેવ:	"	-	૭	સં. ૧૭૪૪ આશ્વિન કૃત્ત ૪ (4)	
૧૯૧	"	કાશીનાથ:	-	૮	સં. ૧૮૧૨ વર્ષે મહાસ (5)	
૧૯૨	"	રચનાકાલ: ૧૫૧૯, કાન્દજીસુત મહાદેવ:	-	૨૩	સં. ૧૬૫૪ વાસંત કૃત્ત (6)	
૧૯૩	"	"	-	૧૩	સં. ૧૮૧૧ આશ્વિન કૃત્ત ૨ રતી	
૧૯૪	પ્રશ્નગ્રંથક: રચનાકાલ સ્વામિવર્મ	"	-	૧૫	"	
૧૯૫	"	"	-	૧૨	સં. ૧૮૧૩	
૧૯૬	"	મહાકવિ રતિ	-	૧૧	સં. ૧૧૧૨ શાકે ૧૭૪૮	
૧૯૭	"	અપૂર્ણ	-	૬	સં. ૧૮૬૦ પ્રા.	
૧૯૮	પ્રશ્નચિંતા ઉત્તમાક્ષર:	સંપૂર્ણ વર્ણ:	-	૩૧	સં. ૧૧૨૬ પ્રા.	
૧૯૯	પ્રશ્ન યજ્ઞવલ્ક્ય	મહાકવિ: (7)	-	૨૧	સં. ૧૭૧૮ પ્રા.	
૨૦૦	" શ્લોક ૧૨૦૦	"	-	૧૨	સં. ૧૮૪૮ વાસંત કૃત્ત ૨ રતી	
૨૦૧	"	"	-	૭૭	સં. ૧૮૫૫ વૈશાલ ૨ રતી ૨ મૌમે	
૨૦૨	પ્રશ્ન સંગ્રહ	"	-	૭	સં. ૧૧૦૮ પ્રા.	
૨૦૩	પ્રશ્નજ્ઞાનનિધિ:	"	-	૩૫	સં. ૧૭૦૩	
૨૦૪	પ્રશ્નોત્તરો	"	-	૭૦	સં. ૧૮૧૨	
૨૦૫	પ્રશ્નોદાહરણ	"	-	૮	સં. ૧૮૫૨	
૨૦૬	ફલાધ્યાય:	અપૂર્ણ	-	૩	સં. ૧૮૧૦	
૨૦૭	વાલામહીપિકા	"	-	૬	સં. ૧૭૧૭ વૈશાલ ૨ મૌમે	
૨૦૮	વાલબોધ:	સંપૂર્ણ	-	૧૪	સં. ૧૭૦૨ પ્રા.	
૨૦૯	"	અપૂર્ણ	-	૧૨	સં. ૧૮૭૦ પ્રા.	
૨૧૦	વાલબોધ:	સંપૂર્ણ	-	૧૧	સં. ૧૧૦૪ આશ્વિન કૃત્ત ૨ (8)	
૨૧૧	"	"	-	૪૮	સં. ૧૧૦૩ જ્યેષ્ઠ શુદ્ધ ૨ રતી ૨ મૌમે	
૨૧૨	"	"	-	૫૧	સં. ૧૧૦૮ જ્યેષ્ઠ શુદ્ધ ૨ રતી ૨ મૌમે	
૨૧૩	"	"	-	૧૩	સં. ૧૧૧૭ પ્રા.	
૨૧૪	" મિથ	અપૂર્ણ પુસ્તકાનિ	-	૧૫	"	
૨૧૫	વાલવિવેકિની	સંપૂર્ણ	-	૪	સં. ૧૧૦૪ પ્રા. વિ. વનવાળી	
૨૧૬	વાલાનાં સારોદાહ:	"	-	૮	સં. ૧૮૮૧ વૈશાલ શુદ્ધ ૧૧ રતી	
૨૧૭	વીજીવંત	અપૂર્ણ	-	૧	સં. ૧૮૬૭ પ્રા.	

(1) શુદ્ધ ૧૦ વૃષે લે. જેઠા વૈશાલમધ્યે (2) વૈશાલ માસે કૃત્તપક્ષે ૨ મૌમે શુદ્ધ ૨ રતી ૨ મૌમે લિખિત. (3) શાકે ૧૬૫૩ માગશિર કૃત્ત ૧ રતી ૨ મૌમે. (4) કૃત્ત ૮ મૌમે મહા કેશવજીસુત, માગશિર શુદ્ધ ૨ રતી ૨ મૌમે. (5) વ્યાસ માસુદેવેન ગોંડલ મધ્યે (6) કૃત્ત ૦)) શનિ ગોંડલમાં કૃત્ત (7) મહાકવિસુત નારાયણદાસ, સિદ્ધિરતિ: (8) કૃત્ત ૨ ગુરો લે. વ્યાસ મુલજી કોશ મેવાસા વ્યાસ દેશર.

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्त लिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : JYOTISH 15

विषय : ज्योतिष : १५

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author	टीका	पत्राणि	भाषा-लिपि:	लेखक-मिति:
Serial No.	Name of the work Title	संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Dte
२१८	बृहज्जातकः सटीकः	संपूर्ण अवतिकाचार्य* भट्टोत्पल	१०६	देवनागरी	संवत् १८९७ प्रा.	
२१९	" "	" [भरवाहमिहिरकृतः महीदास (१)	१०३	संस्कृत	सं. १८७७ चाके १७४२ (२)	
२२०	" मूल	" [विश्वसिद्धतः	३२	"	सं. १८८५ कार्तिक शुद्ध (३)	
२२१	" धीरः	" भट्टोत्पलीय विश्वसिः	१९६	"	सं. १९०१ प्रा.	
२२२	" मूल	"	२९	"	सं. १९०९ मार्गशीर्ष शुद्ध ५ वनौ	
२२३	"	अपूर्ण पुस्तकानि	-	x	" x	
२२४	ब्रह्मसुख्य	संपूर्ण भास्काचार्य	-	८	" सं. १९०७ भाद्रपद कृष्ण (४)	
२२५	"	"	-	१६	" सं. १९०७ भाद्रपद कृष्ण ४ वानि	
२२६	" टका गुजराती	"	सटीक टका गुजराती	३९	" सं. १९१४ दि. ज्येष्ठ शुद्ध (५)	
२२७	" वार्ता गुजराती	"	- ओळीयु	"	सं. १९११ प्रा.	
२२८	ब्रह्मसुख्ये सूर्य ग्रहणोद्धारण	"	-	५	" सं. १८९९ मार्ग वद ०)) शुद्ध	
२२९	" सारणी	"	-	९	" सं. १९०४ प्रा.	
२३०	" कलांशोरि चंद्रोदय गणित	"	-	३	" सं. १९१४ प्रा.	
२३१	" अय	अपूर्ण पुस्तकानि	-	x	" x	
२३२	बृहस्पतेः सूर्यकोष्टकाः	संपूर्ण	-	४	" सं. १७३१ प्रा.	
२३३	भट्टोत्पलीय ग्रन्थसाम	अपूर्ण	-	८	" सं. १७३१ प्रा.	
२३४	भट्टो वाक्य	"	-	८	" सं. १८१५	
२३५	भावकुटुहल	" जिनबाब	-	१२	" सं. १८५५	
२३६	भावफलानि	संपूर्ण	- ओळीयु	"	सं. १८६५	
२३७	भाव फलाध्यायः	"	-	१२	" सं. १८४० व्यास मार्गशी	
२३८	" साधन भा वा.	अपूर्ण	-	१६	" सं. १८६४	
२३९	भावाध्यायः पुरुष जन्मफल * संपूर्ण	[भट्टमाध्वरः	-	८	" सं. १९४० प्रा.	
२४०	"	" महादेवकृतः	-	११	" सं. १८१२ [विश्वसिद्ध देवतनवी	
२४१	"	"	-	१०	" सं. १८५७ महा शुद्ध ५ वाने कि.	
२४२	"	"	-	१४	" सं. १९०९ मार्गशीर्ष वद १० शुद्धे	
२४३	भुवनदीपकाः सटीकः	"	गुजराती टीका	१६	" सं. १७८९ वद १ चाके (६)	
२४४	"	"	-	१४	" सं. १८१९ चाके १९८४ (७)	
२४५	"	"	-	७८	" सं. १९१३ प्रा.	
२४६	"	अपूर्ण पुस्तकानि	-	x	" सं. १०३५	
२४७	भूगोलस्य भूतः चलाचलवसिद्धिः संपूर्ण	"	- ओळीयु	"	सं. १८६५	
२४८	भूगोल सर्वलोक वर्णन	"	-	१६	" सं. १८०१	
२४९	भूगोलसारः	"	- ओळीयु	दिली	सं. १८६३	
२५०	भूतान्त विक्रम सं. वत (८)	"	-	७१	देवनागरी संस्कृत सं. १९९९ कवि गौरीशंकर गोमटा	
२५१	भोमा सकोष्टका दीना *	" [भट्टीकरणीधिकारः	-	४	" सं. १८१७ प्रा.	
२५२	अमण चंद्रार्क	" त्रिविक्रमः	-	२४	" सं. १८५८ भाद्रपद कृष्ण (९)	
२५३	मयूरचित्र	" नारदमुनि	-	२४	" सं. १९९० भाद्रपद शुद्ध (१०)	
२५४	महावशा कोष्टकाः फल	" पुस्तकानि	-	२६	" सं. १८५९	

(१) महीदासविप्र कृत टिप्पण रचनाकारः चाके १५१० (२) १७४२ पौष कृष्ण १३ शुद्ध भरवाहमिहिरकृतः सटीकः सट जीवनात्मज काथा तत्सुत मोरारजी (३) शुद्ध १३ भरवाह वास्तव्य मह जीवज तत्सुत जिनबाब नाम का मोरारजी (४) कृष्ण ४ वानि लि. रामेश्वरात्मजः रत्नेश्वरः (५) शुद्ध १ वनौ मोरारजीने कि. न जेटा । मह जीमजी वनवाली चके (६) चाके १९१२ चैत्र मासे कृष्ण ९ औम आमरण मध्ये दे न जेटा (७) १९८४ माह शुद्ध १० मोरारजी मध्ये कि. न जेटा (८) संवत् १९८९ बी २९० सुवीयु मविष (९) कृष्ण ४ शुद्ध सट मोरारजी भरवाह (१०) शुद्ध १२ इंदुवारे बाल मह गालनेकरेण लंकर भम्मे लिखित ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखितग्रन्थभंडार, गोंडल - सौराष्ट्र।

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: JYOTISH 15

विषय : ज्योतिष १५।

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author	टीका	पत्राणि	भाषा- लिपि:	लेखक-मिति:
Serial No.	Name of the work (Title)	Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Date

ज्योतिष ।

२५५	महादेवी मयं श्रीवृत्तिः	संपूर्ण महादेव. वृत्तिः वर्षे (1)	२६	देवनागरी संवत् १९०२ कागण कृष्ण ७ गुरो		
२५६	" कोष्टकानि	"	१५१	संस्कृत सं. १८९० प्रा.		
२५७	" "	"	७५	" सं. १९७५ कृष्ण वद ४ गुरो		
२५८	" "	"	११३ तः १४२	" सं. १९१३ चैत्र शुद्ध ६ (2)		
२५९	" "	"	७२	" सं. १९५७		
२६०	" " महसाराणी	"	९१	" सं. १८०३		
२६१	" "	"	१५९	" सं. १७७३ शाके (3)		
२६२	" "	"	५०	" सं. १८५६ शाके १७२१		
२६३	" " महसाराणी	"	१५०	" सं. १७४४ प्रा.		
२६४	" " भ्रमण कोष्टकः	"	१४२	" सं. १८४१ भावण शुद्ध ८		
२६५	" " [३७ पुस्तकानि	"	१८	" सं. १८४५ आदि		
२६६	मासभाषाध्यायः	"	८	" सं. १९१०		
२६७	मास प्रवेश करण	"	२	" सं. १९०४		
२६८	" सारणी	"	२	" सं. १८०३		
२६९	मुनार्णव ज्योतिष संप्रदः*	" [उत्तमाः सूक्ष्माक्षरा -	६०	" सं. १८१४ प्रा. अथ (4)		
२७०	मूलाध्यायः मूलांतिः	"	३	" सं. १८७५		
२७१	मुहूर्त गणयतिः २१ प्रकरणानि	" रामदासपुत्र (5)	१५५	" सं. १८७९ आषाढ शुद्ध १४ बुधे		
२७२	मुहूर्त चिन्तामणिः सटीकः (6)	" रामदैवज्ञ-चिन्ता प्रमिताक्षरा (7)	१३६	" सं. १७७७ वर्षे शाके (8)		
२७३	" सटीकः	"	२००	" सं. १८४५ आश्विन शुद्ध (9)		
२७४	" सटीकः	" रामदैवज्ञः	३४९	" सं. १८५८ माघ वद (10)		
२७५	" सटीकः	"	१७०	" सं. १८७० प्रा.		
२७६	" मूलः	"	५४	" सं. १९०१ कार्तिक शुद्ध ३ औमे		
२७७	"	अपूर्ण १५ ग्रन्थाः	१४८	" सं. १७८३		
२७८	मुहूर्त तरंग पद्धतिः सटीकः	संपूर्ण	३५	" सं. १९१६ प्रा.		
२७९	" "	"	२५	" सं. १९१७ [सुतेन खरेजी ग्रामे		
२८०	मुहूर्त दीपकः सशक्तिः	" महादेवः	२५	" सं. १९३७ व्यास माधवजी सुतेन		
२८१	" "	"	३१	" सं. १८५१ चैत्र वद ५ बुधे		
२८२	" "	"	४७	" सं. १८६० आश्विन शुद्ध ८ शनौ		
२८३	" "	"	२८	" सं. १८९९ आषाढ शुद्ध (11)		
२८४	" "	"	४०	" सं. १९०४ कागण वद (12)		
२८५	" "	"	२३	" सं. १९१५ प्रा.		
२८६	" मूलः	"	११	" सं. १८३६ ज्येष्ठ शुद्ध (13)		
२८७	" मूलः	"	१२	" सं. १८५१ पौष वद (14)		
२८८	" मूलः	" राजगुरुः महादेवः	९	" सं. १८९० ना वर्षे (15)		

(1) श्री नेत्रनवांगभूमिसेकदेरचिता जैन साधुक्रता (2) शुद्ध ६ बुधे टंकारा मध्ये ज्येष्ठाराम रगनाथ पत्र १९६ मध्ये मिति (3) शाके १९३८ मिति पत्र १५१ मध्ये (4) अथ श्री मुनार्णव ज्योतिष संप्रदः शिरोमणौ ताजक योग संप्रदायक तृतीय प्रकरणे बार्मिकादि गोपनीयता नाम्नी प्रथमा प्रभा। (5) रामदासपुत्र हरिश्चंद्रस्यपुत्रेण देवज्ञ रावलेनकृतः (6) सटीकः उत्तमाक्षराः ग्रन्थ रचनाकालः शाके १९०३ संवत् १६५७ (7) प्रमिताक्षरा टीका रामदैवज्ञकृता (8) शाके १६३५ प्रथम आश्विन शुद्धपक्षे विजयादशमी सुप्रभासरे भुजनगर नगरस्थ श्री गिरीनारायण शास्त्रीय भट्ट वल्लभ तत्पुत्र श्रीमजीदात्मजैन नागयणेन लिपीकृतः। इति श्री देवज्ञानंतमुतरामविरचितायां स्वकृत मुहूर्त चिन्तामणि टीकाया प्रमिताक्षरायां (9) शुद्ध २ गुरौ मोनः मध्ये व्यास माधवजी सुतेन (10) वद ३ शनौ द्विवेदी सदा-शिव जगजीवनेन (11) शुद्ध ११ औम ले. मेघजीशुत देवन देन (12) वद १ चंद्रे लि. मेता माधवजीवरसुत जयदेवेन (13) शुद्ध ११ चंद्रे मध्ये माधवजीशुत वासुदेवः (14) वद ९ बुधे गोंडल मध्ये व्यास माधवजीसुत देवजी (15) वर्षे पुरजोतम मासे शुद्ध ६ शनि ले. दव श्री ५ कचरा भुज।

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્તલિખિત ગ્રન્થ મંડાર, ગોંડલ-સૌરાષ્ટ્ર.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: JYOTISH 15

વિષય: જ્યોતિષ: ૧૫.

ક્ર.માંક Serial No.	ગ્રન્થ મંડાર Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાણ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક મિતિ Scribe & Date
૨૮૯	મુદ્દત્ રીપ : મૂલ:	સંપૂર્ણ	-	૨૧	દેવનાગરી સંવત ૧૮૬૨	
૨૯૦	"	"	-	૨૧	સંસ્કૃત સં. ૧૮૭૬ ફાલ્ગુન (1)	
૨૯૧	"	"	-	૨૦	" સં. ૧૯૦૧ ચૈત્ર વદ ૪ (2)	
૨૯૨	"	"	-	૨૦	" સં. ૧૯૧૫	
૨૯૩	" સટીક:	અપૂર્ણ	-	૨૨	" સં. ૧૮૫૫	
૨૯૪	મુદ્દત્ માર્તંડ સટીક: (3)	સંપૂર્ણ નારાયણકૃત-સટીક સટીક: (4)	૧૫૯	"	સં. ૧૯૧૨ માચ શુદ (5)	
૨૯૫	"	" [તેનૈવક્રતા ટીકા	"	૧૦૧	" સં. ૧૮૫૬ વૈશાખ શુદ (6)	
૨૯૬	"	"	"	૧૦૯	" સં. ૧૮૭૧ પ્રા.	
૨૯૭	" મૂલ	" મૂલ:	-	૨૫	" સં. ૧૯૧૫ પ્રા.	
૨૯૮	"	"	-	૧૭	" સં. ૧૮૮૩ અષાઢ શુદ (7)	
૨૯૯	"	"	-	૨૨	" સં. ૧૯૦૧ દ્વિતીય માસ. કૃષ્ણ ૪	
૩૦૦	"	અપૂર્ણ ૧ ગ્રન્થ	-	૨૧૫	" સં. ૧૯૨૫ [X ૧ મૌમે	
૩૦૧	મુદ્દત્ મુકાવલિ:	સંપૂર્ણ હરિભટ્ટ: + ગુજરાતી ટિપ્પણી	૨૧	"	સં. ૧૮૨૭ નાભાવળ શુદ ૧ ગુરો	
૩૦૨	"	" [+નાટીચ પ્રામે	"	૬	" સં. ૧૮૫૬ [† મટ મૂલબી રાણકોટ	
૩૦૩	"	"	"	૧૨	" સં. ૧૮૬૦ જ્યેષ્ઠ શુદ (8)	
૩૦૪	" મૂલ	"	-	૪	" સં. ૧૮૮૪ વૈશાખ વદ ૧ ગુરો =	
૩૦૫	મુદ્દત્ સિદ્ધિ:	" મહાદેવ	-	૧૦	" સં. ૧૮૮૮ ફાલ્ગુન શુદ ૧ શોમે	
૩૦૬	મેઘમાલા	અપૂર્ણ સાંતિદાન	-	૧૯	માધા સં. ૧૮૮૧ [=કિ. મહુ જગુ	
૩૦૭	યંત્ર રતનાવલી	સંપૂર્ણ નર દાસ્યન પપ્પાભ:	-	૧૦	સંસ્કૃત સં. ૧૮૭૭ અષાઢ શુદ ૫ શનો	
૩૦૮	યંત્રાંજ: સટીક:	" મહેશ્વરિયસુરિ: વચ્ચેનુસુરિ *	૮૮	"	સં. ૧૯૪૫ પ્રા.	
૩૦૯	યવન કોષ્ટક સહમકલનચનલિષે	" [* ક્રતા ટીકા	૧૨	ગુર્જર સંસ્કૃત સં. ૧૮૩૨ ઉત્તમાશ્વર		
૩૧૦	યવન જાતકોક્ત મંગોધ્યાય:	"	-	૩	" સં. ૧૮૬૩	
૩૧૧	દોર્ગાળવ:	"	-	૨૧	" સં. ૧૯૪૮	
૩૧૨	યોગિની મહાદ્વા કલ	" પ્રવા: ૧૦	-	૫૫	" સં. ૧૯૩૫ આદિ	
૩૧૩	રતન દીપિકા	" દે. ગણપતિ	-	૨૨	દેવનાગરી સંસ્કૃત સં. ૧૮૧૬	
૩૧૪	રતન દીપક:	અપૂર્ણ ગ્રન્થ ૫	-	૨૬	" સં. ૧૯૩૫ આદિ	
૩૧૫	રતનમાલા મૂલ (જ્યોતિષ રત્નમાલા) સંપૂર્ણ શ્રીપતિ	"	-	૩૫	" સં. ૧૫૬૨ વર્ષે (9)	
૩૧૬	" અનુક્રમણી સહિતા	"	-	૮૦	" સં. ૧૮૪૧ વર્ષે શાકે (10)	
૩૧૭	"	"	-	૪૪	" સં. ૧૮૬૦ ફાલ્ગુન શુદ (11)	
૩૧૮	"	"	-	૬૭	" સં. ૧૮૭૪ ચૈત્ર શુદ (12)	
૩૧૯	"	"	-	૩૧	" સં. ૧૯૧૭ ના વર્ષે શાકે (13)	
૩૨૦	"	અપૂર્ણ ગ્રન્થકાનિ ૧૦	-	૧૭૧	" સં. ૧૭૫૭ રત્યાદિ	
૩૨૧	રમલતવ રતન	" સનાતન સુબોધાધ્યાયકૃત	-	૪૧	" સં. ૧૯૧૮ શાકે (14)	
૩૨૨	રમલ કલ	"	-	૭	હિન્દી સં. ૧૭૧૫ પ્રા.	
૩૨૩	રમલવાર્તિક ૧, ઉત્તમાશ્વર: † સંપૂર્ણ ‡ રમલપદ્ધતિની હુંદી ૨-	"	-	૨૪	ગુજ. દેવનાગરી સં. ૧૯૪૩ ના વૈશાખ શુદ (15)	

(1) ફાલ્ગુન વદ ૧૧ શુગ્ર ઉદીચ્ય મેતા હરજીવનેન ચિ. રાજારામ પઠનાથ મહેમદાશા મધ્યે લક્ષ્મી છે (2) વદ ૪ શનો રાવલ જેઠા રમનાથ ટંકારા (3) સટીક: શ્રી અનંત ચાતુર્માસ્યચાગિપુત્ર રચનાકાલ: શાકે ૧૪૧૪ સં ૧૬૨૧ (4) મટ ક: માર્તંડવલ્લયા ટીકા (5) શુદ ૪ ગુરો છે. શુક્ર મયાશંકર હરિજા વાંકાનેર મધ્યે (6) શુદ ૧ શનો સરધાર મધ્યે અમલપ્રભ (7) શુદ ૧૨ શનો છે. વ્યાસ ગાંધારુત ધેલા (8) શુદ ૧ શુકે રવે ગોધારુત કવરા મુલ (9) વર્ષે ચૈત્રમાસે કામપદ્મે અમ ત્રાસ્યાં વુષે અયેહ ઉદીચ્ય શાતીય (11) શાકે ૧૭૧૫ પ્રા. જ્યેષ્ઠ શુદ ૩ મૌમે શરેલી નિવાલિ વ્યાસ શિવરામાત્મજ મ રાજોસુત વાણરેવેન ગોંડલ વાસ્તવ્યેન લિ. (11) શુદ ૧ રકિ મુજનગરે અમ્મોજી દવે હરિરામ તથા મહિ ગોશંજી (12) શુદ ૭ ચંદ્ર લિ. જોશી નરાચંદ (13) શાકે ૧૭૮૩ વૈશાખ શુક્ર ૧૩ વુષે (14) શાકે ૧૭૮૪ રવિ ૭ શુદ ૧૦ શુગ્રે સંપૂર્ણ. વૈરા લાષા હ: કાને મંગલાપુર મધ્યે (મંગરોલ) મટ જેઠંકર વલ્લભની પેઠી ઉપરથી (15) શુદ ૧૩ શુભાસરે લિ. મોરવી મધ્યે રાવલ મંથકર વિથમાન અંબારમેજ.

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રંથ મંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર ।

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : JYOTISH 15

વિષય : જ્યોતિષ : ૧૫ ।

ક્રમાંક Serial No	ગ્રંથ નામ Name of the Work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાણ No of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ: Scribe & Date
૩૧૪	રમલશાસ્ત્ર	સંપૂર્ણ	-	૮ ગુજ. દેવનાગરી સં. ૧૮૬૦ પ્રા.		
૩૨૫	"	"	-	૪૪ " સં. ૧૮૧૨ પ્રા. હિતીશ્રી (1)		
૩૨૬	"	"	-	૬૩ ગુર્જરી સંસ્કૃત સં. ૧૯૨૯ ના માહ શુદ ૧		
૩૨૭	"	"	-	૨૭૮ ગુર્જરી લિ. ભા. ટુડું સં. ૧૯૧૦ પ્રા. [મોહલ ગ્રામ]		
૩૨૮	"	" યવનાચાર્ય:	-	૬, " ભા. લિ. ગુર્જરી ભા. દેવ. ના. સં. ૧૮૭૩ ના શાકે (2)		
૩૨૯	રમલશાસ્ત્ર પ્રથમ તંત્ર	" ચિંતામણિ પંડિત:	-	૨૦ સંસ્કૃત સં. ૧૮૪૯ ના વર્ષે શાકે (3)		
૩૩૦	"	"	-	૩૬ " સં. ૧૮૬૪ શાકે ૧૦૨૯ માસ		
૩૩૧	"	" પ્રકીર્ણ	-	૩ " સં. ૧૮૨૧ પ્રા. [૨૬ ૧ શુકે]		
૩૩૨	રાજાદિસંક્રાંતિ માસાદિ ફલ	"	-	૧૨ દેવનાગરી સં. ૧૯૦૮ પ્રા.		
૩૩૩	રાજ્યોગાધ્યાય: રત્નદીપિકાયા:	"	-	૩ સંસ્કૃત સં. ૧૮૬૭		
૩૩૪	રાજાલંકાર: દુર્ગી સાંકળીયુ	" દેવજીરામચંદ્ર:	-	૧૨ " સં. ૧૯૧૪ કાર્તિક વદ 4)		
૩૩૫	રાધ્યોપરિ પદ્મશ ગણિ	"	-	૨ " સં. ૧૯૩૧		
૩૩૬	રાધ્યાયુ: રાશિસત્તક વર્ગા:	"	-	૭ " સં. ૧૮૦૫		
૩૩૭	રેખા ગણિત	અપૂર્ણ	-	૪ " સં. ૧૮૬૨		
૩૩૮	લગ્ન ગ્રંથો લગ્ન કરવાની વિધિ ૧.(5)	"	-	૫ " સં. ૧૯૨૯ હયાદિ		
૩૩૯	લગ્ન ચંદ્રિકા	"	-	૩૬ " સં. ૧૭૬૨ શાકે ૧૬૨૭ (6)		
૩૪૦	લગ્નજાતક મૂલ	સંપૂર્ણ: વરાહમિહિરાચાર્ય:	-	૪ " સં. ૧૬૧૯ પ્રા. હયાદિ (7)		
૩૪૧	" યવનજાતક સારાવલી [x મિથ ગ્રંથ	"	-	૬૬ " સં. ૧૬૨૧ વર્ષે પૌષ વદ (8)		
૩૪૨	" મૂલ	"	-	૮ " સં. ૧૬૬૫ માઘપદ શુદ (9)		
૩૪૩	"	"	-	૬ " સં. ૧૯૦૬ પ્રા.		
૩૪૪	" સટીક	"	સંસ્કૃત ટંકા	૩૦ " સં. ૧૯૩૨ જ્યેષ્ઠ શુદ ૮ ભીમે		
૩૪૫	" મૂલ: સત્તમાસ ૧૬ અધ્યાય	"	-	૯ " સં. ૧૯૩૩ અષાઢ શુદ ૧૦ શની		
૩૪૬	" લખિત પુસ્તકાનિ ૪	"	-	૫૦ " x x [† વાસુદેવ		
૩૪૭	લોહચંદો પદ્ધતિ:	"	-	૯૦ " સં. ૧૮૫૧ પ્રા. માનવજીવિત †		
૩૪૮	" રચનાકાલ: (10)	"	-	૨૦૭ " સં. ૧૮૫૧ વર્ષે શાકે (11)		
૩૪૯	" સત્તમાસ	"	-	૭૫ " સં. ૧૭૬૨		
૩૫૦	લોહાવતો પાટોગણિત સત્તમાસ	" ભાસ્કરાચાર્ય:	-	૩૯ " સં. ૧૯૧૬ કૃત્તે કૃષ્ણ (12)		
૩૫૧	" સટીક	"	સટીક:	૬૧ " સં. ૧૯૧૬ પ્રા. મહા ગોપાલજી		
૩૫૨	" લોહાવતો પાટો શ્રી (13)	" સત્તમાસ †	-	૨૫ " સં. ૧૭૬૮ વર્ષે કાર્તિક વદ ૫ †		
૩૫૩	લોહાવતો પુસ્તકાનિ અપૂર્ણ નિ ૫ [† ગ્રંથાગ્ર ૧૦૦	"	-	૪૪ " સં. ૧૮૬૮ હયાદિ		
૩૫૪	વક્રાંતિચાર નિર્ણય:	સંપૂર્ણ	-	બોલીયું " સં. ૧૯૬૦ પ્રા. [† શ્રી ઉદયપુર મચ્છે		
૩૫૫	વતરો	"	-	૨ ગુજરાતી સં. ૧૮૬૧		

(1) હિતીશ્રી દેવજીરામણિ શિષ્ય શ્રી ચિંતામણિ પંડિત વિરચિતે જ્યોતિષ: શાસ્ત્રે પ્રથમ તંત્ર રમલશાસ્ત્ર સંપૂર્ણ (2) શાકે ૧૭૧૮ પાલ્ગુન શુદ ૫ ૪૫ યમયાસંકરેણ જ્ઞાતિ (3) શાકે ૧૭૧૪ પ્રથમ કાર્તિક શુદ ૧ ભીમે વાકરના જ્ઞાતી વિશામસુત ભીમજી લિ. હિતીશ્રી દેવજીરામણિ શ્રી મનમહાગજવંદિતપાદગુજશિષ્ય સર્વશિષ્યકુશલ સર્વશાસ્ત્રજ્ઞ શ્રવશ્રીમચિંતામણિ પંડિત વિરચિતે જ્યોતિષ: શાસ્ત્ર સંજ્ઞાત શ્રે રમલ શાસ્ત્ર પ્રથમસ્તંત્ર: સમાપ્ત: (4) વદ ૨ ભીમે ચંકપુરીનગરે શાંકાનેર લિ. શ્ર. કેશભંદ ગોવિંદજી (5) વિધિ ૧, લગ્નોપરિ નિર્માણ ૨, લગ્ન ગ્રહણ ફલ ૩, લગ્નગ્રહ પુષ્ટા ૪ (6) ૧૬૨૭ કાર્તિક ૫ શુદ લિ. શામજી ભાલનગર મધ્યે (7) હયાદિ તિકાચાર્ય શ્રી વરાહમિહિર વિરચિત લગ્નજાતક સમપ્ત (8) વદ ૧૨ શનિ વજાલો મચ્છે લિ. પાટળ વાસ્તવ્ય પંડયા મહાવજી દેવાકર (9) શુદ ૩ શુક લિ. ઉપાધ્યાય જયદેવસુત વાસુદેવ વેશપાઠ જ્ઞાતીય: (10) રચનાકાલ: સંવત ૧૭૫૧ કાર્તિક શુદ ૨ સૌાષ્ટ્રે પ્રમાણ સાટ્યે પાઠક ચાસ દત્ત ગુરો: શિષ્યેણ લખિતગ્રંથ રચિત (11) શાકે ૧૭૧૭ પ્રથમ ચૈત્ર કૃષ્ણ ૧૦ ભીમે ગોંડલપુર મચ્છે વિજયરાજ્ય જાહેરા હંધ કુંભાંકુસુત વાસુ દસ્યાસ્ય ગોપાલજી પ્રતિપાલક મુકુતી તવાસંજ સાંગેજી સ એવ શાંચી વિજયરાજ્યે વર્તતે (12) કૃષ્ણ ૧૩ માનુવાસરે વ્યાસ ગોપાલેન ગોંડલ વતને (13) શ્રી ભાસ્કરાચાર્ય શિદ્ધાંત શિરોમણી લીલાવતી સંજ્ઞાપાટી સમાપ્તા ૧૪ વિશાણ મૂલ ।

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રન્થ મંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, MSS. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: JYOTISH 15

વિષય : જ્યોતિષ ૧૫.

ક્રમાંક	ગ્રન્થ નામ	કર્તા Author	ટીકા	પત્રાણિ	ભાષા-લિપિ:	લેખક-મિતિ:
Serial No.	Name of the work (Title)	Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Date
૩૫૬	વર્ષ ગણિત હાયનોદ્ધમ પદ્ધતિઃ*	સંપૂર્ણ [મૂલસહ ગુજરાતી -	૨૩	સંસ્કૃત ગુજરાતી સં.	૧૯૩૫	ચૈત્ર શુ.૨ મગલ
૩૫૭	વર્ષફલ પદ્ધતિઃ ૧, (1)	,, કેશવ	-	૧૪	દેવનાગરી સંસ્કૃત સં.	૧૮૮૨
૩૫૮	વર્ષભાવાધ્યાયઃ તાજિહ મૂળે	,, ૨ પુસ્તિકે	-	૧૨	,, સં.	૧૮૧૫
૩૫૯	વર્ષેશ ફલ	,,	-	૩	,, સં.	૧૯૪૫ના દ્વિતીય ચૈત્ર(2)
૩૬૦	વસંતરાજશાકુનેયઃ ૩૯૧ (3)	,, મહા શિવરાજ (4) સંસ્કૃત (5) ૫૭૨	દેવ. સં	વજ્રમાયા સં.	૧૭૩૫	પ્રા. રૂતિ(6)
૩૬૧	,, મૂલમાત્રઃ ઉત્તમાક્ષરાઃ	અપૂર્ણ ૩૭૨ શ્લોક પર્યંત -	૩૩	સંસ્કૃત	સં.	૧૮૦૪ પ્રા.
૩૬૨	ચારાદી સંહિતા પત્ર ૧૪૧ (7)	,, વરાહમિહાચાર્યઃ મહોત્પલીઃ ૨૧૬	,,	સં.	૧૯૪૧	પ્રા. લેખાધવજીસુતઃ
૩૬૩	,,	,, [વિશ્વસિઃ	૭૭	,,	સં.	૧૯૭૧ પ્રા. [અપ્પાસવાસુદેવ
૩૬૪	,, સહગુરુર ઉત્તમાક્ષરઃ	,, મૂલસહ ગુજરાતી	૧૨	,,	સં.	૧૨૯૮ પ્રા.
૩૬૫	વિવાહ પટલ	વિવાહ હન્દાવન સંપૂર્ણ કેશવાદિત્યકૃત -	૧૭	,,	સં	૧૯૦૭ ભાદ્રપદ સુદ (8)
૩૬૬	,, કેવલા ટોકા	અપૂર્ણ કેશવસાંસ્કરઃ ગણેશઃ (9) ૫૭	,,	સં.	૧૫૩૨	પ્રા.
૩૬૭	,,	,, કેવલા ટોકા	૨૫	,,	સં.	૧૮૩૪ પ્રા.
૩૬૮	,, મૂલ	,,	-	૬	,,	સં. ૧૯૧૦
૩૬૯	વાસિષ્ઠી સંહિતા	સંપૂર્ણ	-	૨૦	,,	સં. ૧૮૪૭ ભાદ્રપદ વદ ૧૪
૩૭૦	વેદાંગ જ્યોતિષ	,,	-	૮	,,	સં. ૧૮૧૪ પ્રા.
૩૭૧	શંકુસ્થાસઃ	અપૂર્ણ	-	૧૦	,,	સં. ૧૮૫૦
૩૭૨	શકુન દોષિકા	સંપૂર્ણ	-	૧૦	ગુજરાતી સં.	૧૭૪૫ બદરમપુરે કવિ (10)
૩૭૩	શકુનાવલી	,,	-	૩	,,	સં. ૧૮૧૮
૩૭૪	,,	,,	-	૭	,,	સં. ૧૮૭૩ યજ્ઞેશ્વર શુદ. ૧૫ શુક્રે
૩૭૫	,, લક્ષ્મીકનાવલી	,,	-	૪	,,	સં. ૧૯૧૪ [દીપેશ્વરીદિને
૩૭૬	,, બૌદ્ધચક્રશકુનાવલી શુદ્ધ ચક્રાણિ,	,,	-	૩૧	,,	સં. ૧૭૨૪ વર્ષે શુરતી વદરે
૩૭૭	,, ગુજરાતી	,,	-	૩	,,	સં. ૧૦૧૮ વર્ષે ભાદ્રપદ (11)
૩૭૮	,, જિનાવર	,,	-	૫	,,	સં. ૧૮૧૧
૩૭૯	,, ના-રા-જ-ન પાષા	,,	-	૬	સંસ્કૃત	સં. ૧૯૨૫
૩૮૦	તઃ ૩૯૦ શકુનાવલી પાષા (12)	,, ગર્ગાચાર્યઃ [11૦ પ્રન્યાઃ-	૮૭	સં.	૧૯૫૬	
૩૯૧	તઃ ૩૯૬ શિવાલિખિત મુદ્રતમાશિકા +	[+પુસ્તક ૫	-	૫૦	દેવનાગરી સંસ્કૃત સં.	૧૮૦૯ કાગળ શુ. (13)
૩૯૬	શિશુવોદિની શતશ્લોકી	,,	-	૭	,,	સં. ૧૮૭૫
૩૯૭	શીઘ્રવૈદ્યઃ ૪ પ્રકરણ	,, સકલાચાર્ય કાશીનાથ -	૨૫	,,	સં ૧૭૯૫ [આસુદેવભાવબી ગોંડલ	
૩૯૮	,,	,,	-	૫૬	,,	સં. ૧૮૩૩ વૈષાખ વદ ૧૪ મૌમે
૩૯૯	,, સટીકઃ રચનાકાલઃ સંવત્ ૧	,, સુબોધચક્રનો +	-	૮૭	,,	સં. ૧૮૯૮ કુમાર માસે કુળ્લ
૪૦૦	,, [1૯૨૩ વે. શુ. ૧ શુદ્ધ અપૂર્ણ	[+વર્ષમાત્ર કૃતાટીકા-	૩૪	,,	સં. ૧૯૧૨	

(1) પદ્ધતિઃ ૧, વર્ષફલ ગુજરાતી ૨, મલ્લાલિકૃતા ટોકા (2) ચૈત્ર વદી અમાવાસ્યાએ મહા મણિસંકર વિ રાષ્ટ્રવતી રે. સરધાર સરધાર (3) ૩૯૧ પત્ર શુદ્ધો મૂલસહ વજ્રમાયા ટોકા તથા ૩૯૨ થી ૫૦૨ સુધી મૂલ્લોકની સંસ્કૃત ટીકા, નીચે વજ્રમાયા ટીકા (4) ત્રિવિજયસુત વિજયરામસ્ત્રોત્તમઃ વજ્રતરાત્રઃ કર્તા (5) સંસ્કૃત ટીકા વજ્રમાયા ટીકા આનુચંદગણિતા વજ્રમાયા ટીકા સિદ્ધિચંદ્રગણિ સંદેશિતા (6) દ્વિતીયી પાદશાહથી અકબર જલ્લ લલિત સુવંસહજનાભાષ્યાપકઃ મહોપાધ્યાય ભી શંકુચંચ તીર્થપુરનોચનાચને કસુકૃત વિધાયક મહોપાધ્યાય ભી આનુચંદ ગણિવિરચિતાયો વજ્રતરાત્રટીકાનો વિશેષ વર્તઃ (7) પત્ર ૧૪૧, ૨૦, ૪૫, મહોત્પલિ વિરચિત વિશ્વતિસંહિતા (8) શુદ્ધિ ૨ શુરો યજ્ઞે. હચલસુત ચૂલાલિકા (6) ગણેશ સાંસ્કર કૃત ટીકા વિવાહદોષિકા સંહા (10) કવિ હસ્તિલચિના લિપિકૃતા (11) ભાદ્રપદ સુદ ૬ દિને કિ. બોર્નડુર્ગેશી (12) પાષા શકુનાવલી ૧૦ પ્રન્યાઃ 11 મ. ૩૮૦ થી ૩૯૦ પર્યંત સંપૂર્ણ પ્રન્યાઃ 1 નં. ૧૮૧૧ પત્ર ૧૫ સં. ૧૯૧૨ માસ કુળ્લ ૧૩ નં. ૧૮૨ મારવાલી પત્ર ૫ સં. ૧૯૦૪ પ્રા. 1 નં. ૩૮૩ સંસ્કૃત પત્ર ૧૪ સં. ૧૯૩૦ના માસ શુદ્ધ ૧ સોમે. 1 નં. ૩૮૪ પ્રાકૃત પત્ર ૪ સં. ૧૮૯૮ યજ્ઞેશ્વર શુદ્ધ 1 નં. ૩૮૫ સં. ૧૯૦ સંસ્કૃત પત્ર ૯ સં. ૧૮૭૩ યજ્ઞેશ્વર શુદ્ધ ૧૫ શુક્રે. 1 નં ૩૮૬ પત્ર ૮ સં. ૧૮૪૮ ચૈત્ર શુદ્ધ ૧૩ શુભ. 1 નં ૩૮૭ પત્ર ૧૩ સં. ૧૮૨૫ના દ્વિતીય શ્રાવણ વદ ૪ મૌમે. 1 વજ્રમાર મયે. 1 નં ૩૮૮ પત્ર ૫ સં. ૧૭૧૧ પ્રા. 1 નં ૩૮૯ પત્ર ૭ સં. ૧૭૩૪ વર્ષે અષાઢ શુદ્ધ ૧૩. 1 નં ૩૯૦ પત્ર ૭ સં. ૧૮૩૦ના ફાલગુણ વદ ૯ થી વરસેને લખી છે. (13) શુદ્ધ ૨ શુભ કાસોમયે માસિય મીકુળ્લ મદેન. 1

Subject: JYOTISH 15

विषयः ज्योतिषः १५।

क्रमांक	ग्रन्थ भंडार	कर्ता Author	टोका	पत्राणि	भाषा लिपिः	लेखक मिति
Serial NO	Name of the work (Title)	संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Date
४०१	सुप्रबोधः ४ प्रकरण	अपूर्ण ग्रन्थाः १०	-	८४	देवननागरी सं १९५५ इत्यादि	
४०२	ओपति पञ्चतिः सटीका उत्तमाक्षर संपूर्णा	सुबोध टोका (1)	-	२८	संस्कृत सं. १७२५ वर्ष	
४०३	" सटीका	" सुप्रतिभा टोका (2)	-	५०	" सं. १७३२ प्रा.	
४०४	" "	" कृष्णदेवसंस्कृत टोका	-	५८	" सं. १७९८ प्रा.	
४०५	" "	अपूर्ण संस्कृतटीका माधवकृता	-	४८	" सं. १९०६ ज्येष्ठ शुद्ध (3)	
४०६	" "	" कृष्णदेवसंस्कृता टोका	-	२३	" सं १९१६ व्यास गोपालजी गो.	
४०७	" "	" माधव टोका	-	५२	" सं. १८०० प्रा.	
४०८	" "	" संस्कृत टोका	-	१८	" सं. १८१४ प्रा.	
४०२तः४२१	पद्मशाशिका मूल (4) संपूर्ण वराहमिहिरात्मज *	सर्वपत्र	-	२००	" सं. १७३३ भाद्रपद शु. (5)	
४१२	पद्मशाशिका विचारः	" [*पृथुवशसा कृता	-	७	" सं. १८४४ माघ व. ४ से मे-	
४१३	"	"	-	७	" सं १७२३ [लि. व्यास बासुदेवेन]	
४१४	पद्मशाला निष्ठ सवसरः (6)	"	-	४	" सं. १९१७	
४१५	षोडशयोगाः	"	-	५	" सं १८६५ प्रा.	
४१६	संकेत कौमुदी अष्टाध्याय ५	" हरिगयाचायः	-	७	" सं. १९३५ प्रा.	
४१७	"	"	-	१८	" सं. १९२७ प्रा.	
४१८	संक्रांति पटल ज्योतिर्निबन्धे	"	-	१७	" सं. १९०९ ना वर्षे वैशाख (7)	
४१९	संक्रांति पटलविशेष १, संक्रांति	" [प्रकरण २ संक्रांतिनिर्णयः	-	११	" सं. १९०९ पौष शुद्ध ८ (8)	
४२०	संक्रांति पटलकल ज्योतिर्निबन्धे	"	-	१३	" सं. १९४१ प्रा	
४२१	संक्रांति कल	"	-	१२	" सं. १८११ प्रा [गोविंदलक्ष्मणे	
४२२	सवसरः	"	-	२३	" सं. १७९६ ना वै. ४ चैत्रहासेणलि	
४२३	सर्वाथ चिंतामणिः	"	-	७७	" सं. १८१९ प्रा. व्यास बासुदेवेन	
४२४तः४२९	साठसवसरः कल (9)	"	-	१२	" सं. १९३४ मार्ग शुद्ध १ तौ	
४४०	सहस्र ताजकसारः तथा (10)	"	-	५	" सं. १९१८ ना वैशाख वद (11)	
४४१	सहाय्याय प्रथमः	"	-	२	" सं. १८४७	
४४२	सहाय्य	" बोलकठः	-	१२	" सं. १८१३ प्रा.	
४४३	सामुद्रिक प्रज्ञा	"	-	११	" सं. १९३५	
४४४	" शास्त्र मूलबद्ध गुणराती	"	मूलसह गुज.	२९	" सं १९१६ प्रा.	
४४५	"	"	"	३०	" सं १७७९ व्यास वद (2)	
४४६	" मूल	"	"	१३	" सं १८८८ प्रा.	

(1) टीका पण्डित सुमति हर्ष विरचिता टीका रचनाकालः सं. १६७३ (2) टीका पं. एवं विरचिता (3) शुद्ध ७ व्यास गोपालजी गोडल (4) मूल पुस्तक १३ ग्रन्थाः नं. ४०९ तः ४२० पर्यंतं संपूर्ण ग्रन्थाः । नं. ४१० सं. १७३४ शके १५९९ । नं. ४११ सं. १७५९ भाद्रपद वद १ सोमे । नं. ४१२ सं. १८९९ ज्येष्ठ वद ३ शुभे द्वये कचरा भुज । नं. ४१३ सं. १८९० चैत्र शुद्ध २ गुरौ । नं. ४१४ उत्तमाक्षर सं. १८९९ ना आषाढ वद ६ सोमे लक्षितं द्वये तरुशिशुत महादेव । नं. ४१५ सविंशतिः भट्टोपलीय सं. १७३७ प्रा. । नं. ४१६ गुर्जर टीका सं. १८०३ वर्षे चैत्र नं. ४१७ सं. संस्कृत टीका भट्टोपलीय टीका होराश्रुति संज्ञा सं. १८४९ प्रथम ज्येष्ठ शुद्ध १० सोमे नवानगरे गंगाधरेण लि. । नं. ४१८ संस्कृत टीका भट्टोपलीय टीका होराश्रुति संज्ञा सं. १८४९ श्रावण वद १२ रवौ व्यास वासुदेवेन गोडल । नं. ४१९ संस्कृत टीका भट्टोपलीय टीका होराश्रुति संज्ञा सं. १९०३ आश्विन कृष्ण १० रवौ । नं. ४२० गुर्जर टीका भट्टोपलीय टीका होराश्रुति संज्ञा सं. १९२८ प्रा. । नं. ४२१ खण्डितानि अपूर्णानि । (5) शुद्ध ९ दिशनायेन मानं लिखिता । (6) षष्ठि संवत्सर पुस्तकानि साठ संवत्सर सप्तकेषु सति (7) वद १० बुधवासरे लि. रावळ जेठा रघुनाथ (8) शुद्ध ८ सोमे भट्ट गोपालजीदेन गोडल (9) फलं मूल पुस्तकानि ११ । नं. ४३४ तः ४३८ पर्यंतं संपूर्ण ग्रन्थाः । नं. ४३९ देवनागरी संस्कृत पत्र १८ सं. १९५९ के. व्यास काशीराम व. २५ । नं. ४३९ मारवाडी लिपि देवनागरी पत्र ९ सं. १८८८ प्रा. क. २० । नं. ४३७ गुजराती लिपि देवनागरी पत्र १४ सं. १९१३ प्रा. क. २० । नं. ४३७ गुजराती लिपि देवनागरी पत्र १९ सं. १९१३ प्रा. क. २० । नं. ४३८ संस्कृत पत्र ८ सं. १९३९ प्रा. क. ५ । नं. ४३९ अपूर्ण गुजराती पत्र १४ सं. १९०३ प्रा. क. ३ । (10) तथा ताजकभूषण नीलकण्ठाधारेण कृतं (11) वद ५ के. टंकारा मध्ये रावळ ज्येश्ठराम रघुनाथ (12) वद ११ शुभे हरदोचनहास गजसंघ हस्तमोक्षे ।

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રંથ ભંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : JYOTISH 15

વિષય : જ્યોતિષ ૧૫ ।

ક્રમાંક Serial No.	ગ્રંથ નામ Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અસંપૂર્ણ Complete or incomplete	ટીકા Commentary	પૃષ્ઠાણિ No of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ: Scribe & Date
૪૪૭	સાનુક્રિ મૂલસહ ગુજરાતી	સંપૂર્ણ	મૂલસહ ગુજ.	૩૨	દેવનાગરી સંસ્કૃત સંવત ૧૯૦૨ શાકે (1)	
૪૪૮	" હિન્દી	"	-	૪	હિન્દી સં. ૧૯૦૧ પ્રા. ચૈત્ર શુક્ર ગુરુ	
૪૪૯	"	અસંપૂર્ણ મિશ્ર ગ્રંથ	-	૩૦	" સં. ૧૮૯૦ હત્યાદિ	
૪૫૦	સારસંગ્રહ: મૂલસહ ગુજરાતી ટીકા	સંપૂર્ણ મહાદેવ: રાજગુરુ: ગુજ. ટીકા	-	૬૩	સંસ્કૃત સં. ૧૮૦૪ વર્ષે શ્રાવણ શુદ્ધ (2)	
૪૫૧	"	"	"	૫૮	દેવનાગરી સં. ૧૮૪૬ વર્ષે શાકે (3)	
૪૫૨	"	અસંપૂર્ણ	"	૩૪	" સં. ૧૮૫૭	
૪૫૩	"	સંપૂર્ણ	"	૪૮	" સં. ૧૮૭૧ આષાઢ શુદ્ધ (4)	
૪૫૪	"	"	"	૭૪	" સં. ૧૮૮૦ આશ્વિન શુદ્ધ (5)	
૪૫૫	"	"	"	૭૯	" સં. ૧૯૧૮ આષાઢ કૃષ્ણ (6)	
૪૫૬	" મૂલ: ઉત્તમાશ્વર:	"	"	૧૩	" સં. ૧૮૪૦ પ્રા. લિ. દવે ગોવા મુદ્ર	
૪૫૭	" મૂલ:	"	-	૧૯	" સં. ૧૮૩૧ આષાઢ શુદ્ધ (7)	
૪૫૮	" મૂલ:	"	-	૨૩	" - ૧૮૫૧ પ્રા.	
૪૫૯	" મૂલ:	અસંપૂર્ણ ૧૦ ગ્રંથ:	-	૧૩૫	" સં. ૧૯૧૦ હત્યાદિ	
૪૬૦	સારાવલી મૂલ	સંપૂર્ણ કન્યાગણના	-	૪૪	" સં. ૧૮૦૫ પ્રા.	
૪૬૧	"	"	-	૨૨	" સં. ૧૮૦૭ પ્રા.	
૪૬૨	"	"	-	૧૮	" સં. ૧૮૧૧	
૪૬૩	"	"	-	૧૯	" સં. ૧૯૧૪ માઘ કૃષ્ણ (8)	
૪૬૪	"	અસંપૂર્ણ પુસ્તક ૧	-	૪૦	" સં. ૧૭૮૨ આષાઢ શુદ્ધ ૨ મૌલિક	
૪૬૫	સિદ્ધાંત શિરોમણિ: (9)	" શ્રી મહેશ્વરોપાધ્યાય:	-	૨૦	" ૧૬૪૧ પ્રા. [નિરુદ્ધાદિ	
૪૬૬	" પાતાલિકારવર્ણ	" [આકરકૃત:	-	૩૦	" સં. ૧૭૫૨ વર્ષે શાકે (10)	
૪૬૭	" સમાધાન:	"	-	૧૮૭	" સં. ૧૯૩૨ લિ. હરવીરમ. પંચગા	
૪૬૮	"	"	-	૬૭	" સં. ૧૯૧૭ જ્યેષ્ઠ શુદ્ધ (11)	
૪૬૯	સૂત્રિકાખ્યા: શુદ્ધાતકે	"	-	૧૨	" સં. ૧૮૧૧ પ્રા. [વિદુલાકાન્ત	
૪૭૦	સૂર્ય પ્રદર્શન શાસ્ત્ર	સંપૂર્ણ	-	ઓઢીયું ÷ લિપિદેવ. મા. ગુર્જ સં. ૧૮૪૫ પ્રા. [૧૬૧૬ કુટ ટીક		
૪૭૧	સૂર્ય ચંદ્ર પ્રદર્શનશિકાર:	"	-	૧૪	સંસ્કૃત સં. ૧૮૪૧ પ્રા.	
૪૭૨	સૂર્ય ચંદ્ર વર્તમાનો પ્રકાર ૧ (15)	"	-	૫	દેવનાગરી સં. ૧૯૦૧ પ્રા.	
૪૭૩	સૂર્ય ચિહ્ન: સમાધાન:	" દે. મહાદેવ:	સમાધાન:	૫૧	" સં. ૧૯૧૫ આષોઢ વદ (13)	
૪૭૪	" મૂલ:	"	-	૨૩	" સં. ૧૯૧૫ વ્યાસ ગોપાલજી ગોંડલ	
૪૭૫	"	અસંપૂર્ણ	-	૧૮	" સં. ૧૮૧૪ કાગળ વદ ૨	
૪૭૬	સૂર્યાંશન સંવાદ:	"	-	૧૫	" સં. ૧૮૪૮	
૪૭૭	સૂર્યાંશનાં સંશ્રાનાં સત્તક X	સંપૂર્ણ [અગ્ર] કોટકા:	-	૭	" સં. ૧૯૩૬ શાકે ૧૮૦૨ વર્ષે +	
૪૭૮	સૂર્યાંશનાં પદ્ધતિ: (14)	" શુદ્ધાવને	-	૧૩	" સં. ૧૭૧૦ પ્રા. [નિ. વ્યાસ કાશીનાથ	
૪૭૯	સૂર્યાંશનાં ઉપદેશ કલ્પ	"	-	૬	" સં. ૧૮૧૮	
૪૮૦	સૂર્યાંશનાં કલ્પ	અસંપૂર્ણ	-	૧૨	" સં. ૧૯૦૧	

(1) શાકે ૧૭૬૭ પૌષ શુદ્ધ શ્રી મુખમગરે વ્યાસ શ્રી ૫ કીનામુત વૈલકોર્થે લિ. (2) શુદ્ધ ૩ મુગી. અમરકાંતગરી લિ. ગોંડલ મધ્યે શ્રી કુમોજરાજ્યે તપુજ શ્રી મુલ્લીરાજ્યે (3) શાકે ૧૭૧૧ પૌષ શુદ્ધ ૮ ગુરૂ. ગોંડલપુર મધ્યે લિ. વ્યાસ માવરજીદાસના વાહુરેવેન (4) શુદ્ધ ૮ મૌલે લ. વ્યાસ ઠકરજી લાલજીભાઈ મહાવજી પઠનાર્થે. રાજવેશ જીવરામ-કાલીદાસ-મહાવજી-ઠકરજી-લાલજી. (5) શુદ્ધ ૩ મૌલે લિ. ઠાકર પ્રાણજીવન તપુજદેવજી (6) કૃષ્ણ ૫ ગુરૂ લિ. પ્રજાપતીજીવાનંદ (7) શુદ્ધ ૧૪ શનિ વ્યાસ પરસોત્તમ થિલજી (8) કૃષ્ણ ૧૧ ચંદ્ર રાજકુર્ચ. મધ્યે શવલ જ્યેષ્ઠારામ રઘુનાથજી (9) શિરોમણિ: ઉત્તમાશ્વર: મૂલ ત્રિપ્રશાવિકારવર્ણ (10) શાકે ૧૯૧૮ જ્યેષ્ઠ વદ ૧ શનૌ વાગલવાસિના વ્યાસ ગોવર્ધનમુત કુલેરેણ નિશિતોદ્ધ ગ્રંથ: દ્વાસિમગમત (11) શુદ્ધ ૭ શનૌ સવાતિગલોહ ગ્રંથ: (12) પ્રકાર ૧, સૂર્યચંદ્ર પ્રદર્શનશિકાર ૨, સૂર્યચંદ્ર વર્તમાનો ૩, સૂર્યચંદ્ર પંચગા (13) વદ ૪ શનૌ લિ. વ્યાસ ગોપાલજી ગોંડલ (14) પદ્ધતિ: શુદ્ધાવને સૂર્યાંશનાં દ્વાદશવૈશ્વ કલાખ્યાય: ।

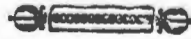
શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રન્થ ભંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : JYOTISH 15

વિષય : જ્યોતિષ : ૧૫

ક્રમાંક Serial No.	ગ્રન્થ નામ Name of the work Title	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અસંપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાણિ No. of Leaves	ભાષા-લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ: Scribe & Date
૪૮૧	સ્ત્રી પંચાંગ ફલ	સંપૂર્ણ	-	૮	દેવનાગરી સંસ્કૃત	સંવત ૧૫૪૦ પ્રા.
૪૮૨	સ્ત્રી પુરુષનામ કરણ કેષ્ટક યંત્ર	"	-	૧૩	"	સં. ૧૧૨૮
૪૮૩	સ્ત્રી ભાવાધ્યાય:	"	ગુજરાતી ટીકા	૧૪	સંસ્કૃત ગુજરાતી	સં. ૧૮૫૬ના આશ્વિનશુક(૧)
૪૮૪	સ્વપ્નશાસ્ત્ર સ્વાધ્યાય:	દેવગુરુ મુદ્રસ્પતિ પ્રગવૈવત-	-	૧૭	"	સં. ૧૧૩૬ પ્રા
૪૮૫	"	પ્રકીર્ણ સંગ્રહ	-	૬૦	પ્રાકૃત	સં. ૧૮૧૩ હસ્ત્યાદિ
૪૮૬	સ્વરજ્ઞાન	"	-	૭	સંસ્કૃત	સં. ૧૭૧૧
૪૮૭	દાયન રતન પૂર્વાર્ધ પત્ર ૮૫ (2)	સમાધ્ય દેવજી ÷ આધ્યક્ષિત	-	૧૬૪	દેવનાગરી સંસ્કૃત	સં. ૧૯૪૨ ના શાકે (૩)
૪૮૮	દિલ્હાલખાતક ભાવાધ્યાય:	પ્રતિકા [÷ બલમદરચિત -	-	૧૧	"	સં. ૧૮૪૭
૪૮૯	દ્વિનાંશો	"	-	૨	"	સં. ૧૮૩૫
૪૯૦	દ્વિનાંશો ૧, અષ્ટોક્તાય ૨, યોગદશા ૩	[* વિજોત્તરી ૪	-બોલીયુ ૪૦ ફૂટ લીધે	"	"	સં. ૧૧૦૫
૪૯૧	દોરાપ્રકાશ ભાવાધ્યાય: દોરા ૪	"	-	૧૮	"	સં. ૧૮૧૧ માચ કૃષ્ણ (5)
૪૯૨	દોરાપ્રકાશ: ગુજરાતી ટીકા	મહામહાદેવચિત: ગુર્જ. ટીકા	-	૩	સંસ્કૃત ગુજરાતી	સં. ૧૮૪૧ શક ૧૭૧૧ (6)
૪૯૩	"	"	-	૧૧	"	સં. ૧૯૦૭ આશ્વિન શુદ (7)
૪૯૪	"	"	-	૧૪	"	સં. ૧૯૨૧ શાકે (8)
૪૯૫	" મૂલ:	"	-	૯	સંસ્કૃત	સં. ૧૮૫૦ પ્રા.
૪૯૬	"	"	-	૭	દેવનાગરી	સં. ૧૮૫૭ના ચિત્ર શુદ (9)
૪૯૭	"	"	-	૭	"	સં. ૧૯૦૬ પરશોતમ શ્રાવણ (10)
૪૯૮	"	"	-	૫	"	સં. ૧૯૦૮ ના શાકે (11)
૪૯૯	"	"	-	૬	"	સં. ૧૯૧૫ ધાંગશિર શુદ (12)
૫૦૦	"	"	-	૭	"	સં. ૧૯૨૧ શાકે (13)
૫૦૧	" ગુજરાતી ટીકા	અસંપૂર્ણ	-	૧૪	"	સં. ૧૮૫૧
૫૦૨	દોરાપ્રકાશ મૂલ	"	-	૪	"	સં. ૧૮૫૩
૫૦૩	ધુતાદિશકુન મૂલ	સંપૂર્ણ	-	૪	"	સં. ૧૮૭૨
૫૦૪	જ્ઞાનમાસ્કર: દોરાપ્રકાશ: (14)	"	-	૨૪૮	"	સં. ૧૮૫૫ પ્રા. રતિ (15)
૫૦૫	દોરાપ્રકાશ મૂલ દોરાપ્રકાશ	"	-	૪	"	સં. ૧૮૧૪ માચ (16)



(1) શુક ૧૧ રુધે લિ. જોશી દેશરસુત લક્ષ્મીચર પઠનોય". (2) પત્ર ૮૫. ઉત્તરાર્ધ પત્ર ૭૧, દે. રામેશ્વર સુત: રામગુરુ: સિધ્ધ: ચલમદ: । રચનાકાલ: શાકે ૧૫૫૧ સંવત ૧૯૮૬ વર્ષે । (3) શાકે ૧૮૦૭ પ્રથમ કાગળ શુદ ૨ ચરે લિ. ૮૫ તમે પત્રમિતિ: । પુરુષોત્તમ મહાવીરે શ્રીમત્સારિ સુચાતિકે ॥ શ્રી રામચંદ્રલક્ષ્મણે કથા/શ્રવણે વિનિર્મિત: ॥ (4) દોરાપ્રકાશ: પરાયણ જ્ઞાનમાસ્કર (5) કૃષ્ણ ૧૦ રત્નો લિ. પંડયા કામેશ્વર મહાજી યોરાબી (6) ૧૭૧૫ દ્વિતીય વેશાંશ કૃષ્ણ ૧૧ ચોમે (7) શુદ ૭ રતિ લિ. રાવલ જોડા રમનાય ટંકારા (8) શાકે ૧૭૮૮ વે. શુદ ૪ લિ. મટ જીવરામેજી. હરજીવન તપા પોપટ પઠનાથ. (9) શુદ ૮ રતિ વ્યાસ શ્રી રત્નગીસુત દેવતગુણ જુગલ્લાયે કોશી મહુ (10) ભાવળમાટે ચલપત્રે ૨ શુદ લિ. મટ ધીરારિતસ્વામજી ગૌરીશંકરે (11) શાકે ૧૭૭૩ ના માતપદ શુદ ૭ ચોમે (12) શુદ ૧૫ ચરે લિ. માદે ગોવિંદનેન (13) શાકે ૧૭૮૭ આશ્વિન કૃષ્ણ ૧ ચોમે । અંત્રાવરે મહાચાન્દ્રમહર્ષતા અગાધિત્વ મહામાતેરોમેજી કોલાહલ તપ ઈ. મધુરાદિ જગન્નાથ સામિકેન (14) દોરાપ્રકાશ: કર્મવિપાક: ત્રિલોકનાથકથા (15) રતિજી જ્ઞાનમાસ્કરે થી સૌર ગણિત દોરાપ્રકાશે શ્રી રુદ્રાક્ષ સંવાતે આધિત્યાચિ પ્રકાશવે મીનલસોત્તમપ્રકાશ: । સંપૂર્ણ દ્વાદશ દોરા કર્મપ્રકાશ: (16) માચ શુદ ૧૫ શુકે । શ્રીમંત્રલ ગચ્છેગણી કાનગી લિપીકૃત શ્રી વરુનગર મધ્યે ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखितग्रन्थभंडार, गोंडल - सौराष्ट्र।

SHRI BHUVANESHWARI PITH, MSS. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: KAVYAM 16

विषय: काव्य १६।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
	काव्य ।					
१	अभ्युक्तय	संपूर्ण	-	११	देवनागरी संस्कृत	संवत् १९०७ कार्तिक शुद्ध १४शुक्ल
२	अमरुदानक	"	-	११	"	सं. १६३८ तपोमासे शुक्ल १३भौमे
३	"	"	-	१७	"	सं. १६२१ वैशाख वद १३ शुक्ल
४	अरुतुसहार	अपूर्ण कालिदास:-	२-४	"	"	सं. १५८१ प्रा.
५	"	संपूर्ण [अभिन्दकवि:-	१७	"	"	सं. १६२१ अश्विने (१)
६	काव्यमयी कथासार.८ सर्गाः	कर्ता भट्ट जयन्तसुत:-	३५	"	"	सं. १४३५ प्रायः
७	काव्यमयी पूर्वार्ध	"	-	२४	"	सं. १६५५ प्रायः
	प्रमोदविजयटीका कर्ता टीकाकार बालकृष्ण भट्टः					
८	विजयतार्जुनीयम्	भारवि मूलमात्र	२२	"	"	सं. १६८६ पौष वद ५ आदित्यवार
९	" केवला टीका	अपूर्ण	घण्टापथ	८२	"	सं. १५०० प्रायः
१०	"	संपूर्ण १८ सर्गाणि मल्लिनाथी टीका	२०	"	"	सं. १७७३ शा. १६३९ आ. क्षयः
११	"	" १७ " -	१९८	"	"	सं. १७७५ प्रा. [पक्ष्याष्टम्या अर्कशाखे
१२	" मूल	अपूर्ण [आर्थमात्रा-	८८	"	"	सं. १८०५ प्रा.
१३	कुमारसंभव केवला टीका ७ सर्गाः संपूर्ण	अत्युत्तम अक्षर-संज्ञेवनी	४४	"	"	सं. १७०३ वधे तपस्यासे (२)
१४	" मूल ७ सर्गाः	" [टीका मल्लिनाथी	६१	"	"	सं. १७८० प्रा.
१५	"	" -	५९	"	"	सं. १७७३ वधे आषाढ मासे (३)
१६	" मूल	अपूर्ण	-	७४	"	सं. १७७७ माघ शु. ८ भौमे (४)
१७	सुदप्रशक्ति काव्य १४३ श्लो. संपूर्ण	-	१८	"	"	सं. १६७७ प्रायः
१८	गंगास्तव काव्य	अपूर्ण सटीक	१८	"	"	सं. १८०० प्रा.
१९	गीतगोविन्द ८ स्तोत्र (५)	संपूर्ण	-	१२५	"	सं. १८११ प्रा.
२०	"	" -	३५	"	"	सं. १७४९ माघशर शु. ७ रवि
२१	" केवला टीका	" टीका	१७	"	"	सं. १६३५ प्रा. [महामूलनी सुदामापुरे
२२	" " सटीक	" "	६३	"	"	सं. १९८०
२३	" " मूल	" -	४७	"	"	सं. १७३१ प्रा.
२४	" " मूल	" -	२९	"	"	सं. १८०० प्रा.
२५	" " मूल	अपूर्ण रसवीपिनी व्याख्या टीकाकार + ७३		"	"	सं. १७९८ प्रा.
२६	गुणमन्दारमञ्जरी आख्यायिका संपूर्ण ३ उच्छवासाः गण (४)-३५			"	"	सं. १६०५ प्रा. नागर (७)
२७	"	अपूर्ण [तरलाकर भट्टः	१९	"	"	सं. १६९० प्रा.
२८	गोवर्धनसप्तशती व्यंग्यार्थ=	" अनन्तभट्ट कृता -	४-४२	"	"	सं. १७०५ प्रा.
२९	" व्याख्या [प्रवीण व्याख्या	" अनन्त पंडितकृता -	७७-९०	"	"	सं. १६१७ प्रा.
३०	गो. टी.	" -	९	"	"	सं. १६३८ प्रा.
३१	घटखर्पर	संपूर्ण कालिदासकृत -	३	"	"	सं. १८२१ भाद्रपद शुद्ध पुने
३२	"	" सटीक -	३	"	"	सं. १७०५ प्रा.
३३	चित्रवक्त्र काव्यम्	" -	१	"	"	सं. १८६५ प्रा.
३४	चिमनी चरित्र	" नीलकण्ठ -	११	"	"	सं. १७२९ सा. व. ७ भौमे खे. १-७
३५	" श्लोक ७४	अपूर्ण [१२० उत्तम श्लोकाः -	३	"	"	सं. १७३९ प्रा.
३६	जौरपाञ्चशिका	संपूर्ण जानिकविः वसुधतिल शास्त्रे	७	"	"	सं. १५३९ प्रा.

(१) अग्नि कृष्णे तिथौ ६ दिने योगिनीपुरे लि. मुनि पञ्चमासदश (२) तपस्यासे कृष्णपक्षे परशुपति तिथौ कविशाखरे (३) मासे शु. १५ शनि अर्णदुर्ग निवासि भट्ट विश्वनाथभट्ट (४) भौमे नानाभाईसुत देवशंकरे (५) स्तोत्राणि १ प्रा. ना. २ गोवर्धन श्लो. ३ पंचवक्त्रपूजा। ४ श्लो स्तोत्र। ५ माघमंत्र। ६ नारायण चमन। गणपति स्तोत्र। ७ रामदास स्तोत्र। (६) गय काव्य कादंबरी शैली ६ बालकृष्णभट्ट रंगनाथ विरचिता (७) नामसाधन-दुर्गाष्टक पुष्पे वधे ...। रंगनाथव्याघादिमां ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्त लिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : KAVYAM 16

विषय : काव्य १६।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
३७	चौरपंचाशिका	संपूर्ण जानिकवि:	-	४	देवनागरी संस्कृत	संवत् १९६७ प्रा.
३८	जयरामगुणवर्णम्	"	-	१	"	सं. १८८५ प्रा.
३९	दशकुमारचरित कथा ५०० श्लो.	" गोपीनाथ द्विजकृता	-	२६	"	सं. १९५१ प्रा.
४०	दशावतार काव्य	अपूर्ण	-	८	"	सं. १३४२ प्रा.
४१	" श्लोक ४००	संपूर्ण	-	१९	"	सं. १५२७ प्रा.
४२	दुषंड काव्य	"	-	७	"	सं. १९१३ प्रा.
४३	द्रौपदी वलाहरण	" पंडित गोवर्धननरुत	-	६	"	सं. १८०५ प्रा.
४४	"	"	-	१-७	"	सं. १८४९ प्रा.
४५	नलोदय काव्य प्रथमः सर्गः	" महाकवि कालिदासकृत श्री (1)	१६	"	"	सं. १७८० प्रा.
४६	" २ उल्लासाः	" मूल	१५	"	"	सं. १८९९ प्रा.
४७	नलोदय टीका उल्लासाः ४	" हरिहर (2)	२६	"	"	सं. १९६३ कालगुनदि (3)
४८	नवरत्न मालिका	अपूर्ण सटीक	२	"	"	सं. १७३५ प्रा.
४९	नेपथ्य काव्य १५ सर्गः प्रकाशकस्य	संपूर्ण हर्षकवि रचित वेदक (4)	४६	"	"	सं. १७०० प्रा.
५०	" २ सर्ग [टीकायुत]	" श्री हर्षकवि रचित	-	१६	"	सं. १८०० प्रायः
५१	नेपथ्यचरित	" प्राचीन जर्ण	-	८२	"	सं. ११०८ प्रायः
५२	पंचतंत्र-पंचोपाख्यान	" श्री किणुशर्मा	-	१४०	"	सं. १८१४ शाके (5)
५३	पंचोपाख्यात्र	"	गुज. टीका	१६५	"	सं. १८५१ प्रा.
५४	" मूल	"	-	५७	"	सं. १८५१ शाके (6)
५५	" मूल तंत्रद्वय	"	-	६४	"	सं. १९३१ चे १ गु. ७ श्लोके
५६	पंचतंत्र	संपूर्ण	गुज. टीका	४०	"	सं. १९५० प्रा [भुजनगरमध्ये
५७	"	अपूर्ण राजनीतिबन्ध	-	३५	"	राजनीति शास्त्रनी पोखीमां छे
५८	पद्य रचना द्वादशम्यापाराः	" लक्ष्मणभट्टः आंकालकर	-	५२	"	सं. १७९० प्रा. पुण्यस्तंभकर (7)
५९	प्रचारित प्रकाशिका	" वालकृष्ण विरचिता	-	२६	"	सं. १७०१ शाके (8)
६०	पत्रलेखन पद्धतिः	अपूर्ण आसमित्रकवि गणकादिभु-	१-१९	"	"	सं. १९०० प्रा.
६१	वित्त्वमंगल काव्य	"	-	१	"	सं. १९१० प्रा.
६२	विद्वहण पंचाशिका	" श्लोक १८५ द्विती पद्य	-	५	"	सं. १९१७ प्रा.
६३	"	संपूर्ण [तथा संस्कृत	-	४	"	सं. १९११ प्रा.
६४	मर्तुहरिश्चतक मूल	" उत्तमाक्षराः	३४	"	"	सं. १८५९ प्रा.
६५	" नीति वैराग्य शतक	" मूलसह गुज. टीका	३३	"	"	सं. १८३७ वैशाख व. ११५५
६६	" शृंगारशतक	" मूलसह प्राचीन+	२७	"	"	सं. १८२१ प्रा.
६७	" शृंगारशतक	" मूलमात्र [गुज. टीका	१०	"	"	सं. १९८३ प्रा.
६८	"	" शृंगारवैराग्य नलिX-	२६	"	"	सं. १८१४ [व्यासबाबुदेवेन गो.
६९	"	" [X ३ शतक	-	१८	"	सं. १८९३ वैशाख व. ५ उत्तमक्षर
७०	"	"	-	१४	"	सं. १७९१ प्रा.
७१	"	अपूर्ण संस्कृत टीका	९	"	"	सं. १८३९ प्रा. उत्तमाक्षराः
७२	"	अपूर्ण	-	१६	"	सं. १७१५ वर्षे वै. वद ५=
७३	" भाषिणी विलासः	" जयबाबु कविराजकृतः	-	२३	"	सं. १८३५ प्रायः [दिने लि. पठने

(1) श्री नृसिंहाश्रम विरचितया टीकया सहित (2) हरिहर भट्ट विरचिता भाव प्रबोधिनी टीका (3) इति अमावस्यां भौमे भाः गोपालधनुना चतुर्थेन अलेखि (4) वेदकरोपनाम नरसिंह पंडितात्मज नारायणकृता नेपथ्यीय प्रकाश टीका (5) शाके १९७९ द्वितीय आश्विन वदि १५ गुरौ (6) शाके १७१७-द्वितीय भाद्रपद अमावास्या चंद्रे। अनेह गोडकपुत्र मध्ये लिखित व्यास माधवजीदात्मजेन अस्मिन्नगरे चिरंजीव शांगोजी विजयराज्य स एव दाजीमाई राज्य प्रवर्तते (7) पुण्यस्तंभकर गणनेन उदयपुरे लिखित (8) शाके १७९७ वैशाख कृष्ण ३ भौमे। व्यास वाकर घोषा जामनगर।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: KAVYAM 16

विषय: काव्य-१६।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work Title	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
७३	भाभिनी विलासः प्रथम विलासः संपूर्ण	कविराज जगन्नाथः -		५	देवनागरी संस्कृत सन्त १९११ तपस्य शुद्ध भौमे	
७५	" द्वितीया विलासः	" "	-	७	" सं. १९३१ प्रायः	
७६	" तिलासः	" "	-	१५	" सं. १९९५ प्रा.	
७७	मेढमेढःपणि श्लोकाः	" "	-	३	" सं. १९२४ चैत्र कृष्ण (१)	
७८	सोत्र प्रबंधः प्रथम १४८५ मूल	" बलाल पंडित विरचितः-		४९	" १९९९मा आषाढ (२)	
७९	मण्डन माला	" "	-	४	" सं. १८४० प्रा. [मंदवासरे	
८०	माघ सप्तः (शिष्टपालवधः)	" सर्ग २तः५ मूत्रसह सर्वः १५७			" शाके १७७८ अश्विन शुद्ध ५	
८१	" सर्ग २० मूल	" [कथा टीका ५५			" सं. १८९७मा वर्षे वैशा. शुद्ध(३)	
८२	" अति शचीन	" १६ सर्गाः उत्तमाक्षराः -		६०	" सं. १९५१ प्रायः	
८३	" (.)	" सर्ग १तः४ -		१०	" सं. १८३७ प्रा.	
८४	" (.)	" केवला टीका मात्रा टीका ३०			" सं. १९१२ पार्श्वमात्रा	
८५	भाषावतल (कथानक)	" कवीश्वरेण -		९	" सं. १९८७ आश्वपद शुद्ध(४)	
८६	" "	" "	-	१०	" सं. १८९० चैत्र वद ८ शुद्ध	
८७	" कथा मयःशक्तिमिका	" विष्णु भावसेन विरचितः-		१८	" सं. १८९८ माघ शुद्ध(५)	
८८	सुदृगलार्ग (१०८ आर्गः)	" सुदृगल भद्राचार्येण -		८	" सं. १९०३ मार्गशिर भाद्रपदसरे	
८९	मेघदूत सटीक उत्तमाक्षराः	" श्लोकाः १२१ संस्कृत टीका २५			" सं. १७९४ वर्षे सप्त (६)	
९०	" केवला टीका	" " १२१ संजीवनी मल्लिनाथी २८			" सं. १९१७ प्रा. पूर्व-उत्तर मेघोत्ति	
९१	" "	" " १२३ मेघदूतस्य भाष्य ३२			" सं. १९०२ उषे शुद्ध १० पू. उ. नास्ति	
९२	" मूलसह टीका	" " १२५ अक्षरी टीका १५			" सं. १९९५ मा. वद १ पू. उ. नास्ति	
९३	" केवला टीका	" " १२३ मल्लिनाथी ३४			" सं. १७०४ वर्षे अश्विन वद २ सोमे	
९४	" मूलमात्र	" " १२६ -		१९	" सं. १७१३-स्य मासे (७)	
९५	" "	" " १२४ -		१९	" सं. १८३३ प्रा पू. उ. नास्ति	
९६	" "	" " १२४ -		१३	" सं. १८८० मार्गपद शुद्ध १ मृग	
९७	" कात्यायनी टीका आचार्य श्री चण्डीय कृता ।	" "	-	६	" सं. १९३५ प्रा.	
९८	युवतीविलास उत्तम काव्यः संपूर्ण श्लोक ३तः१५	" "	-	९	" सं. १९१४ प्रा.	
९९	रघुवंशः सर्ग १९ मूल	" महाकवि कालिदासः -		१८२	" सं. १७३५ प्रा. के. भद्र हरजीवन	
१००	" सर्ग १० मूल उत्तमाक्षरः	" "	-	७३	" सं. १९८९ वर्षे चैत्र शुद्ध ९ रवौ	
१०१	" १९ सर्गः	" "	-	१७२	" सं. १७५९ भाद्रपद कृष्ण ११	
१०२	" सर्ग २-६	अपूर्ण मूलमात्र १७			" सं. १३०१ प्रा.	
१०३	" सर्ग ११-१२	" - १०१-१२४			" सं. १८४२ प्रा.	
१०४	" सर्ग २-३-७-९	" सटीकः - १९तः११९			" सं. १७१५ प्रा.	
१०५	रामकृष्ण काव्य	संपूर्ण सटीक पंडित सूर्येण स्वकृत टीका १०			" सं. १८२५ त्रैमासिक-शुद्ध(८)	
१०६	राक्षस काव्य	अपूर्ण - ७			" सं. १९७५ माघ वद ७ रवौ	
१०७	वाणी भूषण	" दामोदरः - ३			" सं. १८४५ प्रा.	
१०८	वासना वासुदेवस्य श्लोकाः संपूर्ण	" - २			" सं. १९७५ प्रा.	
१०९	विदग्धमुखमंडन साहित्य ग्रन्थः	" धर्मदासः - ४४			" सं. १९७६ मार्ग शुद्ध नागतिथि	
११०	" परिच्छेदाः ४	" - २७			" सं. १८९९ कार्तिक कृष्ण ४ शुद्ध	
१११	" व्याख्या	" भवन (९) २७			" सं. १८९३ कार्तिक शुद्ध (१०)	
११२	विदग्ध भूषण	" बालकृष्ण भट्टक मन्त्रु(११) ११२			" सं. १८३९ शाके (१२)	

(१) कृष्ण ८ मूल शोमलजी वनमाली (२) आषाढ शुद्ध १ शुद्ध हरिहरपुरे (३) शुद्ध १५ पुष विक्रमादित्य माघकी मध्ये
नवपुरे (४) शुद्ध १३ मृग शुद्धपुर वास्तव्य नीलकण्ठेन (५) शुद्ध १४ भौम नौमपुरे (६) लघुत्तम चैत्र मेघोत्ति
(७) मासे मितवर्गदशो कमवाटयो पू उ. नास्ति (८) शुद्ध ७ मंदवासरे मंदमासे कंटाभिधानपुरे इक्ष्मराबासव कृष्ण करेण
(९) ग्रन्थ भूषणश्या टीका-कर्ता नरहरि कविः (१०) शुद्ध ११ शुद्ध शशी मासे (११) भन्तुनाथी टीका । कर्ता मन्त्रुवर्ग
(१२) शाके १९९७ उषे वद १३ शनि त्रवारो प्राणजोवनस्थ ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडाल - सांराष्ट्र

SHRI BHUVANESHWARI PITH, MSS. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

KAVYAM 16 NATAKAM CHAMFU 17 काव्यं, १६ नाटकं, चम्पु १७।

क्रमांक Serial No	ग्रन्थ नाम Name of the Work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
११३	विद्वन्मोक्षतरंगिणी तरंग ८	संपूर्ण भट्टनाथ चिरंजीवकृत-	३५	देवनागरी संस्कृत संवत् १८५२ दि भाद्र व. ७	रविवासे	
११४	वेताल पंचविशति:	, शिवदास गयपथकाव्य -	६३	, सं. १७९९ आषाढ कृष्ण (१)		
११५	वेताल पचीशी	अपूर्ण	-	३०	, सं. १८१५ प्रा.	
११६	शुकरभासवादः	संपूर्ण	-	३	, सं. १८९७ प्रा.	
११७	शुक्रसप्तति: कथा ६७ सन्ति	अपूर्ण	-	६८	, सं. १८८३ प्रा.	
११८	शृंगारलतिका काव्यं	संपूर्ण	-	११	, सं. १७०९ प्रा.	
११९	शृंगारविवाह शतक	,	-	१३	, सं. १५३४ प्रा.	
१२०	सप्तशतक सप्तशतक भाषा काव्यस्य अपूर्ण	संस्कृत टीका	-	५५	, सं. १८३८ प्रा.	
१२१	संस्कृत मंजरी [संस्कृत टीका संपूर्ण अनन्त भट्टेन	-	-	५	, सं. १८५२ प्रायः	
१२२	, बालबोधाय	, ,	-	६	, सं. १८८१ वै. शुद्ध ६ रवि	
१२३	,	, ,	-	६	, सं. १९११ मार्गशिर विदि (२)	
१२४	संस्कृत मंजरी काव्य मंजरी	, अहिच्छत्र ज्ञातीय (३)	-	२०	, रचनाकाल सं. १९५० वर्षे (४)	
१२५	सानन्द वृन्दावन महाकाव्य	अपूर्ण	-	३७	, सं. १९३२ प्रा.	
१२६	सारसग्रह काव्यं (नीतिशास्त्र)	संपूर्ण पं. शंभुदास:	-	५५	, सं. १५३५ प्रा.	
१२७	सिंहासन वनोत्थ	अपूर्ण [लक्ष्मणसोमयाजि	-	२६	, सं. १९०४	
१२८	सीता रामविहार महाकाव्यः	संपूर्ण शंकर सोमयाजिसूनु-	-	४०	, सं. १९१२ प्रायः	
१२९	सुभाषित मुक्तामणि: [१२ सर्गाः	, हारावलि:	-	६५	, सं. १७९८ प्रा.	
१३०	,	अपूर्ण	-	१३	, सं. १९३५ प्रा.	
१३१	हरिभक्तिलता काव्य	,	-	५	, सं. १८५९ प्रा.	
१३२	हरिविलास काव्यं (५)	संपूर्ण केनिबराजकृत (६)	-	२३	, सं. १७०३ वर्षे माघ कृष्ण ३ शनी	
१३३	, सर्ग ३ तः ५	अपूर्ण	-	२०	, सं. १७१७ प्रतिपदि शुच मुकुन्ददिने	
१३४	ज्ञानक्रिया संधावः	संपूर्ण	-	३	, सं. १८०९ वर्षे माघ वद (७)	

नाटकं। चम्पु। १७॥

१	अगश्विष्टिः नाटकं	अपूर्ण	-	१	देवनागरी संस्कृत संवत् १८४२	
२	अभिज्ञान साकुंतल उल्लासस	संपूर्ण महाकवि कालिदासः	-	२३	, सं. १९९३ पौष मासे (८)	
३	,	,	-	२९	, सं. १७०० प्रायः	
४	,	, तानोराव	मात्र टीका	२००	, सं. १९९० तानोराव	
५	, कुमारगिरीय टीका	, ,	-	२०१	, सं. १९९० तानोराव	
६	,	,	-	१८८	, सं. १९९० तानोराव	
७	, छाया	,	-	५२	, सं. १९९०	
८	गंगावतरण चम्पु	,	-	७३	, सं. १८१० समे वैशाख शुद्ध १३	
९	दुताङ्ग नाटकं	सुमन्तकवि रचितं	-	१०	, सं. १९७३ फागुन शुद्ध (९)	
१०	,	,	-	७	, सं. १७९७ वै. ३ सोमके. शिवराज	
११	धर्मविजय नाटकं प्रथम अंक	अपूर्ण भूदेव शुक्ल रचितं	-	८	, सं. १८०० प्रा.	
१२	नृसिंह चम्पु	संपूर्ण भट्ट केशवः	-	१८	, सं. १८२८ शाके (१०)	

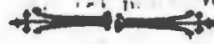
(१) कृष्ण ५ शनि। व्यास पीताम्बर (२) विदि अमास भौम नवीनपुरे गोपालजीकेन (३) ज्ञातीय महीबराभय जीवराम साखिता राजकोट (४) वर्षे ५ लिपि सं. १९५५ (५) काव्य रचनाकालः शाके १५०५ वर्षे (६) केनिबराजकृत। शाके मिते वाणनभः शरेनुभिः सुमानु संवत्सरकेलरायणे। अमोघमासस्य च शुक्लपक्षके पञ्चाङ्गत काव्यसिद्धं जगन्पुरे ३१॥ (७) वद ११ गुरौ साचोर ग्रामे (८) मासे अमावास्या शुद्धवासरे। इति महाकवि कालिदास विरचितमभिज्ञान साकुंतलनाम नाटकं समाप्तं। विक्रम भूपाल संवत्सर १९९३ राखनामा संवत्सरे पोषमासेऽसितपक्षे अमावास्यायां गुरौवासरे नारायणी नद्ये अश्वप्रामनिवासो दामोदर भट्ट अनन्त भट्टशर्मणा लिखितं प्रतिलिपि संवत् १७११ आश्विन शुद्ध ११ कृष्णमासस्य प्रहाराश्व मा (९) शुद्ध ४ दिने त्रवाची ढालाख्येन (१०) शाके १९९३ वसंत ऋतुस्य पंचम्ये मासे शुक्लपक्षे ४ रवौ इति श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमल उभापति दलपति राजाधोतित भट्ट केशव विरचिते श्री नृसिंहचम्पु-काव्ये पथमः स्तवः।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडाल-सौराष्ट्र.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mas. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

NATAKAM, CHAMFU, 17 ALANKAR 18 नाटक-चम्पु, १७ अलंकार १८

क्रमांक Serial NO	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टोका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि Language & Script	लेखक मिति 5
१३	नृसिंह चम्पु	अपूर्ण	-	६	देवनागरी संस्कृत संवत् १५८२ प्रा.	
१४	"	"	-	४	" स. १९१५ प्रा.	
१५	प्रबोध चन्द्रोदय नाटक	संपूर्ण कृष्णयतिः	-	५२	" स. १९७० अश्विनी वरी ५	
१६	"	अपूर्ण कृष्णमित्र	-	४१	" स. १७२२ प्रा.	
१७	"	"	-	५३	" " "	
१८	बालरामायण नाटक	संपूर्ण महाकविः राजेश्वर	-	१६०	" स. १६७८ प्रा. बालरामायण (१)	
१९	माधवानन्द-नाटक	" विधाधर भट्ट शिष्यः	-	९	" स. १९२९ प्रा. भावण वद १२ शुके	
२०	मालतीमाधव नाटक	" मधुभूति रचित	-	७३	" स. १७९२ प्रा.	
२१	नुरारि नाटक-टोका	अपूर्ण [महानन्दकवि रचित	-	७	" स. १७०० प्रा.	
२२	मृच्छकटिक	संपूर्ण शूद्रकविरचित	-	७५	" स. १७१५ भाद्रपद शुद्ध ६ (२)	
२३	यज्ञफल	" महाकवि भासकृत	-	१६	" स. १७२७ आश्विन (३)	
२४	यशस्तिलक चम्पु	अपूर्ण सोमदेवाचार्य कृत	-	३	" स. १८०० प्रा.	
२५	लटक मेलन	संपूर्ण गणेशः जयपुर निवासी	-	२३	" स. १८८६ प्रा.	
२६	हनुमन्नाटक	" कवि हनुमान	-	५५	" स. १८४१ शके १७०२ (४)	
२७	"	"	-	२३ ९	" स. १७०१ प्रा.	



अलंकारः । १८

१	अलंकारानुक्रमणी	संपूर्णम्	-	८	देवनागरी संस्कृत संवत् १८१२ प्राकः	
२	काव्यकवलता (कविकल्पलेश्वर नाटक) मृन्मात्रा	अपूर्ण विनयनुरि शिष्य+मूलमात्र ४० [+ अमरचंद्रः ४ स्तवकः	-	४०	" स. १८९१ अषाढे लिखित X [X देशव दीक्षिमेन	
३	काव्यकवलता	संपूर्ण सटीक	-	१११	" स. १८३१ प्राक	
४	काव्य प्रदीपः १० उक्ताः	" महामहोपाध्याय (५)	-	१३८	" स. १९८९ प्राकः दीपिका (६)	
५	काव्यमञ्जरी	" बाळी महोदयपुत्र (७) - ओळीयु	-		" स. १९४० प्राकः	
६	कुवलयानन्दः अलंकारः	" चन्द्रालोक (८)	-	१३७	" स. १७७९ प्रा.	
७	"	" रामजीपुत्र (६) अलंकार दीपिका ४३	-		" स. १८७७ कार्तिक वद ११ सुगु	
८	"	" अपूर्ण	-	८	" स. १८०९ प्रा.	
९	"	"	-	२०	" स. १८३५ प्रा.	
१०	"	"	-	२२ तः ४६	" स. १९४९ प्रा. इतिथी (१०)	
११	चन्द्रालोकः	संपूर्णः अप्पयदीक्षितकृतः	-	१२	" स. १८४९ मार्ग. शुद्ध १० सुगु	
१२	दशरूपक	अपूर्ण	-	३०	" स. १७०१ शके १५६९ (११)	
१३	पिंगलसूत्र	संपूर्णम् पिंगल नामकविः	-	८	" स. १९०७ भाद्रपद शुद्ध १२ चमे	
१४	रसतरंगिणी	" कवि भासकृतः	-	३५	" स. १९८१ प्रा.	
१५	"	अपूर्णम्	-	७६	" स. १९११ प्रा.	

(१) बालरामायणस्यास्य नाटकस्य प्रथमतः ॥ जीर्णोद्धारकृतः काव्या सुदरेण कृतमना ॥ (२) शुद्ध ६ पञ्चमांशः
टेनालेखि (३) अश्विन कृष्णपक्षे द्वितीयांशः भौमे लिखित स्वाग्री शुद्धानन्दतोषः (४) १७०३ भाद्रपद वद १२ रवि गोपक
मध्ये व्यास बासुदेन (५) महामहोपाध्याय गोविन्दः । श्री हर्षकविः अस्व ज्येष्ठमासे स्व तिम श्लोकात्मकीपते (६) दीपिकाद्वितय
कन्ये प्रदीपद्वितीयं सुतौ ॥ रसमयी समयगुरपाण गोविन्दः शर्म विन्युति (७) महोदयपुत्र जीवन्मया कालि विरचिता रायकोट
निवासः (८) चन्द्रालोकप्रत्योपरि अलंकार चन्द्रालोकः कुवलयानन्द व्याख्या राममहात्म्यम् बयनाक विरचिता (९) रामजीपुत्र
आशाधर भट्टकृता कानिका टोका (१०) इतिथीमय दैत जेय चार्य श्री भारद्वाज कुरुमिषि कौस्तुभश्री रंभराजवरद सुनारायणदीक्षि-
तकृति कुवलयानन्दः समाप्तः (११) १५६९ ज्येष्ठ शुद्ध १६ रवि जि. हरजीकेले ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखितग्रन्थभंडार, गाँडल - सौराष्ट्र।

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: ALANKAR 18.

विषय: अलंकार: १८

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author	टीका	पत्राणि	भाषा-लिपि:	लेखन-मिति:
Serial No.	Name of the work (Title)	Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Date
१६	रत्नमंजरी मूल	संपूर्ण मानुदत्त मिश्र: व्यंग्यार्थ (1)	८१	देवनागरी	सदत १०५ प्रा. [=मोर्णदुर्गमपद्ये	
१७	" मूल	" मानुदत्त मिश्र:	-	१७	संस्कृत	सं १९७५ शाके १५४० (2)
१८	" "	" "	-	१२	"	सं. १९८३ वशाख वद ११ भीमे=
१९	" "	" "	-	१६	"	श्रवितदृष्टे शाके माघपद (3)
२०	" "	" "	-	२०	"	सं. १८४१ चैत्र शुद्ध ११ सोम
२१	" "	" "	-	१०	"	सं. १९११ प्रायः
२२	" "	" "	-	१२	"	सं १९२५ प्रायः
२३	" "	" "	घटीक	१२	"	सं १७०९ प्रा.
२४	" सटीका उत्तमाक्षरः "	"	पमिल टीका ७०	"	"	सं वृषपुरवासोशेष चिंतामणि (4)
२५	रत्निकानंदः	" आशाधर भट्टः	-	१३	"	सं. १९२१ प्रायः
२६	वाग्मटालंकार उत्तमोत्तमाक्षरः	" परिच्छेद जैन पंडितः-	५	"	"	स १७६३ वैश वद ९ बुध*
२७	"	" जैन पंडित रचिता जिनयर्थन:-	१७	"	"	सं. १९८० प्रा [मिल. नू. ५ भीम
२८	"	अपूर्ण [सुरिकृता टीका	१६	"	"	सं. १८११ प्रा.
२९	वाणी भूषण	" प्रथम उक्तासः दामोदर विरचितः	११	"	"	सं. १७३१ प्रा.
३०	वृत्तप्रदीपः	" कविजनादं विरचितः-	२	"	"	सं. १९०६ मार्ग वद १-चंद्र
३१	वृत्तरत्नाकरः	संपूर्णः अध्याय ६ (5) पं. नारायणः	४८	"	"	रचनाकालः सं. १९०२ ले (9)
३२	"	" केदारभट्टः [कृतः टी. वायुतः	१४	"	"	सं. १९२५ ज्येष्ठ कृष्ण १ शनि
३३	" अ. ६	" केदारभट्ट रचितः विश्वनाथ (7)	२५	"	"	सं. १९०९ मघ शु. १३ सुगौ धोनपे
३४	"	" केदारभट्ट विरचितः प्रभा (8)	२५	"	"	सं. १९१३ आषाढ कृष्ण ६ बुधे
३५	" तथा पिंगलमत	अपूर्ण भट्टकेदारविः	-	३३	"	सं. १८०० प्रा.
३६	"	संपूर्ण	प्रभाटीका १७	"	"	सं १९१० प्रा
३७	" उत्तमाक्षरः	अपूर्ण [माखनभट्टः-इता-	१२	"	"	सं. १८३३ प्रा.
३८	वृत्तिवार्तिक	संपूर्ण लक्षणावृत्ति निर्णयानाम-	२१	"	"	सं. १८०४ प्रा.
३९	"	" [द्वितीयः परिच्छेदः-	१७	"	"	सं. १७११ प्रा.
४०	"	"	-	१९	"	सं. १८०४ प्रा.
४१	शृंगारसिलकः	अपूर्ण तृतीय परिच्छेदस्य	-	२६	"	सं. १९७४ प्रा. [मतांजोरात
४२	शृंगारमंजरी नायिकाभेदः संपूर्ण	[१०९ श्लोक पर्वतः-	१३६	"	"	सं. १९११ मार्ग कृष्ण ५ शनि*
४३	श्रुतबोधः	" कालिदासकृतः	-	८	"	सं. १९०२ भाद्रपद शु. ८ बुध
४४	"	"	-	४	"	सं. १७८१ आनंद (9)
४५	"	"	-	५	"	सं. १८३१
४६	"	"	सुबोधिनो(10) १०	"	"	सं. १८५१ [मिलित
४७	"	"	-	७	"	सं. १८४१ मघनात्मज प्रभुजीना+
४८	"	"	-	४	"	सं. १८७६ वैश वद १४ सुग
४९	"	"	-	४	"	सं १७३० प्रा
५०	"	"	घटीकः	१०	"	सं १९१४ मार्ग शुद्ध ६ सोम+
५१	"	"	-	३	"	सं. १९०३ प्रा [मिलित भट्ट गोपाळजी
५२	साहित्य दर्पण	अपूर्ण दशम परिच्छेदः	-	३४	"	सं. १८०० प्रा.

(1) व्यंग्यार्थ कौमुदी टीका पं. अनंतकृता (2) १५४० मार्ग. कृष्ण हरिदिने (3) भाद्रपद शुद्ध ९ वासुदेव लिखितं ब्रह्मोदर द्विजेन नेपालस्थाने कोष्मिपुर (4) चिंतामणि कृता टीका संवत् १९८० वर्षे पोष वदि १० सोम दिने इतिभी सङ्कल पंडित घटाप्रणीत श्रीमच्छेष वृद्धि तमयेन भी वृद्धि चरणोपासिना मन्मथपुर निवासिना भी येष चिंतामणिना निर्मिता रत्नमंजरी परिमला (5) अध्याय ६ भट्टकेदार विरचितः (6) ले सं. १९३५ प्रा. इतिभीमद्वन्द्वपुर रत्नभीमद्व भट्टकेदारसरि सज्जना नारायण भट्टविचिताया वृत्तरत्नाकर व्याख्यानः पद्यः। (7) विश्वनाथभट्ट विरचिता दीपिका टीका (8) प्रभा टीकावृत्त धीनामपुत्र विश्वनाथ रचिता प्रभाटीका (9) आनंद संस्कारे ज्येष्ठ शुद्ध ४ सुगु नारायणेनालेखि (10) सुबोधिनी टीकावृत्तः मनेाहर कर्ता कृतटीका।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : KOSHA 19

विषय : कोशः १९।

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
Serial No	Name of the Work (Title)					

कोशः १९

१	अनेकार्थ भ्रमिमंजरी ३ पाः	संपूर्ण	-	५	देवनागरी	संवत् १७०१ प्रा.
२	अनेकार्थ मंजरी पदाधिकारः	"	-	१३	संस्कृत	सं. १९१३
३	संग्रहः ४ कांडः	"	-	२५	"	सं. १३६९ प्रा.
४	अभिधान चिंतामणि नाममाला	" [मूलसह भारवाडी	-	६१	"	सं. १९१७ प्रा.
५	" मूल	" प्रथमकांडः	-	५	"	सं. १८१३
६	" "	" काण्डद्वय	-	१२	"	सं. १८०४ना भाद्रवा वद (१)
७	" "	" सामान्यः षष्ठः कांडः समाप्तः	-	१३	"	सं. १८४५ना अश्विन (२)
८	अभिधान रत्नमाला	अपूर्ण हलायुधः	-	७५	"	सं. १७३१ प्रा.
९	अमरकोशः	संपूर्ण	-	७५	"	सं. १२३९ प्रा.
१०	" ३ कांडाः	"	नद्वैतः (३)	३०७	"	सं. १७८७ प्रा.
११	" मूलशब्दो गुजरातः तत्पर्यायाः अपूर्ण [-संस्कृते	"	-	५७	"	सं. १७०३
१२	" सटीकः	संपूर्ण १-२-३ कांडः भट्टोजी (४)	२६४	"	सं. १७०३ वर्षे तृतीयावस्थ	
१३	" प्रथमकांडः सटीकः	" महेश्वरः कुशा	४७	"	सं. १९३५ [अतिमपत्रमितिः	
१४	" मूल	" १-२-३ कांडाः [सुबोधिनी टीका	१७५	"	सं. १८३७	
१५	" नानार्थाः	" कानडी टीका	कानडी टीका	६४	"	सं. १८३९
१६	" २ कांडः	अपूर्ण	-	५०	"	सं. १८७१
१७	" सटीकः	"	सटीकः	३४	"	सं. १७०९
१८	" "	"	-	१८	"	सं. १७०९
१९	" "	"	-	२४	"	सं. १८३३
२०	एकाक्षरमाला	संपूर्ण	-	३	"	सं. १९१४
२१	नाममाला कोशः	" हेमचंद्राचार्यः	-	६९	"	सं. १७४६ प्रा.
२२	"	अपूर्ण	-	२९	"	सं. १९३१ प्रा.
२३	निघण्टु समय कोशः २ परिच्छेदाः	संपूर्ण	-	८	"	सं. १५८५ प्रा.
२४	प्राकृत शब्द कोशः	अपूर्ण ग्रन्थाः	-	३	"	सं. १६३९ प्रा.
	प्राकृत गुजराती शब्दानां संस्कृत लक्षणाः	-	-	४		
२५	रत्नकोशः	संपूर्ण	-	११	"	सं. १८९३ वैशाख शुद्ध ११ चंद्र
२६	लिङ्गानुशासन स्तोत्र (५)	" आचार्य श्री हेमचंद्रः सटीक	३४	"	सं. १९७९ वर्षे (६)	
२७	विश्वप्रकाश कोशः	"	-	९३	"	सं. १९९९ वर्षे (७)
२८	शब्द प्रदीपः	अपूर्ण	-	१८	"	सं. १८५८
२९	स्तोत्रशब्दानुशासन (८)	संपूर्ण	-	३९	"	सं. १९९८ वर्षे आषा (९)
३०	शब्दानुशासन व्याख्यानः	" अभयतिलक मणिहता	-	७१	"	सं. १९५९ प्रा.



(१) वद ७ श्रुतौ इत्याचार्य श्री हेमचंद्र विरचितायां अभिधान चिंतामणी नाममालायां देवकांडोद्वितीयः लिखितं पं. रविचिंजय म. चिरईम मे। (२) अश्विन अक्षितपक्षे द्रव्यपूजन त्रयोदश्यां (३) महेश्वर विरचितं अमरविवेक संहिता (४) भट्टोजीदीक्षित सभासुदीक्षित कृता सुधा टीका (५) स्वोपज्ञ लिङ्गानुशासन उत्तमोत्तमाक्षराः (६) वर्षे पौष मासे शुक्रसंके द्वितीययां सोमवासरे लिखितं ऋषि हंपालजी (७) वर्षे अश्वयुज्ये शुक्रसंके अश्विनी भौमे लिखितं इति श्री राधक वैष्णवाय परमेश्वरस्य गणपतय विद्यानिधि श्री मन्मद्वैतेश्वरस्य कृतौ विश्वप्रकाशमिधाने द्वितीयः परिच्छेदः। समाप्तः ग्रन्थः। (८) शासनं लघुश्रुतिः उत्तमोत्तमाक्षराः। इत्यचार्य श्री हेमचंद्र विरचितायां सिद्ध हेमचंद्रमिधान स्तोत्र कः। अनुशासनं लघुश्रुतिः उत्तमोत्तमाक्षराः समाप्तः ग्रन्थाग्र १९३८ (९) आषा सुदी १० राशनगरे महोपाध्याय श्री भाद्र. जय गणेशाय नमः। अयं विज्ञेयः।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्त लिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, MSS. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : NITI-RAJNITI 20

विषय : नीति:-राजनीति: २०।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
-----------------------	---	---	--------------------	----------------------------	---	-----------------------------

नीति:-राजनीति:। २०

१ उपदेश प्रलेखः प्रास्ताविकाः	अपूर्ण	-	१०	देवनागरी सप्त १८७.
२ उपदेश नीतिः	"	-	४	संस्कृत सं. १२४९
३ उपदेश पारिजातः	"	-	४	" सं. १७७९
४ उपदेशान्यायिकः	"	-	७	" सं. १९१८
५ उपदेश संग्रहः	"	-	१०	" सं. १९१०
६ कामंडकी नीतिसारः उत्तमाक्षरः	संपूर्ण सर्ग १ (१) टीका वज्रभाषा	१६	"	सं. १६८७ प्रा. नन्दनाशक (२)
७ "	"	"	३६	" सं. १९३१ प्रा.
८ नीतिसंग्रहः	" संस्कृत हिंदी	"	५०	" सं. १८१६ बी १९३२
९ नीतिशास्त्रं	"	"	गुर्जर टीका १७	" सं. १८३५ प्रा.
१० पंचोपाख्यान (१० वतंत्र)	" विष्णुसर्मा	"	२०१	" सं. १७५१ प्रा.
११ " " " "	"	-	१२६	" सं. १६७४ कार्तिक
१२ राजनीति संग्रहः ग्रन्थाम् ८२७	"	-	६३	" सं. १८५६ शाके (४)
१३ "	"	-	९	भाषापद्य सं. १९५९
१४ " अष्टांगनीतिः	"	-	१६	" सं. १८७१
१५ लघु चाणाक्य नीतिः	"	-	६	देवनागरी संस्कृत सं. १५८८ प्रा
१६ " उत्तमाक्षरः	"	-	२	" सं. १३३९
१७ "	"	-	३	" सं. १६१८ प्रा.
१८ "	"	-	७	" सं. १४४३ प्रा
१९ "	"	-	१६	" सं. १८३९ प्रा.
२० विचारसंग्रहः	"	गुर्जर टीका	२१	" सं. १७९४ वै. वरी ३ मौमे
२१ विदूरनीतिः	"	"	१९	" सं. १९१८ प्रा.
२२ " प्रकीर्ण	"	-	१५	" x x
२३ विवेकविलासः	अपूर्ण	-	७	" सं. १६६४ प्रा.
२४ घृष्टचाणाक्य नीतिशास्त्रं	अपूर्ण	-	१८	" सं. १८५९ वैशाख शुक्ल (४)
२५ "	"	-	१३	" सं. १८३० माघ कृष्ण शुद्ध
२६ " अध्याय १५	"	-	७	" सं. १७०५
२७ " अध्याय ८	"	गुर्जर टीका	३३	" सं. १९०७
२८ सन्यासि धर्मा	"	-	२	" सं. १९०२
२९ सुभाषित संग्रह	"	-	१२	" सं. १८०७
३० सुभाषितावलिः	"	-	११	" सं. १९१७ वर्षे लिखित
३१ सुभाषितः	"	गुर्जर टीका	२३	" सं. १८९० ना ज्येष्ठ शुद्ध २ च ३
३२ धानभंडार नीतिशास्त्रं	" हिंदी भाषा, टीका	१६४	"	सं. १८४१



(१) सर्ग १ कर्ता चाणाक्य विष्णुसर्मा (२) नन्दनाशक चंद्रगुप्तमौर्यक विष्णुसर्मापरनाम चानक्य रचित (३) शाके १७२४ माघ २२ ईश्वरगरे (४) शुद्ध ४ पुष्यगरे पूर्वे श्री लखेजीप्राम निवासि त्वाय सोमनाथात्मज प्रकाशस्वामिप्रकाश शिवराज तत्प्राप्त संज साधकजी उत्तात्मज बाबुदेवन अवेह गोंडलपुर मध्ये १९३० केतव. रत ।

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રન્થ મંડાર, ગોંડલ - સારાઈ.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : JAIN DHARMA 21

વિષય : જૈનધર્મ ૨૧

ક્રમાંક Serial No.	ગ્રન્થ નામ Name of the work Title	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પનાળી No. of Leaves	ભાષા- લિપિ: Lang & Script	લેખક-મિત્ર Scribe & Date
જૈનધર્મ ૧. ૨૧						
૧	અર્ધમતાકુમાર રાસ ૧	સંપૂર્ણ ૬ મંથા:	-	૧૧	ગુજરાતી	સં. ૧૭૦૫
	અંદરાસ ૨	"	-	૧૦	"	સં. ૧૭૦૨ વૈજયંતી (૧)
	વિક્રમ ચરિત્ર ૩	"	-	૭	"	સં. ૧૮૫૦ મહા શુદ ૨
	દસાવલી રાસ ૪	"	-	૨૪	"	સં. ૧૮૨૫ પ્રા.
	ઘાવલા રાસ ૫	"	-	૨૦	"	સં. ૧૮૨૫ પ્રા.
	અંદ્રલેહારાસ ૬	"	-	૨૧	"	સં. ૧૮૪૫ પ્રા.
	લીલાવતિ સુમતિ વિકાસ રાસ ૭	"	-	૨૦	"	સં. ૧૯૧૨ પ્રા.
	શાલિમદ્ર ચોપાઈ ૮	"	-	૧૨	"	સં. ૧૯૫૦ પ્રા.
૨	અજાપુત્ર રાસ ૧	"	-	૧૦	"	સં. ૧૮૮૧ના વર્ષે મિત્રિ (૨)
	રત્નપાલ રાસ ૨	"	-	૩૬	"	સં. ૧૮૫૦ના વર્ષે પો. શુ. ૧૫મી
૩	અજાપુત્ર રાસ	દેવસરિકા	-	૧૬	"	સં. ૧૭૯૬ વર્ષે
૪	અંતગદ સૂત્ર સત્તાધર:	અપૂર્ણ	-	૨૩	માગધી	સં. ૧૯૧૬ પ્રા.
૫	અંતગદ વર્ણન સૂત્ર	સંપૂર્ણ	-	૨૦	"	સં. ૧૯૦૫ વર્ષે વૈષ્ણવ મંથે
૬	અજિત શાંતિ સ્તવ	"	-	૨	"	સં. ૧૮૦૬ પ્રા.
૭	અંજના સુદરી રાસ	પુણ્યસાગર	-	૨૨	ગુજરાતી	સં. ૧૭૨૭ બાલિકા શુ. (૩)
૮	અંજના રાસ ૧, સનકુમાર રાસ ૨	"	-	૧૬	"	સં. ૧૯૦૫ પ્રા.
૯	અતીવાર-આવક અતીવાર	"	-	૧૨	"	સં. ૧૯૧૪ પ્રા.
૧૦	અગ્નિયમનિ	મહાશીરાજાઈ	ગુજ. ટીકા ૧૦૦		માગધી	સં. ૧૯૦૭ વર્ષે કાર્તિક ૧૬ થી
૧૧	અનંતમત પૂર્ણ	અપૂર્ણ	-	૧૬	સં. ૧૮૫૮ પ્રા.	
૧૨	અનાર્થી ઋષિ સંકાય	સંપૂર્ણ	-	૧	ગુજરાતી	સં. ૧૮૦૧ પ્રા.
૧૩	અરિહત ચૈત્યવંદન	"	-	૧	"	સં. ૧૮૦૫ પ્રા.
૧૪	અશંતો. સુકુમાર	"	-	૬	"	સં. ૧૭૪૧ વૈશાલ શુ. ૧૨
૧૫	અષ્ટપ્રકારોપક્રમ	શ્રીરવિજય	-	૭	"	સં. ૧૭૧૨ પ્રા.
૧૬	અષ્ટમયકલ સંજ્ઞા	દેવચંદ્ર	-	૯	"	સં. ૧૮૦૫ પ્રા.
૧૭	અષ્ટમયકલ પાંચ સ્થાનકે વર્ણન (૪)	"	-	૧૧	"	સં. ૧૮૦૨
૧૮	અષ્ટોતર શતગુણા વર્ણન	"	-	૧	સંસ્કૃત	સં. ૧૭૩૭ પ્રા.
૧૯	અસંકાઈ વૈષ્ણવ	ન્યાયસાગર	-	૧	ગુજરાતી	સં. ૧૯૧૦ પ્રા.
૨૦	આનંદચંદી રાસ ૧, પદવતી રાસ ૨	"	-	૧૦	"	સં. ૧૭૯૬ પ્રા.
૨૧	આતુર પ્રત્યાખ્યાન પ્રકાશ	અપૂર્ણ	-	૮	માગધી	સં. ૧૭૮૮ પ્રા.
૨૨	અત્મજ્ઞાન દ્વાવિંશતિ ૧, ૨	સંપૂર્ણ (મયોમ વગીરી ૨)	-	૧	ગુજરાતી	સં. ૧૭૬૧ બાલો માટે
૨૩	આયશ્યક વૈલ	"	-	૧૨	"	સં. ૧૮૨૦ વર્ષે પો. શુદ. (૭)
૨૪	આવક સ્તોત્રી	"	-	૧	"	સં. ૧૯૧૦ પ્રા.
૨૫	આવાહનમૂર્તિ સંપદ ૧	"	-	૭	"	સં. ૧૮૨૧ જ્યેષ્ઠ વદ ૨ સનિ
	મુપાલ ચોવીથી ૨	"	-	૧૮	"	સં. ૧૯૧૫ શ્રીદર મંથે
	મયોમદ સ્તોત્ર ૩	"	ટીકા ગુજ.	૧	"	સં. ૧૮૨૧ વા ૫ વૈષ્ણવ મંથે
	દુષ્ટ શાંતિ ૪	"	"	૪	"	સં. ૧૮૨૧ વૈષ્ણવ શુદ. (૬)
૨૬	આવાહનમૂર્તિ રાસ ચોપા ૧	ન્યાયસાગર	-	૬	ગુજરાતી	સં. ૧૮૧૨ બાલો વદ (૭)
૨૭	અવિચલિત વિષય ૨	"	-	૧૬	"	સં. ૧૭૪૧ વર્ષે મિ. નુતિ સેતલીકેન

(૧) વદ ૧૦ શુક શૈમીપ્રામે લેખ. મંથે હર્ષવિજય (૨) મિત્રિ માત્રવા સં. (૩) અમાલ ચંદ્રસારે લે. અંજનામંજરી પાશ્વરુર મંથે (૪) શુદ ૧૫ ર્વો જોટાળમ્થામે મુર્તિ વેગવિહી (૫) વચન ૧, જ્યોતિષ પિચ્છાસાહ. ૨. અષ્ટપતિ શ્રી વિજેરત સ્થાપ્યા ૨. વદક (૧) (૩) શુદ ૮ ર્વે ગાંધો જેઠા સંમુન દાગ. અંજાલ મંથે લખિત (૬) શુ ૧ પ્રાપ્તામરે મિ. નુ. (૭) વદ ૧૦ શુદ ૧૫ ર્વો જોટાળમ્થામે મુર્તિ વેગવિહી

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્તલિખિત ગ્રંથ મંડોર, ગોંડલ-સૌરાષ્ટ્ર.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : JAIN DHARMA 21 વિષય : જૈનધર્મ : ૨૧।

ક્રમાંક Serial No.	ગ્રંથ નામ Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પાનાણ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ Language & Script	લેખક મિતિ Scribe & Date
૨૮	દૃષ્ટિ સમારૂપણ	સંપૂર્ણ	-	૧	માગધી	સં. ૧૮૨૧ પ્રા.
૨૯	હાલકુમાર રાસ ૧ પેટા ગ્રંથ ૫	"	-	૨૧	ગુજરાતી	સં. ૧૧૧૫ પ્રા.
	ધીરમાણ ઉદ્દેશાણ રાસ ૨	"	-	૪૨	"	સં. ૧૮૫૮ શાકે (1)
	શ્રીપાલરાસ લઘુ ૩	"	-	૧૪	"	સં. ૧૮૬૦ પ્રા.
	ચતુ:સરણ ૪	"	-	૧૦	માગધી સં. ૧૯૨૧ માગધી ૧૦ સેમ	
	સંધેળી રવો ૫	"	ટીકા ગુજરાતી	૫૩	સં. ટીકા માગધી સં. ૧૯૦૧ વર્ષે માગધી શુદ્ધ ૭ શક	
૩૦	હાલપુત્રરાસ ચીજાઈ	અપૂર્ણ ન્યાયસાગર	-	૪	ગુજરાતી	સં. ૧૯૧૧ વર્ષે
૩૧	ઉત્તમ ચરિત્ર કથા ૧ ૧૪ પ્રકાર: સંપૂર્ણ	-	-	૬	માગધી	સં. ૧૮૩૦ પ્રા.
	પંચાચાર્ય કથા ૨	"	-	૧૦૪	"	સં. ૧૯૧૦ વર્ષે શુદ્ધ ૫ (2)
	ચાલકવના સંધેળી ૩	"	-	૫	"	સં. ૧૯૩૦ પ્રા.
	પ્રદેશી રાજાની સજાઈ ૪	"	-	૮	"	સં. ૧૯૩૦ પ્રા.
	ચાલકની ૫	"	-	૭	"	x x
	જૈન ગ્રંથ ૬	"	માગધી ટીકા	૯	માગધી	સં. ૧૯૪૦ પ્રા.
	ધીરમતીનામા ગ્રંથ ૭	"	-	૩	"	સં. ૧૯૩૫ પ્રા.
	જીવ વિચાર ૮	"	-	૮	"	સં. ૧૯૧૧ પ્રા.
	અર્ધચંદ્રાદિ વિચાર ૯	"	-	૩	"	સં. ૧૯૨૦ પ્રા.
	મકામદ સ્તોત્ર ૧૦	"	ગુજરાતી ટીકા	૧૬	સંસ્કૃત	સં. ૧૯૩૧ પ્રા.
	નવતરંગ ટીકા ૧૧	"	-	૫	માગધી	સં. ૧૯૩૦ પ્રા.
	અજાપુત્ર ચીજાઈ ૧૨	અપૂર્ણ	-	૧૬	માગધી	સં. ૧૯૩૦ પ્રા.
	કલ્પ મહિમા ૧૩	"	-	૬	"	સં. ૧૯૩૦ પ્રા.
	ચતુ:સરણ ૧૪ (પ્રસ્થાન ૧૫ હજાર)	"	-	૧૬	સંસ્કૃત	સં. ૧૯૩૦ પ્રા.
૩૨	ઉત્તરાધ્યયન ટીકા ૧૬	સંપૂર્ણ	માગધી ટીકા	૩૩૬	માગધી	સં. ૧૯૧૫ વર્ષે શુદ્ધ ૪ રતિ
૩૩	હરિવંશીયુત્તરાધ્યયન	" (સિદ્ધાનંત સ્કંધ:)	-	૩૩૬	"	સં. ૧૯૧૫ પ્રા.
૩૪	" ટીકા ૩	"	-	૨૨૦	"	સં. ૧૯૧૫ વર્ષે માગધી (3)
૩૫	" હરિવંશીયુત્તરાધ્યયન ૩	"	સંસ્કૃત ટીકા	૪૬૬	સંસ્કૃત	સં. ૧૯૩૨ વર્ષે (4)
૩૬	" ટીકા ૩	"	માગધી ટીકા	૨૨૫	માગધી	સં. ૧૯૩૦ વર્ષે (5)
૩૭	" મૂલમાત્ર	અપૂર્ણ	-	૭૬	"	સં. ૧૯૩૫ પ્રા.
૩૮	" " "	"	-	૮૨	"	સં. ૧૯૩૫ પ્રા.
૩૯	" ટીકા ૩	"	-	૧૦૬	"	સં. ૧૯૩૫ પ્રા.
૪૦	" " "	"	-	૬૨	"	સં. ૧૯૩૫ પ્રા.
૪૧	" " "	"	-	૭૫	"	સં. ૧૯૩૫ પ્રા.
૪૨	હરિવંશીયુત્તરાધ્યયન	સંપૂર્ણ	-	૧૧	માગધી	સં. ૧૯૩૨ પ્રા.
૪૩	" " "	"	-	૭૮	ગુજરાતી	સં. ૧૯૩૨ પ્રા.
૪૪	હરિવંશીયુત્તરાધ્યયન	"	-	૧૩૭	માગધી	સં. ૧૯૩૨ વર્ષે શુદ્ધ ૬ સેમ
૪૫	હરિવંશીયુત્તરાધ્યયન યંત્ર ઉત્તમગ્રંથ	"	-	૧	"	સં. ૧૯૫૫ વર્ષે શુદ્ધ ૬ (6)
૪૬	હરિવંશીયુત્તરાધ્યયન	"	-	૩૪	"	સં. ૧૯૫૫ પ્રા.
૪૭	હરિવંશીયુત્તરાધ્યયન ટીકા	"	ગુજરાતી	૪	માગધી	સં. ૧૯૫૫ પ્રા.
૪૮	અપમ ચરિત્ર	"	-	૩૫	માગધી	સં. ૧૯૩૦ વર્ષે શુદ્ધ ૮
૪૯	અપમચરિત્ર ૧૩ મળેલો સ્તવન અપૂર્ણ	"	-	૧	"	સં. ૧૯૩૦ પ્રા.
૫૦	અપમચરિત્ર પ્રકરણ ટીકા	"	માગધી ટીકા	૨૫	માગધી	સં. ૧૯૫૫ પ્રા.

(1) શાકે ૧૯૧૨ વર્ષે શુદ્ધ ૧૨ સેમ. કે. શ્રી રામચંદ્ર મુનિ (2) શુદ્ધ ૫ મુદ્દા વર્ષે હરિવંશીયુત્તરાધ્યયન (3) માગધી વર્ષે ૧૪ વર્ષો. કે. શ્રી ચીવનમાત્ર (4) વર્ષે આવાધાન ૧૪ મુદ્દા શાકે ૧૯૧૫ વર્ષે (5) વર્ષે અજાપુત્ર ૧૦ રતિ. શ્રી, દેવચંદ વઢવાણ (6) શુદ્ધ ૧૩ મેમ વર્ષે શુદ્ધ ૬ સેમ.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHĀNDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

विषयः जैनधर्मः २१ ।

(1) वसुधैव कुटुम्बकम् इति ५ दिने मुखारे श्री खरतामण्डले श्री मिनमण्डले पत्र पुस्तक प्रमाणादुत्तरे श्रीपञ्चनमः संपदरे श्री श्री विष्णुपदमारे पदरे श्री जिनसंस्थाने पदपंचाल सहायक शिस्तरी जिनमाणिक्यपदरे विजयराजेश्वरी कुमनगा श्री कै-वि-हराज्ये

(2) दि. ५ रवि कुलपुनगरे के. स. गोविंदजी (3) शुद्ध चंद्र के शुद्ध विजयनगरी मुद्रामाने

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રંથ ભંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર,
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : JAIN DHARMA 21

વિષય : જૈનધર્મ : ૨૧ :

ક્રમાંક Serial No.	ગ્રંથ નામ Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાણિ No of Leaves	ભાષા- લિપિ: nue	લેખક-મિતિ: Scribe & Date
૭૧	કલ્યાણ મંદિર ગ્રંથ ૧	અપૂર્ણ	ટીકા સંસ્કૃત	૧૦	સંસ્કૃત સવત ૧૮૩૨ પ્રા.	
	કલ્યાણ મંદિર સ્તોત્ર ૨	"	"	૧૩	" X X X X X	
	મોહન ચૌદસિ ૩	સંપૂર્ણ	-	૯	માવા સં. ૧૮૬૧ વૈવશ્વત ૨૨ હરમયે	
	સાયવેલ ૪	"	-	૧૮	" સં. ૧૮૬૩ મા પોષ વદ ૮	
	સ્તુતિ ૫	"	-	૨	" સં. ૧૩૬૩ માગશર વદ ૪ મીમ	
૭૨	કલ્યાણ મંદિર સ્તોત્ર ૧	"	-	૮	સંસ્કૃત સં. ૧૮૩૦ પ્રા.	
	ગુણકુલો ૨	"	-	૩૦	માવા સં. ૧૮૫૩ માગશર વદ ૧૧ (1)	
	વિસલાણુ ટલો ૩	"	ગુજરાતી	૭	" સં. ૧૮૫૩ કારતક વદ ૨ (2)	
	ચતુસરણ ૪	"	-	૬	" સં. ૧૮૫૩ માગશર વદ ૧૧ (3)	
	ગૌતમ પૃચ્છા ૫	"	-	૫	" સં. ૧૮૫૩ પ્રા.	
૭૩	કલ્યાણ મંદિર સ્તોત્ર	"	ગુજરાતી	૮	સંસ્કૃત સં. ૧૮૫૩ પ્રા.	
૭૪	"	"	-	૫	" સં. ૧૮૫૩ પ્રા.	
૭૫	કુશલાનુબંધી અધ્યયન મૂલ	"	-	૩	માગધી સં. ૧૮૦૩ પ્રા.	
૭૬	કુશળ રુકમણી જીરીવેલિ*	" કલ્યાણમહાસત્ત*ગુજરાતી ટલો	-	૩૮	માવા સં. ૧૮૫૩ માગશર વદ ૧૧ (4)	
૭૭	કેશલીસ્તવન [*શ્રીકુળ ૬]	" [*ગુજરાતી પૃચ્છા-રાજી-	-	૫	માવા સં. ૧૮૦૩ પ્રા.	
૭૮	ક્રિયાકોષ	અપૂર્ણ	-	૫	" સં. ૧૮૦૩ પ્રા.	
૭૯	જ્ઞેન-સમાસ ગણિત	"	-	૬	ગુજરાતી સં. ૧૫૦૦ પ્રા.	
૮૦	"	અપૂર્ણ	-	૧૦	" સં. ૧૮૦૩ વર્ષ (3)	
૮૧	દશગણી ૧	"	-	૬	" સં. ૧૯૧૦ પ્રા.	
	સોલમા જિનસ્તવન ૨	"	-	૨	" સં. ૧૮૧૦ પ્રા.	
	વીક્ષાપાઠ ૩	"	-	૨	" સં. ૧૯૩૫ પ્રા.	
	સત્તરમેવી પૂજા ૪	"	-	૨૪	" સં. ૧૯૩૫ માગશર વદ ૧૧ (5)	
	માગધી ગુજ. ટલો ૫	"	-	૧૪	" સં. ૧૮૫૩ પ્રા.	
૮૨	ગુણસ્થાનક સ્તુતિ	અપૂર્ણ	-	૬	" સં. ૧૮૦૩ પ્રા.	
૮૩	ગોહો-પાશ્વનાથજીને હવ	અપૂર્ણ	-	૨	" સં. ૧૮૦૩ માગશર વદ ૧૧ (6)	
૮૪	ગોયમ પૃચ્છા વ્યાચના	અપૂર્ણ	-	૯	" સં. ૧૮૦૩ પ્રા.	
૮૫	ગૌતમ પૃચ્છા	અપૂર્ણ	-	૨૦	" સં. ૧૮૩૧ માગશર વદ ૧૧ (7)	
૮૬	"	અપૂર્ણ	-	૯	" સં. ૧૮૦૩ પ્રા.	
૮૭	ગૌતમને હવ	"	-	૧	" સં. ૧૯૩૫ પ્રા.	
૮૮	ગૌતમ સંઘકાદિ સજાય	"	-	૬	" સં. ૧૯૩૫ પ્રા.	
૮૯	ગૌતમ પૃચ્છા	"	-	૫	" સં. ૧૯૩૫ પ્રા.	
૯૦	પ્રદશાંતિ સ્તોત્ર	"	-	૧	" સં. ૧૯૩૫ પ્રા.	
૯૧	અંબરાજાનો રાસ	અપૂર્ણ	-	૮૯ ગુજ	વેવનામરી સં. ૧૮૦૩ મા. શુ. ૫ વર્ષ	
૯૨	"	"	-	૧૦૨	" સં. ૧૮૩૫ પ્રા [તિ મુનિમને હર	
૯૩	"	"	-	૨૭	" સં. ૧૮૩૫ માગશર વદ ૧૧ (8)	
૯૪	અંબરાજી ૧	" મોહનવિજય	-	૭૭	" સં. ૧૮૨૫ વર્ષ આઠો (4)	
	આમાલી મદ્ર ધક્કાનો ચરિત્ર ૨	"	-	૧૩	" સં. ૧૮૦૦ વર્ષ આઠો (5)	
	રત્નપાલ રાસ રત્નપાલ ચરિત્ર ૩	"	-	૪૬	" સં. ૧૮૧૫ વર્ષ (6)	
૯૫	અંબરાજાનો રાસ	અપૂર્ણ	-	૧૧૬	" સં. ૧૮૦૩ પ્રા.	
૯૬	ચતુર્વિંશતિ વંદક	અપૂર્ણ	-	૭	" સં. ૧૮૦૩ પ્રા.	
૯૭	ચતુર્વિંશતિ સ્તવ ૧ પાશ્વસ્તવ ૧	"	-	૨	સંસ્કૃત સં. ૧૮૦૩ પ્રા.	

(1) શુદ્ધ ૬ લે. જોષરાજી ગુંડલ (ગોંડલ) મયે લોકાગણે કુશરજીગણે (2) વદ ૩ મુગ કોતેલમામે. (3) વર્ષે વેવશ્વત વદી ૧ શુક્રે નવાનગર મયે આસરણ (4) આઠો માસે શુક્રવર્ષે ૧ વદે (5) વર્ષે વેવશ્વત વદી ૧ શુક્રે તિ. વિક્રમજી.

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્તલિખિત ગ્રંથ મંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર ।

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : JAIN DHARMA 21

વિષય : જૈનધર્મ ૨૧ ।

ક્રમાંક Serial No	ગ્રંથ નામ Name of the Work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાણિ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેસક-મિતિ: Scribe & Date
૯૮	ચતુર્વિંશતિસ્તવ	સંપૂર્ણ	-	૫	માળા	સવત ૧૮૮૧ પ્રા.
૯૯	"	"	-	૨	"	સં. ૧૯૫૮ વર્ષે મહીરપ્રામે
૧૦૦	ચતુઃસરણ મૂલ દ્વયો	"	ગુજરાતી ટલો	૬	દેવનાગરી માળા	સં. ૧૭૩૭ માલવા વદ ૮
૧૦૧	" મૂલ	"	-	૪	"	સં. ૧૮૧૦ પ્રા.
૧૦૨	" મૂલ	અપૂર્ણ	-	૬	"	સં. ૧૮૩૫ પ્રા.
૧૦૩	ચંદ્રાવતી રાસ	સંપૂર્ણ	-	૧૮	"	સં. ૧૮૮૧ પ્રા.
૧૦૪	"	અપૂર્ણ	-	૬૭	"	સં. ૧૯૧૧ પ્રા.
૧૦૫	ચંદ્રપ્રભુ સ્તુતિ:	"	-	૩	દેવનાગરી સંસ્કૃત	સં. ૧૯૨૦ પ્રા.
૧૦૬	ચંદ્રરાજાની ચતુષ્પદી (૧)	સંપૂર્ણ મોહનીચિત્ર	-	૧૬૨	માળા	સં. ૧૮૨૪ આશ્વિન શુક્ર ૭ મીમ
૧૦૭	ચાતુર્માસી વ્યાખ્યાન (૨)	"	-	૧૦	સંસ્કૃત	સં. ૧૭૮૧ પ્રા.
૧૦૮	ચિત્રામણ સ્તોત્ર	"	ગુજ. ટલો	૫	"	સં. ૧૯૩૧ વર્ષે
૧૦૯	ચિત્રલેખ ૧૬માસી ચરિત્ર ૧	"	-	૬૨	માળા	સં. ૧૮૦૬ વર્ષે શાકે (૩)
૧૧૦	રાત્રપ્રશ્નોય સૂત્ર ૨	"	ટલો	૧૫૦	"	સં. ૧૭૯૬ વર્ષે અશ્વન શુદી પૂર્ણમાસી
૧૧૧	ચંદ્રભારાણી સજાય	"	-	૨	"	સં. ૧૮૩૦ પ્રા.
૧૧૨	ચૈતવંદન ૧	અપૂર્ણ	-	૧૧	"	સં. ૧૮૮૦ પ્રા.
૧૧૩	વ્યાખ્યાનની માંડણી ૧	સંપૂર્ણ	-	૧	"	સં. ૧૮૭૯ જ્યેષ્ઠ વદ ૭ સોમ
૧૧૪	ચૈત્ય વંશન	"	-	૧	"	સં. ૧૮૨૮ પ્રા. [જોડીયા વંદર
૧૧૫	ચંદ્રાપૂર્ણ વેવચંદના વિધિ	" જ્ઞાનવિમલ સુરિ	-	૭	ગુજ. રો	સં. ૧૮૮૯ પ્રથમ વૈશાક વદ ૧ શનિ
૧૧૬	ચૌધિશ વદ	"	-	૨૨	"	સં. ૧૭૯૧ માહ શુદ ૨ સુષ
૧૧૭	ચૌધીશીસ્તવના	" માનવિજય વપાધ્યાય	-	૬	"	દેવનાગરી માળા સં. ૧૭૧૧ પ્રા.
૧૧૮	"	" જલચિત્ર	-	૨	"	સં. ૧૮૩૫ પ્રા.
૧૧૯	"	" "	-	૮	"	સં. ૧૮૮૧ પ્રા.
૧૨૦	ચૌધીશી	" "	ટલો	૩૦	ગુજરી	સં. ૧૮૦૩ માલવા શુદી ૧ રતી
૧૨૧	"	" ન્યાયસાગર	-	૧૦	"	સં. ૧૮૧૭ પ્રા.
૧૨૨	"	" રૂપવિજયજી	-	૮	"	સં. ૧૯૪૧ પ્રા.
૧૨૩	"	" વીરસાગર	-	૩	"	સં. ૧૮૧૪ પ્રા.
૧૨૪	"	" આનંદમુનિ	-	૩	"	સં. ૧૭૯૪ વૈશાક શુદ ૧૫ અનદાવાદ
૧૨૫	"	" ન્યાયસાગર	-	૭	"	સં. ૧૮૭૩ અષાઢ શુક્ર ૧૫ ચૌમ્યે
૧૨૬	"	" આનંદવર્ધન	-	૮	"	સં. ૧૭૯૧ પ્રા.
૧૨૭	"	" સ્વાયંસાગર	-	૩	"	સં. ૧૮૧૨ પ્રા.
૧૨૮	"	અપૂર્ણ ઉત્તમાશ્ર	-	૪	"	સં. ૧૭૩૫
૧૨૯	ચૌધીશ તીર્થકર્મો પૂજા ૧	"	-	૭	"	સં. ૧૭૩૫ પ્રા.
૧૩૦	ચૌદપૂર્ણ સજાય ૨	"	-	૬	"	સં. ૧૮૩૩ પ્રા.
૧૩૧	હત્રોત્તી ગ્રંથ ૧	"	-	૪૮	"	સં. ૧૮૪૯ વર્ષે વૈશાક
૧૩૨	સત્તવન માળા ૨	"	-	૩	"	સં. ૧૭૧૯ પ્રા.
૧૩૩	જિનચિંતન સ્થા ચળન	"	-	૧	દેવનાગરી માળા	સં. ૧૭૭૬ પ્રા.
૧૩૪	જીવલિચાર પ્રકરણ ટલો	"	ગુ. જ. ટલો	૧૦	"	સં. ૧૭૫૧ પ્રા.
૧૩૫	" સૂત્ર	"	-	૪	"	સં. ૧૯૦૫ પ્રા.
૧૩૬	જંઘુસ્વામી સજાય	"	-	૧૧	"	સં. ૧૭૯૭ કલપુરે
૧૩૭	જંઘુસ્વામી રાસ	"	-	૩૭	માળાપદ	સં. ૧૮૪૭ આષાઢ શુદ (૪)

(૧) ૧ ચતુષ્પદી વ્રાસ ૪, ૨ ત્રીસ અક્ષરની ગાઈ (૨) ૪ વ્યાખ્યાન કવિ કથા, ૨ ત્રિલોકશુદી કથા, ૨ ત્રિલોક-
શુદી કથા (૩) શાકે ૧૭૨૧ વૈશાક શુદ ૮ સં. (૪) શુદ ૧૩ પુરી ઔરંગઝાદ ગાંધે ગ્રંથો ૧ વળ નથી ।

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રંથ ભંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : JAIN DHARMA 21

વિષય : જૈનધર્મ : ૨૧।

ક્રમાંક	ગ્રંથ નામ	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અસંપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાણ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ: Scribe & Date
Serial No.	Name of the work (Title)					
૧૨૭	જવૂદ્ધોપ ગણિત સંહાદિદશ	સંપૂર્ણ [કુટ્ટા ચોલનું] ગણિત	-	૭	ભાષાપદ્ય	સંવત ૧૬૬૭ પ્રા.
૧૨૮	જવૂદ્ધોપ સંપ્રદાનો સુત્ર	„ હરિભદ્ર	-	૮	„	„ સં. ૧૬૪૫ પ્રા.
૧૨૯	જવૂદ્ધોપ સુત્રગુણિ	„ ઉત્તમાશ્વર	સંસ્કૃત ટીકા	૮૩	માગધી	સં. ૧૮૨૦ પ્રા.
૧૩૦	જિનચત્તસુદિ સ્તુતિ તથા	„ [સ્તવન સજાય	-	૮	ભાષા	સં. ૧૮૪૩ પ્રા.
૧૩૧	જિનનામ ગણણ	„	-	૩	„	„ સં. ૧૮૫૩ પ્રા.
૧૩૨	જિનપાલ રાસ	„	-	૩	„	„ સં. ૧૯૦૪ પ્રા.
૧૩૩	જિનકથાનક પ્રધાન ૧૧૫૨ કથા	„ સુદરસુરી	-	૨૩	„	„ સં. ૧૪૯૪ જે શુક્ર ૧૧૫૨(૧)
૧૩૪	જિનાગમ સ્તવન	અસંપૂર્ણ	-	૩	„	„ સં. ૧૮૮૦ પ્રા.
૧૩૫	જીવવિચાર સુત્ર	સંપૂર્ણ	ટલો ૩-૫	-	માગધી	સં. ૧૭૮૧ પ્રા. સં. (2)
૧૩૬	જનસ્તવન સંગ્રહ પ્રથમ ૧૫નો સંગ્રહ	„ ગુસ્તક	-	૧૨૯	ભાષા	સં. ૧૮૪૫ પ્રા.
૧૩૭	„	„	-	૧૩૨	„	„ સં. ૧૮૧૧ પ્રા.
૧૩૮	જૈનસ્તવન સંગ્રહ ૩૧૧ (૩)	„	-	૩૭૪	„	„ સં. ૧૮૧૩ મા. મે. ૧૩૬
૧૩૯	જીવાભિગમ સજાય	„	-	૭	„	„ સં. ૧૦-૫ પ્રા. [દુરોક્તિ ૧૧૨૧]
૧૪૦	ઠાળાંગસુત્ર ગ્રંથ ૨૬૦૦	„ પાશ્વમાત્રા	-	૧૫૧	માગધી	સં. ૧૬૧૦ પ્રા.
૧૪૧	„ ૧	અસંપૂર્ણ	-	૧૫૬	„	„ સં. ૧૮૦૨ પ્રા.
	દશવિ ૨	„	-	૩૨	„	„ સં. ૧૭૦૮ પ્રા.
	વપાનનો પોટિકા ૩	„	-	૩	„	„ સં. ૧૮૫૨ મા. વદ ૫
	સિદ્ધ પંચાશિકા ૪	અસંપૂર્ણ	-	૩૩	„	„ સં. ૧૭૮૪ પ્રા.
	પુછોસણ ૫	„	-	૩	„	„ સં. ૧૮૬૯ પ્રા.
	અંબુચરિત્ર ૬	અસંપૂર્ણ	-	૩૪	„	„ સં. ૧૮૮૧ પ્રા.
૧૪૨	ઠાળાંગસુત્ર ટલો	„	-	૪૦	„	„ સં. ૧૮૭૧ પ્રા.
૧૪૩	ઠાળાંગ ચોડ દશ	સંપૂર્ણ	-	૩૯	ભાષા	સં. ૧૭૧૧ શાકે (4)
૧૪૪	અંકચોડ	„	ટલો ગુણ ૨૦	દેવનાગરી	માગધી	સં. ૧૮૩૬ મા. ૨. (5)
૧૪૫	ઠાળસાગર રાસ-રતિમી (6)	„	-	૧૩૫	ભાષા	સં. ૧૭૧૫ દિ. આશો
૧૪૬	તંદુલવૈદ્યલિપિ પૂર્વસ્થા	„	ટલો ૨૮	„	„	„ સં. ૧૮૧૦ વર્ષે મા. (8)
૧૪૭	તિય'સમેદ અને મનુષ્યમેદ ૧	„	-	૬	„	„ સં. ૧૮૪૮ પ્રા.
	વૃદ્ધોની તિપિ ૨	„	-	૨	„	„ સં. ૧૯૩૫ પ્રા.
	સ્તવન ૩	„	-	૭	„	„ સં. ૧૮૪૮ પ્રા.
	સવાસો શીલામણ્ય	„	-	૮	„	„ સં. ૧૮૫૭ પ્રા.
	પાઝોચણ ૫	„	-	૩	„	„ સં. ૧૮૧૦ પ્રા.
૧૪૮	તિજયગદ્ય (સતયત જિનસ્તવન)	„	-	૧	„	„ સં. ૧૮૧૦ પ્રા. જે. મા. ૧૮૩૮
૧૪૯	તીર્થકરનાં કલ્યાણક	„	-	૧	„	„ સં. ૧૮૩૮ પ્રા.
૧૫૦	તર્થસ્તવન	„ જ્ઞાનવિમલ	-	૧	„	„ સં. ૧૮૪૧ પ્રા. [૧૧૩ ગુ.
૧૫૧	તેજસાર રાજાનો રાસ	„	-	૨૮૭	„	„ સં. ૧૮૫૧ મા. વર્ષે મા. ૧૮૫૫
૧૫૨	ત્રિપક્ષીય	„	-	૨૬	માગધી	સં. ૧૮૪૧ મા. વર્ષે (9)
૧૫૩	ત્રેલોક્ય સારગુણિ: ૪૪૩ ગાથા અસંપૂર્ણ	સાગરસેન	સહજ (10) ૭૪૮: ૮૭	-	„	„ સં. ૧૭૭૪ પ્રા.
૧૫૪	અંક ચોડ ચોવીસ અંક	„	-	૨૩	માગધી	સં. ૧૮૬૩ પ્રા.
૧૫૫	દશવૈકાલિક સુત્ર ઉત્તમાશ્વર. સંપૂર્ણ	મૂલમાત્ર	-	૬૦	માગધી	સં. ૧૮૦૦ પ્રા.
૧૫૬	„	„	-	૧૯	„	„ સં. ૧૮૬૧ વર્ષે મા. ૧૮૬૧

(1) રત્નો કુંકરપુર અને પર્વતકેન (2) સંવત ૧૮૧૧ માહા શુદ ૧૪ સૌ (૩) ૨૧૧ વિષય મંત્ર દેવિક તર્જ યંત્ર (4) શાકે ૧૬૬૪ માગધિર માસે કુળપદ્મે ૧૦ શુક્રે ત્ર. દેવચંદ્રકો (5) ૬૬ ૧૧ ગુરુ તિ. ત્ર. પોવાલી (6) દત્તિથી ઠાલસાગર દરિદ્ર પ્રવંચ નરચિકાર: (7) આશો શુદ ૧૩ દાનિ ચાંકાનેર પ્રામે (8) માગધિર વદિ ૮ તિ. ચનનો ચોરાલી મામે (9) વર્ષે મુગધર વદ ૧૧ દિને ચાર મોમે તિ. શીપતનનગરે (10) રહસ્યકીર્તિ કૃતા કૃતિ: ૧૫૦૦ ગ્રંથાકાં

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્તલિખિત ગ્રન્થ મંડાર, ગોંડલ-સૌરાષ્ટ્ર.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : JAIN DHARMA 21

વિષય : જૈનધર્મ : ૨૧

ક્રમાંક Serial No.	ગ્રન્થ નામ Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટોકા Commentary	પત્રાણિ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ Scribe & Date
૧૬૭	દશવૈયાલિયં સૂત્ર	સંપૂર્ણ	ટકો	૫૨	માગધી	સંવત ૧૫૫૦ પ્રા.
૧૬૮	દશવૈકાલિકા ચિત્રાંતઃ	અપૂર્ણ [x અતિપ્રાચીન	મૂલમાત્ર ૩૩		સંસ્કૃત	માગધી સં. ૧૧૦ પ્રા.
૧૬૯	દશવૈકાલિકાની સત્યાઈ	,, વિક્ષિપ્ત:	-	૪	,,	સં. ૧૮૨૧ વૈશાખ વદ (1)
૧૭૦	દશવૈકાલિકા	,,	-	૫	,,	સં. ૧૧૧૧ પ્રા.
૧૭૧	દાનાધિકાર ૧ (૨)	સંપૂર્ણ	જિનસુદરા:	-	માગધી	સં. ૧૮૮૧ ફા. શુદ્ધ (3)
૧૭૨	દોષોપસર્ગો કથા	સંપૂર્ણ	જિનસુદરા:	-	માગધી	સં. ૧૮૮૧ ફા. શુદ્ધ (3)
૧૭૩	દિવાળીની સત્યાઈ ૧ (4)	,,	ગુજ. ટકો ૫૩		,,	સં. ૧૧૨૦ પ્રા.
૧૭૪	દિવાળી કલ્પ ૧	,,	-	૩	,,	સં. ૧૮૮૦ પોષ વદ સુરજપુરીમધ્યે
	ગતિચારનો વિવરણ ૧	,,	ટકો ગુજ ૫૪		માગધી	સં. ૧૮૨૧ ના વૈ. શ્રવણ શુદ્ધ ૧૩
	સમગ્રણી રત્ન ૩	,,	-	૧	,,	સં. ૧૭૨૫ પ્રા.
૧૭૫	વીશ્વાર્થિય	,,	-	૨	,,	સં. ૧૭૬૧
૧૭૬	વૃત્તનસંજન વિચાર	,,	-	૨	,,	સં. ૧૭૬૧
૧૭૭	દર્શન સિદ્ધાંત	,,	ઉપમાસુદરા:	-	ગુજરાતી	સં. ૧૮૬૧ પ્રા.
૧૭૮	દેવેન્દ્રસૂત્રીનો સત્યાઈ	,,	-	૧	,,	સં. ૧૮૮૪
૧૭૯	દ્રવ્ય સમગ્ર	અપૂર્ણ	-	૭	,,	સં. ૧૭૭૩
૧૮૦	દ્રોપદો ચોપાઈ	,,	કનકકીર્તિ:	-	,,	સં. ૧૬૬૬ પ્રા.
૧૮૧	દ્વાદશસાધુ ચતુષ્પતિ ૧ (5)	,,	-	૪	,,	સં. ૧૬૩૨ પ્રા.
૧૮૨	ધર્મકથા સંગ્રહ	અપૂર્ણ	-	૭	,,	સં. ૧૭૨૧ પ્રા.
૧૮૩	ધર્મકથાનક	,,	-	૭	,,	સં. ૧૭૨૧ પ્રા.
૧૮૪	ધર્મધ્યાનમેધ	સંપૂર્ણ	-	૪	,,	સં. ૧૮૨૦ વૈશાખ શુદ્ધ ૮
૧૮૫	ધર્મકથા (ગૌતમ પુષ્પા)	અપૂર્ણ	-	૩૧	,,	સં. ૧૮૧૦ પ્રા.
૧૮૬	ધર્મસર્વસ્વ	સંપૂર્ણ	-	૨૪	,,	સં. ૧૮૧૦ પ્રા.
૧૮૭	ધર્મસર્વસ્વ	,,	મૂલ સં. ટોકા ગુજ.	૧૨	,,	સં. ૧૧૧૦ પ્રા.
૧૮૮	નમોઽસ્તુ ટકો ૧	,,	-	૧	,,	સં. ૧૬૫૧ પ્રા.
	નમસ્કારાલ્લિ ૨	,,	-	૫	,,	સં. ૧૭૨૧ પ્રા.
	નંદીશ્વરદોષનું સ્તવન ૩	,,	-	૨	,,	સં. ૧૧૧૦ જ્યેષ્ઠ વદ ૭ રવિ
	નળદમણિયાર કથા ૪	,,	-	૬	,,	સં. ૧૮૦૭ પ્રા.
૧૮૯	નવતત્ત્વ ૧	,,	-	૧૭	માગધી	ગુજરાતી સં. ૧૬૮૦ પ્રા.
	શ્યમગઢાગ ૨	,,	-	૮૧	,,	સં. ૧૬૧૦ પ્રા.
	છપાસક ૩	,,	-	૭૦	,,	સં. ૧૭૨૫ પ્રા.
	દશવૈકાલિક સૂત્ર ૪	,,	ટકો ગુજરાતી	૨૯	માગધી	સં. ૧૭૫૧ વર્ષ (કાર્તિક)*
૧૯૦	નવતત્ત્વ	,,	-	૫	,,	સં. ૧૧૧૦ પ્રા [શુદ્ધ ૧૫ શુક્રે
૧૯૧	નવગાદી સ્વાધ્યાય	,,	ભૂધરમુનિકવ	-	,,	સં. ૧૮૦૬ પોષ શુદ્ધ ૧૫ પ્રાપ્તપ્રમ્યે

(1) વદ ૧૦ રવિ સપ્તમી મધ્યે જલ્દાગરે લિખિત (2) ૧ દાનાધિકાર પત્ર ૭. ૨ સુરપ્રિયમુનિ કથાનક પત્ર ૩૧. ૩ વૈશાખ પારવાનો પાઠ પત્ર ૬. ૪. ઉપદેશ રત્નકોષ પત્ર ૨ સં. ૧૮૨૦. ૫ સ્થૂળમગ્ધ અપૂર્ણ પત્ર ૮૬. ૬ આશાસ્ત્રીની જલ્પતંત્રીના રાસ ૧૦ પદ્યપુર્ણાલિ સ્તોત્ર સંસ્કૃત પત્ર ૩ સંવત ૧૮૨૫ ફાગણ વદ ૬ સોમ. ૮ આગમસાર સિદ્ધાંત પત્ર સંસ્કૃત ૧૧૧૫. ૯ અહારના ૧૬ દોષ પત્ર ૨ સ. ૧૧૧૦. ૧૦ ચોક્ષી તીર્થ કરના કોઠા પત્ર ૧૦ સંવત ૧૭૬૦. ૧૧ વલિકમળ પત્ર ૧૭ સંવત ૧૮૫૦. (3) શુદ્ધ ૧ સોમ માઝવા આસા મધ્યે (4) ૧ દિવાળીની સત્યાઈ પત્ર ૧. ૨ સિત્તાવ પત્ર ૧ સંવત ૧૮૫૦ પોષ વદ ૧૨ સોમ. ૩ શ્રવણમંત્રી સ્તવન પત્ર ૧. ૪. વિષ્ણુવર્ધન નામ ચમન પત્ર ૧. (5) દ્વાદશસાધુ ચતુષ્પતિ ૧, અક્ષિત ધાર્તિ સ્તવન ૨, અકામર સ્તોત્ર ૩ પત્ર ૬૮ શ્રી ૭૨. ૭૨મે પાને મિતિ સંવત ૧૭૦૫ વર્ષે આશુ શુદ્ધ શુક્રે શ્રવણમેદ કલ્યાણ મંદિર સ્તોત્ર ૪, પાને ૭૬મે સંવત ૧૭૦૫ વર્ષે આશુ ૬ રવિ. ચોક્ષી તીર્થ કર સ્તવન ૫.

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રન્થ મંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: JAIN DHARMA 21

વિષય: જૈનધર્મ ૨૧।

ક્રમાંક	ગ્રન્થ નામ	કર્તા • Author	ટીકા	પત્રાણિ	ભાષા- લિપિ:	લેખક-મિતિ:
Serial No.	Name of the work Title	સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Date
૧૯૨	નવપદપૂજા	સંપૂર્ણ વીરવિજય:	-	૧	માગધી	સંવત ૧૮૩૦ પ્રા.
૧૯૩	નન્દોસૂત્ર (નંદીશતિ)	"	-	૧	"	સં. ૧૯૭૭ પ્રા
૧૯૪	નવતત્ત્વ	અપૂર્ણ	ટલો	૭	"	સં. ૧૯૦૮ પ્રા.
૧૯૫	નવતત્ત્વ પ્રકરણ	સંપૂર્ણ	-	૨૨	"	સં. ૧૯૧૦ પ્રા.
૧૯૬	"	"	-	૩	"	સં. ૧૮૯૧ના આશ્રવા વદ ૧
૧૯૭	"	"	-	૭	"	સં. ૧૭૯૪ પ્રા.
૧૯૮	"	" મૂલ	-	૨	"	સં. ૧૯૨૦ પ્રા.
૧૯૯	નવતત્ત્વ ૧.	અપૂર્ણ	-	૭	"	સં. ૧૯૨૦ પ્રા.
	ક્ષેત્રસમાસ ૨	"	-	૪	"	સં. ૧૮૫૫ પ્રા
	ચાલકાન્દ ૩	"	-	૨	"	સં. ૧૯૪૦ પ્રા.
	દશધેકાલિક ૪	"	ટલો કચરાતી	૨૯	"	સં. ૧૯૦૧ પ્રા.
૨૦૦	નવતત્ત્વ ચાલકાવશેષ	સંપૂર્ણ	-	૫	"	સં. ૧૭૩૧ પ્રા
૨૦૧	નવતત્ત્વનો છંદ	"	-	૨	"	સં. ૧૮૪૧ પ્રા.
૨૦૨	નિર્યાયલિ ઉપાનિષદ	અપૂર્ણ	-	૧૮	"	સં. ૧૪૩૭ પ્રા.
૨૦૩	નવતત્ત્વ	સંપૂર્ણ સ્પષ્ટ	-	૪	"	સં. ૧૮૩૬ પ્રા.
૨૦૪	નેમનાથ સ્તવ	"	-	૩	ભાષા	સં. ૧૭૭૧ પ્રા
૨૦૫	નેમનાથ ચરિત (કાલ સાગર)*	" [*હરિશંકર રાસ પ્રત્યામ ૪૧૭૭ ૧૮૨	-	૨	"	સં. ૧૬૬૦ વૈશાખ વદ ૩ શુક્રવાસરે
૨૦૬	નેમિફાગુ	"	-	૨	"	સં. ૧૬૩૨ પ્રા.
૨૦૭	નેમનાથમાસ ચર્ચન	" ઉદયરાત્ર	-	૪	"	કર્તા ચાલ ૧૭૫૧ લે (1)
૨૦૮	નેમિ રાજુલે રત્નાકર	"	-	૧૪	"	સં. ૧૭૫૨ પ્રા.
૨૦૯	નેમિ ચરિત	"	-	૧૦૮	"	સં. ૧૭૬૦ પ્રા.
૨૧૦	નેમિજિનાદક	"	-	૧	"	સં. ૧૭૩૫ પ્રા.
૨૧૧	નેમિજિન ચરિત ૧	" કર્તા પદ્મવિજય	-	૫૫ પ્રાકૃત પ્રબંધ	સં. ૧૮૩૫ પ્રા.	
	આષાઢગુર્જિ રાસ ૨	"	-	૧૨	"	સં. ૧૭૧૧ પ્રા.
	આઠકમ સાંધવાના મેદ ૩	"	-	૩	"	×
	લીલાવતી રાસ ૪	અપૂર્ણ	-	૫	"	×
	ધીતરામ સ્તોત્ર ૫	સંપૂર્ણ	-	૬	"	સં. ૧૬૩૧ પ્રા.
	અનામક ૬	"	-	૨૧:૪૫	"	×
	ધ્યાવક પ્રતિક્રમણ ૭	"	-	૯	"	×
	અનામક ૮	"	-	૩	"	×
૨૧૨	નોકારનો છંદ ૧ (2)	સંપૂર્ણ	-	૫	"	×
૨૧૩	પદ્મચીવન ટલો (3)	"	ભાષા ટલો	૨૯ દેવનાગરી	માગધી	સં. ૧૮૬૭ પ્રા.
૨૧૪	પંચમી સ્તુતિ	"	-	૧	"	સં. ૧૭૪૩ પ્રા.
૨૧૫	પંચપરાવર્તન સ્વરૂપ	"	-	૨	સંસ્કૃત	સં. ૧૮૮૪ પ્રા.
૨૧૬	પંચદ્રોહી ચોપડી ઉત્તમાક્ષર	"	-	૫	માગધી	સં. ૧૭૫૧ પ્રા.
૨૧૭	પંચમી કથા માહાત્મ્ય કાર્તિકા	" [શિશુ પંચમીતપ ગુજ. ટલો	-	૧	સંસ્કૃત	સં. ૧૮૯૧ પ્રા.
૨૧૮	પદ્મલેહ્યા કુલક ટલો	"	-	૪	માગધી	સં. ૧૭૧૪ પ્રા.
૨૧૯	પદ્મનદિ પદ્મીસી	"	-	૩૩	માગધી	સં. ૧૭૩૬ પ્રા [સંસ્કૃત ૪ શુક્રવારે
૨૨૦	પદ્મનાથ સુધ પ્રત્યામ ૭૭૬૭	"	ગુજ ટલો	૪૪૭	માગધી	સં. ૧૮૦૧ના વર્ષે વૈશાખ

(1) લે. સંવત ૧૮૬૫ આષાઢ વદ ૧૦ રવિ કડો મધ્યે શ્ર. ચુચાલ (2) નોકારનો છંદ ૧, નવતત્ત્વનો છંદ ૨, નોકરવાલીની સંજા ૩, ગોતમ સાગીના છંદ ૪, પત્ર ૫ સં. ૧૯૩૨ પ્રા. ક. ૪ (૩) ટલો ચાલુ અસિચાર પદ્મીયો: પ્રતિક્રમણ.

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र ।

SHRI BHUVANESHWARI PITH, MSS. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: JAIN DHARMA 21

विषय: जैनधर्म: २१ ।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
२२१	परदेसी राजानो रास	संपूर्ण	-	२७	भाषा सं. १८९३ ना वरे भाद्रवा	
२२२	पर्वताराधना	"	-	१०	" सं. १९०० प्रा. [शुद्धी १३ गुरी	
२२३	"	"	-	६	" सं. १७१५ वर्षे कार्तिक (१)	
२२४	पर्वस्था माहात्म्य	"	-	५३	देवनागरी भाषा सं. १९०४ मार्गशीर शुद्धी ९	
२२५	पाखीसूत्र प्रतिक्रमण	"	-	१९	" सं. १९०२ प्रा.	
२२६	पार्वजिनस्तवन	"	-	४	" सं. १८९९ वेलास शुद्ध १४ गुरु	
२२७	पार्वजिन स्तोत्राणि	"	-	१८८:२९	" सं. १८७० प्रायः	
२२८	पार्वनाथजीशे छंद १	"	-	१	" सं. १८७९ भा. वर १२	
	बृहन्नाति स्तोत्र २	"	-	२	" सं. १९५३ कार्तिक शुद्ध ८	
२२९	पार्वजिनस्तवन	" हर्षचंद्र	-	१	" सं. १८१४ कार्तिक शुद्ध ९ गुरी	
२३०	पार्व नाथ रास	" रामचंद्रजी	-	२	" सं. १८४५ प्रा. [भावनमदे	
२३१	पार्वस्तव	" मोक्षसागर	-	६	" सं. १९३९	
२३२	पार्वस्तुति	"	-	१	" सं. १८८० प्रा.	
२३३	पार्वनाथ छंद	"	-	५	" सं. १८०५ प्रा. समाप्त मध्ये	
२३४	पाठा विचार	"	-	१	" सं. १८३१ प्रा.	
२३५	पाखी नमस्कार	"	-	७	" सं. १७४१ भा. शुद्ध ५ भाष	
२३६	पुण्डरीक पूजा	"	-	१	" सं. १८०१ प्रा.	
२३७	पुण्य कुलक	"	भाषा	२	सामची सं. १९४५ प्रा.	
२३८	पुरुषे खीने शिक्षामण (२)	"	-	२६	देवनागरी सं. १९३५	
२३९	पोसाह बिधि	"	-	१	" सं. १७९८	
२४०	पौयस बिधि	"	-	४	" सं. १७९३ पोष वर ९	
२४१	प्रकृतिभौ विचार	"	-	५	" सं. १९३५ प्रा.	
२४२	प्रतिक्रमण सूत्राणि	"	टो	१७	" सं. १९३१ प्रा.	
२४३	"	"	-	१४	" सं. १८३१ प्रा.	
२४४	प्रतिक्रमण सूत्र	अपूर्ण	गुजराती	१०	भाषा संस्कृत सं. १८९४ प्रा.	
२४५	"	"	-	१०	" सं. १७०६ प्रा.	
२४६	"	"	-	७	" सं. १५८८ प्रा.	
२४७	"	संपूर्ण	-	४	" सं. १७९९ प्रा.	
२४८	प्रतिक्रमण विवरण	"	-	२९	" सं. १८१३ प्रा.	
२४९	प्रतिक्रमण सूत्राणि	"	-	१५	" सं. १८४६ का. वर ४ गुरु मध्ये	
२५०	प्रत्याख्यान भाष्य	"	-	१९	" सं. १९१६ प्रा.	
२५१	"	"	-	१५	" सं. १९३५	
२५२	प्रदेशीराजा रास	अपूर्ण	-	१८	" सं. १८३५	
२५३	प्रज्वन सारोद्धारवृत्ति:	संपूर्ण विद्वत्सेनचरि	-	४३४	संस्कृत सं. १९७० वरे (३)	
२५४	प्रश्न व्याकरण	अपूर्ण	-	२७	भाषा सं. १७५४ प्रा.	
२५५	प्रश्न व्याकरण सूत्र	संपूर्ण	-	१७	भाषा सं. १९३३ प्रा.	
२५६	प्रास्ताविक वृत्तान्ति	"	-	३	संस्कृत भाषा सं. १८१५ प्रा.	
२५७	प्रश्ना सत्रीतो	"	-	२	" सं. १९५९ प्रा.	
२५८	वारणासी स्तवन	"	-	५	" सं. १९५९ भा. वर १ वरपत्र	

(१) कार्तिक शुद्ध ११ बुधे धाराजी नगरे (२) जिन्यामण दीवी तेनी सजाई आमा १९ उपदेश छे (३) वर्षे पाण्डु विधि
८ सोमे श्री वडवच्छे जालजिया बरुके स्वस्ति श्री संत १९१५ वरे श्रीराधु देसे जीवहुने ।

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્તલિખિત ગ્રન્થ મંડાર, ગોંડલ-સૌરાષ્ટ્ર.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : JAIN DHARMA 21

વિષય : જૈનધર્મ : ૨૧।

ક્રમાંક Serial No.	ગ્રન્થ નામ Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાણિ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક મિતિ Scribe & Date
૨૫૯	બાલચંદ્ર વચીશી ૧	સંપૂર્ણ	-	૫	સંસ્કૃત ભાષા	સંવત ૧૧૨૦ પ્રા.
	મગધવીરકત ૨	"	સત્તાશ્વર	-	૭	સં. ૧૦૧૪ વર્ષે (1)
	પાર્શ્વજિનસ્તવન ૩ કલ્યાણ-	"	સિદ્ધસેન દિવાકર શરિ	-	૪	સં. ૧૦૨૩ વર્ષે મુગદોર શુદ્ધ ૬ગુધ
	શ્રી સ્વાધ્યાય ૪ [ન્ન દિરામિધાન	"	-	૧	"	સં. ૧૧૦૦ પ્રા.
	સત્તરાધ્યયન ૫	"	-	૪૫	"	સં. ૧૮૦૦ પ્રા.
	જીવસરણ ૬	"	ટલો	૬	"	સં. ૧૧૮૮ વર્ષે (2)
	મન્ત્રોચર રત્નમોહા ૭	"	-	૪	"	સં. ૧૦૧૦ પ્રા.
	કથા ૮	"	ટલો	૭	સંસ્કૃત	સં. ૧૧૧૦ પ્રા.
	પાર્શ્વનાથસ્તવન ૯	"	-	૩	"	સં. ૧૮૧૦ પ્રા.
૨૬૦	વાવની ઉપદેશ	"	-	૫	"	સં. ૧૦૮૮ પ્રા.
૨૬૧	શુદ્ધરાસો ૧ (૧૦ ચોપાઈ)	"	શાલિભદ્ર	-	૬	ભાષા સં. ૧૮૦૪ પ્રા.
	તરંગચયની સંજ્ઞા ૫ ૨૮ ચોપાઈ	"	લાલા શિવરામકૃત	-	૫	સં. ૧૮૦૪ પ્રા.
	આદિજિનસ્તવ : ૩ ૨૧ ચોપાઈ	"	જ્ઞાનચંદ્ર	-	૬	સં. ૧૭૦૧ પ્રા.
	ગૌતમનીસંજ્ઞા ૪	"	મનહરકૃત	-	૩	સં. ૧૭૦૧ પ્રા.
	લોહા ૫	"	-	૩	"	સં. ૧૭૦૧ પ્રા.
૨૬૨	દુહચ્છાંતિ: જૈનસ્તુતિ:	"	ડામ સટીકા રતિપરિતા	૫	મૂલસદ મંસ્કૃતટીકા સં. ૧૧૫૬ ગૌતમ વસુલ	
૨૬૩	દુહસ્ત મદ્દળી સુત્ર	"	મૂલ	-	૨૭	સં. ૧૮૬૧ પ્રા [મુસુરવા ગુપ્તાર્થે
૨૬૪	"	અપૂર્ણ	ટલો સહિત	૩૦	"	૧૮૪૫ પ્રા.
૨૬૫	દુહસ્ત મદ્દળી	સંપૂર્ણ મૂલ	-	૧૭	"	સં. ૧૯૧૯ પ્રા.
૨૬૬	" (વચ્ચક)	"	સ્વલોકશરી	-	૩૪	સં. ૧૧૦૫ પ્રા.
૨૬૭	"	સંપૂર્ણ મૂલ	-	૧૯	"	સં. ૧૭૧૨ પ્રા.
૨૬૮	"	અપૂર્ણ	ટલો	૧૬	"	સં. ૧૫૮૫ પ્રા.
૨૬૯	લોહપત્ર ૧	સંપૂર્ણ	-	૪	"	સં. ૧૭૫૦ પ્રા.
	જાનેશ્વરની કથા	"	-	૮	"	સં. ૧૮૩૫ પ્રા.
	સત્યાવીર પઠાઈ ૩	"	-	૪	"	સં. ૧૧૪૧ આગસ્ટ શુદ્ધ (8)
	અનામક ૪	"	-	૫	"	સં. ૧૧૩૫
	કલ્યાણ સંદિર સ્તોત્ર ૫	"	મૂલમાત્ર	-	૪	સં. ૧૮૨૦ પ્રા.
૨૭૦	મહામતોષાળ્ય વિધિ:	"	-	૩	"	સં. ૧૬૦૩ પ્રા.
૨૭૧	મહાકાવર સ્તોત્ર ૪૪ શ્લોક	"	મીમાનસુ ગાચાર્વ મેઘ (4)	૨૫	સંસ્કૃત	સં. ૧૭૫૬ વર્ષે નાથ (૬)મ
૨૭૨	" ૧	"	-	૪	"	સં. ૧૪૭૪ પ્રા.
	વૈરાગ્ય સ્વાધ્યાય ૨	"	-	૧	ગુર્જર	સં. ૧૮૫૨ વૈશાક વર્ષ (6)
	પાર્શ્વજિન સ્તોત્રાણિ ૩	"	-	૧૭	"	સં. ૧૮૫૮ પ્રા.
	પ્રત્યાચયાન ૪	"	-	૨	"	સં. ૧૮૮૦ પ્રા.
૨૭૩	મહાકાવર સ્તોત્ર મંત્રચંદ્ર પ્રયોગ	"	-	૪૮	સંસ્કૃત	સં. ૧૮૬૫ વર્ષે લિખિત
૨૭૪	મહાકાવર ટલો	"	ટલો ગુજ.	૮	"	સં. ૧૭૫૪ પ્રા.
૨૭૫	" ટલો	"	ટલો	૯	ભાષા	સં. ૧૮૧૫ પ્રા.
૨૭૬	" મંત્રચંદ્ર પ્રયોગ	"	-	૪૮	સંસ્કૃત	સં. ૧૧૪૪
૨૭૭	મગધવી સુત્ર	અપૂર્ણ	-	૯	માગધી	સં. ૧૮૫૧ પ્રા.
૨૭૮	માવના વિલાસ	"	-	૨	ભાષા	સં. ૧૮૦૮ પ્રા.

(1) વર્ષે અશ્વિની માસે શ્રેષ્ઠપક્ષે વિજયદશમી રવિવારે સ્તમ્ભતીર્થે (2) વર્ષે કાર્તિક કૃત્તિક ૧૨ દિને વસ્તુદરા મામે (3) શુદ્ધ ૫ શુદ્ધ ૧ ગામ મુઘદે મધ્યે છે. મોતીચંદ (4) મેઘસુદરાનામંત્ર પ્રાકૃત શાસ્ત્રલિપિ (5) પ્રાકૃત કારગટ શુદ્ધે મારગ-વર્ષા-વર્ષે લિખિત આમા મધ્યદે. જ્ઞાપિ મિહુજિ (6) વદ ૧ સોમે લિખિત જ્ઞાપિ જિવજો માલગી અંજારનગરે।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र।

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : JAIN DHARMA 21

विषय : जैनधर्म २१।

क्रमांक Serial No	ग्रन्थ नाम Name of the Work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
२७९	भावनार्थ प्रवचन उद्देशः	अपूर्ण	-	१०	संस्कृत	संवत् १७२३
२८०	भावविज्ञान चौबीसो	"	-	१	भाषा	सं. १७१६ प्रा.
२८१	भोगसार कथा १	संपूर्ण	-	१६	संस्कृत	सं. १८९० प्रा.
	गौतमकुल कथानक २	अपूर्ण	-	९६	"	सं. १८७६ ना कागण कृष्ण ७ चौबपुरे
	पुष्पसमु उद्यो ३	"	-	४	"	सं. १८०१ प्रा.
	खतुसरण ४	"	-	९	"	सं. १६२५ प्रा.
	दशठानां ५	"	-	१६	"	सं. १८४५ प्रा.
	उपदेश ६	"	-	३७	"	सं. १७१५
२८२	भोजन विच्छिन्नि	संपूर्ण	-	२	भाषा	सं. १७३६ प्रा.
२८३	मलयसुंदरी चरित १	"	-	८४	प्राकृत	सं. १८३५ आशो वद ८ गुप्त
	चंद्रास २	" मोहनविजय	-	७२	"	सं. १८६० प्रा.
२८४	मंडल प्रकरण मंडलप्रकरणपथि ३	" [संहित	संस्कृत टीका	१८	मागधी संस्कृत	सं. १८२९ वर्षे शाके (१)
२८५	मणिभद्राष्टक	"	-	१	"	सं. १८९९
२८६	महच्छल मलयसुंदरी चरित	"	-	८१	प्राकृत	सं. १८९१ वर्षे शाके (२)
२८७	महावीर स्तवन आदि	अपूर्ण समयसुंदर	-	२	"	सं. १७३९
२८८	"	संपूर्ण	-	१	"	सं. १७८५ मार्गशीर्ष वद (३)
२८९	महेश्वरी चक्रेश्वरी स्तुति	"	-	२	संस्कृत	सं. १८४५ प्रा.
२९०	माणिमद्रनो छंद १ यी ७ (४)	"	-	३२	प्राकृत	सं. १८५० प्रा.
२९१	माणिमद्रनो छंद १ (५)	अपूर्ण	-	३	"	सं. १९९७
२९२	माणिमद्रनो छंद	संपूर्ण	-	१	"	सं. १७०७ प्रा.
२९३	मानतुंग मानवती चरित	"	-	३३	"	सं. वर्षे पौष (६)
२९४	" रास	"	-	४९	"	सं. १८०९ ना वैशाख वद ६ मौस
२९५	" रास	"	-	१५	"	सं. १८११ प्रा.
२९६	मानतुंग मानव रास	"	-	४०	"	सं. १८३२ भावण वद ५ सुप
२९७	मुकामाला	"	-	२०	"	सं. १८६६ ज्येष्ठ वद ३ शुक्ल
२९८	मुक्तिमाला मुक्तावली	"	-	१७४	संस्कृत	सं. १७१४ वर्षे केशर विमलेन
२९९	मुनपतिकुचवी सेठी विचार १	"	-	३१	प्राकृत	सं. १८४९
	भावविषयी इलाकुमारचौ २	"	-	५	"	सं. १७२९ अषाढ शुक्ल ५ शुक्ल
	मोलाभद्र चौबई ३	"	-	८	"	सं. १७३९ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ५ मौस
	ऋषिदत्ता रास ४	"	-	२१	"	सं. १८७५ प्रा.
	सागरवत्त कथानक ५	"	-	१२	"	सं. १८७६
	राजर्षि खतुपरी ६	"	-	११	"	सं. १७२२ भावण शुक्ल ११
३००	मृगावती रास	" सप्तम्वद	-	१०	"	सं. १९७९ प्रा.
३०१	मृगावतीचरितमणा विचार १	"	-	४७	"	सं. १८८४ वर्षे
	नमदासुंदरी रास २	"	-	४७	"	सं. १८१८ महा वदी ७ शुक
	उत्तराध्ययन ३	अपूर्ण	टयो प्राकृत	७९	"	सं. १८८०
३०२	मोहरायनमित स्तवन	संपूर्ण दानविजय	-	५	"	सं. १७५८

(१) शाके १९९४ भावण वद ६ शनी सुरत मध्ये (२) शाके १७२८ भाव शुक्ल ३ मौस (३) वद ५ रात्री नर्मकोट मध्ये
(४) १ माणिभद्रनो छंद, २ पार्श्वनाथनो छंद, ३ गौतम स्वामीनो रास ४ देवचंद्रवारा विधि ५ मागजिक, ६ भावविषय कथनो,
७ पार्श्वनाथ स्तव । (५) १ माणिभद्रनो छंद २, अजितशक्ति स्तव (६) पौष शुक्ल ३ शनी राजपुरमासे ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्त लिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : JAIN DHARMA 21

विषय: जैनधर्म २१।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work Title	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
३०३	मोक्षमार्ग पत्रा (1)	संपूर्ण	-	५८	प्राकृत	संवत् १६१५
३०४	भौनपकादशी गणणु ज्ञान †	" असंविजय	-	५	"	सं. १८३६ चैत्र वद १३ पुषे
३०५	भौनपकादशी कथा [† पंचमी स्तवन	"	-	४	"	सं. १७९७ कार्तिक शुद्ध ११
३०६	" स्तुति	"	-	१	"	सं. १९१७
३०७	युगप्रधान तार्थिकोने पट	"	-	१	देवनागरी संस्कृत	सं. १८०२ विशाखपट-के ४
३०८	योगिणी स्तोत्र सर्वविघ्न *	" [विनाशान स्तोत्र	-	१	"	सं. १८७८ प्रा
३०९	रत्नत्रय जयपाल	"	-	२	मागधी	सं. १८८१
३१०	रत्नपाल रास	"	-	६३	प्राकृत	सं. १८९९
३११	" १	"	-	३९	देवनागरी प्राकृत	सं. १८११ वर्ष (2)
	" २	"	-	३५	"	सं. १८७९ प्रा.
	प्रियमल्लक रास ३	"	-	७	सं. १८०८	फागुन शुद्ध (3)
	आषाढमुनि चोपाई ४	"	-	१०	"	सं. १८७९ प्रथम आशु वद १
	शालिमदनो रास ५	"	-	३३	"	सं. १९३६ प्रा.
३१२	रत्नपाल रास	"	-	३०	"	सं. सं. १८९१ प्रा.
३१३	रायव्यस्तुति सूत्र	"	-	प्राकृत टबो ९६	मागधी	सं. १८११ प्रा.
३१४	रामयशः रामकथाजैनी ग्रन्थाय †	"	-	९९	प्राकृत	सं. १७८१ वर्षे शाके (4)
३१५	रामसानानी कथा [† १११९	"	-	३२	"	सं. १७५६ प्रा
३१६	रोहानो चोढाद्वयो	"	-	४	"	सं. १९०९ वर्ष
३१७	राजा रसालुनो चोपडो (9)	"	-	देवनागरी १९९	प्राकृत	सं. १८९६ ना वर्षे मिति (6)
३१८	लीलावती सुमति विद्यास रास	"	-	२३	"	सं. १८५९ वर्षे आषाढ शुद्ध ७ पुषे
३१९	वज्रराज हंसराज चरित्र	अपूर्ण	-	१८	"	सं. १७८५ प्रा.
३२०	वज्र स्वामी सजाय	संपूर्ण	-	१	"	सं. १८८९ प्रा.
३२१	वर्षमान जिनवेळ	"	-	४	"	सं. १७९१ पोष वद २ शुद्ध
३२२	वज्रज्वाला स्तोत्र	अपूर्ण	-	१०	"	सं. १७०३ प्रा
३२३	विक्रमादित्य चरित विष्णु रासो संपूर्ण	"	-	४९	"	सं. १६७८ प्रा.
३२४	विजयचंद्र चरित	"	टबो प्राकृत	७४	"	सं. १८९८ प्रा.
३२५	"	"	-	७	"	सं. १७०९ प्रा.
३२६	विजयसेनसुरि सजाय	अपूर्ण	-	१	"	प्राकृत सं. १६७९ वैशाख वद १ भौम
३२७	विनति	"	-	१५	"	पक्ष सं. १५१०.
३२८	विनयधेष्ठा कथा	"	-	४३	"	सं. १९१० प्रा.
३२९	विरहमाल	"	-	१७	"	सं. १७१५ ना माहा शुद्ध (7)
३३०	वार चरित्र (महावीर चरित्र	"	-	५	"	सं. १७३५ प्रा.
३३१	वीरस्तवन अक्षयण	"	-	१	"	सं. १८३० वर्षे कार्तिक शुद्ध १३
३३२	"	अपूर्ण सकलचंद्र	-	५	"	सं. १७०२ प्रा.
३३३	" विगेरे चार प्रथ	"	-	४	"	सं. १९०० प्रा [† भूषणप्राफुडे
३३४	वीरस्तुति नामाध्याय	"	प्राकृत टबो	४	मागधी	सं. १८०९ ना द्वि. भाद्र मासे ऋ+

(1) १ दशमअभ्ययन सुयगडा, २ आराधना, ३ चतुवरण, ४ द्विमुख चरित्र, ५ प्रस्ताविक, ६ सोतास्वाध्याय, ७ समगस्य स्तवन ८ गोडो पारनाथ स्तवन, ९ षडोवशमल, १० ठोऊनालीवात्रिषका, ११ शिखोपदेशमाळा, १२ हम्चोस्वाध्याय, १३ स्वाध्यायसमस्त, १४ वीरस्थानिक स्तवन, १५ उपवेशरूप रत्नकोश (2) वर्षे आशु शुद्ध १५ रवि हर्षविजयगणी मोडेवामास (3) शुद्ध १४ लि मोहनविजय आलणमने (4) शाके १९४६ वैशाख शुद्ध ९ शनि (5) १ राजा रसालुनी चोपडी पत्र २८, २, लीलावतीनो रास पत्र ३७, ३ मानदुंग मानवडीनो रास पत्र १००, ४ जीवापानीची पत्र ३, ५ गौतम स्वामीनो रास पत्र ९, ६ शनीश्वरीनो छंद पत्र २, ७ नेमनाथनो नवरसो पत्र ३। (6) मिति कार्तिक वरी १ शुनी लि. हाथीनो पाळणपुर मध्ये। पत्र ३८मा मिति छे (7) शुद्ध ७ पुषे अमरावाद मध्ये भौमचो।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
३३५	वीरस्थानक सपविधि	संपूर्ण	-	१	मागधी संस्कृत	१७८० प्रा.
३३६	वीरस्थानक आराधन	"	-	२	"	सं. १७९५ प्रा.
३३७	वैकुण्ठदेवो स्तोत्र १ भाग १	"	-	१	"	सं. १७०२ प्रा.
३३८	व्यवहार चूलिका [स्तोत्र १]	"	-	१	"	सं. १६२१
३३९	शुभजय तोर्यस्तुति	"	-	१	देवनागरी संस्कृत	सं. १८९८ प्रा.
३४०	अं-रीक्ष पार्श्वनाथ स्तुति:	"	-	२६	मागधी सं.	१६७३ प्रा.
३४१	शुभजय महात्म्य	अपूर्ण का घनेश्वर	-	१	संस्कृत सं.	१७५० वर्ष कागुल बदी ४
३४२	शांतिजिन स्तवन	संपूर्ण	-	१	प्राकृत पद्य सं.	१८९१ प्रा.
३४३	शांतिजिन कलश	"	-	१५	"	सं. १९४० प्रा.
३४४	शांतिनाथना रासनी प्रथमा	" [मि. रानी देवी-	-	२७३	" गुजराती अक्षर सं.	१७८९ प्रा.
३४५	शांतिनाथ रास	अपूर्ण रासविजय	-	३	देवनागरी प्राकृत सं.	१७३५
३४६	शांतिनाथ स्तोत्र	संपूर्ण	-	२	संस्कृत सं.	१९०५ वैश्व ११ नवरात्रीपुरे
३४७	शिक्षाशत दोषका	" हंसराज	-	२	प्राकृत सं.	१८८९ प्रा.
३४८	शांतलज्जिन पूजा	"	-	२	संस्कृत सं.	१५९७ प्रा.
३४९	शेषाभस्तवन	"	-	५	मागधी सं.	१८०५
३५०	आद्य साधु आलोचन	"	-	१	प्राकृत सं.	१८९१ प्रा.
३५१	आयकना पटिकमणो ठवो.	"	प्रकृत ठवो	१७	मागधी सं.	१९६५ प्रा.
३५२	आयकाचार दिशि	अपूर्ण	-	७६	देवनागरी हिंदीपद्य सं.	१७३२ प्रा.
३५३	आयकना अतिचार	संपूर्ण	-	८	प्राकृत सं.	१७४० प्रा.
३५४	आयक प्रतिफलन सूत्र	"	-	१	मागधी सं.	१८०५ वर्ष आ शु ११ रात्री
३५५	आयककरणो सजाय	" जिनहं	-	१	प्राकृत सं.	१८७९ प्रा.
३५६	आयक केवलीना रास आनंद	" [मि. दिर नामनो-	-	२४१	" पद्य सं.	१९३८ ना गेहवरी (१)
३५७	श्रीपाल चरित	"	-	१९	संस्कृत सं.	१८८५ वर्ष मागधी (२)
३५८	आपटल रास	"	गुज टवो	२	गुजराती सं.	१८७९ प्रा.
३५९	श्रीपाल राजानो चरित्र बालावो	"	-	५०	" सं.	१९३१ नाके (३)
३६०	श्री रास सभयः जिनोपि वंमहः	"	गुज टवो	२०	मागधी सं.	१९५८ प्रा.
३६१	श्रीस्तेन ऋषभदेवजी स्तुति	" रत्नाकरधरि	"	५	संस्कृत सं.	१८४३ प्रा.
३६२	आसोच्छवाल फल	"	-	१	प्राकृत सं.	१८८९ प्रा.
३६३	पट्टदर्शन समुच्चय	"	-	१	देवनागरी संस्कृत सं.	१५१९ प्रा.
३६४	पट्टभावश्यक बालवो	"	-	३३	प्राकृत सं.	१६४० प्रा.
३६५	पट्टावश्यक वृत्ति	अपूर्ण	-	१०	संस्कृत प्राकृत सं.	१९३९ प्रा.
३६६	पट्टावश्यक रास	"	-	१३	प्राकृत सं.	१८१७ प्रा.
३६७	पट्टशोतिक कर्मग्रंथ	संपूर्ण	-	९	मागधी सं.	१८३१ प्रा. वर ३
३६८	पट्टावश्यक डालिया	"	-	१४	प्राकृत सं.	१८७९ ना वैश्व वीणा बदी ४
३६९	सकलास्तवन	"	-	२	संस्कृत सं.	१७३५ प्रा. [११ वार मौजे
३७०	सकलास्तुत स्तोत्र	"	-	१	" सं.	१७१९ प्रा.
३७१	समग्रपद्यवृत्ति उत्तमाक्षरा:	" देवनागरी प्रमाण १-००	-	१५	" सं.	१५०८ वर्ष मागधी (४)
३७२	समग्रपणी सूत्र	"	-	१४	मागधी सं.	१९१९ प्रा.
३७३	" टवो	"	- टवो प्राकृत	३३	देवनागरी मागधी सं.	१८३१ प्रा.

108-00000000000

(१) वरी १४ पुणे मुचद बंदरे पुरो धवो (२) मागधी पुण्य नदम्य मिमामा नदरे (३) मागधी १७९६ कागुल बदी १०५
गुज (४) मागधी १५ पुणे श्री विसरनगरे मिमामा नदरे

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રંથ મંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર ।

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: JAIN DHARMA 21

વિષય: જૈનધર્મ: ૨૧ ।

ક્રમાંક Serial No.	ગ્રંથ નામ Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પાનાણી No. of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ: Scribe & D te
૩૭૬	સંઘયણ સૂત્ર ચંદ્રોદય	સંપૂર્ણ	ટીકા પ્રાકૃત	૫૧	દેવનાગરી માગધી સં. ૧૮૧૨માર્ગશીર્ષ શુદી ૭ ચંદ્ર	
૩૭૭	સંઘયણી જંઘીપ સંઘયણી	"	"	૧૮	" સં. ૧૯૦૨ મા શુદ ૧	
૩૭૮	"	અપૂર્ણ	"	૧૩	" સં. ૧૯૧૧ પ્રા.	
૩૭૯	"	"	"	૧૦	" સં. ૧૯૩૧ પ્રા.	
૩૮૦	સંઘપદ્ધત્કસુત્ર	"	"	૧	સંસ્કૃત સં. ૧૭૦૪ વર્ષે માહા (1)	
૩૮૧	સંજાય	સંપૂર્ણ	"	૧	માગધી સં. ૧૯૧૧ પ્રા.	
૩૮૨	સત્તરમેશ	"	"	૭	" સં. ૧૯૧૪ કાર્તિક કૃષ્ણ ૧	
૩૮૩	"	અપૂર્ણ	"	૬	" સં. ૧૮૭૧ પ્રા.	
૩૮૪	સત્તરમેશ પૂજા	સંપૂર્ણ	"	૬	" સં. ૧૮૭૩ પ્રા.	
૩૮૫	સંધારા પોરસી	"	"	૬	" સં. ૧૯૨૧ પ્રા.	
૩૮૬	સત્તરમેશ	"	"	૧	સંસ્કૃત સં. ૧૭૬૮ પ્રા.	
૩૮૭	સમગ્રસન સંજાય	"	"	૧	પ્રાકૃત સં. ૧૮૦૪ પ્રા.	
૩૮૮	સમસ્તરણ (2)	"	"	૩૯	દેવનાગરી માગધી સં. ૧૦૨૦ વર્ષે (3)	
૩૮૯	સમસ્તરણ સંસઠ મેશ	"	"	૩	પ્રાકૃત સં. ૧૮૦૯ માર્ગશીર શુદ (4)	
૩૯૦	સમસ્તરણ સંજાય	"	જસોવિજય	૪	ગુજરાતી સં. ૧૮૧૪ કાર્તિક કૃષ્ણપક્ષે	
૩૯૧	"	"	"	૧	" સં. ૧૭૮૫ પા. શુ ૧૪ દિને કોટામધ્યે	
૩૯૨	સમયસાર નાટિક ટીકા (5)	"	ગુજ. ટીકા	૧૮૨	પ્રાકૃત સં. ૧૮૨૭ ના વર્ષે (6)	
૩૯૩	સમયસાર નાટિક	અપૂર્ણ	સંસ્કૃત ટીકા	૧૪૩	" સં. ૧૯૭૨ પ્રા.	
૩૯૪	સમયસાર પરીક્ષા	"	ગુજ. ટીકા	૬૭	માગધી સં. ૧૮૨૪ પ્રા.	
૩૯૫	સમયસાર કૌમુદી	સંપૂર્ણ	"	૨૯	સંસ્કૃત સં. ૧૮૪૩ વર્ષે મિતિ (7)	
૩૯૬	સલોકકથા શિશી કુચનાથ (8)	"	ટીકાકથી	૧	દેવનાગરી પ્રાકૃત સં. ૧૮૦૪ પ્રા.	
૩૯૭	સસારી જીવના પ્રકાર	"	"	૨૭	" સં. ૧૮૪૦ પ્રા.	
૩૯૮	સંધારાપોરસી સૂત્ર ટીકા	"	પ્રાકૃત ટીકા	૫૬	માગધી સં. ૧૮૬૫ પ્રા.	
૩૯૯	સાગરવૃક્ષનો રાસ	"	"	૪૩	ગુજ. પદ્ય સં. ૧૮૮૩ આસો શુ (9)	
૪૦૦	સ્તી ગુણવલી	"	"	૧૫	" સં. ૧૭૯૩ વર્ષે જ સો	
૪૦૧	સંઘરણ સૂત્ર પ્રવાસ ૫૦૦	"	"	૧૧	માગધી સં. ૧૭૯૪ પ્રા.	
૪૦૨	સંઘયણી સૂત્ર	"	"	૨૦	" સં. ૧૭૯૧ વર્ષે વાર મંગલ અષ્ટમી	
૪૦૩	સાગરવૃક્ષ કથા શ્લોક ૧૨૦૦	"	"	૧૨	પ્રાકૃત સં. ૧૭૬૧ વર્ષે આસો આસો (10)	
૪૦૪	સાતનાથકી	"	"	૧	" સં. ૧૮૯૩ પ્રા.	
૪૦૫	સિદ્ધ પ્રકરણ ટીકા ૧૧	"	સોમપ્રમાચર્ચ	૧૩	સંસ્કૃત સં. ૧૮૨૧ આસો શુદ (11)	
૪૦૬	" મૂલ	અપૂર્ણ	"	૪	" સં. ૧૮૩૫ વર્ષે મિતિ (12)	
૪૦૭	સિદ્ધચક્ર પૂજા	સંપૂર્ણ	"	૧	માગધી સં. ૧૭૩૧	
૪૦૮	સિદ્ધચક્ર પૂજા	"	જ્ઞાનશિલ્પ	૫	દેવનાગરી ગુર્જરી સં. ૧૭૩૬ પ્રા.	
૪૦૯	સિદ્ધાંત સારોચાર	"	"	૧૪	પ્રાકૃત સં. ૧૯૨૦	

(1) મશા શુદી ૧૫ ગુરો સંભાષી મધ્યે (2) ૧ પાર્થનાથ રતોત્ર, ૨ અજિતનાથ શાંતિનાથ સ્તવ, ૩ અજિતશાંતિજિન સ્તોત્ર, ૪ સમ્યાધિષ્ઠા સ્તોત્ર, ૫ ગુરુપારત્ર, ૬ વૃક્ષસ્મરણ, ૭ વૃક્ષસ્મરણ સ્તોત્ર (3) વર્ષે માર્ગશીર પાદે કૃષ્ણપક્ષે ચતુર્થી તિથી જ વાસરે શ્રી સાગ ચંદ્રશિખાવાળા વાચનાચાર્ય શ્રી શ્રી શ્રી ૧૦૮ સમયકલ્પગણિ ગણેશ્વાચી શિષ્યવા. કુશાભાઈ ઉચ્છિન્ન પં. નરચંદ્રમુનિના કેષ મુખાવલકા પુન્ય પ્રભાવિકા દેવગુરુ અધિકારિકા (4) શુદ ગુરો વક્ષીદિગ્વિજયગણિ રાજપુર (5) ટીકો પ્રસ્થાપ ૧૭૨૭ રચનાકાલ સંવત ૧૮૦૧ માદ્રવા વદિ વાહિ બોમ (6) વર્ષે માદ્રવ કૃષ્ણપક્ષે સત્તરી તિથી બોમવાસરે તત્ત તિથિ ચોરવ જી લલિત સેવક વેલજી સરપદકમાને રહીને લહુ કે (7) મિતિ કાર્તિક વદિ ૧૦ તિથી વંદ્રાસરે શિ. પં. રતોત્રાચ વિજયગાંધણા શ્રી ચંદ્રાવલનગરે (8) કુચનાથ સલોક શાંતિનાથ સલોક (9) શુદ ૧૦ શિ વેલગારેન રાજપુરમધ્યે (10) આસો શુદી ૧૦ શ્ર. વદમસી લિ વાલનગરી મધ્યે (11) શુદ ૪ ગુરો મુનરતિવરે શ્ર. મતશ્રી (12) દેવગુરુ વદિ ૫ શિ. મુ. મળપમવિજય વાનીપ્રામે ।

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્તલિખિત ગ્રંથ મંડાર, ગોંડલ-સૌરાષ્ટ્ર.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : JAIN DHARMA 21

વિષય : જૈનધર્મ : ૨૧।

ક્રમાંક Serial No.	ગ્રંથ નામ Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાણિ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ Language & Script	લેખક-મિતિ Scribe & Date
૪૦૮	સિદ્ધાંતસારની સર્ગાઈ	સંપૂર્ણ	-	૪	પ્રાકૃત	સંવત ૧૮૭૮ વર્ષે (1)
૪૦૯	સિમંધર ત્રિનસ્તવન	" યશોવિજય	-	૮	"	સં. ૧૮૭૧ પ્રા.
૪૧૦	"	"	-	૩	"	સં. ૧૭૩૨ વર્ષે જેઠ (2)
૪૧૧	"	"	-	૨	"	સં. ૧૬૧૧ પ્રા. સિરોહી મધ્યે
૪૧૨	"	" યશોવિજય	-	૬	ગુજ પથ	સં. ૧૭૬૨ વર્ષે પોષ (3)
૪૧૩	"	" ભાવવિજય	-	૧	"	સં. ૧૮૦૭ પ્રા.
૪૧૪	સુવર્ણ ચિલાત્ર લીલાવતી (4)	"	-	૧૪	"	સં. ૧૯૧૩ પ્રા.
૪૧૫	સુદ વિવાગો વિસેષ (5)	"	-	૪૪	માગધી	સં. ૧૯૬૪ પ્રા
૪૧૬	સૂક્તમાલા	"	-	૧૦	ગુજરાતી	સં. ૧૮૭૭ના વર્ષે મિતિ (6)
૪૧૭	સૂક્ત મુક્તાવલી	"	-	૭	સંસ્કૃત	સં. ૧૮૧૪ પ્રા.
૪૧૮	ગૃહકૃતંગ ટીકો (7)	અપૂર્ણ	ટીકો ગુર્જર	૮૮	માગધી	સં. ૧૯૧૨ વર્ષે પોષ (8)
૪૧૯	સૂર્યપ્રકાશ: પ્રત્યામ ૨૨૧૬ (9)	સંપૂર્ણ આનંદવિમલ સુરી	-	૨૦	વેવના. માગધી	સં. ૧૮૧૬ પ્રા.
૪૨૦	સુધમ ધિચારણા સાધન	" [સંસ્કૃત સજાવ	-	૩	સંસ્કૃત માગધી	સં. ૧૭૯૧ કાગુન વદ (10)
૪૨૧	સોમપ્રભવિરચિત્તા સ્તુતિ: X	અપૂર્ણ [Xસંસ્કૃતમાક્ષરા: સુક્ષ્મા:-	-	૯	માગધી પ્રાકૃત	સં. ૧૪૯૪ વૈશાક શુક્ર (11)
૪૨૨	સ્તવનાર્તિ (ચોપડ)	સંપૂર્ણ	-	૧૨૦	આધાપથ	સં. ૧૭૯૭ આષાઢ (12)
૪૨૩	સ્તવન સર્ગાઈ સંગ્રહ ચોપડો ૨	"	-	૬૦	"	સં. ૧૭૩૫ પ્રા.
૪૨૪	"	"	-	૧૫	"	સં. ૧૭૦૮ આશ્વિના શુદ્ધ ૫
૪૨૫	જૈનસ્તુતિ ૧૩ પ્રકર: ૧ ઓષધ (13)	"	-	આંશરે ૩૦૦	ગુજરાતી	સં. ૧૭૯૯ આશ્વિન વદિ ૧૦ મૌવ
૪૨૬	સ્તુતિ સર્ગાઈ સંગ્રહ	"	-	૧૦	આધા	સં. ૧૮૫૦ પ્રા.
૪૨૭	જૈન સ્થોત્રાણિ	"	-	૫૮	"	સં. ૧૯૪૭ કાગુન વિદિ (14)
૪૨૮	સ્થૂતપદ્મ સ્તુતિ	"	-	૧૦	"	સં. ૧૮૨૮ પ્રા.
૪૨૯	સ્થવીરાચારિ:	"	-	૨	"	સં. ૧૭૯૦ પ્રા.
૪૩૦	સ્નાન પૂજા: ધિ:	"	-	૧૨	"	સં. ૧૭૯૦ પ્રા.
૪૩૧	સ્વાદ્યાદિગમિત ચીરસ્તવ	" વિનયવિજય	-	૫	આધાપથ	સં. ૧૭૩૨ પ્રા.
૪૩૨	સ્તુતિ સંગ્રહ: સ્તોત્ર, છંદ	"	-	૫૪	"	સં. ૧૮૭૨ના પોષ શુદ્ધ ૫ પ્રાકામધ્યે
૪૩૩	હંસરાજ વછરાજ ચોગાઈ	"	-	૨૬	"	સં. ૧૭૩૪ વર્ષે (15)
૪૩૪	દિતશિશ્ના સર્ગાઈ	"	-	૨	ગુજરાતી	સં. ૧૮૭૪ પ્રા.
૪૩૫	ક્ષમા વધોદ્યો તથા ક્ષમા છત્રીશી*	"	-	૪	"	સં. ૧૮૭૨ પ્રા.
૪૩૬	ક્ષેત્ર સમાલવૃત્તિ: [સર્ગાઈ	" હરિભદ્રસુરિ	-	૮	"	સં. ૧૮૮૫ પ્રા.
૪૩૭	જ્ઞાતાસુત્ર	"	ટીકો ૩૧૭	માગધી ગુજરાતી	સં. ૧૯૧૪ વૈશાક ૧૦ શુદ્ધ ૧૦ શનિ	
૪૩૮	"	અપૂર્ણ	ટીકો ૨૩૭	"	સં. ૧૮૪૫ પ્રા.	
૪૩૯	" (જ્ઞાતાપદ્મ કથા)	સંપૂર્ણ	-	૧૦૫	મૂલ માગધી	સં. ૧૭૩૧ આષોઢ શુદ્ધ (16)
૪૪૦	" ૧૧ અધ્યયન	"	-	૧૬૦	મૂલ	સં. ૧૭૪૪ પ્રા.
૪૪૧	"	અપૂર્ણ	ટીકો ૧૫	"	સં. ૧૮૮૫ પ્રા.	
૪૪૨	જ્ઞાનપદ્મી	સંપૂર્ણ	-	૪	"	સં. ૧૯૧૧ પ્રા.

(1) વર્ષે અગાડ શુદ્ધ ૧ લે. હાથીચંદ મલ્હાદિનગર (2) જેઠ શુદ્ધ ૮ શનિ મુનિપુષ્પ વિજયગણી (3) પોષ વદિ ૧૩ મૌવ શ્રાવિકાત્રેશ્વરિ પઠનાથ (4) લીલાવતી રસિ પ્રત્યામ ૪૩૧ (5) વિસેષ જહંચા રસ્તાવિપાક થુનસુદ પ્રત્યામ ૧૯૫૦ (6) મિતિ કાલગુન ૨૧ ૫ દને લે. હાથીચંદ (7) ટીકો સમગાહાનામાધ્યયન સમસ્ત સુચક ગંગાનું અગસમ્પ. પદ્મ સ્વસ્તક ૩૬ સમ અધ્યયન સમસ્ત (8) પોષ શુદ્ધ ૧૩ શુદ્ધ લિખત શ્ર. પંચાયણ અહિમશ્વાદ નગરે લિખ (9) ૧૨૧૬ વદ પ્રકાશ: પ્રત્યામ ૧૮૫૪ (10) વદ ૪ મુગુ નૂતનનગરે લિખત ક્ષમા: આંશરે (11) શુક્ર જિનકથાનકનો લેખક આ છે (12) આષાઢ અશ્વિનપક્ષે ૮ શનિ લે ૫. જિનશ્ચિગ (13) ઓષધ. તંત્ર. ૪મ વંશ દ્વારા નાચીકેર પ્રયોગ મુલક ચોપડી આંશર છે (14) વિદિ ૧૨ રાત્રી રાત્રિકોટ મધ્યે શ્ર ગોવાલજી (15) વર્ષે આશ્વિના શુદ્ધ ૧૫ શનિ મુનિ મનોહર રામપુરા નગરે (16) શુદ્ધ ૮ રવિ લિ. મુનિ દુષ્કમુદ્ધ વિજાનેર મધ્યે ।

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રન્થ ભંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : JAIN DHARMA 21

વિષય : જૈનધર્મ ૨૧।

ક્રમાંક	ગ્રન્થ નામ	કર્તા Author	ટીકા	પત્રાણી	ભાષા-લિપિ:	લેખક-મિતિ:
Serial No.	Name of the work Title	સંપૂર્ણ-અસંપૂર્ણ Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Date
૪૪૩	અંજન:સુદરી ચરિત્ર	સંપૂર્ણ	-	૨૯	દેવનાગરી	ગુજરાતી સંવત ૧૭૧૪ વર્ષે (1)
૪૪૪	અંતગડ પદ્યાંગ સુત્ર ઉત્તમાક્ષર	"	-	૧૬	માગધી	સં. ૧૬૮૧ પ્રા.
૪૪૫	આત્મવોષ સ્વાધ્યાય	"	-	૧	ગુજર સં.	૧૮૪૫ પ્રા. શ્રદ્ધ. પોતાંબર
૪૪૬	દ્વિવિસ ટાળાં ટલો	"	ટલો ગુજર	૭	માગધી	સં ૧૭૪૨ વૈશાખ શુદિ ૨ રવિ
૪૪૭	દ્વિવિવપરાજય શતક ટલો	"	-	૧૨	"	સં ૧૬૯૮ માગધી સં શુદ ૭ ગુરુ
૪૪૮	ઉત્તરાધ્યાયન સુવરકાધ્યાય ઉત્તમાક્ષર	"	-	૩૦	"	૧૬૧૮ પ્રા.
૪૪૯	ઉત્તરાધ્યાયન પીઠિકા (2)	"	-	૧૦૧	"	સં. ૧૯૧૦ પ્રા.
૪૫૦	કરપલ્લ ટલો	"	ગુજર ટલો	૧૨૬	"	સં. ૧૮૨૦ વર્ષે (3)
૪૫૧	કાલિકાચાર્ય કથા	"	-	૧૩	પ્રાકૃત	સં ૧૮૪૪ શકે (4)
૪૫૨	કુટલાર-સહાવોચાચ	"	-	૫	"	સં. ૧૮૭૦ આશો વદ (5)
૪૫૩	કુર્માગુપ્ત કેવલી ચરિત્ર ટલો	"	ગુજર ટલો	૩૭	માગધી	સં. ૧૮૧૦ કાર્તિક ૫ રિ (6)
૪૫૪	મજસુકમાલકથા સુક્ષ્મ-ઉત્તમ અક્ષર	"	-	૮	પ્રાકૃત	સં. ૧૦૩૨ વર્ષે (7)
૪૫૫	મમાનવનુ વિચાર (8)	"	-	૧૨	દેવનાગરી ગુજર સં.	૧૮૩૭ પ્રા.
૪૫૬	માયા-અધ્યયન	"	-	૨૦	"	સં. ૧૯૪૦ પ્રા.
૪૫૭	મોરસનાથ જોગ પાવલી	"	-	૩	"	સં. ૧૭૧૮ ફાલગુન શુદ ૨
૪૫૮	ચૈત્યવંશ	"	-	૧	સંસ્કૃત	સં. ૧૮૩૯
૪૫૯	ચૌવિશ ચૌક	"	-	૭	ગુજર	સં. ૧૮૮૦ વૈશાખ ૧૬ (9)
૪૬૦	છત્રીવળી મા ટલો	"	ગુજર ટલો	૧૬	માગધી	સં. ૧૭૯૦ પ્રા.
૪૬૧	જંબુચરિત્ર ટલો	"	"	૬૫	"	સં. ૧૮૯૦ પ્રા.
૪૬૨	જંબુદોષ ઘણન	"	"	૧૨	પ્રાકૃત	સં. ૧૯૩૫
૪૬૩	ઝિતારિનુપ રાક્ષ ઉત્તમાક્ષર	"	"	૭	"	સં. ૧૮૧૪
૪૬૪	હોહામારની સજાઈ	"	"	૨૩	ગુજર	સં. સં. ૧૮૧૧ના વર્ષે (10)
૪૬૫	તીર્થમાલા	"	"	૧૦	"	સં. ૧૮૭૧ના વૈશાખ વદી (11)
૪૬૬	ત્રેવિશપદવીની સજાઈ	અસંપૂર્ણ	"	૪	"	સં ૧૭૨૦ પ્રા
૪૬૭	દેશના શતક ટલો	સંપૂર્ણ	ગુજ ટલો	૫	માગધી	સં. ૧૭૮૧ પોષાદ ૧૧ શ્રદ્ધ મુહત્તજી
૪૬૮	નલરાજાવંશ ચરિત્ર	" [ઉત્તમાક્ષર પ્ર. ૪૫૫	-	૧૪	પ્રાકૃત	સં. ૧૫૨૦ પ્રા
૪૬૯	નવશર વાલાવબોધ ૧ પત્રેચિત્ર	" [ઉત્તમલિપિ	-	૧૦	દેવનાગરી પ્રાકૃત	સં. ૧૭૩૫ આશોમાસે (12)
૪૭૦	પદ્મકમળ:સુત્ર ટલો	"	ગુજ. ટલો	૧૬	માગધી	સં. ૧૮૭૨ ફાલગુન શુદ ૧૩ જીર્ણીર્વા ૨
૪૭૧	પર્વપનાદિક વ્યાખ્યાન	અસંપૂર્ણ	ગુજ. ટલો	૧૨	"	સં. ૧૭૩૧ વર્ષે આશ્વિ ૬ શુક્રે
૪૭૨	પાશ્વનાથ સ્તોત્ર	સંપૂર્ણ	-	૧	પ્રાકૃત	પથ સં. ૧૮૮૦
૪૭૩	પ્રતોત્તર	"	-	૩૦	ગુજરાતી	સં. ૧૭૭૬
૪૭૪	વજિયા સટકો સજાઈ	"	-	૪	મવા	સં. ૧૮૬૮ કાર્તિક વદ ૧૩ શિવચંદ
૪૭૫	વધકાષ્ટક	"	-	૫	"	સં. ૧૮૩૩ના વર્ષે (13)
૪૭૬	વારમતની કથા	"	-	૭	ગુજરાતી	સં. ૧૮૭૦ પ્રા.
૪૭૮	વોષક વોહા	"	-	૯	"	સં. ૧૮૫૯ પ્રા.
૪૭૯	"	"	-	૪	"	સં. ૧૮૭૧ પ્રા.
૪૮૦	વાલીશ અન્યથામનંત કોથ	"	-	૧	પથ	સં. ૧૭૮૮ પ્રા.

(1) વર્ષે ચૈત્ર ૧- રવિવાસરે શ્રી માંડવી નંદરે (2) પીઠિકા ઉત્તરાધ્યાયન સુત્રની કથા પ્રત્યાપ ૪૧૫૦ (3) વર્ષે વૈશાખમાસે શુક્રવસ્ત્રે
ચંદ્રનાગામ વમલ મધ્યે માગધી લિપિ લિખિત (4) શકે ૧૭૦૯ આશ્વિ ૧૬ ૧ લિ. બિનોદચંદ્રિણિ કંદોલનામાસે (5) વદ ૧૨ શ્રદ્ધ. પાનાચંદ
(6) વર્ષે ૮ કુજે ધાનિક્ય ત્રિવિધ શિષ્ય ગુપ્તાન વિજય (7) વર્ષે આશ્વિ વદ ૨ શ્રદ્ધ. જી ગઝી (8) ત્રિચાર કૌષ્ઠક ૨૪ મગધી શતક
૨૦ મમાનવ સજાઈ (9) વદ ૭ સાદહીમામ શ્રદ્ધ. હાથીની (10) વર્ષે આશ્વિ શુદી ૧૩ શુધે શ્રી રાણપુર મધ્યે કુળ્લજી લિ.
(11) વર્ષે ૩ લાંચત પં. ચંદ્રવિજય (12) માસે શુદ ૧૦ રવિ લિ. રત્નવાઈ (13) વર્ષે વૈશાખ શુદ ૨ શુક્ર રાણપુર મધ્યે।

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રન્થ મંડાર, ગોંડલ-સારાંગદ્રી

SRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : JAIN DHARMA 21

વિષય : જૈનધર્મ ૨૧ પરિશિષ્ટ

ક્રમાંક Serial No	ગ્રન્થ નામ Name of the Work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અસંપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પાનાણ No. of Leaves	માધ્યમ-લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ: Scribe & Date
૪૮૧	મરહ ચરિત	સંપૂર્ણ	-	૩	માગધી લખત ૧૮૧૦ પ્રા.	
૪૮૨	અકામર સ્તોત્રસ્ય વાર્તા ભવચૂરિ	"	ગુજરાતી	૯	સંસ્કૃત સં. ૧૮૭૧ પ્રા.	
૪૮૩	" બાલાવલોચ કથા	"	"	૨૩	" સં. ૧૯૦૧ના વર્ષે મા. શુદ્ધ ૫ ગુર	
૪૮૪	" મૂલમાત્ર	"	-	૫	" સં. ૧૮૫૦ પ્રા.	
૪૮૫	" મહાવીરનો સત્રાઈ	"	-	૩	ભાષા સં. ૧૭૭૧જ્યેષ્ઠ વ. ૧૧ ગુરોવિક્રમનગરે	
૪૮૬	માઘવાનલની ચોપાઈ	"	-	૧૫	ગુજ. પથ. સં. ૧૭૧૭ વર્ષે કા. શુદ્ધ ૧	
૪૮૭	માનતુંગ માનવતી ચરિત્ર	"	-	૩૧	" સં. ૧૮૧૨ મિતિમાષ વદિ (1)	
૪૮૮	મુક્તાવલિ:	"	-	૧૨	પ્રાકૃત સં. ૧૭૪૨ આસો શુદ્ધ (2)	
૪૮૯	મુનિપતિ ચરિત્ર ટલો	"	ગુજ. ટલો	૫૫	લેખના. માગધી સં. ૧૮૫૧ વે. શુદ્ધિ. (3)	
૪૯૦	યતિ પ્રતિકમણ સુત્ર ટલો	"	"	૨૪	માગધી સં. ૧૮૫૦	
૪૯૧	યોગરીપ	"	-	૧૫	ગુજરાતી સં. ૧૮૨૬ વૈશાલ વ. ૧૩ સોમે	
૪૯૨	રત્નચૂડની ચોપાઈ	"	-	૧૧	" સં. ૧૮૨૧ પ્રા.	
૪૯૩	રાજા ચંદનેરાસ	"	-	૭૦	" સં. ૧૭૮૨ વર્ષે પોષ શુદ્ધ ૫૨વિ.	
૪૯૪	રાત્રિ મોક્ષન સત્રાઈ	"	-	૩	" પથ સં. ૧૯૧૧ પ્રા.	
૪૯૫	રાસ યોગક	"	-	૪	" સં. ૧૮૩૭ પ્રા.	
૪૯૬	લીલાવતી રાસ	"	-	૧૧	" સં. ૧૮૦૫ કાર્તિક શુદ્ધ ૧૪વર્ષે	
૪૯૭	લીલાવતી રાસે વિક્રમાદિત્ય ચરિત્ર	"	-	૧૦	" સં. ૧૮૩૧ પ્રા. [સંક્ષિપ્ત વર્ણન]	
૪૯૮	" શ્રીધેન ચરિત્ર	"	-	૩૫	" સં. ૧૭૬૨ જ્યેષ્ઠ શુદ્ધી (4)	
૪૯૯	લીલાવતી રાસ	"	-	૩	" સં. ૧૮૭૧ પ્રા.	
૫૦૦	વિક્રમાદિત્ય લીલાવતી	[વિક્રમસેન ચતુરપદી-	-	૪૨	" સં. ૧૭૬૪ વર્ષે પોષ વદી (5)	
૫૦૧	વિચાર ચોખટી	"	-	૪	" સં. ૧૮૪૫ લિ. ચોખાળી	
૫૦૨	વિમલમંત્રી મનોહર પ્રગટ પ્રવંશ	"	-	૫૧	પ્રાકૃત સં. ૧૭૭૧ પ્રા	
૫૦૩	ચાલિમદ્દ રાસ	"	-	૧૨	લેખના ગુજ. સં. ૧૭૧૫ વર્ષે (6)	
૫૦૪	" નો કલોકો	"	-	૫	" સં. ૧૮૮૧ના વર્ષે (7)	
૫૦૫	ગુજરાત કથા પ્રવં. ૪૧૧	"	-	૧૭	સંસ્કૃત સં. ૧૮૧૦ પ્રા.	
૫૦૬	શિલાધિકાર રાત્રીકુલ	"	-	૨	માગધી સં. ૧૮૧૧ પ્રા.	
૫૦૭	પટ્ટિશત ઉત્તમલિપિ પ્રાચીન	" મંડારી નેમચંદ્ર-	-	૭	" સં. ૧૫૨૧ વર્ષે કા. વ. ૨ રિતે	
૫૦૮	સઘવટો જિનસ્તવ	"	-	૧૦	" સં. ૧૮૦૪ કાશ્મીર શુદ્ધ ૧૨	
૫૦૯	સંઘારો કરાવ્યાનો વિધિ	અપૂર્ણ	-	૩૧	" સં. ૧૮૫૦ વર્ષે આ. વ. ૮ રિતે	
૫૧૦	સત્રાઈ સંપ્રદ	"	-	૮	" સં. ૧૯૨૩ના વૈશાલ વ. ૧ કામલીપ્રામે	
૫૧૧	સુરેશ્વરજ્ઞાન	સંપૂર્ણ ચરણદાસ	-	૧૮	" સં. ૧૯૪૧ પોષ વદિ ૧	
૫૧૨	સહસ્રસિદ્ધકુમાર ચતુરપદી	[પ્રથમ ૧૫૦ શ્લોકો- ૨૨૫	-	૨૨	" સં. ૧૮૧૭ પ્રા.	
૫૧૩	સાઠીયેલ ત્રી સત્રાઈ	"	-	૪૩	" સં. ૧૮૭૬ વર્ષે ચીતલ મળ્યે	
૫૧૪	સ્તંભનક પાશ્વનાથ નમસ્કોર	" ટલો	-	૪	મૂલ માગધી સં. ૧૯૨૩ વર્ષે આસો (8)	
૫૧૫	સ્થૂલમદ્દનો શોયલવેલી	"	-	૫	" સં. ૧૮૭૬ વર્ષે આશુ શુદ્ધ ૧	
૫૧૬	સાચકવંદના	"	-	૧૨	" સં. ૧૯૧૦ પ્રા.	
૫૧૭	દલિયલ ચરિત્ર	" પં. ગુણવિજયગણિ-	-	૭૨	પ્રાકૃત પ્રવંશ સં. ૧૮૧૭ના વર્ષે (6)	
૫૧૮	દંતવલ્લ ચોપાઈ	"	-	૨૧	ગુજરાતી પથ સં. ૧૭૨૩ વર્ષે કા. ૫ ગુર	
૫૧૯	દંતરાજ વલ્લરાજ ચોપાઈ	"	-	૨૫	" સં. ૧૭૯૧ વર્ષે (10)	
૫૨૦	ક્ષેત્રમાસ	" ટલો	-	૧૬	" સં. ૧૭૧૯ના વર્ષે (11)	
૫૨૧	"	" ટલો	-	૧૬	મૂલ માગધી. ૧૭૪૫ પ્રા.	
૫૨૨	જાનપંચમી સ્તુતિ:	"	-	૬	" સં. ૧૮૫૬ પ્રા.	

(1) વદિ ૧૧ શુક્ર કૃત્તિકા મળ્યે (2) શુદ્ધ ૧૨ મુલે લિ. હરદયસંગમિ (3) શુદ્ધ ૨ શુક્ર બોધારાત્રી નગરે (4) શુદ્ધ ૧૨ સોમે સુદ ૧૦ પ્રામે લિ દામજી (5) વદી ૨ રવિ વિજયનાથરે (6) વર્ષે આશ્વિનમાસે કૃત્તિકા ૧૦ સૌમ્ય જ્ઞ. દેવચંદ્રી (7) વર્ષે વિજય સુદ ૧૦ લિ. હાથીચંદ્રી વિક્રમપુરે (8) આસોજ શુદ્ધ ૧૧ મહીમનગરે લિ. હંસકર્તિગણિ (9) વર્ષે વગલોચ મળ્યે શુક્રવત્સ ૭ રતી પ્રથમ મહદે કનકાવતી નગર્યાં (10) વર્ષે કાર્તિક શુદ્ધ ૫ ગુર વલ્લભપુરે (11) વર્ષે આશ્વિન વદિ ૨ સં. ૧૮૧૭ મળ્યે લિ. અર્જાતી જ્ઞ. બો. ૬ કાન્દાર્પિણી.

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્તલિખિત ગ્રંથ ભંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: GUJARATI 22

વિષય: ગુજરાતી ૨૨.

ક્રમાંક	ગ્રંથ નામ	કર્તા Author	ટીકા	પત્રાણિ	ભાષા- લિપિ:	લેખક-મિતિ :
Serial No.	Name of the work (Title)	સંપૂર્ણ-અસંપૂર્ણ Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Date

ગુજરાતી ૨૨.

૧	અધ્યાત્મ કલ્પદ્રુમ જૈનધર્મજ્ઞસારિ	સંપૂર્ણ [અધ્યાત્મજ્ઞાન]	ગુજરાતી	૫૫	દેવના. ગુજરાતી સંવત ૧૮૫૩ વર્ષે શાકે (1)
૨	અનેકાર્થી નામમાળા	"	-	૬૫	ગુજ. લિપીગુ. ભાષા સને ૧૯૧૧ તા. (2)
૩	અંબોજીની સ્તુતિ	" નાથમદાન	-	૮	" સં. ૧૮૮૫ના આ. વર(3)
૪	અંબા સ્તુતિ	"	-	૨	" સં. ૧૮૯૯ પ્રા.
૫	અશ્વય ગીતા અજ્ઞાની બાળી	"	-	૨૨	દેવના. ગુજરાતી સં. ૧૯૧૧ ડા.
૬	આંકની ચોપડી	"	-	૨૦	ગુજરાતી સં. ૧૮૧૫ પ્રા.
૭	ભારતી સ્તુતિ	"	-	૨	દેવના. ગુજરાતી સં. ૧૯૧૫
૮	હાલાર્ણા પ્રશ્ન-ઉત્તર	"	-	૧	" સં. ૧૯૩૫
૯	પ્રકાશનો મહાત્મ્ય	" કૃષ્ણદાસ	-	૨૩૫	" સં. ૧૯૧૩ના વે. વર(4)
૧૦	ઓચાહન રચનાકાલ (5)	" મટ પરમાણંદ	-	૯૯	" સં. ૧૯૩૧ પ્રા.
૧૧	"	" મટ પ્રેમાનંદ	-	૪૭	" સં. ૧૯૦૫ના વર્ષે (6)
૧૨	"	" "	-	૬૮	" સં. ૧૯૦૮ના શાકે (7)
૧૩	કર્મ કથા	"	-	૩૦	" સં. ૧૯૨૨
૧૪	કીર્તન ઘોઠની પ્રકીર્ણ ચોપડી	"	-	૫૦	ગુજરાતી સં. ૧૮૮૮ રચાદિ
૧૫	કીર્તન ઘોઠ રાગરાગીની	"	-	૩૧૬	" સં. ૧૯૦૫ પ્રા.
૧૬	"	"	-	૧૬૫	દેવના. ગુજરાતી સં. ૧૯૧૦
૧૭	કીર્તન ઘોઠપદ	"	-	૩૦	" સં. ૧૯૨૦
૧૮	કૃષ્ણ સ્તુતિ પદાણાં	"	-	ઓઢીયું	" સં. ૧૮૯૮ પ્રા.
૧૯	ગરવા માતાના	"	-	૫૦	ગુજરાતી સં. ૧૯૪૦ના આ. વર(૧૨)
૨૦	ગરવા ઘોઠ	"	-	૩૫	" સં. ૧૯૪૦ [પત્ર ૪૦લિ]
૨૧	ગરબો પદ ઘોઠ (8)	" દયારામ	-	૧૪૫	દેવના. ગુજરાતી સં. ૧૮૯૮ પ્રા.
૨૨	ગરબ પુરાણ રચનાકાલ (9)	" ગોરબન	-	૫૧	" સં. ૧૮૪૪ વર્ષે (10)
૨૩	મગધ ગીતા ૧૮ અધ્યાય (11)	" મૂલશાસ્ત્ર	-	૭૪	" સં. ૧૮૨૦ દેવાસ કૃષ્ણપ્રેમચંદ્ર
૨૪	"	"	-	૨૫૦	" સં. ૧૮૧૧ પ્રા.
૨૫	અંબોપાઠ	"	-	૪૫	" સં. ૧૯૩૦ શાકે (12)
૨૬	" સાર	અસૂર્ણ શ્રીધર રચિત	-	૬	" સં. ૧૮૮૦ના આ. શુદ(13)
૨૭	" દેવીકથા	સંપૂર્ણ	-	ઓઢીયું	" સં. ૧૯૩૨ પ્રા.
૨૮	ચંદ્રચરિત્ર ૧, સાધુવંદના ૨ *	"	-	૧૨૨	" સં. ૧૮૮૮ વે. રચિ (14)
૨૯	ચૌક ૬ [ઉત્તમાક્ષર]	"	-	૩	" સં. ૧૯૧૫
૩૦	જૈનમો સ્તુતિ વગેરે	"	-	૭૫	" સં. ૧૮૫૧ વૈદ્ય શુદી
૩૧	"	"	-	૪૩	ગુજરાતી લિપી સં. ૧૮૮૧ પ્રા.

(1) શાકે ૧૭૧૯ વર્ષે માને કલ્પન શુદ ૪ રવિવાસરે શ્રેષ્ઠ મંત્રીદે પં. મિત્રવિજય લિ. (2) તા. ૧૭ જીએન્દ મંગલવાર (3) વર ૩ સામે લે માંજળી કચ્છો (4) વર ૧ ગુપે સુદામાપુરી મધ્યે જોલો મોરારજી, મગધામી (5) રચનાકાલ સંવત ૧૮૧૨ કાર્તિક શુદ્ધપક્ષ (6) વર્ષે ચૈત્ર શુદ ૯ શુક્ર શ્રી કચ્છ મધ્યે લિ. રવે પ્રા. જીવન (7) શાકે ૧૭૭૧ના આશાઠ શુદી ૪ને સામે મુંબઈ મધ્યે જોશી સીમજી (8) ૧ ગરબી મહીદાસની, ૨ ગરબી રાણા ૨ કોષન મનને મપડો, ૫ વંદની વીવા રચાદિ (9) રચનાકાલ સંવત સત્તર ને વર્ષે વૈશિષ્ઠ્ય જ્યેષ્ઠમાસ અંબાલી વીજી શુદિજોગ આશિસવાર, પ્રા. મોરારજી મગધાના નાત (10) વર્ષે માધ્વપદ માસે શુદ્ધપક્ષે તિથી ૧૨ શશિવાસરે, સંવત સત્તર ચૌત્રીસો, પૂર્ણ મન્દ અપાર. યોદ્ધાકાલ અંબાલીનું તથ્ય ચીત્ર રચિતાર. પૂર્ણ કથા પરિશ્રમતણી રચી ગોવરધનસાર(11) ૧૮ અધ્યાય પદ્ય સંવત અઢર સુદ વેશાસ. માકનો કોલો પરકાશ : સોમવતી દ્વાદશી આશા માસ, કવિતાવાળી કંદે મુલદા (12) શાકે ૧૮૦૨ વે. રચ. શ્રી ૫ શુદ તારીલ ૧૯ ની બાન્ધુધારી સને ૧૮૮૧ (13) શુદ ૧૧ ગુપે નવાનગર મધ્યે મટ ઓ માચકી (14) વિર ૧૨ સનેડ લખેલ દોલો નથુ બારતી.

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રન્થ મંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : GUJARATI 22

વિષય : ગુજરાતી ૨૨.

ક્રમાંક Serial No.	ગ્રન્થ નામ Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અસંપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાણિ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ: Scribe & Date
૩૨	દેવી કવચ દેવી સ્તુતિ ગરબો	સંપૂર્ણ	-	૪૪	દેવનાગુજરાતી	સંવત ૧૮૧૨ના વર્ષે શાકે (1)
૩૩	દ્વારપુરી ગીત	અસંપૂર્ણ	-	૧	"	સં. ૧૭૨૧ પ્રા.
૩૪	ધુવાણ ૧ રચ્યો (2)	સંપૂર્ણ	વેકુંઠ વિપ્રકૃત ધુવાણ (3)	૨૦૪	દેવનાગુજરાતી	સં. ૧૮૫૨ વેશાલકુળ ૧૨ શુક્ર
૩૬	નલકથા રચના સંવત (4)	"	વેકુંઠ રચિત	૧૨૦	"	સં. ૧૯૦૮ના ચૈત્રવદ ૧૧ શુક્ર
૩૭	નરસિંહ કથા રચના સંવત (5)	"	"	૧૨૨	"	સં. ૧૮૧૮ના શ્રાવણ શુદ્ધ (6)
૩૮	નરસિંહ મેતાનું આશ્વાન	"	"	૫૫	ગુજરાતી	સં. ૧૯૦૧ના માદરવા (7)
૩૯	નરસિંહ મેતાનો દ્વાર	"	"	૩૯	"	સં. ૧૯૦૧ માગસર શુદ્ધ ૧૨
૪૦	નરસિંહ મેતાની દ્વારમાળા (8)	"	મટ પરમાણંદ (9)	૧૭૭	"	સં. ૧૯૧૫ પ્રા.
૪૧	" " ગરબા ષોઢ	"	[શ્રીધામજીનું રચન	૧૦૦	"	સં. ૧૯૨૧ના શ્રાવણ શુદ્ધ ૮
૪૨	નરસિંહની દ્વારલીલા ૧૩ (10)	"	"	૧૬૨	દેવનાગુજરાતી	સં. ૧૮૨૧ પ્રા.
૪૩	નરસિંહ મેતાનું મામેરું (11)	"	"	૩૭	"	સં. ૧૮૬૫ પ્રા.
૪૪	નરસિંહ મેતાનો દ્વાર	"	"	૭૯	ગુજરાતી	સં. ૧૮૧૯ના કારતક શુદ્ધ
૪૫	"	"	"	૧૦૦	દેવનાગુજરાતી	સં. ૧૮૫૦ના ચૈત્ર શુદ્ધ ૧૦ શુક્ર
૪૬	નરસિંહનો પાટ	"	"	૫૨	ગુજરાતી	સં. ૧૯૦૨ પ્રા.
૪૭	નાલિકેત આશ્વાન	"	"	૬૦	દેવનાગુજરાતી	સં. ૧૭૨૮ માહાવિહી ૧૦ શુક્ર
૪૮	" ૧૨૫ પદ	"	શોમકવિ	૩૪	"	સં. ૧૯૪૪ના વર્ષે શ્રાવણ શુદ્ધ ૧૨ શુક્ર
૪૯	પંચી દરશન	"	"	૧	"	સં. ૧૮૨૧ કારતક વદિ ૧૧
૫૦	પદમાવતી આશ્વાન સંવત (12)	"	સામઢ મટ	૨૬	"	સં. ૧૮૧૯ના માદરવા વદ અમાસ
૫૧	પદમાવતી કથા	"	"	૪૦	"	સં. ૧૯૧૫
૫૨	પારસી ચર્મ ગોથા	"	"	૨૫	ગુજરાતી	સં. ૧૯૦૨ પ્રા.
૫૩	પુતલીસંકજ નયનાની	અસંપૂર્ણ	[પંચીની વાર્તા	૧૪	દેવનાગુજરાતી	સં. ૧૮૫૦
૫૪	પુરુષોત્તમ માહાત્મ્ય	સંપૂર્ણ ૩૦ અધ્યાય	"	૬૫	"	સં. ૧૮૫૦ પ્રા.
૫૫	"	અસંપૂર્ણ ૨૪ અધ્યાય	"	૨૯	"	સં. ૧૯૧૫
૫૬	"	સંપૂર્ણ	"	૧૧	"	સં. ૧૯૦૧ વર્ષે
૫૭	પ્રહલાદ આશ્વાન ૧ (13)	"	કાલિદાસ	૬૩	"	સં. ૧૮૭૭ શાકે (14)
૫૮	"	અસંપૂર્ણ	"	૮૦	"	સં. ૧૮૨૯ પ્રા.
૫૯	"	સંપૂર્ણ	"	૭૫	"	સં. ૧૮૫૯ પ્રા.
૬૦	બારમાસ	અસંપૂર્ણ	"	૩	"	સં. ૧૮૧૧ પ્રા.
૬૧	બારમાસી	સંપૂર્ણ	"	બોઢીયું	"	સં. ૧૯૨૭ પ્રા.
૬૨	વાલકેને શિશ્વામળ વતપવોષ	"	"	૨૨	"	સં. ૧૯૨૯ પ્રા.
૬૩	ગ્રહાની પ્રાણપ્રત્યા	"	"	૨૧	ગુજરાતી	સં. ૧૯૪૯ પ્રા.
૬૪	મજનલોઢા ૧, શાશ્વલોઢા ૨	"	મગવાનદાસ	૫૬	"	સં. ૧૯૨૮ પ્રા.

(1) શાકે ૧૭૫૭ પ્રથમ શ્રાવણ શુદ્ધ ૧૨ શુક્ર (2) ૧ ધુવાણ, સંવત ૧૬૧૪માં રચ્યો; પત્ર ૫૪ પૃષ્ઠ; ૨ પુરુષોત્તમની કથા, ૨ અંશાદરશ મટ પ્રેમાનંદ, ૪ સીમગીતા (3) ધુવાણ ૫૫, મૂગલીનો સંવાદ ૬૦, અંશાદરશ ૬૪, સંવત ૧૮૫૨ યજ્ઞેશ્વર શુદ્ધ ૨ મૌમ સીમગીતા ૨૫ (4) સંવત ૧૭૦૧ના યજ્ઞેશ્વર શુદ્ધ ૧૨ શુક્ર (5) સંવત ૧૭૦૧ના યજ્ઞેશ્વર શુદ્ધ ૧૨ શુક્ર (6) શુદ્ધ ૧૨ શુક્ર જલજન જોશી માયા જીવતાળી શ્રી લખાણિયા મધ્યે (7) માદરવા પ્રથમ શુદ્ધ ૨ ને મોમવાર (8) દ્વારમાળા નરસિંહ મેતાનો હુઢો, નરસિંહ મેતાનું મામેરું, પદ વગેરે (9) મટ પરમાણંદ પત્ર ૧૭૦માં ૧ શીર હેતર વડોદરા ગુજરાત મધ્યે મામજી. ચતુરવંશી શીરનારા મામજી મટ પરમાણંદ નામ રે (10) પત્ર ૬૧માં રચનાકાઢ. સંવત ૧૫૧૨ સત્તીમાર, પદ અંશાદરશ માલા ગાઈ રે. (11) મામેરું, કવીરનાં મિત્રો ગુજરાતી (12) સંવત સતર શુભેતરે માષ માસ શ્રાવણ. પૂજન કથા પછી પાંચને મેઢા મંગલશર. સામઢમટ કે બે બે જો જો શીરણેશ (13) ૧ પ્રહલાદ આશ્વાન, ૨ ચતુશ્લોકી માગસર, ૩ હુઢો મેતાનો પ્રેમાણંદ (14) શાકે ૧૭૪૨ માદરવા વદ ૧૨ શુક્ર જ્ઞાતિ વાલ્મીકી મુલની વ. દયારામ.

૯૪

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રન્થ મંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.
Subject : GUJARATI 22 **વિષય : ગુજરાતી ૨૨.**

ક્રમાંક	ગ્રન્થ નામ	કર્તા Author	ટીકા	પત્રાણિ	ભાષા-લિપિ:	લેખક-મિતિ:
Serial No.	Name of the work Title	સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Date
શ્રીમદ્ ભાગવત ।						
૬૫	પ્રથમસ્કંધ	સંપૂર્ણ સારસ્વત બ્રાહ્મણ	-	૪૧	દેવના. ગુજ. પદ્ય સંવત ૧૮૭૭ પ્રા.	
૬૬	દ્વિતીયસ્કંધ	" [†કવિરામકૃત	-	૨૩	" "	
૬૭	ત્રીતીયસ્કંધ	" "	-	૪૭	" સં. ૧૮૮૮	
૬૮	દ્વિતીયસ્કંધ	" "	-	૨૪	" "	
૬૯	તૃતીયસ્કંધ	" "	-	૬૯	" સં. ૧૮૮૦ના પેશ શુદ ૫	
૭૦	પદ્યમસ્કંધ	" "	-	૩૧	" "	
૭૧	સપ્તમસ્કંધ	" "	-	૫૩	" "	
૭૨	નવમસ્કંધ	" "	-	૬૭	" "	
૭૩	દશમસ્કંધ	" "	-	૧૫૦	" સં. ૧૮૭૫ના ચૈત્ર શુદ ૫ શનિ	
૭૪	"	અપૂર્ણ રામકવિ	-	૨૮	" સં. ૧૮૭૭ પ્રા	
૭૫	"	[*અંગદવિદ્યો ૨	-	૫૮	" "	
૭૬	" હરિરસ નામક ગ્રન્થ (1)	સંપૂર્ણ ગુણસુત પરમાણંદદાસ*	-	૧૮૨	" સં. ૧૮૨૩ જેઠ વદિ (2)	
૭૭	પદ્યમસ્કંધ	"	-	૪૫	" "	
૭૮	દ્વાદશસ્કંધ રચનાકાલ (3)	" કર્તા રામકવિ	-	૩૩	" "	
૭૯	"	" કવિરામ	-	૨૨	" ૧૮૯૫ પીપ્પલ વદ (4)	
૮૦	મહાપદ્મીની વાર્તા	અપૂર્ણ શામલકૃત	-	૨૪	" સં. ૧૮૫૩ પ્રા.	
૮૧	મળિરત્નમાલા	સંપૂર્ણ	-	૧૦૦	" સં. ૧૯૧૫ પ્રા.	
૮૨	"	અપૂર્ણ	-	૧૬	" સં. ૧૯૧૮ પ્રા.	
૮૩	મધુ માલતીની કથા ઉત્તમાક્ષર	સંપૂર્ણ સચિત્ર	-	૧૩૦	" સં. ૧૮૫૦ના વર્ષ (5)	
૮૪	"	"	-	૧૧૫	" સં. ૧૯૧૬ના આશ્વિન વદ ૧૪ સેને.	
૮૫	મધુકુમાર મારતી કુમારી (6)	" ચિત્ર ૭૫	-	૨૮	" સં. ૧૮૮૯ શાકે (7)	
૮૬	મનવિશેષ જાણકો	"	-	૪	" સં. ૧૯૧૫ વૈશાખ શુદ ૧૫ (8)	
૮૭	મલમાલ મારાત્મ્ય	"	-	૧૪	" સં. ૧૯૨૩ પ્રા	
૮૮	મહાપદ્મ મહિમા વાર્તા	"	-	બોલીયું	" સં. ૧૯૦૩ પ્રા.	
૮૯	મહાભારત આદ્યપદ્મ	" વૈકુંઠ કવિ (9)	-	૧૩૩	" સં. ૧૮૬૮ના આશ્વિન શુદ (10)	
૯૦	સમાવર્ષ આરણ્યપર્વ નથી	" કર્તા કીકસુત (11)	-	૨૫	" સં. ૧૮૫૮ માહા વદ (12)	
૯૧	વૈરાટપર્વ વૈદોદરવાસે (13)	" કવિ નાકરદાસ (14)	-	૮૩	" સં. ૧૮૬૩ના વર્ષ (15)	
૯૨	ઠયોગપર્વ રથ્યા સાલ (16)	" વિપ્ર વૈકુંઠ કુંતલ (17)	-	૫૪	" સં. ૧૮૬૩ પ્રા.	
૯૩	નીમ્બપર્વ	" વિપ્ર વૈકુંઠકૃત	-	૧૧૭	ગુજરાતી લિપી સં. ૧૮૭૦ના ગુજરાતી (18)	

(1) ગ્રન્થ રચનાકાલ । સંવત સોઠનવાર્ષાયે શાકપનર ચોપન કહિયે ॥ માગશર માસે, અઢમીસાં એ ગ્રન્થપૂર્ણ વિસ્તાર ॥ કરી કથા સમરપી વિગત પુજાસુત પરમાણંદદાસ (2) વદિ ૧૪ જોશી કાનજી જરાગણી નગરથી સંમળિયા મધ્યે (3) રચનાકાલ સંવત ૧૮૭૧ માસ શુદ ૧૪ શનિ । સંવત અઢાર પંચોતરે, માષમ સ શુદ પક્ષ અઢરે ॥ ચતુર્દશી તિથિને શનિવાર ગ્રન્થતથો કીધો વિચાર ॥ આમેશ મધ્ય હાલાર ગામ સપંદક રહ્યા ઠાર ॥ વિપ્ર સારસ્વત જ્ઞાતિ સહી ધોમત કથા યથા બુધ્ધ્ય કહી ॥ નાહાના સુત કેહે કવિરામ કથા ભાગવત પૂર્ણ કામ ॥ ગોવર્ધન મટતળો પ્રતાપ ગ્રન્થતળો મેં કીધો ઘાપ (4) વદ ૭ શુક્રવારે લિખત પ્રામ રામેદ મધ્યે વૈશાખ નારણશાસ (5) વર્ષે મુગશીર વદ ૧ દિન પં. શ્રી ૫ કૃષ્ણ વિજય ત્રીગણી શિષ્ય (6) કુપારી ચરિત્ર ૧; મધુ માલતી ચરિત્ર ૨ મૂળપુરાણ દ્વિતીય પાર્વતી સંવાદે મૂળ મહાપુરાણે, ૩ રાગમાલા ૪ દશાવતાર ચિત્ર, ૭૫ ચિત્રો (7) શાકે ૧૮૫૫ માગશીર્ષ કૃષ્ણ ૧૧ બૌમવારે (8) ગુરુ વ્યાસ શ્રીકમજી જટાસંકર વગસરા (9) કવિ રચનાકાલ સંવત ૧૭૦૫માં (10) શુદ ૧૩ મૃગ શે. જોશી માવા જેઠાણી સંમળિયા મધ્યે (11) કીકસુત માકરદાસ વૈદોદરવાસી (12) વદ ૧૩ લઘોતંગ વ્યાસ કાલજીસુત ઉકરજા જેતપુર મંતર મેગસા ડકાસુત માવત્રી તપ્પુત કાઠદાસ તપ્પુત જીવરામ (13) વૈદોદરે વાસે વસે ત્યે મધ્ય નાકરદાસજી ॥ કીકાનો સુત કહે કથા (14) નાકરદાસ કીક સુત વૈદોદરવાસી (15) વર્ષે અપાઠ શુદો ચતુર્દશી રતિવાસરે લઘોત વ્યાસ માકરજીસુત ઉકરજા જેતપુર શાસ્ત્ર્ય પદ્ય મેગસા આપ્યા (16) રથ્યા સાલ સંવત ૧૫૧૧મા દિ કો કથા નિરવાપ્ય ॥ આશ્વિન શુદ ને ત્રયોદશો વૈકુંઠ ચોલ્યા વાપ્યા ॥ વિપ્રવૈકુંઠ સરસ્વતો પ્રમોદે કવિકો કુંતલપુરવાસ (17) કુંતલપુરવાસીકૃત પત્ર ૫૩માં (18) ગુજરાતી આશુ પેલા વદ ૦)) ૬૪ સેને, લઘી તંત્ર ઠકર કુરજી શુદ ચત્રમજે લોહિત પીતામર મેષજી શ્રી દેવવરાવાલા રોહિતની ચોપહોમાંથી રચ્યું છે ।

ક્રમાંક Serial No.	ગ્રંથ નામ Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાણિ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક મિતિ Scribe & Date
૯૪	વિપ્રિવર્ગ અભિમન્યુ મરાણો	સંપૂર્ણ વિષ્ણુ આનુકૂત	-	૨૧	દેવના.ગુજરાતી	સં. ૧૮૧૫ માહાશુપ્તવાસરે
૯૫	કર્ણપર્વ	„ વિષ્ણુ વૈકુંઠકૂત	-	૮૭	„	સં. ૧૮૦૪ અષાઢ શુદ (1)
૯૬	મદાપર્વ ૧, ૧૧૦ પાને પુઃ વયુ ઘાઠનની કથા ૨	„ નાકરદાસકૂત	-	૨૧૮	„	સં. ૧૭૧૪ વર્ષે શાકે (2)
૯૭	કર્ણનો પોદ ૧	„ જોરામકૂત કર જોડોને*	-	૨૧૮	„	સં. ૧૮૦૫ના વર્ષે શાકે (3)
૯૮	મદાપર્વ	„ [*જોરામ કહે	-	૧૧	„	સં. ૧૯૦૫ના જ્યેષ્ઠ શુદ (4)
૯૯	અભિમન્યુનો ચક્રાવો કવિ (5)	„ નાકરદાસકૂત	-	૬૩	„	લિ. પંડવા વશારામ પ્રામકંઠારમે
૧૦૦	સ્વર્ગ રોહણપર્વ રચી (7)	„ રચી હરિકવિ	-	૫૪	„	સં. ૧૮૫૮ના વૈશાખ શુદ (6)
૧૦૧	ગાગિમદ્ર વર્ણન જૈનવિધિ	„ શિશિરામસુતરામકૂળકૂત	-	૩૯	„	સં. ૧૮૦૨ માહા શુદ (8)
૧૦૨	મોહાદીન મેહતાબની ઘાતા	„	-	બોઝીયુ	„	સં. ૧૮૨૧ પ્રા.
૧૦૩	રત્નપાલ ચરિત્ર	„ મોહનવિજયજી	-	૬૮	„	સં. ૧૯૧૩ના વર્ષે પોષશુદ ૩ મેમવાર
૧૦૪	રામનોમ વ્રતકથા	„	-	૬૯	„	સં. ૧૮૦૨ના વર્ષે (6)
૧૦૫	રામાયણ પદ્ય	„	-	૫	„	સં. ૧૯૧૫ પ્રા.
૧	અયોધ્યાકાંઠ	„ શીકાપુત્ર નાકરદાસરચિત-	-	૧૬	„	સં. ૧૮૧૧ના અષાઢ વરિ (10)
૨	આરણિકાંઠ	„ વિષ્ણુદાસકૂત	-	૫૨	„	સં. ૧૮૧૧ના વૈશાખ શુદ (11)
૩	કિસ્કીયાકાંઠ	„	-	૪૨	„	„ „ લિ. જોશી માવા
૪	સુદરકાંઠ	„	-	૫૫	„	સં. ૧૮૧૨ જૈત્ર શુદ (12)
૫	લંકાકાંઠ	„	-	૨૨	„	સં. ૧૮૧૫ના વર્ષે (13)
૬	અંગદવિધિ	„	-	૨૫૭	„	સં. „ „
૧૦૬	રામાયણ	„	-	૩૦૦	ગુજ. લિપિ	સં. ૧૮૦૩ પ્રા.
૧૦૭	હકિમળી વિવા	„	-	૪૦	„	સં. ૧૯૧૭ જેઠ શુદ ૧૫
૧૦૮	હકિમળી હરણ	„	-	૩૫	„	સં. ૧૮૩૫ પ્રા.
૧૦૯	લક્ષ્મણી હરણ રચનાકાંઠ (14)	„ કુલશીલુત (15)	-	૨૭	દેવના.ગુજરાતી	સં. ૧૮૧૧ જ્યેષ્ઠશુદી ૧૧
૧૧૦	વાલ્મેશ સાર વણિધાર યોગ*	„ [*વાલ્મેશસાર	-	૪૩	„	સં. ૧૮૧૧ પ્રા.
૧૧૧	વિક્રમ ચરિત્ર 'સોપાઈ' (16)	„ સેજપાલકૂત	-	૨૭	„	સં. ૧૮૧૨ના વર્ષે (17)
૧૧૨	વિક્રમાદિત્ય પંચકંઠની કથા	„	-	૧૦૮:૨૫	„	સં. ૧૮૪૫ વર્ષે (18)
૧૧૩	શામલ્લામો વીવા	„	-	૭૫	ગુજ લિપિ	સં. ૧૮૧૫ના વર્ષે (19)
૧૧૪	નરસીમેતાના પિતાનું આદ્ય	„ મટ પરમાજીવ	-	૫૫	„	સં. ૧૯૦૨ના ફાગણ શુદ (20)
૧૧૫	અવળની કાવઙ્ય	„	-	૫	„	સં. ૧૯૧૨ પ્રા.
૧૧૬	સતી ગીતા રચના સંવત (21)	„ મુખાર્જી સ્વામીકૂત	-	૧૫	„	સં. ૧૯૩૦ના માદરવા શુદ (22)

(1) શુદ પંચમી ગુરુવારે પૂર્વે લખિતંગ વ્યાસ ડકા લાલજી જ્ઞાતિ ટવીચ શ્રી જૈતપુર મધ્યે માસ્તમ્ય આપ અયેં રત્નો છે (2) શાકે ૧૬૩૪ જ્યેષ્ઠ કૂળ અમાવાસ્યા સુગુ લિ. જોશી કાન્દજીસુત વિઠલજી નૂતનનગરે વાસ્તવ્ય ગિરનારા જ્ઞાતિ (3) શાકે ૧૭૩૪ પ્રથમ જ્યેષ્ઠ માસે શુક્રવસ્ત્રે તિથિ દ્વાદશી લિખિતંગ વ્યાસ લાલજીસુત ડકરવા પ્રામે જૈતપુરે (4) શુદ પૂર્વમ સુગુ લિ. મહાદેવસુત હરગીવન (5) કર્ણ પ્રવચ કરે અવધાદે હરિ આધારે વોલ્મા રવાઈ. ગુજરકાંઠ મધ્યે છે વાસ સુગુજેન નમદાવાસ ॥ રચી સંવત ૧૭૭૮ આશુ શુદ ૨ સુગુ, સુરેલાહન પત્ર ૨૧ મટ શીરજી ગુરાનપુર પ્રામ ઉત્તમ હુરપુર મટ શીર જીમા, બોલાહરણ પત્ર ૨૧ (6) શુદ ૫ પંડ્યા નાયજીસુત વશારામ જ્ઞાતિ ટવીચ્ય પ્રામ કંઠારમે માસ્તમ્ય (7) રચી સંવત ૧૭૨૬ અષાઢ શુક્ર ૧૩ સુગુવાર કુતલપુરવાસી વિષ્ણુ કનોજીવા સવરામસુત રામકૂળ (8) શુદ ૭ ગુરુ પંચમલક મધ્યે પરગળાં ગોંડલના (9) વર્ષે માગશિર ૧૨ શુકે રણવાપ્રામે વ્રતવિજય લિ. (10) વરિ ૧૧ શુકે લિ. જોશી માવા જૈતાળી (11) શુદ ૧૧ મંગલ લિ. જોશી માવા (12) શુદ ૧૧ રવિ લિ. જોશી માવાજૈતાળી (13) વર્ષે માગશિર ૧૨ શુકે લિ. જોશી માવા જૈતાળી (14) રચનાકાંઠ સંવત ૧૬૦૪ માગશિર શુદ ૭ રવિ (15) સુત વૈકુંઠવિષ્ણુ કુતલપુર પ્રામ (16) સોપાઈ રચનાકાંઠ સંવત ૧૭૪૭ આંધ્ર પૂર્વમ અહિમદપુર (17) વર્ષે ફાગણ વરિ ૪ ઘનો લિ. શાપિ શ્રીકમજી (18) વર્ષે આષાઢ વદ ૧૦ સોમે શ્રાકામે રક્ષ્યા છે. શ્રી લીમચંદ (19) વર્ષે માદરવા વદ ૧૩ પત્ર ૧૪ી ૪૦ (20) શુદ ૫ ઓમે પત્ર ૪૧ી ૪૦ (21) ૧૮૮૦ જેઠ શુદી ૩ શુક (૨૧) શુદ ૧ શુકરાર સ્વદેશ દિવ પ્રકાશનાં હસ્તલિખિતને આધારે ।

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રંથ ભંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.
Subject: GUJARATI 22 વિષય: ગુજરાતી ૨૨ ।

ક્રમાંક Serial No.	ગ્રંથ નામ Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પૃષ્ઠાણિ No. of Leaves	ભાષા-લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ: Scribe & Date
૧૧૭	સદેવંત સાવલીંગની ચોપઈ	સંપૂર્ણ	-	૧૮	દેવના ગુજરાતી	સંવત ૧૮૨૧ના વર્ષે (1)
૧૧૮	"	"	-	૨૨	"	સં. ૧૮૧૧ના વર્ષે (2)
૧૧૯	"	અપૂર્ણ	-	૧૧	"	સં. ૧૮૧૧ પ્રા.
૧૨૦	સરસ્વતીનો છંદ	"	-	૫	"	સં. ૧૧૪૬ના ગુજ. આશો (3)
૧૨૧	સિદ્ધાસન વગ્રીસી ગણિત્રી (4)	સંપૂર્ણ	-	૬૭	"	સં. ૧૮૩૩ના ફાલગુન (5)
૧૨૨	" પ્રત્યામ ૩૫૦૦૬	"	[સંપૂર્ણનામ વર્ણિકર્તા]	૧૩	"	સં. ૧૮૭૧ વૈશાક (6)
૧૨૩	"	અપૂર્ણ કવિ શામલદાસ (7)	-	૨૫૮:૧૬ ગુજ. લિપી	"	સં ૧૮૮૭ના મહાવરી ૧૧
૧૨૪	સોતાસ્વયંબર રચનાકાલ (8)	સંપૂર્ણ શાલિદાસ કવિ	-	૪૮	દેવના. ગુજરાતી	સં. ૧૮૧૧ પ્રા.
૧૨૫	" પત્ર ૧૧૦માં પૂર્ણ	"	-	૧૩૫ ગુજ લિપી	"	સં ૧૮૮૮ આશુ શુદિ ૧૨
૧૨૬	સુદામા ચરિત્ર [દેવી દુર્ગાપાઠ	" મટ પ્રેમનંદ	-	૬૭	દેવના ગુજરાતી	સં. ૧૮૬૮ના વર્ષે ફાગુન (9)
૧૨૭	સુદામા આશયાન સંવત (10)	"	-	૨૭	"	સં. ૧૮૮૮ પ્રા.
૧૨૮	સુકમાલા પ્રાકૃત	"	-	૧૦	"	સં. ૧૮૦૫ પ્રા.
૧૨૯	હરિલીલા ૧ (11)	" વિષ્ણુદાસ મીમ	-	૧૧૬	"	સં. ૧૮૧૩ વર્ષ (12)
૧૩૦	હરિરાય ચિંતન	"	-	૬૫ ગુજ. લિપી	"	સં. ૧૯૧૦ પ્રા.
૧૩૧	દોરીઘોઠ કીર્તન	"	-	૧૦	"	સં ૧૯૧૫ પ્રા.
૧૩૨	જ્ઞાનમંડરી	" કર્ણ મનોહરદાસ બિરંજની	૧૦૮:૧૩	દેવના ગુજરાતી	"	સં. ૧૮૦૧ પ્રા.
સંગ્રહ ગ્રંથ પત્ર ૩૧૪ ।						
૧૩૩	સંગ્રહ ગ્રંથ	સંપૂર્ણ	-	૩૧૪	દેવના ગુજરાતી	
૧	લક્ષ્મણા હરણ	" કુતલપુરવાસી (13)	-	૧૯	"	સં. ૧૮૫૦ના અષાઢશુ (14)
૨	મીમપર્વ	" ચારંગસુત વેકુઠવિપ્ર	-	૧૨	"	"
૩	સુદેવારણ રત્ની (15)	" કુરામપુરમાં ઉત્તમપુર	-	૪૫	"	"
૪	ધુમાશયન	" કુતલપુરવાસી (16)	-	૨૪	"	"
૫	દ્રોણપર્વ	" અંબાત્રીશાલ	-	૧૫	"	"
૬	કર્ણપર્વ	"	-	૧૯	"	સં. ૧૮૫૧ના જાન્યુઆરી (18)
૭	ગદાપર્વ	" નાકરદાસ	-	૩૬	"	સં. ૧૮૧૦ના આશુ શુદ ૧૩શે
૮	મૃગલોકવાદ કથા (18)	" મલિયાગરદેશ (19)	-	૧૯	"	" [૧ જેલેશી માવા જીવતાળી
૯	અશ્વમેધપર્વ (20)	" કુળદાસ જાત (21)	-	૧૭	"	"
૧૦	મનુસોલભત્તુ આશયાન	" કહે કુળો જાત હુદાર	-	૯	"	"

(1) વર્ષે જેઠ વરી ૮ ગુરુવારે શ્રવિ કુળ (2) વર્ષે જેઠ શુદ ૨ શિવપુરુષો લિ. પં રવિવારગણી (3) આશો વદિ ૫ રવિવાર (4) ગણિત્રી ગુણવિજયશિષ્ય સીમા શિષ્યવિજયગણિ પ્રત્યામ ૨૧૧૦ પત્ર ૫૩૦માં પૂર્ણ વિજયગણિ ચિત્ર, કૈનરક્ષા સ્તોત્ર સંપૂર્ણ પત્ર થી ૫૫, ધનદા સ્તોત્ર પત્ર ૫૩માં, મવાની સહજના ૫૧ થી ૬૩ મવાની કવચ ૧૩ થી ૬૪, શિવલક્ષ્મી સ્તોત્ર ૬૫ થી અપૂર્ણ (5) શુદિ ૧ સોમવારે થી માવનગરે રૂઢિ શ્રી શિષ્યાસન વગ્રીસી થી રવિવિદ્યાર્થ: ગુણકીર્તિ ભક્ત (6) શુદ ૮ દિને લખો વરાહદેશ મધ્યે અંજન પ્રામે પથ પ્રભુ ચૈતાન્યે નારાયણ ચંદ્રેન (7) શામલદાસ ગુજરાત વૈકલપુર વાસ શ્રીગોઠ માલકો બ્રાહ્મણ (8) રચનાકાલ: સંવત સંસ્કારવર્ષ ઉપર કલ્પનનો મહિમા: આશિમનપ્રાક પ્રાદે કવ્ય કલ્પો જાનથી વીનાય । ગામ વામાવઢ વાસવસ વઢનર નાગર જ્ઞાત । (9) ફાગુન શુદ ૧ શનિ કે ગોપાલગી સુત સોમવરી (10) સંવત શોક આઠત્રીસા વર્ષે શ્રાવણ શુદ વિધાનગી । શિષી શીખને સુગુનારે પ્રવંશુ. આશયાનગી ॥ હરીતમે મિત્રે કરીને સેવું ગમ્ય દરવારગી । નંદેપુરામાં કથા કીધી કરતારે લીલા કરી ॥ મટ પ્રેમનંદ વરે કાપો દુષ્કાર વોલો થી હરી: (11) ૧ હરિલીલા. માગમત ૧૦ સ્કંધનું, પથર્થ, પત્ર ૪ થી ૧૦૬, ૨ હરિલીલા. મીમકલા, ૩ ધીમર-સાતથી ૧૩ ૬ થી ૧૮, ૪ હરિરાય પત્ર ૧ થી ૨૫, ૬ સરદાસ કારોટકુત, ૫ નાગદમય, ચારણસાર્થદાકુત, ૬ અશ્વ નીતા, પત્ર ૧ થી ૫૬ (12) ૧ર્વ આષાઢ શુદ ૧૪ રવિવાર અયેહ નૌતમપુરે (13) કુતલપુરવાસી ગુલકીસુત ચારંગસુત બ્રાહ્મણ વેકુઠવિપ્ર (14) શુદ ૧૫ કે. જોશી માવા જીવતાળી (15) રત્ની સંવત ૧૫૨૦ વૈશાક શુદ ૫ શુક (16) કુતલપુરવાસી ગુલકીસુત વેકુઠ રવિત (17) વદિ ૧ કે. જોશી માવા જીવતાળી સંખાનિઘા મધ્યે (18) કથા રચના સંવત ૧૫૦૧ માષ ૭ મંગલ (19) મલિયાગરદેશ દનાવલ ગામ । જાત નાળિયો જાવલ નામ ॥ (20) અશ્વમેધર્વામાં જોવનાશુરત્તુ આશયાન (21) જાત હુદાર કુત જનકુળ મહારત્ન ।

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રંથ મંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર ।

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : GUJARATI 22

વિષય : ગુજરાતી ૨૨ ।

ક્રમાંક Serial No	ગ્રંથ નામ Name of the Work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ - અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પાનાણ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ: Scribe & Date
૧૧	નીલધ્વજ આખ્યાન	સંપૂર્ણ હરહર કૃષ્ણ જનકજી - ૭	દેવાનાગરી ગુજરાતી સંવત ૧૮૧૦ નાશ્રાવણશુદ્ધ ૧૩ સોમે*			
૧૨	ચંડીનું	" "	-	૪	" "	[*લિ. જોશી માવા જેવતાળી
૧૩	સુધાનું	" "	-	૧૬	" "	" "
૧૪	વ્યાગ્રપ્રેમલા	" "	-	૪	" "	" "
૧૫	મીષણ	" "	-	૩	" "	" "
૧૬	યદુવાહનનું	" "	-	૧૮	" "	" "
૧૭	લલકુશનું	" "	-	૨૫	" "	" "
૧૮	મોરબજનું	" "	-	૧૫	" "	" "
૧૯	વીરભામાનું	" "	-	૧૦	" "	" "
૨૦	ચંદ્રહાસનું	" "	-	૨૨	" "	" "
૨૧	ચંદ્રકાલનું	" "	-	૨૦	" "	" "
૨૨	હસીલા	" "	-	૨	" "	" "
૨૩	કલશ મધ્યમેષ	" કૃષ્ણદાસ	-	૧૧	"	સંવત ૧૮૬૦ ના જેઠ (૧)
૨૪	શુભજીનું આખ્યાન	" કાશ્યપવસ્તો	-	૨૦	"	સં. ૧૮૬૧ અષાઢ વદિ (૨)
૨૫	રાવણ મંદોદરીના ઘટલા	"	-	૨	"	" "
૨૬	અગીયારી સંસ્કૃતમાં	"	-	૩	"	" "
૨૭	હરિરસ	"	-	૧૦	"	" "
૨૮	નવસીમેનાની હુંડી	"	-	૮	"	" "
સંગ્રહ ગ્રંથ પત્ર ૮૮ ।						
૧૩૪	સંગ્રહ ગ્રંથ	"	-	૧૪	"	સં. ૧૯૪૪ ના શ્રાવણ
૧	જોવનાશ્વનું આખ્યાન	" જનકશ્રદાસ	-	૪	"	સં. ૧૯૪૪ ના શ્રાવણ ૧ રોમે
૨	અણુકાલનું	" જાત હરહર	-	૧૦	"	" "
૩	નીલધ્વજ-મીષણનું આખ્યાન	" જનકશ્રદાસ (૩)	-	૫	"	સં. ૧૯૨૭ નેવિયાસ શુ ૭ સોમ
૪	ચંડીનું આખ્યાન	"	-	૨	"	" "
૫	સુધનું	"	-	૧૫	"	" "
૬	પ્રેમલીનું	"	-	૨	"	" "
૭	મીષણનું	"	-	૨	"	" "
૮	યદુવાહનનું	"	-	૧૬	"	સં. ૧૯૪૪ ના અષાઢક શુદ્ધ ૧૨ શુક્ર
૯	ચંદ્રાસ-ચંદ્રહાસ આખ્યાન	"	-	૨૬	"	સં. ૧૯૨૯ ને જેઠ શુદ્ધી (૪)
૧૦	મોરબજનું આખ્યાન	"	-	૧૦	"	" "
સંગ્રહ ગ્રંથ પત્ર ૪૭૬ ।						
૧૩૫	સંગ્રહ ગ્રંથ	"	-	૪૭૫	"	" "
૧	નલ કાન	અપૂર્ણ	-	૧૫૧૭૭૫ (૧૫૧૬)	"	સં. ૧૮૩૦ વર્ષે જેઠ (૫)
૨	યદુવાહન આખ્યાન	" જનકશ્રદાસ	-	૨૭	"	" "
૩	સુધનું	"	-	૨૮ થી ૪૨	"	" "
૪	લલકુશ	"	-	૪૩ થી ૫૫	"	" "
૫	વિદી સંયોગપર્વ આખ્યાન	" હ. જી. રવળી (૬)	-	૬૫ થી ૧૩૩	"	સં. ૧૮૨૫ વર્ષે વૈશાક ૧૭ (૭)
૬	મહાભારતની કથા	"	-	૨૫	"	" "

(૧) જેઠ શુદ્ધ ૨ ને અષ્ટમેષ સંપૂર્ણ લખે છે. લિ. જોશી માવા જેવતાળી (૨) વદિ ૭ ગુરુતર લિખત જોશી માવા જેવતાળી (૩) જનકશ્રદા કુલકથનમાં જાત હરહર સુચાણ (૪) શુદ્ધી ૧૦ ના રવી લિ. જોશી જોશીની જેઠ રવાણી સમારોહ (૫) જેઠ શુદ્ધ ૨ રવિ જોશી માણજી જેવતાળી (૬) રવળી સંવત ૧૯૬૩ વૈશાક શુદ્ધ ૧ મેને રવી (૭) વદિ ૧ નવરત્રી સંમલિયા મધ્યે ।

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રંથ ભંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: GUJARATI 22

વિષય : ગુજરાતી ૨૨ ।

ક્રમાંક Serial No.	ગ્રંથ નામ Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અસંપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાણ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ: Scribe & Date
૭	અવરોશ કથા	સંપૂર્ણ		૫૦	દેવના ગુજરાતી સંપત ૧૦૨૮ પ્રા.	
૮	આરણીક કાંઠ અરણ્યકાંઠ	વિષ્ણુકૃત -		૬૫	સંવત ૧૦૨૮ ચૈત્ર વિદ ૧૧	
૯	કિસ્મીયા કાંઠ	વિષ્ણુદાસ(૧)-		૭૫	" " "	
૧૦	સુદર કાંઠ	વિષ્ણુદાસ -		૫૪	" " "	
સમગ્ર ગ્રંથ પત્ર ૩૩૦ । ગ્રંથ ૧૧ અક્ષર ગુજરાતી ।						
૧૩૬	સમગ્ર ગ્રંથ	સંપૂર્ણ -		૩૧૦	ગુજરાતી લિ. " "	
૧	મુવનુ આશ્વાન રચના (૨)	વૈકુંઠકૃત (૩)-		૪૯	સં. ૧૧૧૮ માહા વદ (૪)	
૨	જમના અષ્ટક	" -		૨	સં. ૧૮૧૮ના વૈશાખ શુદ (૫)	
૩	કામ વિમાન	કૃષ્ણદાસ -		૫૩૮:૬૪	સં. " "	
૪	હરિશ્ચંદ્ર આશ્વાન	શ્રીધરદાસ -		૬૫૮:૫૫	સં. ૧૮૧૮ના વૈશાખ વદી ૦)	
૫	પાંડવ ગોતા	પુત્રાસુત -		૭૬૮:૧૪	સં. ૧૮૧૯ના માહાવદ ૧૧નેવારસુત	
૬	ટાકોરજીની બોટકી	" -		૯૪-૯૫	" " "	
૭	અંબામોની વગેરે માતાની હમચી,	" -		૨૫૮:૧૦૦	સં. ૧૧૨૧ કારતક વદ ૧૦નેવારસુત	
૮	નંદવચીશી	શામલમટ (૬)-		૧૦૦૮:૧૪૦	સં. ૧૮૧૮ના વર્ષે માહા (૭)	
૯	સુરેશ્વરજી રચી સંવત (૮)	સુરેશ્વરજી(૧૦)-		૨૧૪૮:૨૧૪	સં. ૧૮૧૮ના વર્ષે ફા. વદ ૮વારસુત	
૧૦	સ્વામીરાજપદ રચી (૯)	સુરેશ્વરજી(૧૦)-		૨૧૪૮:૨૧૦	સં. ૧૮૧૮ના વર્ષે વીજા (૧૧)	
૧૧	અભિમન્યુ આશ્વાન (૧૨)	હરિકવિ -		૨૭૦૮:૩૨૦	સં. ૧૮૧૯ના વર્ષે જેઠ વદ (૧૩)	
સમગ્ર ગ્રંથ પત્ર ૩૫૩ અક્ષર ગુજરાતી ।						
૧૧૭	સમગ્ર ગ્રંથ	સંપૂર્ણ -		૩૫૩	સંવત ૧૮૧૯ પ્રા.	
૧	મુગલી સંવાદ	" -			" " "	
૨	ગોરણવાણી	" -		૬૩	સંવત ૧૮૧૯ના કારતકશુદ ૧૫વદને	
૩	ટાકોરજીનાં કીરતન	" -		૭મે	સં. ૧૭૧૭ના શરાવણ વદ ૧૦	
૪	સગાઈ	" -		૬મે	સં. ૧૭૧૭ શરાવણ શુદ ૩	
૫	કીરતન	" -		૧૨મે	" " "	
૬	વધુવાહનનું આશ્વાન અષ્ટક	" -		૧૬મે	" " "	
૭	શકુનાવલી	સંપૂર્ણ -		૧૯મે	સં. ૧૭૧૮ વૈશાખ શુદ	
૮	પ્રભાતીયા	" -			" " "	
૯	મેતામીના દ્વાર સમેગા પ્રભાતીયા,	" -		૨૨૮:૧૦	સં. ૧૭૧૬નામાહા શુદ ૫૧નેવારસોમ	
૧૦	ગોવર્ધન કીલા	" -		૬૦૮:૬૪	" " "	
૧૧	મોરબજનું આશ્વાન	વોરમદાસ -		૬૪૮:૮૬	" " "	
૧૨	પદપ્રભાતી	" -		૮૬૮:૧૦૯	" " "	
૧૩	સુકમળોની હલકાંકી, [પદ પ્રોઠ પ્રતાપ	" -		૧૦૯૮:૧૪૧	" " "	
૧૪	અનુન ગોતા (૧૪)	" -		૧૪૯:૮૪	સં. ૧૭૧૫નાશરાવાણી ૧૧નેવારસુત	

(૧) રચી સંવત ૧૧૫૪ ચૈત્ર શુક્ર (૨) રચન ૧૧૧૪ શ્રાવણ (૩) વૈકુંઠકૃત કુંતલપુરમંથ શાસ્ત્રત્રિપ્ર (૪) વદ ૧૧ શુક્ર લે. મોરારજી વેલજી (૫) શુદ ૮ લિ. ગોરણ જીવન (૬) શામલમટે થી ગોઠ માલવી વિદ્ય (૭) માહા વદ ૩ દને વાર સનેઝ (૮) સંવત સતરીશ મધે વૈશાખ શુદ ૫૫૧૦ પાવન શમવાર શુદ કેદેવા (૯) રચી ગુજરાત કોમળા મામજ પાવન કલોલી આમાં ગાણી । વિષ્ણુ વચને ગ્રંથજી વર્ષે ૧૧૫૧ કલાની સુરવાણી । જેહુ કર બોલીને વિચરે વિષ્ણુ સે સુરવાણી સંવત વાર પંચાવળ વરસે અશ્વઠ વધોદનજી । ગુરુશરે આ ગ્રંથ (૧૦) સુરવાણી સંવત ૧૨૫૫ના અષાઢ ૬ શુદ (૧૧) વીજા વદ ૧૨ દને વાર શનુ (૧૨) આશ્વાન સંવત સતર આઠમે વરસે આશુ માસ શુક્રપદ । ત્રિપી દિતોયાને શુકરવાર ગુજરાતજી વિશે છે વાચ મુદ્દેશ નરવંદને પાસ (૧૩) વદ ૧૧ દને વાર શુકર (૧૪) ૧૪ અનુન ગોતા । ૧૫ મેતામી નરવંદને હુઠી, ૧૬ પ્રોઠ, ૧૭ અનુન ગીત, ૧૮ દોવાલોની હલ, ૧૯ પરશુરણ, ૨૦ એકાદશી માહાશ્વ, ૨૧ અંદવિશી, ૨૨ કુનોની વિનતિ, ૨૩ ગોરણ સંવાદ, ૨૪ ચાલચરિત્ર, ૨૫ સંમળો ગરજ, ૨૬ કરણનું આશ્વાન, ૨૭ ૫૬, ૨૮ શકુનાવલ, ૨૯ દશા, ૩૦ કુપ્તનું આશ્વાન, ૩૧ હેલવાનું આશ્વાન, ૩૨ ચલવાહન કથા વગેરે ।

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author	टीका	पत्राणि	भाषा- लिपि:	लेखक-मिति:
Serial No.	Name of the work Title	संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Date
१३८	संग्रह ग्रन्थ (1)	संपूर्ण	-	१८०	गुजराती	संवत् १८१० भाद्र
१३९	गुजराती संग्रह ग्रन्थ (2)	"	-	१९०	गुज संस्कृत	संवत् १८५२ चैत्र
१४०	गुजराती संग्रह गद्यपद्य (3)	"	-	१३३	"	संवत् १९०२ प्रा.
१४१	" गद्यपद्य (4)	"	-	६१	"	संवत् १९२५ भा. व. १४
१४२	गुजराती पदादशी माहात्म्य (5)	"	-	१७	"	संवत् १८४० शाके (6)

महाभारतं (संस्कृत) २३ ।

क्र.	विषय	प्रमाण	संस्कृत	देवनागरी	संवत्
१	आदिपर्व प्रथमं नास्ति	×	-	×	×
२	समापर्व द्वितीयं (७)	संपूर्ण प्रायः	-	३७९	संवत् १९१० प्रा.
३	वनपर्व				
१	आरण्यकपर्व वनवासपर्व (८)	संध्या उत्तमाक्षर-	३१८	सं. १०१८ आषाढादि(९)	
२	आरण्यकपर्व	"	-	४३५	सं. १०१५ प्रा.
३	" भारत समुच्चये*	अपूर्ण [*आरण्यपर्व]	-	१५५	सं. १८४० प्रा.
४	" पत्रमेक वद (१०)	संपूर्ण	-	४६०	सं. १९८१ प्रा.
५	"	अपूर्ण	-	६७	सं. १०९४ प्रा.
६	त्रिशप्तपर्व प्रकाश (११)	सुसंपूर्ण व्याख्या	-	६९	सं. १९९६ वर्षे (१२)
७	" अध्यायानां (१३)	"	-	७०	सं. १०१५ आषाढादि(१४)

(1). दाणलीला संवत् १८९७ना वर्षे आशु पेळा शुद्ध २ दिने । गरबा कीरतन । कौरव पांडवजु आख्याना ४४ मेताजीनु ममेरे कृष्णदास कृत संवत् १८७८ना अशाळ शुद्ध १५ वार पुः । सोताजोना महीना संवत् १८७८ना अवध वद १४ दने वार सुपे । ६ प्रोळ संवत् १८६८ना बहौषाक शुद्ध १ लि. जेठा प्रेमजी ६३ पाने संवत् १७९९ जेठ वद ५। ७ कृष्णेना कागळ रच्यो संवत् १७९५ मागवर वरी ११ लक्ष्म्युं संवत् १८६० जेठ वद १४ । ८ जैन राख रच्यो संवत् १९६८ पोष शुद्ध २ रवौ । लक्ष्म्युं संवत् १७९५ भाद्रवा वरी ५ पृष्ठ ११७ मा । ९ वार महीना ११८ बी १२१. संवत् १७७९ श्रावण वर १० बीकरझून बदरमा वताया छे । १० खंद, ११ शकुन । १२ महालक्ष्मीनी हमची खंद । १३ सेवार महीना संवत् १८७८ना श्रावण शुद्ध २ दने सनेड (2) ग्रन्थ अक्षर देवनागरी भाषा गुजराती गद्य पद्यात्मक पत्र ५ बी १६ प्रोळ कोर्तव गुजराती पद्य । १७ बी २६ सीम गीता १३५ पद्य वल्लभकृत । २७ बी ५० भयर गीता कवचा ४० तथा डाळ उयलो महीदासकृत । ५१ बी ९५ अस्य गीता उयलो कवचा डाळ असे गीता अस्तर रचित कवचा ४० संवत् १८५२ चैत्र वद गुप्तार पाने ९५ मा मिति । ९६ बी १५० ओखाहरण कवचा १२ प्रेमानंदकृत वेढोदारावासी । १५१ बी कीरतन रागमा (3) गद्यपद्य अक्षर गुजराती प्रकीर्ण नं. ६, गुजरानी पोबी पुस्तक नं. ६, अक्षरपयो अपूर्ण अप्री, भजन, धोळ, इक्ष्मणहरण पद्यो, मीराना पद्यो, मुसमहिमा, कृष्ण कीर्तन संपूर्ण पृ. १४ बी १३३, आरती, थाळ, ककाज्ञान थोळ, गरबी, आशारे वर्ष १०० (4) : गद्यपद्य अक्षर देवनागरी गुजराती संग्रह पुस्तक ७ पत्र ६६ । १ रास पंचाण्यायी (५. हिं.) कथ्य पत्र २ बी १७ नंददासकृत पद्य । २ मागवतका थोळ हरिदासकृत पद्य १७९१९ । ३ पद्यो पत्र ४० बी ४१, संवत् १८२५ भाद्रपद कृष्ण ६ रवि भरतदास वीरमग्रामे । ४ चित्तनका थोळ श्री हरिरावजी कुत पत्र १ बी १२, संवत् १९२५ भाद्रवा वद १४ वीरमग्रामे बाईना । ५ अचकुट लीला हिरिपद्यो ११-१५ । ६ पद्यो हरी ११-१८ । ७ नवल वधावे तथा गुंसाई-जोना वधावे तथा पद्यो पत्र १९-२३ प्रथमतः १३ नवी संपूर्ण (5) माहात्म्य गद्य अक्षर देवनागरी कांतकर्णी आशु सुधीनी एकादशी माहात्म्य (6) शाके १७६३ उष्ट वरी ११ (7) द्वितीय अध्यायांकाः न सति श्लोककाः न सति । इत्यादि पर्वणि संग्रह नामाध्यायः इत्यं समामी । प्रारंभे गौति उवाच इत्यादि । उपपदं वताम् । एकस्म बहुष्यो विदिता महिष्यः कुकदन । नैकस्या बहुवसता अभ्यते पत्यः कश्चित् ॥ पर्वतमस्ति (8) वनवासपर अध्यायांकाः न सति श्लोककाः न सति (9) आषाढादि वर्षे आश्विन शुद्ध ९ रवौ इतिश्री महा शतशाल स्वार्णप्रियाया आग्ने परनि ॥ (10) अध्यायांकाः न श्लोकार्थाः न (11) प्रकश व्याख्या केवला । श्लोकाना न अध्यायांका न (12) । १३ प्रोळ कृष्ण पंचम्या कुप्रेष वाराणस्या स्तंभतीयस्थ कलाटाग्रिमः शोद्धान्दातु अष्ट साह १ महीनामृत घमदासस्यातका लक्षापिगां विराटपर्व प्रकशः (13) अध्यायांकाः श्लोकानां अंका न सति अध्यान समानी इति विराट पर्वणि बुबिशिर कथनं नाम । प्रारंभे भीम उवाच ॥ (14) आषाढादि वर्षे आपाद वदी ३ जुने इतिश्री महाभारते सातव हज्यां विदितायां विराटपर्वणि अजेभ्य विवाहः । धृतः परं उद्यमः ।

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपिः Language & Script	लेखक-मितिः Scribe & Date
Serial No	Name of the Work (Title) -					
५	उद्योगपर्व-उद्यमपर्व	सुखपूर्ण	-	२०२	संस्कृत देवनागरी	संवत् १७०१ वर्षे (१)
६	भीष्मपर्व नास्ति	×	-	×	×	×
७	द्रोणपर्व "	×	-	×	×	×
८	कर्णपर्व "	×	-	×	×	×
९	शल्यपर्व १	संपूर्ण	-	५१	"	सं. १७२० प्रायः
	गङ्गापर्व उत्तमाक्षर २	" अत्य शल्य पर्वणि समावेशः	५५	"	सं. १९४४ वर्षे प्रायः	(२)
१०	सौप्तिकपर्व	,	-	२६	"	सं. १७१५ खिल (३)
११	श्रोत्रपर्व	×	-	×	×	×
१२	शांतिपर्व तस्मिन् सुखपूर्ण	-	२३०	,	सं. १७२९ काके	(४)
	१ राजधर्मपर्व प्रथमं (५) "	मूलमात्र	-	१०५	"	सं. १७२९
	२ आपद्धर्मपर्व उत्तमाक्षर इति (६)	-	७४	"	सं. १७२९ वर्षे	(७)
	३ मोक्षधर्मपर्व उत्तमाक्षरः (८)	-	२८८	"	सं. १७४२ मिति प्रायः	(९)
	१ राजधर्मपर्व प्रथमं (१०) "	-	१५०	"	सं. १७७९ वर्षे	(११)
	३ मोक्षधर्मपर्व केनका टीका संपूर्ण	-	२८८	"	सं. १९९९ वर्षे	(१२)
१३	मानुशासनिक पर्व	×	-	×	×	×
१४	अश्वमेधपर्व मूलमात्र (१३)	-	११३	"	सं. १५८५ प्रायः	
	२ "	-	२०२	"	सं. १६७२ प्रा.	
१५	आश्वमेधासिकपर्व	-	१४	"	सं. १७१५ वर्षे	आषाढशुद्ध ५ सुबो
१६	मुशळपर्व नास्ति	×	-	×	×	×
१७	महाप्रस्थान-यानपर्व "	×	-	×	×	×
१८	स्वर्गारोहण-दिवारोह	×	-	×	×	×
	१ हरिवंशः पर्व मूलमात्रः (१४)	-	४९२	"	सं. १९२७ वर्षे	(१५)
	२ " उत्तमाक्षर खिल (१६)	-	४८६	"	सं. १७९९ प्रा. पत्र	(१७)
	३ " खिलः (१९) " प्रायः	-	६२४	"	सं. १९१५ प्रायः	
	४ " खिलः (१६) " प्रायः	-	५६१	"	सं. १७४५ प्रायः	

(1) वर्षे मार्गशीर्ष मासे सितेपक्षे पूर्णिमास्यां गुरो अस्मान् गोष्पपर्वः (2) माघ पोष शुक्लपक्षे पंचम्यां पुष्यवारे लक्ष्मिदेव गदापर्वः अस्मान् सौत्तिकं भविष्यति (3) सिंह आश्विमासिकस्य केतुकेऽर्धे शके १५९१ प्रवर्तमाने आषाढ शुद्धी वीज क्षनिवासरे लिखितोयं राजधर्माः शांतिपर्वश्चतुर्थः (4) प्रथम उत्तमाक्षराः इतिथी महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां शांतिपर्वणि राजधर्मः॥ (5) इतिथी महाभारते शतसहस्र्यां संहितायां शांतिपर्वणि आषाढमेतु (6) वर्षे राजधर्मपर्वः केतुके एवास्व केतुके (7) उत्तमाक्षरः आर्द्रावते द्विगं चक्षुषेतं। इतिथी महाभारते शतसहस्र्यां संहितायां वेत्तासहस्र्यां शांतिपर्वणि मोक्षधर्मेतु उच्छात्सुपाशमानं (8) माघ शुद्ध चतुर्दशी लिखितं मनुकमभि अस्मान् आक्षुत्ताक्षनिर्गं पक्षे भविष्यति (9) प्रथमं इतिथी महाभारते शांतिपर्वणि राजधर्माः (10) वर्षे आषाढादि वर्षे वेत्तासहस्र्यां वदि ८ शान्ते (11) वर्षे भाद्रपद मासे शुक्लपक्षे समसो गुरुवासरे। इतिथीमत्परमहंस परिव्राजकावाचार्याभयानन्द पुष्यपाद शिष्येऽन्यासपूर्णं सुगोत्रेण विष्णुवागारापरनामपेयेन विरचितायां व्याख्यान रत्नावल्यां शांतिपर्वणि मोक्षधर्मः समाप्तः (12) मूलमात्रः इतिथी महाभारते शतसहस्र्यां आषाढेऽधिकपक्षे चतुर्दश समाप्तं अथ अनुगीतापर्व अंतर्गतं (13) मूलमात्रः खिल महाभारतं इतिथी महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां खिलेपु हरिवंश प्रवर्णविधिः (14) वर्षे वैशाख वदि १ शुद्धिने। अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री कृष्णि विष्णुविरचितान्ये संवत् १९३० वर्षे वैशाख वदि १ शुद्धिने (15) खिल महाभारत अध्यायः मध्यभागांतं १८६९ इतिथी हरिवंशेऽस्मात् संपूर्ण अध्यायः ६९ समाप्तोयं हरिवंशः (16) पत्र ३०९ तमे पत्रे। इतिथी महाभारते शतपादस्र्यां संहितायां खिलेपु हरिवंशे भक्तिं समाप्तो अध्यायाः ६९ (17) खिल महाभारते अध्यायांकाः न सन्ति अध्यायांते किंचिदधिकं विन्दं श्लोककाः न सन्ति। इति हरिवंशे द्विष्यानिपुष्यः इत्थं अध्याय प्रारंभे वैशम्पयणः। (18) खिल महाभारतं अध्याय समाप्तो इति खिलेपु हरिवंशे ईदृशं अस्ति प्रारंभे अर्जुन उवाच इत्येतत् न अध्यायांकाः न श्लोककाः।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्त लिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : PURANAM 24

विषय : पुराणं २४।

क्रमांक S-rial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
--------------------------	---	---	--------------------	-----------------------------	---	-----------------------------

पुराणं । २४

१ श्रीमद् भागवतं ।

प्रथमस्कंधः श्रीधरी टीका १	संपूर्ण	-	७९ संस्कृत देवनागरी संवत् १७८० वर्षे लिखितं
" " २	"	-	४८ " सं. १८१५ शाके (1)
" " ३	"	-	८१ " सं. १८१९ माघ (2)
" " ४	"	-	१०८ " सं. १८२४ वर्षे शाके (3)
" " ५	"	-	६८ " सं. १८४९ ना कार्तिक मासे (4)
" " ६	"	-	१२६ " सं. १८५० वर्षे पौष (5)
" " ७	"	-	८० " सं. १९३२ प्रा.
२ द्वितीयस्कंधः श्रीधरी टीका १	"	-	६६ " सं. १९३४ शाके (6)
" श्रीधरी टीका उत्तमाक्षरः २	"	-	९९ " सं. १८५२ वर्षे पौष (7)
" " ३	"	-	३५ " सं. १९०९ प्रा. के. श्रीकृष्ण
३ तृतीयस्कंधः श्रीधरी टीका ÷ १	" [संभाषणं दोषिण	-	१५६ " सं. १७४५ समये (8) .
" मूलमात्रः २	"	-	८९ " सं. १८८० प्रायः
" " ३	"	-	९७ " सं. १८९७ प्रा. उत्तमाक्षर
" " ४	" गुटको	-	२८० " सं. १८९५ प्रा.
४ चतुर्थस्कंधः मूलमात्रः १	"	-	१३७ " सं. १८९९ वर्षे अषाढ (6)
" " २	" गुटको	-	२९४ " सं. १८९५ प्रा.
५ पंचमस्कंधः " १	"	-	९० " सं. १७४९ प्रा.
" " २	"	-	११८ " सं. १३०० प्रा.
" " ३ अपूर्ण २६ अध्याय	"	-	६५ " सं. १८४३ माघपद शुक्ल (10)
६ षष्ठस्कंधः श्रीधरी टीका संपूर्ण	"	-	७० " सं. १८३७ प्रा. राजकोट (11)
७ सप्तमस्कंधः सटीकः १ अपूर्ण	"	-	८६ " सं. १७४९ कार्तिक कृष्णाष्टमी
" सटीकः २ संपूर्ण	"	-	६९ " सं. १९१४ प्रायः
८ अष्टमस्कंधः मूलभाषाः (12) १	"	-	५१ " सं. १४८३ श्यामी (13)
" " २	"	-	६५ " सं. १८९९ प्रा.
" सटीक श्रीधरी ३	"	-	७४ " सं. १८८९ प्रा.
९ नवमस्कंधः मूलः १	"	-	७५ " सं. १७२४ वर्षे (14)
" सटीकः २	"	-	७४ " सं. १८३५ वर्षे शाके (15)
" सटीकः ३	"	-	५१ " सं. १८८९ प्रा.
" मूलः ४	"	-	७४ " सं. १९१० प्रा.
" मूलः ५	"	-	५६ " सं. १९२५ प्रा.

(I) शाके १९८१ ज्येष्ठ मासे शुक्ल त्रयोदशी शुके (2) माघ कृष्ण सप्तमी विषिर्ग्रामानुषर्गकः गुरौ (3) शाके १९९९ पौष मासे शुक्लपक्षे ११ सुपुषाक्षरे करेदी निवासि व्यास शिवरामात्मज माचरजो तपुनेत्र (4) मासे शुक्लपक्षे प्रतिपक्षे सोमवासरे कच्छदेशे भुवननगरे दवे श्री ५ सामजी तत्सामज माहे हरिकृष्णेन (5) पौष मासे कृष्णपक्षे अमानास्या मंदवासरे लवितं भुज मध्ये मोड ज्ञाति भट कुबेर तस्यपुत्र कचरा (6) शाके १९९९ कार्तिगुन शुक्ल १५ गुरौ व्यास शिवरामात्मजजागवबाबुदेवेन (7) पौष मासे कृष्ण पक्षे १४ रविवसरे रावश्री ७ रायचण राज्ये भुज नगर मध्ये लवितं मोड ज्ञाति कुबेरपुत्र कचरा (8) समये कस्तुर मासे शुक्लपक्षे गंगादासेन (9) आषाढ मासे शुक्लपक्ष १५ समिवासरे भट रवजी वेड मध्ये (10) शुक्ल ७ पुषे गुसाई नारगौर (11) राजकोट मध्ये भट भावजोमुत्त माहेकरा (12) मूलमासः संशेववास पाठमेवार्थ परमोपयोगी (13) श्यामी प्रवर्तमाने शुक्ल नाभि संवत्सरे चैत्र मासे कृष्णपक्षे द्वितीयायां तिथौ भौमदिने स्वातिपक्षे अश्वेद वनौद नगरे सिंहपुर ज्ञातीय भट श्री रुडासुत गोवर्धन नाम्ना लवितः (14) वर्षे भाद्रपद यदि चतुर्थ्या सोमवासरे लिखितः (15) शाके १७०० प्रथम आषाढ नि. ११ चंद्र नवानगर मध्ये लि. व्यास बाबुदेवेन करेदी निवासो ।

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્તલિખિત ગ્રન્થ મંડાર, ગોંડલ-સૌરાષ્ટ્ર

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA

Subject: PURANAM 24

વિષય: પુરાણ ૨૪

ક્રમાંક Serial No.	ગ્રન્થ નામ Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પૃષ્ઠાણિ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ Scribe & Date
૧૦	દશમસ્કંધ: મૂલ: ૧	સંપૂર્ણ	-	૨૦૪	દેવનાગરી સંસ્કૃત સંવત ૧૭૪૮ વર્ષે (1)	
	„ મૂલ: ૨	„	-	૨૭૦	„ સંવત ૧૮૧૮ના જ્યેષ્ઠ માસે (2)	
	„ મૂલ: ૩	„	-	૧૯૪	„ સંવત ૧૮૮૮ પ્રથમે માધવ (3)	
	„ ઉત્તરાર્ધ અધ્યાય ૫૦ ત: ૧૦ ૪	„ ઉત્તમાક્ષર	-	૧૩	„ સં. ૧૮૧૦ વર્ષે (4)	
	„ શ્રીધરી ટીકા	૫ „ અપૂર્ણ	-	૨૦૧	„ સં. ૧૭૦૦ પ્રા.	
	„ સટીક: ૪૦ અધ્યાયા:	૬ „ „	-	૧૧૨	„ સં. ૧૮૧૭ પ્રા.	
	„ ૪૮ અધ્યાયા:	૭ „ „	-	૧૪૨	„ „ „	
૧૧	પદ્માવતીસ્કંધ: ૧	સંપૂર્ણ	-	૭૮	„ સં. ૧૬૪૮	
	„ ૨	„	-	૮૦	„ સં. ૧૮૫૦	
	„ ૩	„	-	૮૫	„ સં. ૧૮૬૦ વર્ષે	
	„ ઉત્તમાક્ષર: ૪	„	-	૮૪	„ સં. ૧૮૧૦ વિપ્ર વેલજી (5)	
	„ ૫	અપૂર્ણ	-	૮૪	„ સં. ૧૬૪૯ પ્રાથ:	
૧૨	દ્વાદશસ્કંધ: મૂલમાત્ર: ૧	સંપૂર્ણ [અધ્યાય ૩૧,	-	૭૮	„ સં. ૧૬૪૮ પ્રા.	
	„ મૂલમાત્ર: અ. રત: ૧૮ ૨ અપૂર્ણ [સ્લોક ૧૩૧૪	-	-	૭૮:૬૪	„ સં. ૧૬૪૯ પ્રા.	
	„ મૂલ: અધ્યાયા: ૩૧ ૩	સંપૂર્ણ	-	૮૦	„ સં. ૧૮૫૦ પ્રા.	
	„ ૪	„	-	૮૫	„ સં. ૧૮૫૦ પ્રા.	
	„ ઉત્તમાક્ષર: ૫	„	-	૮૪	„ સં. ૧૮૧૦ લિ. વિપ્ર (6)	
	„ અધ્યાય ૨ ત: ૧૬ ૬	„ અપૂર્ણ	-	૩૦	„ સં. ૧૬૦૦ પ્રા.	
	„ અ. ૮ તા. ૧૧ સટીક: ૭	„	-	૩૭	„ સં. ૧૬૦૦ પ્રા.	
	„ અ. ૧૩ ઉત્તમાક્ષર: મૂલ: ૮	„ સંપૂર્ણ	-	૩૨	„ સં. ૧૮૧૦ વિપ્ર (7)	
	„ મૂલ: ૯	„	-	૪૦	„ સં. ૧૮૩૦ શાકે (8)	
	„ સટીક: અ. ૧૨ છુટી ૧૦ અપૂર્ણ	„	-	૪૯	„ સં. ૧૬૦૦ પ્રા.	
૧૩	શ્રીમદ્ માગધરી વૈષ્ણવ: મૂલમાત્ર: પત્ર ૧૧૯					
	પ્રથમ સ્કંધ: ૧	„	-	૫૧	„ સં. ૧૭૫૯	
	દ્વિતીય સ્કંધ: ૨	„	-	૨૮	„	
	તૃતીય સ્કંધ: ૩	„	-	૯૦	„ સંવત ૧૭૬૦ કાર્તિક શુદ્ધ ૧ નિ. હરિ	
	ચતુર્થ સ્કંધ: ૪	„	-	૯૨	„	
	પંચમ સ્કંધ: ૫	„	-	૭૦	„ સં. ૧૭૬૦ વર્ષે (9)	
	ષષ્ઠ સ્કંધ: ૬	„	-	૫૪	„	
	સપ્તમ સ્કંધ: ૭	„	-	૪૮	„ સં. ૧૭૬૦ વર્ષે માગધરી શુદ્ધ ૧૧ હરિરામે	
	અષ્ટમ સ્કંધ: ૮	„	-	૬૨	„ સં. ૧૭૬૦ વર્ષે પૌષ વદી ૫ લિ. હરિરામે	
	નવમ સ્કંધ: ૯	„	-	૫૮	„ સં. ૧૭૬૦ વર્ષે પૌષ વદી ૧૧ લિ. હરિ	
	દશમ સ્કંધ: ૧૦ પૂર્વાર્ધ	„	-	૧૨૭	„ સં. ૧૭૬૦ વર્ષે ભાવળ પ્રા	
	„ ઉત્તરાર્ધ	„	-	૧૧૭	„ સં. ૧૭૬૦ વર્ષે ભાવળ શુદ્ધ (10)	
	પદ્માવતી સ્કંધ: ૧૧	„	-	૮૬	„ સં. ૧૭૬૦ વર્ષે આશ્વિન (11)	
	દ્વાદશ સ્કંધ: ૧૨	„	-	૩૪	„	

(1) વર્ષે અશ્વિન વદિ ૧૩ સોમવાસરે (2) માંસે: શુક્લપક્ષે અષ્ટમ્યા: તિથી ગુરવાસરે બીપાળિપુર નમ્મે પાલોતાળા ઔલીચ દ્વે કાનજીઆત્મજ શાંતુ લિખિત ગ્રંથ શ્રી ૫ શિવરામાયજ માધવજી પઠનાર્થ (3) માધવ માધિ અતિલેપક્ષે તૃતીયાર્ધ શુક્રવાસરે લિ. હિવેદી દ્વે નરછે તરયત્મજ માદે સ્થવજી અમલત્થા નિવાસ: ૧ અમરેલી (4) વર્ષે લિખિત વિપ્ર વીરજી જ્ઞાતિ વરજાદ, ગ્રાહ્યન શ્રદામાપુર નમ્મે તથા: દેવતિયા નમ્મે પઠનાર્થ શ્રી-શ્રી ૭ મહારાજશ્રી-મગલેલજી મહા.શુદ્ધ (5) વેલજી મુદામાપુર નમ્મે પઠનાર્થ નમ્મે મહારાજશ્રી ૭ મગલેલજી (6) વિપ્ર વીરજી શ્રદામાપુર નમ્મે પઠનાર્થ મહારાજશ્રી શ્રી શ્રી ૭ મહારાજશ્રી મગલેલજી (7) વિપ્ર વીરજી શ્રદામાપુર નમ્મે દેવતિયા નમ્મે મહારાજશ્રી મગલેલજી પઠનાર્થ (8) વર્ષે ૧૬૧૫ કાર્તિક શુદ્ધ ૧૧ ઔમે (9) વર્ષે માગધરી માંસે: શુક્લપક્ષે ૭ લિખિત હરિરામ ગ્રાહ્યન ગોંડ (10) શુદ્ધ ૧૫ લિ. હરિરામ (11) અશ્વિન કૃત્તિક ૭ લિ. હરિ.

विषय : पुराणं, २४ ।

(1) भागवत' भागवर्' शीपिका अथरी टीका कस्मिन्नपिस्कृते समती न लेखक नाम न मिति: (2) श्रीहरनामि विरचिता भागवर्' शीपिका टीका (3) कस्मिन्नपिस्कृते न मिति: (4) १ प्रथमस्कंध पत्र ७७ २ द्वितीयस्कंध पत्र १३१ तृतीयस्कंध पत्र ११८। चतुर्थस्कंध पत्र १७। पंचमस्कंध पत्र ८३। षष्ठस्कंध पत्र ६२। सप्तमस्कंध पत्र ६७ अष्टमस्कंध पत्र ६०। नवमस्कंध पत्र ५१। दशमस्कंध पुराण' पत्र १४८। एकादशस्कंध उत्तराध्याय' पत्र १३०। एकादशस्कंध पत्र १४९। द्वादशस्कंध पत्र ४८। (5) आश्विन शुद्ध १५ शनिवारे (6) सटीक' भागवर्' शीपिका श्रीहरनामि विरचिता (7) मासि शुद्ध एकादश्या समाप्त्या (8) शुद्ध एकादश्या शनिवारि (9) पुराण' अति प्राचीन' प्रायः संवत् १२०० वर्षे लिखितं (10) अतोपि अतिप्राचीन' एवात् सशोधनार्हं न सर्व' सम्प्रदायान्नोक्तितं मध्ये कश्चित् लेखकः स्यात् न पत्राणि सम्प्रदाय संकलितानि सुदृढ पुस्तकाद् बहुधा भिन्नं गृह्यताः पाठभेद' पूर्ण (11) काशीलखण्डः पुराण' इतिथी परमहंस परितोऽकाश्या' भग श्री रामेन्द्रनाथ द्विभक्त रामानन्दाय कृता टीका (12) अथवा ७३ मूलमंत्र समाप्तेऽतः शिवपुराणे प्रथमाय ४७५० (13) शके १७०५ प्रथम वैशाख शुक्ले वद्यै २० अथवा श्री गौडपुर मध्ये व्यास प्रयागस्थ प्रजांगजस्य शत्रुदेवेन लिखितं। वाजेय कुम्भाजी विद्यानाथ तपोऽ कुंवरजी मुकुन्दजी पिंग्जीजी विजयराजे (14) मासे सितेपक्षे तृतीयायां मंदवारे अमर'स्यां प्रमे निषादिन' द्वे नाथे तस्यामत्र उच्यते लिखितं (15) स्यात् इतिथी गह्वरपुराणे सारीढारे कृष्ण गह्व' संवारे प्रायः ब्राह्मणविषयं नैमि दशमेऽध्यायः (16) शके १९१७ वैशाख मासे शुक्लपक्षे ७ शुद्धशरद्रे अथवा श्री मुजनगर वास्तव्य गणेशजी ७ गोविन्दोद्भूत गोपालजी लि (17) शके १८९५ अषाढ शुद्ध १ भौम लिखितं (18) आषाढमास सितेपक्षे त्रयोदश्यां रवौ लिखितं नंदकिशोर (19) शके १७५६ पौषमासे शुक्लपक्षे २ शुद्धशरदे लिखितं हर'यात्मज क्षीणा (20) महापुराण' अथवा प्रथमस्कंधः १-३६ अध्यायः (21) जयदेव मार्गशीर्ष पौर्णमास्यां शनौ व्यासार्चनं अथवा (22) सारनगरद्विचन्द्रमन्त्र'के मासे प्रथम दिने दशे कुजदेवे दिक्क'स्यायां तिथौ शिवे रामकः समलिखितं पुराण' (23) मासे असितपक्षे नवम्यां च त्रावरे साहज' द्विदेवी नरविद्यामय उच्यते व्यास'स्यां वास्तव्य गणेशजी (24) अथवा समाप्तेऽस्ति।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्त लिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : HINDI BHASHA 25

विषय : हिंदी-भाषा २५।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
१	अध्यात्म रामायण (1)	संपूर्ण गुलाबसिंह (2)	-	३३०	देवना. संस्कृत	संवत् १८९६ भाद्र. वरी (3)
२	अनेकार्थ नाममाला (4)	„ नन्ददासकृत दोहा जिनहर्ष	-	१४	„	सं. १८४१ प्रा.
३	अमर चंद्रिका जोषपुर (5)	„ अमरचंद्र अलंकार (6)	-	१७८	„	सं. १८५२ ज्येष्ठ कृष्ण (7)
४	अलंकार रत्नाकर	„ दत्तपतिराय बंशीधर	-	८०	„	सं. १९३६ ना अषाढ (8)
५	अष्टावक्र	अपूर्ण	-	५६	„	सं. १८१९ भा. राजा (9)
६	अक्षरबावनी	„	-	३	„	सं. १८३४ प्रा.
७	इखलकुलमुहसनीको हिंदवी किताब	„	-	२१	„	सं. १७१३ प्रा. तमास (10)
८	ऋतुवर्णन कवित संप्रहमे देवो संपूर्ण असुराम कवि	-	-	२	देवना. भाषा	सं. १९३१
९	एकादशी माहात्म्य	„	-	१०	„	सं. १७७४ ६वें कनावास. लि.
१०	कवित संप्रहः ऋतुवर्णन १, (11), पद्माकर सरदार कवि	-	-	११५	„	सं. १९४२ भा. भाषा (12)
११	कवित संप्रहः ऋतुवर्णन (13) संपूर्ण पद्माकर कवि (14)	-	-	३१७	„	सं. १९३६ प्रा. (15)
१२	कविप्रिया सटीका उत्तमाक्षर	„ केशव (16) आभरणार्थः	-	११०	„	सं. १८५९ कार्तिक शु. १ गु.
१३	„	अपूर्ण [हरिचरणदास	-	९१	„	सं. १८३९ प्रा.
१४	कार्तिक माहात्म्य	संपूर्ण	-	११९	„	सं. १८५४ प्रा.
१५	कीरवाली चोख । भातारी (17) उत्तमाक्षर	-	-	३९	देवना. मराठी	सं. १८४० प्रा.
१६	गीता माहात्म्य । नासकेत (18),	-	-	१५४	„	सं. १८४१ भाद्रा वरी १०
१७	जलाल गहाणीकी शिकवा	„	-	१७	„	सं. १८५३ भाद्रपद शु. (19)
१८	जानकी स्तव	„	-	१०	„	सं. १८३७ कार्तिक कृष्ण ९

(1) रामायण ६६ अध्याय, ३२९३ पद्य, छपे—गरीबी शुभ मातपिता जमीराई मात । गुलाबसिंह सन्तान भयो ता सुतके धामा ॥१॥ पुर सेखव कुंजके वास सुनि कंत मनाए । प्राचीकूल सुतीर्थ तीर सुरसरी छाप ॥२॥ तद्विंशत भवा करी तिन कथा रामायणी पाव हर । बाहरो—गुब नावक हरि रूप जग निज तप पुंज अपार ॥३॥ छपे—गुब अंगद अमरसुराम गुब अर्जुन धीरा ॥ हरि गोविंद हरराई गुब हरकिंजरी तीरा ॥ गुब तेगवहादर भयो जगतकिंपकि सखा ॥ गोविंदसिंह गु भयो सुताकोपत अन्या ॥ गुमलाह चमकौ पथ जगत सात तेज पथ दुमरजि ॥ हिंद शांत अनुग लघु बाल बन भाषा करी शुभ यथामति ॥ सुवैया—पक्षों उत्तर पूर्व औचकंद, दक्षिण जोह प्रभात, निहारे ॥ सिल भये पद पंकजके गुम नाम सममुक्त मंज उचारे ॥ ब्रह्मसनातन देहधरे सब सेवक जा अब सागर तारे ॥ ता दुह नानकके पदपंकज अंजलि के अब छव हमारे ॥ दोहरा—जा पद पंकज नीर है बन्धन दए विधर ॥ मानसिंह गुस्को नमो लखी ज्ञान अवतार ॥ ग्रह अग्नि बलुचंद (संवत् १८१०) गुन संवत् आनंद धार ॥ दशमी कार्तिक शुदी शुभ सुराधीश गुबवार ॥ (2) गुलाबसिंह सिल नानकपदी (3) वरी १० लखित कृपारभरा बडा आत्मजा मनसाराम देवाराय वीजो (4) ५ अनेकार्थ नाममाला २ उद्देश वनीसी (5) जोषपुर महाराज अनुपसिंह आश्रित रत्नाकाल संवत् १७९४ भाद्रपद शुदी १० दुबारे (6) अलंकार ग्रन्थ चोपडी (7) कृष्ण ११ दुबारे नगरठठामा बसत तनसरिपुरीमा ओजा अर्जुनदससुत मोटा लिखित (8) अषाढ कृष्ण ८ गुब लिखित मढवी पंचांग बालीदास हाखे मया । सामी प्रय प्रमाणे चमारकी मध्ये लख्यो छे लखाविह दवे केशवजी वेखजी (9) राजा हासित प्रका स्वस्ति शः स्वस्ति दयेव च ॥ यजमानगृहे स्वस्ति शक्ति गोमालकेपु च ॥ (10) तेषाम हस्तप्रदीप्ता मोटामा मोटा अक्षर आना छे (11) १ ऋतुवर्णन, २ श्रीमं नर्णन, बहुतराधिक उत्तम हस्तप्रदी कवित ५२५ है । (12) बंद दसमने बार रवि कि. तरवाचः मोहनलाल बोधजी । एक कवितका अनुमा केशववर्णने । अंजनके सर प्रिय मंनके हरनहार केचो मा छत्रिलिखे छबिले छेडे बार है । कैसे है सि बार जेधे स्याम भा तुलके छाप । कैसे है गु तार जेधे अदिकेकुमार है ॥ कैसे है कृपार जेधे मोहरख वर कहि । कैसे परवार जेधे अलिनके हार है । कैसे है छुआर जेधे कम चोखार कहि । कैसे चोरवार जेधे जेधे सधन छुधार है ॥ कैसे है सुधार जेधे बोद्ध सिगार कहि । कैसे है छिमार प्रारि जेधे सेधे बार है । (13) ऋतुवर्णन बोधक कवित छपे दोहा जामनगरना विभाजामना गुमान कवित (14) कवि छुंर कवि ठाकुर कवि चम्पा १००० (15) कायाहुते काम जय गाठ हुते दाम जय, अच्छे सब काम जाय, रूप जाय अंगते । कुलको वरत जोब गुस्की सरम जाय, उत्तम काम जाय, मकी उमंगते ॥ पंचमे प्रतीत जाय, वेदनकी रीत जाय, नारीपुष्टी प्रीत जाय कोठी मत अंगते । सुरपुरको बस जाय, मक्कीके निवास जाय, पनीया की मार खाय, परबारा पतंगते ॥ (16) केशव कवि महाराज अमर इन्द्रित धिरचित (17) भातारी वार्ता विजयदेवरठरी बाटा कवित संप्रह (18) नासकेत आख्यान धुवचरेत, बालाचको (19) शुदी ११ देवकोट मगर लिखित ।

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author	टीका	पत्राणि	भाषा-लिपि:	लेखक-मिति:
Serial No.	Name of the work Title	संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Date
१९	होलाभादनी बाता	अपूर्ण	-	१३	देवना. हिंदी गुज. सं. १८१३ प्रा.	
२०	दिल्लीला	"	-	४	" सं. १८९९ प्रा.	
२१	दानलीला २ पुस्तक	संपूर्ण कृष्णदास	- ओलीयुं ६	"	" सं. १९१० प्रा.	
२२	भयानलीला	" माधवाश	-	११	" सं. १७४४ आ. गु. ७ गु.	
२३	नखशिखवर्षेन उत्तम कविता (१)	"	-	६३	" सं. १८११ प्रा.	
२४	नवनागरी	"	-	२५	" " "	
२५	नायिकाभेद ५ पुस्तक	"	-	५०	" सं. १८०३ प्रा.	
२६	बोधककाव्य ग्रन्थ प्रकीर्ण १९	"	-	२२५	" सं. १८०७ प्रा.	
२७	महासमाधि १ (२)	"	-	३६४	" सं. १८१६ प्रा.	
२८	भक्तमाल	" मारायणदासकृत	-	५६	देवनागरी भाषा सं. १७९७ प्रा.	
२९	मखनहोलाका साठा बोधबेलका*	" [*सगडा	-	३२	" सं. १९२५ भावण वरी १० गुज	
३०	भगवद्भक्त रत्नावली मूलसह *	" विष्णुपुरी	-	१६३	" सं. १९०४ भावण मासे (३)	
३१	धर्मर बतीली [*भाषाटीका	"	-	२	" सं. १९११	
३२	भट्टहरि शतक नीति (४)	" जयपुरना (५)	-	३६	" सं. १९४५ना महावरी (६)	
३३	" १	" जयपुर (७)	-	७०	" सं. १९४५ प्रा. के. दवे केदारजी वेलजी	
	किसनबावजी २ (उपदेश बावजी (८) किसनकवि	"	-	२२	" " " "	
३४	भागवत एकादश स्कंध पद्यबंध	" चतुरदास रचनाकाल (९)	१३८		" सं. १८९७ फागुन शुद्ध ११	
३५	" भाषाटीका गद्य अपूर्ण	"	-	४९	" सं. १८३७ प्रा.	
३६	भारती भूषण भलंकार ग्रन्थ संपूर्ण	बाबु गिरधरदास कवि	२६		" सं. १९१३ मिति भावण कृष्ण ३ १	
३७	"	"	-	९	" सं. १८९४ वर्षे (१०)	
३८	भाषा भूषण नायिकाभेद	" महाराजाधिराज प्रतापसिंह १०			" सं. १९३४ प्रा [*संज्ञासारे	
३९	फारसी हिन्दी कोश	"	-	४	" सं. १८४१ प्रा.	
४०	मधुमालती कथा १	"	-	७०	" सं. १८९३ना वर्षे शाके (११)	
	सुंदर गुंगार २	"	-	१९	" सं. १८९३ ना वैशाख शुद्ध ३	
	प्रवीण सागर ३	अपूर्ण	-	९	" " " "	
४१	मधुमालती कथा सविज्ञ	"	-	९८	" सं. १८८९ शाके (१२)	
४२	रत्नाकर भलंकार	अपूर्ण	-	५६	" सं. १९०४ प्रा.	
४३	रसिकप्रिया १९ प्रभाव (१३)	संपूर्ण महाराज (१४)	-	१५४	" सं. १९१४ प्रा.	
४४	" १९ प्रभाव उत्तम धर	" महाराजकुमार इन्द्रजित	६३		" सं. १७४८ वर्षे (१५)	
४५	" मूलसह गुजराती (१६)	अपूर्ण " गुजराती टीका ५७			" सं. १८९९ प्रा इतिथी (१७)	
४६	रसिकानन्द प्रकरण १२ (१८)	संपूर्ण मालाकवि	-	११६	" सं. १९३१ ना उषष्ठ (१६)	

(१) कविता रचनाकाल संवत् १७७१ नयमास (२) प्रकाशमासि २ पद ३ सारमास्यो ४ कर्तन ५ मो (पत्राणि लीला अदि (३) मासे शुक्ल पंचम्या सोम लिखित पंजाबदेशे ग्राम नामामध्ये महत महाराज जयकृष्णदास जीके स्थानमें मुरली मनोहरजीके मंत्रिमे लिखित कोष संप्रदायी वैष्णव इन्द्रावन वास रामकृष्ण (४) नीतिगुंगार वंराय मंजरी उत्तम काव्य है। इतिथी जयपुर महाराजा सवाईजी प्रतापसिंह विरचिते वैराग्यमंजरी संपूर्ण (५) जयपुरके महाराजा सवाईजी प्रतापसिंह रचित रचनाकाल संवत् १८९२ मासौ कृष्ण पंचमी शतकका नाम मंजरी दिया है। (६) वरी ५ बार कुचे दवे केदारजी वेलजी भावनगर मध्ये (७) जयपुर महाराज प्रतापसिंह रचित (८) रचनाकाल संवत् १७६० विजयादशमी (९) रचनाकाल संवत् १६९३ अश्वि शुद्ध ६ कुज (१०) वर्षे चैत्र वरी १ भीमे श्री भुजनगर मध्य राउनी रावबबजोराउजे लिखत कवि सिनजी मालजी बैला छेरेरबंद मोतीचंद (११) शाके १७१८ प्रवर्तमाने मिति मार्गशीर्षदि ५ कुचे (१२) शाके १७५९ माग छीवै कृष्ण ११ भीम, १ भोगाळ पुराण रागमाला चित्र ७५ (१३) १ रसिक प्रिया १९ प्रभाव, २ मानमंजरी नाममाला कोस (१४) महाराजकुमार इन्द्रजित विरचित नंददास (१५) वर्षे भावण शुद्ध १४ भीम दिने पञ्चावगरे लिखित (१६) गुजराती टीका १ पत्रे गणपतिवि (१७) इतिथी महाराजकुमार इन्द्रजित विरचितियां रसिकप्रिया पद्यः प्रभावः (१८) पत्र १ थी ११ नायिकाभेद, पत्र १ थी १०९ रसिकानन्द पत्र ११० थी ११३ श्री जगन्मंगल हय धोतर शतनाम स्तोम प्रकीर्ण (१९) उषष्ठ कृष्ण १० चंडासारे लिखित श्री मेरवीराजी शुक्ल गोविंदराम वेलजी सदावित ठांडेर साहेबजी ७ मोहदुषिषमी स्वयमेव पठनाई स्वस्थानभी माळीया।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्त लिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.
Subject : HINDI BHASHA 25 विषय : हिंदी-भाषा २५।

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पन्नाणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
Serial No.	Name of the work (Title)					
४७	राममाला	अपूर्ण	-	५	देवनागरी भाषा	संवत् १८४१
४८	राजनीति प्रास्ताविक	संपूर्ण जसुरान	-	१७	"	सं. १८६७
४९	रामाज्ञा सप्तसप्तक उत्तम (१)	" कवि तुलसीदास	-	२०	"	सं. १८३६ शाके (२)
५०	" कविता ३४२ सर्ग ७	" "	-	१२	"	सं. १८६१ना फाल्गुन मासे (३)
५१	रामगुणगान	"	-	२८	"	सं. १८७१ प्रा.
५२	रामसुमरण	" भावकवि	-	१२	"	सं. १९६५ प्रा.
५३	रामायण तुलसीकृत	" तुलसीकृत	-			
५४	बालकांड	" "	-	१४५	"	सं. १८८४ वर्षे पोष (४)
५५	"	" "	-	१०९	"	सं. १८३५ प्रा.
५६	अयोध्याकांडः	" "	-	७४	"	सं. १८१५ प्रा.
५७	अरण्यकांडः	" "	-	३९	"	सं. १९१० वरी अमइन (५)
५८	"	अपूर्ण	-	२५	"	सं. १९३९ प्रा.
५९	"	संपूर्ण	-	२२	"	सं. १८९३ प्रा.
६०	"	" "	-	१९	"	सं. १८५१ फाल्गुन मासे (६)
६१	"	" "	-	३०	"	सं. १८९९ प्रा.
६२	किष्किंधाकांड	" "	-	१५	"	सं. १८९३ वैशाख वद (७)
६३	सुंदरकांड	" "	-	१७	"	सं. १८५९ शाके (८)
६४	"	" "	-	२०	"	सं. १८९३ना वर्षे जेठ (९)
६५	"	" "	-	२८	"	सं. १८८४ पौष मासे (१०)
६६	लंकाकांड	" "	-	११७	"	सं. १८९९ना वर्षे (११)
६७	उत्तरकांड	अपूर्ण	-	६३	"	सं. १८०५ प्रा.
६८	रामायण कवित कवि रामायण खण्डित	"	-	३०	"	सं. १७११ प्रा
६९	रामायणसारं	संपूर्ण	-	१०	"	सं. १९३४
७०	लीलाललित विमोक्षः	" [२४ अवतार स्तुतिः-	-	३	"	सं. १७८८ प्रा.
७१	विहारी शतसई	" विहारीदासकवि	-	२३	"	सं. १७८७ वर्षे (१२)
७२	"	" "	-	८७	"	सं. १८४९ प्रा.
७३	सुन्दरशतसई पत्र	अपूर्ण सुन्दरवि	-	३९	"	सं. १८७६ना वर्षे शाके (१३)
७४	शिवरहस्य	" जुनागढ दिवान (१४)	-	८०	"	सं. १९१० प्रा.
७५	श्रीकृष्ण चावनी कृष्णदास	संपूर्ण कृष्णदास	-	८	"	सं. १९१४ना शाके (१५)
७६	संग्रामक्षार द्वोपपर्व इतिश्री (१६)	" मिश्रकुलपति	-	२२१	"	सं. १८३१ प्रा.

- (1) उत्तम काव्य ७ सर्ग । प्रत्येक सर्गमे ७ सात वसत । प्रत्येक सप्तकमे ७ सात पद्य । (2) शाके १०९१ फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी बुधवार (3) मासे कृष्णपक्षे तिथी एकादशी मौमवा रे (4) पेस हारी १३ अश्विन श्री सुदामापुरी मध्ये लिखत वावा संत्दास लक्ष्मीनारायण (5) अग्रहण अष्टमीरारे शुक्रवार श्री सुदामापुरी बालाजीके मन्दिरे लिखते गोपालदास (6) मासे कृष्णपक्षे पष्ठ्यां शनिवासरे लिखत द्विवेदी नमद्रुप नारायण (7) वद अष्टमी शुद्धासरे लखित व्यास उकरवा जेतपुर मध्ये लिखितो व्यास उका (8) शाके १६९० कार्तिक कृष्ण त्रयोदश्यां शनिवासरे लिखित द्विवेदी नथल शर्मा वास्तव्य बरकीनगरे (9) जेठ मासे कृष्णपक्षे अष्टमी रविवारसे जेतपुर मध्ये लिखित व्यास लालजीसुत उकरवा सक्केवा जोवराम-कलिदास-मावजी-उकरवा-लालजी (10) मासे शुक्लपक्षे अष्टमी रविवारसे लिखित ठाकर पुरखोतम रंगपुर मध्ये (11) वर्षे भाद्रपमासे शुद्धपक्षे दशमी शुद्धासरे लिखित औदीच्य ज्ञाति जानी नारायण प्रसुराम हलबद मध्ये (12) वर्षे वैशाख मसी ११ दिने श्री वैशिख्यगणि लिखित राधेपुर मध्ये (13) शाके १७४४ प्रथम चैत्रमासे शुक्लपक्षे ११ चंद्रकुम्भारे लिखित (14) दिनाम रणछाडजी अमरजी रचित (15) शाके १७८० प्रथम ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे २ शुद्धासरे लिखित केवलचंद मोरिंदी श्री बंकपुरी मन्दिरे (16) ज्ञाति मन्मथराजशिराज रामविह देवाज्ञाविश्व कृष्णमन्त्रि लिखित केशवरां संस्था संग्राम वर्षनाम योद्धाः परिकल्पः ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: HINDI-BHASHA 25

विषय: हिंदी भाषा। २५

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Le-ves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
७७	संतवाणी दिन्दी काव्य संग्रह (1)	संपूर्ण स्वामी संतदासजी	-	५०१	देवनागरी भाषा	संवत् १८५५ मिति (2)
७८	सवैया ज्ञानदोष १००	"	-	५८	"	सं. १९३१ प्रा.
७९	सत्संगवाणी संग्रह पुस्तक १० (3)	"	-	३३१	"	सं. १८७२ का लकी राम (4)
८०	समयसार नाटक	अपूर्ण	-	७०	"	सं. १७०५ मागशर मासे (5)
८१	सुंदर गुंनार नायिकावैद	संपूर्ण	-	१५	"	सं. १८१० प्रा.
८२	" "	"	-	२९	"	सं. १८५१ ना वषे मागशर (6)
८३	" , १	" सुंदरकवि	-	७१	"	सं. १८४४ वषे केशवजी
	सतसई विहारी २	" विहारीदास (7)	-	५१	"	सं. १८४५ शाके (8)
	रसिक प्रिया ३	" महाराजकुमार इंदरजित	५२ से १३३	"	"	सं. १८४५ शाके (9)
	राधाजीके नखशिखाकोषणन	" केशवदास	१३४-से १४४	"	"	सं. १८४५ कार्तिक वद (10)
	रासकीड़ा ५ उत्तम, मराठी (11)	"	-	१८	देवना मराठीपद्य सं. १८४५ लि. सुभाजी मोसळे	
८४	सुंदर विलास ज्ञान उपदेश	" उपदेश	-	१५	देवनागरी भाषा	सं. १९४५ प्रा.
८५	सेनापतिके कवित	" सेनापति	-	४२	"	सं. १७८३ वषे माघमासे (12)
८६	सेवकवानी	"	-	५०	"	सं. १८५५ कांमूनवदी ५ बैतवार
८७	"	अपूर्ण हरिवंशदास	-	१८	"	सं. १८१० प्रा.
८८	होरी	"	-	ओढीयुं	"	सं. १९०९
८९	ज्ञानसंदीपनी	"	-	३	"	सं. १८९२



(1) संतदास वाणी। विविध उपदेश। अंग। स्वामी देवता मझप्यान। प्रमोदग्रन्थ शब्दग्रन्थ। आरती। १४४० पद पूरा। स्वामीजी श्री संतदासजी चरित्र ३९३। गुरु देवका अंग पृष्ठ ४१९ से ४७७। हारकादवाजी का, देवतावाणी पृष्ठ ४७७ से ४९२। सेवादास पद ४९३। गोविंदस्तोत्र आदि ३० ग्रन्थ। संवत् १८०९ फागुन शुद्ध ७ शनिवार। वाम प्राप्त हुआ। जिसका कंडक्का पृष्ठ १४५ स्वामीजी श्री किशोरामजी संवत् १८३२ भाद्रपद शुद्ध ६ शुक्र प्रभुवास प्राप्ति पत्र १४६। स्वामी रामचरणजीकी वाणी। इकलणां गुरुदेवका अंग पृष्ठ १९९-गुरुदेवको कवित पृष्ठ १९९-२२१। कुंडल्का देवता गुरुदेवका गुरुनाथ प्रताप। शब्द प्रकाश ग्रन्थ पृष्ठ २७४। मनखंडन ग्रन्थ २९०। आरती। श्री बंगसार। मोह मरद राजाको कथा पृष्ठ ३७२। प्रह्लाद (2) मिति श्रावण शुद्ध ७ गुरुवार (3) सीतलासाई महिमा ४। गुरु महिमा कंद ११। नाम महिमा १४। भगती महिमा १९। उपदेश अंग ३५। पापपुनर्निर्णयका अंग ४१। सुकृतको अंग ४६। दवा ५५। स्वामीजी रामचरणजीकी वाणी। चिंतामणि ग्रन्थ ९०। शब्द प्रकाश ९७। मनखंडन ९९। गुरुदेवको अंग ७०। सुमान ७४। अंगुसरको प्रबंध ८०। श्रीबंगसार अंतर्विचार ८९ थी ८८। एकादश स्कंध संपूर्ण। मागवतका पत्र १ से १५५। पद १५७ समनसे उन्नीकी परची १५८। तलेचंदजीकी परची १६१। प्रह्लाद चरित्र १६४, १ से १८०। अथर्व जन्मको परची १८०। राममाला ग्रन्थ १८७। बलिचरित्र १८९। भरथरी चरित्र १९९। ध्रुव चरित्र २०१ से २२१। कबीरजीकी परची २२१। नाम महात्म्य निखदिनपुत्री पशक्यान २३४-२५७। देवाजी परची २५७ से २७३। पद १७३ से १८५ हरिवंश सत २८५ रागरागणी पद २२५ से ३३१ (4) रामवल्लभराम मिति पत्र १८७ (5) मासे शुक्रपक्ष ५ सुहृत्पतिवार (6) मागशर शुद्ध ५ रवि लि. गणीगोविंदसागर उमतपुर मध्ये (7) विहारीदास ७०० दोहा कर्ता इंदरजित (8) शाके १७१७ आश्विन शुद्ध दशमि सुकाश श्री मथुरापुर हस्तक्षर गुमाजी मोसळे पुस्तक श्रीमंत राजाजी राणाजी मोसळे (9) शाके १७९८ कार्तिक वद ११मी सोम्यासरे। श्रीमंत राजाजी राले राणाजी मोसळे हस्तक्षर सुभाजी (10) पद ८ सप्तमासरे १। सुभ जी मोसळे (11) मराठी कविता १५८ पद्य, समकोषी (12) मासे गुरुपक्षे नवमी सप्तमासरे लिखित मेताजी जनकुंजसुत विद्वत्समजेन सिधिरिजेन।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्त लिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र

SHRI BHUVANESHWARI PITH, MSS. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Marathi-Bhasha 26, Shuddhadwaitah 27 मराठी-भाषा २६, शुद्धाद्वैतः २७

क्रमांक Serial No	ग्रन्थ नाम Name of the Work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपिः Language & Script	लेखक-मितिः Scribe & Date
----------------------	---	---	--------------------	-----------------------------	---	-----------------------------

मराठी-भाषा २६

१ भक्तिविजय ओवीबद्ध	संपूर्ण	-	२०० मराठी देवनागरी संवत् १९३५ प्र.
२ महाभारते आदिपर्व (१)	,	-	२१३ ,, सं. १९१०
३ रामायण ओवीबद्ध	,,	-	७० ,, X X
४ अपरोक्षानुभूति	,,	-	६० ,, X X
५ स्वात्मसुख	अपूर्ण	-	२८ ,, सं. १९१३ प्रा.
६ कर्णामृत कृष्ण कर्णामृत	संपूर्ण देवदास	- ओवीबद्ध*	२५ ,, शाके १८२० आश्विन वद(२)
७ मनबोध	,, [*पद्य १३३-	-	१० ,, सं. १८०१
८ रामविजय	,,	-	५५ ,, X X
९ रासक्रीडा मराठी कविता १५८ पद्य	,, समश्लोकी	-	२८ ,, सं. १८४५ यह मन्महिन्दी
१० गरुड पुराण	,,	-	५० ,, X [मं. ८३ मेघ संवत् १८५८]
११ हस्तमलक	,,	-	२७ ,, सं. १८५८ आषाढ वद(३)

शुद्धाद्वैतः २७

१ अष्टावक्रप्रश्नप्रश्न (४)	संपूर्ण	कल्याणरायतनयोगेश्वरः	३ देवनागरी संस्कृत संवत् १७४५-४६
२ अतःकरण प्रबोधः	,	श्री वल्लभाचार्यः श्री गोकुलनाथः	१२ ,, सं. १९७०
३ ,, विवृतिः	,,	श्री गोकुलनाथः [कृता विवृतिः ९	१२ ,, सं. १७४८ आश्विन शु १० रवि
४ अनन्यपुष्टिमात्र-पूर्वपक्षः	,,	,,	१२ ,, सं. १७६६ प्रा.
५ अष्टादश रहस्य	,,	,,	२९ ,, सं. १८४० प्रा.
६ अष्टपदी रामरागिणीमां ४५ अष्टपद्यः	,,	हरिराम	३८ संस्कृते रामरागिणीसु संवत् १८१० प्रा.
७ अष्टाक्षर महावाक्य विवरण	,,	,,	३ संस्कृत सं. १७८०
८ अष्टाक्षर मंत्रार्थः	,,	श्री विठ्ठेश	९ ,, सं. १८३० प्रा.
९ आचार्य तत्त्वत पुत्राणां (९)	,,	पुस्तकानि	९५ ,, सं. १९४० कार्तिकशुद्ध ८ बुध
१० आचार्यश्री महाप्रभुमकी निम्नवार्ता	,,	-	१५८ वज्रभाषा सं. १७०० प्रा.
११ ,, वंशावली तथा (६)	,,	संवत् (७)	३१ ,, सं. १९३५ प्रा.
१२ आचार्यवंश वर्णन	अपूर्ण	-	२६ संस्कृत सं. १७४७
१३ आर्या तृतीय	,,	-	३ ,, सं. १८१७
१४ आशोच निर्णयः	,,	निर्मयराममह	६ ,, सं. १७८० पौष कृष्ण १४ चंद्र
१५ आदिभोविरहस्य	,,	गोकुल कृष्ण	५ ,, सं. १८३१ प्रा.
१६ पञ्चादश स्कंधोपविश्लिष्टकारिकाः	,,	श्रीहरिरामजी	८ ,, सं. १८४०
१७ पञ्चादशी निर्णयः	,,	-	४ ,, सं. १८६६
१८ पञ्चविंश प्रश्न	,,	-	३ पुन. देवनागरी सं. १८३९

(१) महाभारते आदिपर्व पत्र २१। महाभारते सभापर्व पत्र ५८। वनपर्व पत्र ४४। महाभारते वनपर्व पत्र ४८, मुकेश्वर कवि। विराटपर्व पत्र ४२। कर्णपर्व पत्र २०। (२) वद १३ तारीख १३ माहे नोवेंबर १८१४ (३) वद ११ रविवार शाकाब्दस्तामलक संवाद (४) प्रक्षिपत्य समर्थन अबासुरवचादि ३ अभ्यावावाः (५) १ आचार्य तत्त्वत पुत्राणां जन्मे स्थवाः। २ अष्टादश सखानी लीला। ३ श्री विठ्ठेश्वर सहस्रनाम। ४ पाशा केवळी। ५ शुद्धीमां १९ सामुद्रिक। ७ मयूरचित्र प्रकरण। ८। नामत्राकल्पः। ९ विद्यावसुधेश्वरमंत्र। १० उच्छिष्टगणपति प्र.। ११ कर्कटी राखली प्र.। १२ मावणी सहस्रनाम। १३ मंया सहस्रनाम। १४ यमुना पंचांग (६) तथा १२ मावणी उरखानी-टीप (७) संवत् १९३५ चैत्र वरी ११ आचार्यश्रीने जन्म त्यांभी संवत् १९१९ पर्वत यथेला पुढाई बालकोना जन्म दिवसे।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पन्नाजि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
१९	उत्सवकाल निर्णयः (1)	संपूर्ण	-	४३	संस्कृत	संवत् १७५६ वर्षे शाके (2)
२०	उत्सव निर्णय	" निर्मलराम भट्ट	-	२०	"	सं. १९४९ प्रा. व्यास (3)
२१	उत्सव प्रणालिका सेवाशुंगारः अपूर्ण [सामग्री आदि]	-	१८८:८३	-	"	सं. १८९०
२२	ऊर्ध्वपुंड्र निर्णयः १ संपूर्ण पुष्पे लम्बी	-	५	-	"	सं. १८९०
	" माहात्म्य पद्य पु. २ "	-	४	-	"	सं. १९१५
	" विद्यान पद्य पु. ३ "	-	८	-	"	सं. १९३६
२३	ओष्ठवमी नांघ	"	-	४ गुज. देवनागरी	सं. १९१०	
२४	कवचवृक्षः आचार्य वंशवृक्षः (4)	मह निर्मलराम	-	२८	संस्कृत	सं. १९२५ प्रा.
२५	कवचवृक्षः	"	-	२४	"	सं. १८७२ माघ वरी ११ शुक्ल
२६	" विस्तृतः	"	-	२५	"	सं. १८९० प्रा.
२७	कल्लोल	" दुर्लभवास	-	२५	मजभाषा	सं. १८९७ प्रा.
२८	" संस्कृत ग्रन्थाम १३००	" श्री गोकुलेश कल्याण	-	८०	संस्कृत	सं. १८५७ भाद्रपद वरी ५ शुक्ल
२९	" भाषा अपूर्ण [मिठ वंशारे]	-	४८	-	मजभाषा	सं. १९१५
३०	कायेन वाचा इति श्लोक विवरण संपूर्ण	-	१	-	संस्कृत	सं. १७८८ प्रा.
३१	किशोरचर्या	अपूर्ण	-	४७	"	सं. १५७५ प्रा.
३२	किशोरपट्टकं	संपूर्ण	-	३	"	सं. १८५५ कार्तिक शु. (5)
३३	कीर्तन पद्मोक्त रागरागणी	"	-	१५०	मजभाषा	सं. १७०२ प्रा.
३४	"	"	-	९९	"	सं. १७३४ प्रा.
३५	"	"	-	१०७	गुजराती	सं. १७३९ अ. शु. १ रविव
३६	"	"	-	३५०	मजभाषा	सं. १७८७ वैशाख वर (6)
३७	"	" चतुरदाश	-	२४७	"	सं. १७९० माघ शु. (7)
३८	" उत्तमाक्षर	"	-	११४	"	सं. १८२१
३९	"	"	-	२६७	"	सं. १८२५
४०	" हरिरागणी	"	-	३७	"	सं. १८२९
४१	"	"	-	२८९	"	सं. १८५९ पौष शु. १
४२	"	"	-	१००	"	सं. १८८९ प्रा.
४३	कीर्तन प्रभासके पूरक	" [स्वाधीकी वार्ता]	-	८२	"	सं. १९२८ भाद्रपद वरी ९
४४	कीर्तन	"	-	५१	"	सं. १९३३ प्रा.
४५	"	"	-	३०	"	सं. १९४० प्रा.
४६	कृष्ण कवचं १	" विष्णुचर्मोत्तरे	-	३	"	सं. १८२७ प्रा.
	कृष्ण कवचम्याष्टकं २	" महाचार्य	-	५	"	"
	कृष्ण स्तोत्रं ३	" मन्त्रे मन्त्रमंडल	-	५	"	"
४७	कृष्ण कर्णामृत केवला (8)	" लीलाशुकर गोविन्द भट्टकता टीका	९३	-	"	सं. १९७९ वर्षे (9)
४८	" प्रथम शतक (10)	" [विष्णु मंगलः]	-	२९	"	सं. १८२० भाद्रपद वरी (11)
४९	" शतक ३. प्रथम (12)	"	-	३५	"	"
५०	कृष्ण गोपाल पटल १	" गौतमीतत्रे	-	२५	देवनागरी संस्कृत	सं. १८९९ प्रा.
	कृष्ण नाम तारक विधि २	"	-	२०	"	"
	कृष्ण प्रेमाश्रुत स्तोत्रं ३	"	-	१५	"	सं. १९०५ प्रा.

(1) निर्णयः संवत् १७५६ वर्षे निर्णयः श्लोक १२०० (2) शाके १९२२ प्रथम पौष वदि १० तमि धी पनमनवरे लिखित (3) व्यास गोपालजी वनमालि लिखित गोंडल. (4) वंशवृक्षः रचनाकाल संवत् १८४६ ज्येष्ठ शु. १ (5) शु. ३ अश्विन महा-
शंकर मछाराम वीरमगामपुरे (6) वर ७ रवौ पत्र २०६मा मिति (7) शु. ७, २५२ पत्रे मिति (8) केवला टीका प्रथम
शतकस्य ११२० श्लोकालम्बस्य (9) वर्षे भाद्रपदी शु. १४ शु. (10) शतक मूल्याङ्कः श्लोक ११२ (11) वर्षे ज्येष्ठ कृष्ण
अमावास्या शु. (12) प्रथम शतक ११०, द्वितीय शतक ११२, तृतीय शतक १०६।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल-सौराष्ट्र.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : Shuddhadwaitah 27

विषय : शुद्धाद्वैतः १७

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक मिति Scribe & Date
५१	कृष्ण रुक्मणीवेली	अपूर्ण	गुजराती टीका	२०	मागधी मूलगुजरीटीका	संवत् १५१५ प्रा.
५२	कृष्ण शब्दार्थः १ (१)	संपूर्ण	-	४	संस्कृत	सं. १८४० प्रा.
५३	कृष्ण सहस्रनाम न्यासध्यानदिभ्यः	„ [Xयुतं तंत्रं	-	१३	„	सं. १८९१ प्रा.
५४	कृष्ण पूजापद्धतिः तांत्रिकी	„	-	२९	„	सं. १८१० प्रा.
५५	कृष्णाक्षय विवृतिः	„ प्रभुश्रीद्वारकेश्वर विरचिता	-	१०	„	सं. १९८१ वर्षे आश्विन शुद्धी १५
५६	कृष्णाक्षय स्तोत्र प्रकाशः	„ कल्याणराय	-	११	„	सं. १७८५ [श्रीशिवारे
५७	„ „ [वैष्णवभाष्यं	„	-	२०	„	सं. १७१९ प्रा.
५८	कृष्णाष्टोत्तरशतं १ प्रति गोपिजनं	„ ब्रह्मरूप पुराणे श्री बलभाचार्यः -	-	१४	„	सं. १७२८ वर्षे पौष १९ सोम
५९	कृष्णापासना विधि पद्धतिः (२)	„	-	३८	„	सं. १७३९ प्रा.
६०	केशव नामावली	अपूर्ण	-	१५	„	सं. १७३१ प्रा.
६१	केशवस्तोत्रे वनवारी व्यभिचारसंज्ञा	„	-	५	„	सं. १७३१
६२	केशवार्थः आचार्य समर्पण मन्थः	„ श्री विठ्ठलरायपुत्र -	-	१२	देवनागरी संस्कृत	सं. १७६४ मार्गशिर शु. शुद्ध
६३	„ उत्सव ग्रन्थः उत्तमाक्षर	„ [श्री बलभक्त	-	१३	„	सं. १७०२ प्रा.
६४	„	अपूर्ण	-	१०	„	सं. १७२१ प्रा.
६५	„	संपूर्ण	-	२०	„	सं. १८०८
६६	गोयत्री विवृतिः इतिथी (३)	„ श्रीमत्प्रभुश्री हस्ताक्षरेण -	-	२	„	सं. १५७० प्रा.
६७	गिरिचराटकं १, वंछित स्तवः १, „	„	-	१	„	सं. १७१५
६८	गुणसागर छप्पयष्टे ८८ श्लोक	„ श्री विठ्ठलराय रचित	-	२१	„	सं. १८०० ज्येष्ठकृष्ण २ चंद्र
६९	गीतगोविन्द टीका	„ चिदानन्दमिश्र	-	७८	„	सं. १८९९ प्रा.
७०	„ प्रथमाष्टपदी विवृतिः	अपूर्ण श्री प्रभुचरण रचिता-	-	६	„	„ „
७१	„ गुर्जर टीका	„	-	५४	संस्कृत-गुर्जर	सं. १८३५ प्रा.
७२	„ विवृति	„ श्री विठ्ठलेश्वर	-	७	संस्कृत	„ „
७३	गीतातात्पर्यार्थः	„	-	३	„	सं. १८९९
७४	„ विवरण	„	-	६	„	सं. १७८१
७५	गुप्तसः	„ श्री विठ्ठलेश्वरः	-	१०	„	सं. १९१०
७६	गुप्ताईजीके पत्र	संपूर्ण	-	३१	„	सं. १८४३
७७	गोकुलनाथजी वचनामृतकारिका-	„ [नक्षत्रे कथा पर-	-	१ नक्षत्रे	„	सं. १८०४
७८	गोकुलनाथजीका विवाह	अपूर्ण	-	१३४	मराठीभाषा	सं. १७५९
७९	श्री गोकुलनाथजी हास्य प्रसंग संपूर्ण	„	-	७८	गुज. देवनागरी	सं. १८९९
८०	गोकुलनाथ रहस्य	„ नारायणदास	-	३१	संस्कृत	सं. १८४६ आश्विनवद १ सोम
८१	गोकुलाष्टक विवृतिः	„ हरिराय	-	३०	„	सं. १७८३ कागल शु. ६
८२	„ श्लोक १२५	„ गो. वल्लभ	-	३७	„	सं. १८५० आश्विन शु. (६)
८३	गोकुलेशजी लीला	„	-	१४	„	सं. १८४१
८४	गोकुलाष्टोत्तरशत	„ कृष्णराय	-	७	„	सं. १८४९ द्वितीयचैत्रकृष्ण ११ सोम
८५	गोकुलेश नामावली	„ कल्याण मठ	-	३०	„	सं. १८४६ आश्विनव. (६)
८६	गोकुलेशोत्तरशत शत मुक्ताक्षर	„ कृष्णराय श्री (६)	-	बोलीयुं	„	सं. १८२९
८७	गोपाळ सहस्रनाम प्रति [स्तोत्रं, संमोहनतंत्रे	„	-	९	„	सं. १९९९
८८	„ श्लोक ११९ (७)	„	-	३२	„	सं. १९०९ माघवाशु ३० पूरणमासी
८९	गोपेश्वरानां पद्यानि	„	-	११	„	सं. १९१० प्रा.
९०	„	अपूर्ण	-	१८	„	सं. १८४०

(१) १६११ शब्दार्थः १ कृष्ण शब्द विवरण १ स्वमोर्ग रहस्य (२) पद्धतिः इतिथी मागवत वसुंधीपिकायां राधातंत्रे तंत्रं (३) इतिथी प्रभुश्री हस्ताक्षरेण (४) शुद्ध ११ सोम गुर्जरदेशे शुद्धतीर्थ कृष्ण मठेन (५) वद १ चंद्र १ वनवारी मध्ये आनी महान्त मणेशजी (६) श्री दासदास देवकीनंदन (७) १ गोपाळ सहस्रनाम श्लोक ११९ २ शुद्धनाम कथा ३ पदरिया जंत्र प्रयोग ४ कीर्तन ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्त लिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: SHUDDHADWAITAH 27 विषय: शुद्धादत २७ ।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work Title	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
९१	गोवर्धनवासी घटलभाषयान	संपूर्ण	-	२०	संस्कृत संवत् १९१७ भाद्रपद कृष्ण ११ रवि	
९२	गोस्वामी वंशावली	"	-	८५	वज्रभाषा सं. १८७० प्रा.	
९३	गोविन्द स्वामीके पद उत्तमाक्षर	"	-	३४	" सं. १९९४	
९४	गोवर्धनोत्सवः	"	-	४	संस्कृत सं. १८७७	
९५	गोवर्धन लीला	"	-	२६	वज्रभाषा सं. १८५०	
९६	चंद्रमाजीके घरकी रीत*	" [*उत्तमाक्षर	-	२०	" सं. १८१३ प्रा.	
९७	चरण ध्यूह वैदिक	"	-	६	" सं. १९३६	
९८	चौरचर्या	"	-	३	संस्कृत सं. १७२७ वर्ष (१)	
९९	चोराशी वैष्णवकी वार्ता	"	-	१४९	वज्रभाषा सं. १८३२ केजेष्टवि ८ पत्रा	
१००	छप्प। मोग सामग्री वर्णन	"	-	ओळीयुं	" सं. १८५० प्रा. [१३८ पं. मिति	
१०१	जन्माद्यश्चेति पद्यत्रय व्याख्या	" मठेश दामोदरसुत	-	२१	संस्कृत सं. १८०० प्रा.	
१०२	जन्माष्टमी निर्णयः	" श्री विठ्ठलदीक्षितः	-	६	" सं. १७१० प्रा.	
१०३	जलसेव टोका	" श्री कल्याणराय	-	१९	" सं. १७४३ उद्देष्ट श्रुती ४ गुरी	
१०४	जमिनीय भाष्य भाषाथ' बादविरण'	" यदुपतिः	-	२४	" सं. १८५४ फाल्गुन वरी १० शनि	
१०५	ढ डोलीला	"	-	२४	वज्रभाषा सं. १८५२ वैशाख ११ शनि	
१०६	तत्वाथदीपनिबन्धः	"	-	१०१	संस्कृत सं. १९०३ वर्ष (२)	
१०७	असमुद्रा संस्कारः	"	-	१०	" सं. १८९१	
१०८	तैलंगी गीत	"	-	३२	तैलंगी भाषा सं. १७९९ प्रा.	
१०९	त्रिविध नामावली इति श्री (३)	" उत्तमाक्षर	-	९	देवनागरी संस्कृत सं. १९०५ प्रा.	
११०	द्रव्यशुद्धि कीपिका	" पीतांबररात्मजः पुरुषोत्तमः	-	५२	" सं. १९६८ प्रा.	
१११	" भाषा (४)	"	-	१००	वज्रभाषा सं. १९७७ प्रा.	
११२	द्वारका माहात्म्य	" प्रह्लादमहिता	-	६२	देवनागरी संस्कृत सं. १७८१	
११३	नवग्रह रागरागिणीमां	अपूर्ण	-	३०	वज्रभाषा सं. १९९१	
११४	नामावली १, सहस्रनाम २	संपूर्ण उत्तमाक्षर	-	२५	संस्कृत सं. १८१५	
११५	" [चंद्रविह कवच १	" श्री वल्लभ दीक्षित	-	१३	" सं. १९७४	
११६	नामावली विवृति	" गोपालः	-	६१	" सं. १७१५	
११७	नारद पंचरात्र पटल ३	"	-	१०	" सं. १९१५ प्रा.	
११८	निजकारिका व्याख्या	" पूर्व मंमोभ	-	९	" सं. १७९७	
११९	निजलक्षण संग्रह १९ स्तोत्राणि	"	-	३७	" सं. १८११	
१२०	निजलक्षण प्रकाश स्तोत्राणि ४० संख्या	"	-	६२	" सं. १९१८	
१२१	नित्ये तु वैविरोध सोढव्यः	"	-	१३	" सं. १९७१	
१२२	"	" नारायण	-	६	" सं. १७५१	
१२३	निबन्धः	अपूर्ण	-	१५	" सं. १७५५	
१२४	निबन्ध द्वितीयोत्तमाक्षर	संपूर्ण श्री कल्याणराय	-	५८	" सं. १७३७ उद्देष्ट श्रुती सोमेश	
१२५	"	"	-	३५	" सं. १८३५ [*लि. मदनजी	
१२६	निरोध सतक (५)	"	-	२६	" सं. १९८०	
१२७	पंचगव्यनि शिक्षाप्रलेकी	" श्री वल्लभाचार्यः	-	४	" संस्कृत वज्रभाषा सं. १७३५	
१२८	पञ्चाव्यायो	" नंददास	-	१४	हिन्दी पद्य सं. १९७३	

(१) वर्षे भाद्रपद वरी ५ पाटोदी मध्ये लिखित (२) वर्षे नैशाख कृष्ण ६ शनि । इति श्री वेदव्यास विष्णुहामि मत वर्ति श्री वल्लभ लोकांत विरचिते तत्त्व कीर्ति श्री भाषयते द्वाद । एवं च 'देवराज' समाप्त । (३) इति श्री वल्लभाचार्य विरचिता त्रिविध लीला (४) १ द्रव्यशुद्धि भाषा । २ श्रीराजजी तथा सात । ३ नारायणी भाषना । ४ चरण चिन्ह हरिराजजीकृत । (५) निरोध सतक पत्र १२, निरोध लक्षण टोका पत्र १० । निरोध लक्षण टोका पत्र ४ ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्त लिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : SHUDDHADWAITAH 27 विषय : शुद्धाद्वैतः २७।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
१२९	पद्मपल्लवं अमुद्रितं उत्तमाक्षरं संपूर्णं श्री ब्रह्मसंहिता	-	-	६	संस्कृत	संवत् १५७० प्रा.
१३०	पारायणं चिंतामणिः उत्तमाक्षरः	श्री बालकृष्ण दीक्षित	-	१०	सं.	१७५८
१३१	पुरुषसूक्त टीका व्याख्या	[अमुद्रित]	संस्कृत व्याख्या	१३	सं.	१७४०
१३२	पुरुषोत्तम प्रतिष्ठा	"	-	३९	सं.	१८४५
१३३	पुरुषोत्तम सहस्रनाम इतिदी(१)	प्रभुचरणोक्तः	-	६	सं.	१८६३ वैशाख वही १५
१३४	" उत्तमाक्षर	"	-	२०	सं.	१७३५
१३५	"	"	-	१३	सं.	१७४५
१३६	"	"	-	१७	सं.	१८४२ शाके (२)
१३७	" १९ ग्रन्थाः	[*श्री रघुनाथकृता	-	१४७	सं.	१९०५ वैशाख सुदी (३)
१३८	पुरुषोत्तम सहस्रनामावली	श्री विठ्ठलेश्वर	-	श्लोकीयु	सं.	१९२३ आषाढ शुद्ध ६ पुष्य
१३९	पुरुषोत्तम स्तुतिः उत्तम काव्य	अपूर्ण विरच मंगलाचार्य	-	२४	सं.	१९७४ वृषे शाके १५३ १७४५
१४०	" सिद्धांतः	संपूर्ण [१४०० श्लोकाः	-	६	सं.	१७६९ [Xमासपद शुद्ध ७ शुद्ध
१४१	पुष्टिप्रदायकी वार्ता १ (४)	"	-	४५ मज्जिमा	देवनागरी सं.	१७४४ वृषे शाके (६)
१४२	पुष्टिप्रवाद मयादा विवरण	"	संस्कृत टीका	२१	संस्कृत सं.	१८०९ वृषे कार्तिक शुद्ध ५ शुद्ध
१४३	"	पीतांबरः	-	३४	सं.	१९०६ माघ शुद्ध ८ शुद्ध
१४४	"	श्रीवत्सल	-	१६	सं.	१३२१ प्रा.
१४५	पुष्टिप्रवाद मयादा विवृतिः	कल्याणराय	-	१७	सं.	१९४८ प्रा
१४६	पुष्टिमार्गीय आहिक	"	-	३८	सं.	१८०३
१४७	प्रभुणां पत्राणि श्री विठ्ठलेश्वराणां	"	-	५	सं.	१९१०
१४८	"	"	-	१८	सं.	१९७९
१४९	प्रसाद चरणोक्त तिलक	[+माका महिमा	-	४	सं.	१७६८ माघ शुद्ध ७ शुद्ध
१५०	प्रेमामृत विवरण टीका	श्री विठ्ठलेश्वर	-	८९	सं.	१९८९ चैत्र शुद्ध प्रभातिनी
१५१	प्रेमामृत भाष्य इति (६)	श्री विठ्ठलनाथ श्री विठ्ठलनाथ भाष्य	५०	सं.	१७४३ मार्गशिरैविते वसमी शुद्ध	
१५२	बालकृष्ण सहस्रनाम श्री (७)	"	-	२१	सं.	१८६० मृगशिरा शुद्ध २१
१५३	बालकृष्ण स्तोत्रं सटीक	[=काव्य उत्तमाक्षर	-	१०	सं.	१९४८ प्रा [१] वृषे अमुद्रित
१५४	बालगोपाल स्तुतिः श्लोक ४५६ अपूर्ण	विरच मंगलाचार्य	-	२३	सं.	१७९३ प्रा
१५५	विरच मंगल काव्य टीका संपूर्ण	"	-	३९	सं.	१९४० प्रा.
१५६	ब्रह्महर्षः	"	-	४	सं.	१०२०
१५७	भक्तिचन्द्रिका	अपूर्ण महानंदकृता	-	७	सं.	१९७१
१५८	भक्तिरत्नावली अमुद्रिता	संपूर्ण रत्नपुरीकृता	-	३२	सं.	१९१६
१५९	भक्तिवर्चिनी	" कल्याणराय	-	७	सं.	१९०३
१६०	" अत्र १३ पुस्तकानि	" श्रीवत्सल	-	२८	सं.	१९२९
१६१	भक्तिविवेकः अमुद्रितः	" अनंतदेवकृतः	-	१८	सं.	१७९९
१६२	भक्तिसंगीत रत्न रागरागणी	"	-	६०	माषापय सं.	१७९९
१६३	भक्तिसूत्र भाष्य भक्ति (८)	स्वप्नेश्वरः स्वप्नेश्वर भाष्य	३९	संस्कृत सं.	१९४५	
१६४	भक्तिहंसः	श्रीविठ्ठलेश्वरः	-	११	सं.	१९२५
१६५	" अमुद्रित	"	-	११	सं.	१९७९ वृषे कार्तिक वही ३ वही
१६६	"	"	-	१७	सं.	१९०७ प्रा.

(१) इति श्री भागवत मागर समुच्चय श्री वैश्वानरोक्त विष्णु सहस्रनाम स्तोत्रं (२) शाके १७०० आश्विन शुद्ध ४ शुद्ध (३) शुद्ध १७ रवि । लि. भट्ट मन्मथजीसुत गोविंदजी श्रीगोब मन्मथी (४) १ पुष्टिप्रदायकी वार्ता । २ वनयाज्ञा श्री पुंसाईजी करी सेा लिखालय छाया । (५) शाके १७१९ फाल्गुन शुद्ध १ शुद्ध गोबल मन्मथे माषपयजीदात्मव वासुदेवेन (६) इति श्री ब्रह्मसंहिता-सौख्यश्री विठ्ठलनाथ विरचितं प्रेमामृत भाष्य (७) श्रीमद्ब्रह्मसंहितासौख्य विठ्ठलनाथ पुत्र सायकृष्ण गोहरमि विरचितं (८) भक्ति गोमासा साहित्य मा.वे पु. अ. दि. आहिक अमुद्रित ।

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author	टीका	पत्राणि	भाषा- लिपि:	लेखक-मिति:
Serial No.	Name of the work Title	संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Date
१६७	भक्तिहंन टीका भक्तिरिणी	संपूर्ण रघुनाथः	-	११	संस्कृत	संवत् १७३५ चैत्र कृष्ण १
१६८	भक्तिहेतु विवृत्तः	" "	-	१२	"	सं. १७०४
१६९	भक्तिहेतु निषेधः पुस्तक १	" श्री विद्वत्प्रेषः	-	२६	"	सं. १७०८ आषाढ शुक्ल १२ पुष
१७०	भगवत्सत्त्व दीपिका श्री (१)	" आस वंणवक्ता	-	२५	"	सं. १६९३ चैत्र वदी ७ शुक्ल
१७१	भगवत्तोषिणी	" श्रीपतिभुत महाश्वर विरचिता	-	१७	"	सं. १६७९
१७२	भगवत्पाठिका	" श्री वक्षभाचार्य कृता	-	३	"	सं. १६३५
१७३	भगवद्दर्पक रत्नावली	" विष्णुपुरी	-	७८	"	सं. १६७४ माघ कृष्ण पक्षाति
१७४	भगवत्संलापयोग्यः अमुद्रितः	" कृष्णदासकृतः भाषा टीका	-	३८	"	सं. १६४९ का भाषीय कृष्ण २ शुक्ल
१७५	भगवत्कायनः अमुद्रितः	" श्री वल्लभः	-	२८	"	सं. १७८८
१७६	भगवत्तात्पर्यन माहात्म्यं	" सारमं प्रह्ले	-	३६	"	सं. १८४१ प्रा.
१७७	भावना-रहस्य भावना (२)	" श्री गोकुलनाथजी	-	३६१	मजभाषा	सं. १९२० मिति (३)
१७८	भूमा इत्यस्योपरि विचारः	" श्रीवल्लभः	-	४	संस्कृत	सं. १८१३ प्रा.
१७९	मंगलार्था विवृतिः गीतं	" श्री विद्वत्प्रेषः	-	८	"	सं. १७३९
१८०	मंत्र चिंतामणिः श्रीकृष्ण (४)	अपूर्ण अमुद्रितः	-	३७	"	सं. १८५२
१८१	मथुरा माहात्म्यं	संपूर्ण कपिलेश्वरमि	-	३८	"	सं. १६०९ प्रा.
१८२	मथुराष्टकं कटीकं	" रघुनाथ रघुनाथकृत टीका	-	५	"	सं. १६९५ प्रा.
१८३	मथुराष्टक विवरणं	" श्री (५) श्री बालकृष्णजी	-	२४	"	सं. १७०५ प्रा.
१८४	ममात्तमेतिपद्य व्याख्या	" हरिदास उत्तमाश्वर हरिदास	-	१३	"	सं. १७०९
१८५	महाभुनकीनिश वार्ता (६)	" अमुद्रित	-	१८०	मजभाषा	सं. १८५४
१८६	महाभाषय चरणमत्र व्याख्या	" श्रीवल्लभ	-	४	संस्कृत	सं. १८५१ प्रा.
१८७	मार्गशिक्षा ११ विषयाः	"	-	४४	देवना. मजभाषा	सं. १८५९
१८८	मालोत्तर रत्नोऽयं भागवत श्री (७)	" श्री (८)	-	३६१	मजभाषा	सं. १७९८ ना माहा शुक्ल (९)
१८९	मुकुन्दराजीनी वार्ता अमुद्रित	"	-	१४०	मजभाषा	सं. १८९० वैशाख शुक्ल (१०)
१९०	मुक्ता कलः उत्तमाश्वर	" अमुद्रित, श्रीनोपदेशकृत	-	६५	संस्कृत	सं. १९१० प्रा. भा. भा. (११)
१९१	मुक्तितारतम्यं	"	-	४	"	सं. १९५६
१९२	सृज्युर्जन्मवर्ता श्रीर	"	-	२	"	सं. १९१०
१९३	मोक्षनिरूपणं	"	-	५	"	सं. १७०२
१९४	यमुना लहरी काव्यं अमुद्रित	" श्री गदगलजी	-	५	"	सं. १९३५
१९५	यमुनाष्टकं	" वैष्णव-रोषकं	-	४	"	सं. १९३२
१९६	" पुस्तक ५	" श्री शंकराचार्यः	-	१२	"	सं. १९३२
१९७	यमुनाष्टक विवृतिः	" श्री विद्वत्प्रेषः	-	४	"	सं. १९०७ प्रा.
१९८	" विवृतिवृत्तिः	" श्री पुरुषोत्तम अमुद्रित-	-	१३	"	सं. १९९९ प्रा.
१९९	" आदि ५ श्लोकाणि	"	-	४	"	सं. १९२५ प्रा.
२००	यमुनाष्टपदी	" [४५५] -	-	५	"	सं. १९०२
२०१	रत्नसर्वस्व अमुद्रितं	" श्रीविद्वत्प्रेष उत्तमाश्वर -	-	१८	"	सं. १७०२ माहा वदी ५ पुषे सर्वस्व पुरे
२०२	" १. शृंगार रस (१२)	" श्रीविद्वत्प्रेषः अमुद्रित -	-	२१	"	सं. १८५३ प्रा.

(१) श्री वक्षभाचार्य ज्ञानेन श्री व्यास केननेन श्री विद्वत्प्रेषरात्रिने समये कृता (२) भावना उत्तमाश्वर. चरमविम्वरी भावना । निम्नलेखाको भावना । वयोविषयको भावना । जय प्रकार सामगी करनेकी विधि । (३) मिति वशाक शुद्ध पंचम्या लिखित मंगमस्तेन अमृतसर मध्ये । इति श्री गोकुलनाथजीकृत रहस्यभाषना समाप्तः । लाल पीठा लीना रंगीन कागज मां (४) श्रीकृष्ण मंत्रः नारद वाकर संवादः (५) श्री बालकृष्णजी अमुद्रित २ (६) वार्ता आचार्य श्री महाभुनके केरनको वार्ता (७) श्री गोकुलजी लीना रसको वाचित्रं (८) श्री गोपालदास महापद्याष्टक अमुद्रित उत्तमाश्वर इतिहस (९) शुद्धी १० रवि । इति श्री गोकुलजी की शरसाविम्वरीका कल्लोल अमुद्रित माहाश्वर कथा (१०) शुद्धी ३ कनैयालालजी लिखित मथुरा श्री रामपाठ ४ मध्ये यमुनाष्ट श्री म विनी रघुजी पठनाथ (११) भाषाभाषी बोमदेव पठित विरचित । (१२) शृंगार रसकाव्यं खेक. ४८४ । १ शृंगार रस मंत्र १० उच्चाचारः ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र।

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: Shuddhadwaitah 27

विषय : शुद्धाद्वैतः २७।

क्रमांक Serial No	ग्रन्थ नाम Name of the Work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
२०३	राधाभोग समेकी ध्यान समेकी-	संपूर्ण [नस्तुति	-	२	संस्कृत	संवत् १८४०
२०४	राधाकृष्णोपनिषद्	अपूर्ण गद्य अमुकित	-	२१	"	सं. १७३५
२०५	राधासुधानिधि. २०० श्लोक	संपूर्ण हरिवंश (१)	-	३१	"	सं. १८२२ ज्येष्ठ कृष्ण ७ गुह
२०६	राधाविद्यालय	" कविविहारीदास	-	२३१	मजभाषा	सं. १८७१ प्र.
२०७	राधाविनोद काव्य मूल सटीक च	" रामचंद्र कवि (२)	-	३०	संस्कृत	सं. १९०६ पौष १४ गुह
२०८	राधास्तोत्र	अपूर्ण राधारहस्य (३)	-	८	"	सं. १८२७ भाद्रपद कृष्ण ३ गुह
२०९	रासरसवर्णन अध्याय ३	संपूर्ण हरिभक्तकृत अमुकित-	-	१०	"	सं. १६८५ वर्षे माग शेर शुद्धि
२१०	राचराष्टक व्याख्या सहित	" रमणलाल	-	४५	"	सं. १९०४ प्र. [१९५ रवौ
२११	रूपमंजरी	" मन्ददासकृता	-	१५	हिन्दी	सं. १९६०
२१२	मानमंजरी	" "	-	१०२	"	सं. १८९०
२१३	रसमंजरी	" "	-	५०	"	"
२१४	रुक्मिणी राधाजीनां	" "	-	२१	गुज देवनागरी	सं. १८३२ अमुकित
२१५	ललित त्रिभंग व्याख्या	"	-	१०	संस्कृत	सं. १७१५ प्र.
२१६	लीलाचिन्तन	अपूर्ण	-	९	गुज काव्य	सं. १७८५
२१७	लेखसर्वस्व	"	-	१३	संस्कृत	सं. १८००
२१८	वधाई आदि १० पुस्तके	संपूर्ण	-	१८४	मजभाषा	सं. १८५०
२१९	वनयात्रा इतिथी (४)	" गोकुलमाधवीकृता	-	४७	"	सं. १८८० के ज्येष्ठ वधी ११
२२०	वनयात्रा परिक्रमा वृन्दावनयात्रा, पुरुषोत्तमजी	"	-	१३०	"	सं. १९१०
	श्री गोकुलमाधवीके वचनामृत	"	-	X	"	"
	शिक्षापत्र	३	-	X	"	"
	आभयके पद	४	-	X	"	"
२२१	वल्लभाचार्य पृथ्वी (५)	"	-	३५	"	सं. १९१८ भाद्रपद शुद्धि १
२२२	वल्लभाचार्य नामावली १ (६)	"	-	२२	संस्कृत	सं. १८१०
२२३	वल्लभाचार्य वचनामृत अथ (७)	"	-	९२	मजभाषा	सं. १८७० इतिथी काका (८)
२२४	वल्लभाष्टक विवृतिप्रकाशः	" पुष्पारामजी उत्तमाक्षर	-	१५	संस्कृत	सं. १६९०
२२५	वल्लभाष्टक व्याख्या	" रघुनाथजी उत्तमाक्षर	-	६	"	सं. १६५०
२२६	" विवरण	" श्री विठ्ठलेश्वरकृत	-	१२	"	सं. १७०५ काशगुन शुद्धि
२२७	"	" वल्लभः	-	१३	"	सं. १७१०
२२८	वल्लभाख्यान	" मजभाषा वीक्षित	-	४०	मजभाषा	सं. १८५०
२२९	वशावली महाप्रभुकी	"	-	७	"	सं. १९२५
२३०	"	"	-	३८	"	सं. १७५१
२३१	वामन जयंती निरणयः	" गोपालजी	-	३	संस्कृत	सं. १८००
२३२	विठ्ठलादत्तार प्रमाण	" मजभाषापुराणे	-	३	"	सं. १८१५
२३३	विठ्ठलेश विवृतिः	"	-	५	"	सं. १७०५
२३४	" चतनाम	" महादेवविप्रः	-	४	"	सं. १९०५
२३५	विठ्ठलेश्वरानि निरूपण स्तोत्राणि	"	-	३६	"	सं. १८९१
२३६	विद्वन्मण्डन	" श्री विठ्ठलेश्वरः	-	८७	"	सं. १५९२ प्र.
२३७	" उत्तमाक्षर	"	-	७३	"	सं. १९०९ प्र. इतिथी (९)

(१) हरिवंश गोदावरी उत्तम काव्य (२) कवि उत्तम काव्य (३) राधारहस्य त्रैलोक्य समोहनकृत (४) इतिथी वृन्दावनयात्राः मजभाषादी कोशके स्थल (५) पृथ्वी परिक्रमा संवत् १५५० यौ ५५ सुधीनी (६) १ वल्लभाचार्य नामावली २ संन्यास निरणय ३ निरुपण सत्य ४ सेवाफल (७) अथ श्री वल्लभजी महाराज वचनामृतकी आशा स्थिते ते वचनामृत चारन भवो है (८) भाद्रपद शुद्धि ११ सेवासल (९) इतिथी मजभाषाकृत उपनिषद् विवृति माध्यामिक प्रवृत्तिवादि तमः पुष्पारामजी गोकुलमाधवीकृत रासरसवर्णन वल्लभ वीक्षितारामजी श्री विठ्ठलेश्वर कृत विवृति विद्वन्मण्डन संपूर्णम्।

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mrs. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

विषय : शुद्धाद्वैतः २७ ।

(1) १) विवेकविभाषाय रघुनाथ । २) सिद्धांतशास्त्रमाला विद्वत्पेश । ३) सिद्धांतसहस्र विकसित रघुनाथ । ४) संन्यास निष्कयः श्रीराज सीक्षित । ५) पुष्टिपत्राह मन्वादा रघुनाथ । ६) वास्तविक श्रीराज सीक्षित । (2) सुप्र १) श्री वटपत्रस्थित महाविद्यालय कुलदेवेन (3) श्री गुवाडिजी करी से श्री गोकुलनाथजी अपने सेवकनसे करते है । संमत १९०० मास ११ वरी १२ (4) मीनसा भाष्य शास्त्रिय भक्तिवृत्त भाष्य (5) ब्रजभाषा गिलगीन वा लिपि देवनागरी (6) वरी भयावाह्या रवि । लि. नवाजी सुन्दरो धारशी सुदामाश्री (7) इति श्री मद्र गोरारि श्रीराजदेव प्रीयं कमलाचारमनेन श्री ब्रजभाषा सीक्षित मेकतः ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखितग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: Shuddhadwaitah 27

विषय: शुद्धाद्वैतः । २७

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
२७५	बद्धपदी विवृतिः १ (1)	संपूर्ण गो. श्री. *	ओदीप्य (2)	९	संस्कृत	संवत् १८८३
२७६	बद्धपदी अपराध (3)	„ [गिरिवरजीकृत]	-	२३-तक्ष	„	सं. १८७५ प्रा.
२७७	पोड्य ग्रन्थाः आमा १९ ग्रन्थो छे „	„	-	८७	„	सं. १९१२ प्रा.
२७८	„ १९ ग्रन्थो, स्तोत्र „	„	-	९८	„	सं. १७२२ वर्षे भावण शु. शुद्धे
२७९	संन्यास निर्णय विवरण पुस्तक २ „	„	-	९	„	सं. १८०२
२८०	सप्तश्लोकी विवृतिः „	„ श्री हरिराव विवृतिः	-	१९	„	सं. १७६४ वर्षे (4)
२८१	„ भागवत पुरातो टीका „	„	-	५	„	सं. १८४५ द्वा. माघवजीसुत
२८२	„ संप्रदाय प्रदीपः अमुद्रित „	„ द्विवेदी गदाधर	-	२५	„	सं. १५६५ [शिशुदेव गोंडल]
२८३	„ स्तोत्र संग्रहः २१ (5) „	„ उत्तमाक्षर	-	३७४	„	सं. १७५०
२८४	समर्पण गद्यार्थः „	„	-	१२	ब्रजभाषा	सं. १८१५ आश्विन शुद्ध १२ रवि
२८५	सारसिंजनयने इति व्याख्या „	„ श्री विठ्ठलेश शिष्यः	-	७	„	सं. १८३५
२८६	सब स्वस्वपनको भाविर्भावः+	अपूर्ण [तिरोभाव	-	११	„	सं. १८१०
२८७	सर्वोत्तम स्तोत्र विवरण (6)	संपूर्ण रघुनाथजीकृत	-	१५	संस्कृत	सं. १९८०
२८८	सर्वोत्तम स्तोत्र विवृतिः (7)	„ श्री बल्लभः	-	५३	„	सं. १७५५ चैत्र शुद्ध १२ औम
२८९	संवरल्लोरसव कल्पलता „	„	-	२०	„	सं. १७५७ (अष्टादश दि.) (8)
२९०	„ पुस्तक २ „	„ मजरात्रः	-	३०	„	सं. १७७२ वर्षे मघ (9)
२९१	सहजं कर्म कौम्येय सर्वमोक्ष × „	„ [स्वस्वपनको व्याख्या	-	२	„	सं. १७४४ वर्षे (10)
२९२	संस्कृत छप्पय	अपूर्ण	-	६	„	सं. १८१०
२९३	सातस्वरूपसंग विराजे	संपूर्ण	-	१५-४४	„	सं. १८१५
२९४	साधन दीपक इति श्री (11)	„ गो. श्री गोपीनाथ दीक्षित	-	५	„	सं. १९१९ भावण शुद्ध ११ औम
२९५	सामग्रीवादः	अपूर्ण	-	५	„	सं. १७०६
२९६	सांख्यिक बर्णना विचारः संपूर्ण अमुद्रित	„	-	१९	„	सं. १७१२
२९७	सारसंग्रहः „	„ श्री बल्लभाचार्यः	-	३२	„	सं. १९४०
२९८	सारिकोक्त अष्टक १ (12)	„ गो. कृष्णदास कवि	-	६	„	सं. १८५० वर्षे माघ वदी ७ मृग
२९९	सिद्धांत मुक्तावली टीका	„ श्री (13)	-	१०	„	सं. १९१०
३००	„ „	„ „	-	१२	„	सं. १७३५
३०१	सिद्धांत रहस्य विवृतिः	„ गोकुलनाथ	-	१३	„	सं. १७३५
३०२	„ „	„ बल्लभाचार्य	-	७	„	सं. १७६०
३०३	„ „	„ रघुनाथजी	-	१०	„	सं. १७४० वर्षे (14)
३०४	सिद्धांत वृत्तिः मक्ति सिद्धांतवृत्तिः	„ गोकुलनाथजी	-	१०	„	सं. १७४८ वर्षे अश्विन शुद्ध १५
३०५	सिद्धांत संक्षेपः	„ हरिदास	-	२	„	सं. १७८० [हरिदास]
३०६	सुबोधिनी संदेह निवारण	„	-	८	ब्रजभाषा	सं. १८१०
३०७	सुबोधिनीजी प्रथम स्कंधः (15)	„ श्री बल्लभाचार्य	-	३१९	संस्कृत	सं. १९१६
३०८	„ द्वितीय स्कंधः „	„ „	-	२०५	„	सं. १९१२ प्रा.

(1) १ बद्धपदी विवृतिः । बद्धपदी मकरन्दतदंगिणी टीका (2) श्रीगोपीनाथजीकृत गोपीनाथनाथस्य मुरलीधर विरचितः । (3) कपराध पाशवितानि आदि ५ पुस्तको तथा श्रीकृष्ण जन्मकुंडली (4) वर्षे पीठ वदी ५ औमे लि. हरिनाथेन इति श्रीनाथनाथ विवरण मरसिंजरजोमिषेक प्राप्त महाराजो हरिराव विरचिता (5) २१ स्तोत्राणि, आमा इति यानी आमा सोनेरी छु कलात्मक छे (6) विवरण १, सर्वोत्तम टीका । (7) विवृतिः श्रीधरप्रभुवरणकेलाय श्रीबल्लभ विरचिता (8) भावण शुद्ध ४ औम (9) माघ मासे शुद्ध १ रवि (10) वर्षे फाल्गुन शुद्ध १९ शनी लि. पद्मनाभेन (11) इति श्री मगध्वरताद श्रीबल्लभ दीक्षिततुल्य गोपीनाथदीक्षित विरचित (12) १ सारिकोक्त अष्टक । २ राधाकृष्णकृत । (13) श्री बल्लभाचार्य विठ्ठलनाथ विरचिता (14) वर्षे चैत्र शुद्ध १५ रवि श्री कालिन्दीतटे अर्गलपुरे (15) श्रीमद् भागवते श्रीसुबोधिनीजी प्रथमस्कंधः । इति श्री भागवते सुबोधिन्या श्री लक्ष्मणभट्टात्मज श्री बल्लभदीक्षित विरचितायां प्रथमस्कंधे एकोनविंशोऽध्याय विवरण समाधेय प्रथमस्कंध टीका । सुहेपु एरभुगलपुरतो निधाय विज्ञापयामि मुरवेरिवदानमिच्छः ॥ उच्छ्रंजमापि विवृतिर्मां चितनीय श्रीकृष्ण पादगुणके निमित्तविवेति ॥ (16) तृतीयस्कंध संवत् १९१८मां मकाणा मिति छे ए आचारे या १९६५ १९९०मां मकाणा हसे ।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक मिति Scribe & Date
३०९	सुबोधिनीजा तृतीय स्कंधः (1)	संपूर्ण श्री बलभाचार्यः	-	९०९	संस्कृत	संवत् १९९८ वर्षे (2)
३१०	„ दशम स्कंध पूर्वाध्याय (3)	„ „	-	४१८	„	सं. १७०५ वर्षे (4)
३११	„ दशम उत्तरार्ध (5)	„ „	-	५७०	„	सं. १७१५ वर्षे (6)
३१२	„ दशमस्कंधस्य (7)	„ „ अध्याय (8) ३३१तः ५१२	-	५१२	„	मं. १९९६ प्रायः इति श्री (9)
३१३	„ दशमस्कंधस्य सुबोधिन्याः (10)	श्री विद्वत्पदीक्षित विरचिता	३१७	„	„	सं. १९८२ वर्षे (11)
३१४	सुबोधिनी काण्डिका दशम (12)	„ निम्नयस्मृता	-	८९	„	सं. १७३५ प्रा.
३१५	सुबोधिन्यां वेणुगीत इति श्री (13)	„ श्री बलभाचार्यः	-	१२	„	सं. १९९० प्रा.
३१६	सुबोधिनो एकादश स्कंध (14)	„	-	७१	„	सं. १९९५ प्रा.
३१७	सुबोधिनो काण्डिका (15)	„	-	२८	„	सं. १९१० प्रा. इति श्री (16)
३१८	„ लेखः वेद (17)	„ श्री बलभाचार्यः	-	३८	„	सं. १७१५ प्रा.
३१९	सुबोधिनो टिप्पणी (18)	„ श्री हरिरायजी	-	४४	„	सं. १७३५ प्रा.
३२०	सेवाकामुदी श्लोक १-६	„ लाल बालकृष्ण भट्टकृत	-	१४	„	सं. १७९९ आषाढ कृष्ण १५ शु. विजे
३२१	„ श्लोक १-६ इति श्री (19)	„ अमुद्रित	-	५८	„	सं. १७४५ भाद्रपद (20)
३२२	सेवाभावना श्लोक १-५ अमुद्रित	„ श्री हरिदासः श्री हरिरायः	-	१२०	„	सं. १९३२ प्रा.
३२३	सेवाफल आदि ५ प्रश्ना (21)	„ श्री बलभाचार्य	-	३५	„	सं. १८८१ रम्यादि
३२४	सेवाकालिका	अपूर्ण	-	९८-२३	„	सं. १८३२
३२५	सेव्यस्वरूप तारतम्य निर्णयः	संपूर्ण	-	३	„	सं. १८२५
३२६	„ स्थान वर्णन चोपनी (22)	„ चोपनी २	२७-२६	„	„	सं. १७३१ तथा १७०५
३२७	स्तवमाला पञ्चतिः	„	-	८	„	सं. १९१५
३२८	स्तोत्राणि ५५ स्तोत्र	„	-	४०	„	सं. १७०२
३२९	रघुरत्नकण प्रेमा-अस्य टीका	„ मंत्रराजः [* अमुद्रित	-	१६	„	सं. १९१०
३३०	स्वरूपसेवा निर्णयः	„ हरिरायजी	-	४	„	सं. १७४०
३३१	„ स्वरूपसेवा भावना	„	-	४८	„	सं. १८०५
३३२	स्वामिनी स्तोत्राणि १६	„	-	२०	„	सं. १९९० आदि
३३३	हरिरायजीकृत स्तोत्र संग्रहः *	„ श्री हरिरायजी [५१४ स्तोत्र	६६	„	„	सं. १७९२
३३४	हरिलीला अतिशुभा समुद्रिती	„ श्री चोपदेशकृता	-	५०	„	सं. १९३४ वर्षे प्रा. (23)
३३५	„ कृष्णलीला उत्तमाक्षरः	अपूर्ण	-	१६	भाषा	सं. १७०५ प्रा.
३३६	हरियानन्दवर्चन स्तोत्र	„ लघु गोपात्र	-	६	संस्कृत	सं. १७३५



(1) श्री सुबोधिनी तृतीयस्कंधः इति श्री विष्णुस्वामी मतवति श्रीमदक्षय भट्टस्य श्रीमदक्षयभट्टकृत विरचित तृतीयस्कंध विवरणं समाप्तम् तृतीयस्कंधः (2) वर्षे अथन शुदि १० रवौ लिखित तृतीयस्कंध विवरणं (3) दशमस्कंध पूर्वाध्याय सुबोधिनी टीका। इति श्री भागवते सुबोधिन्यां श्रीमदक्षयभट्टस्य श्री बलभाचार्यकृत विरचिता दशमस्कंध विवरणे अष्टाध्याय्य विवरणं समाप्तः पूर्वाध्यायः (4) वर्षे अथन शुदि ९ सोमे लिखित दशमस्कंध पूर्वाध्यायं समाप्तम् (5) सुबोधिनी टीका दशमस्कंधस्य उत्तरार्धः (6) वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां रात्रौ लिखित दशमस्कंध विवरणे अष्टाध्याय्य विवरणं समाप्तम् (7) दशमस्कंधस्य उत्तरार्धस्य सुबोधिनी टीका (8) अध्याय २३ तः ५१ पर्यंत (9) इति श्री भागवत सुबोधिन्यां श्रीमदक्षय भट्टस्य श्रीमदक्षयभट्टकृत विरचिता दशमस्कंधस्य उत्तरार्ध विवरणे एकचत्वारिंशोऽध्याय विवरणं समाप्तम्। श्रीमद् बलभाचार्येण व्यासरागेन लेखितः (10) सुबोधिन्या टिप्पणी दशमस्कंध प्रकरणद्वय विंशति प्रकाशः (11) वर्षे कार्तिक मासे शुक्लपक्षे १५ रवौ। रघुरत्न-निवासिना देवजीकेन लिखिता टिप्पणी (12) दशमस्कंधे ३१ अध्याय पर्यंत (13) इति श्री भागवते सुबोधिन्यां श्रीमदक्षयभट्टकृत विरचित दशमस्कंध विवरणे अष्टाध्याय्यः (14) श्रीमद् भागवते एकादशस्कंधस्य ४ अध्याय पर्यंत (15) काण्डिका भागवतस्य सुबोधिनी टीकायाः १-२-३ स्कंधोपरि कारिकाः (16) इति श्री बलभाचार्यकृत उत्तरार्धविंशोऽध्याय्ये कारिकासु लिखित मठ प्रसङ्गमेन (17) वेदवृत्ति काण्डिका लेखः भागवत दशमस्कंधे ८७ अध्याय (18) १ सुबोधिनी टिप्पणी वेणुगीत। २ दशमस्कंध (19) इति श्री हरिदास विरचिता सेवा भावना (20) शुद्धाद्वैतस्य चंद्राक्षरे लिखित कारिका विवरणं समीपे शुद्धाद्वैतस्य चंद्राक्षरे व्याख्यानमेन (21) सेवाकालिका विंशति अष्टाध्याय्यस्य सेवाकालिका विंशतिः। सेवाकालिका विंशतिः श्री बलभाचार्यकृत। सेवाकालिका विंशतिः श्री भागवतस्य (22) १ चोपनी १ मां श्री आचार्यजीके तथा श्री गुणेशजीके लेख्य जहां विराजे सो प्रकार। २ महागुणोके तथा गुणेशजीके पाठकांभी जहां विराजमान है सो। ३ महागुणोके ८८ श्लोक। ४ महागुणोके तथा गुणेशजीके लेख्यस्वरूप जहां जहां विराजते हैं स्थान। (23) माघ वदि १० शुक्ल लिखित। श्री चोपदेश पवित्रम्। इति भागवतस्य अनुक्रमणी रमणीकृता। विष्णु चोपदेशेन भिन्न केवल सुनु ॥ १॥ हरिकोटीति नामैव हरिकोटीको-कदम्बा ॥ अत्रैव तत्त्वार्थेषां तत्त्वे चातुर्यधीर्गता ॥ २॥ न तानानन्त्यस्येता चोपदेशस्य सुखः ॥ अत्र व्याकरणे वरेण्यवितताः स्फुटाः प्रयन्था दश प्रयन्ता नव वैषकेति तिथि निर्धार्य मेकाग्र्युतः ॥ साहित्ये प्रव एव भागवतस्येतां अस्तस्य भुव तानि शोभामयेरिह गुणः के के न कोटोत्तराः ॥ १॥

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: KARMAKANDA 28

विषय: कर्मकांड: २८ ।

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author	टीका	पत्राणि	भाषा- लिपि:	लेखक-मिति:
Serial No.	Name of the work Title	संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Date

कर्मकांड: २८ ।

१	अकालमृत्युहर विधि सं. प्रपंचसारांतगत पटल २९	-	-	१ ओळिपुं,	सं. १८१० प्रा.	
२	अगस्त्यार्घविधि सं.	-	-	१ "	सं. १८४६ ना पौषविहस्रयोद्दशो लिखित भट्ट जीवन	
३	अंगारकविधानं (भौमवर्त)	अपूर्ण	-	२ "	सं. १९०९ प्रा.	
४	अंगारक विधि	"	-	४ "	सं. १९०५ प्रा.	
५	अग्निनामानि	गोमिल छांदोग्ये	-	१ "	" १९२५ प्रा.	
६	अग्निमुखाप्रयोग वैदिक ।	"	-	१३ "	" १८४० "	
७	अग्निहोत्र प्रयोगः	संपूर्ण	-	१८ देवनागरी संस्कृत सं. १७९९ आश्विनेश्वरपक्षे १)		
८	अग्निहोत्रे अग्निवेषः	"	-	२ "	" १९३९ "	
९	अग्निहोत्रवेदीप्रमाणं	"	-	१ "	" १९१५ "	
१०	अचलासतमीवर्त	"	-	४ "	" १७८० "	
११	अजपा संकल्पः अंतर्मातृका बहिर्मातृका ,	-	-	१ ओळिपुं,	" १८९१ चैत्र कृष्ण १ रवौ	
१२	अजपा प्रयोग न्यासः	"	-	१८ "	" १८१८	
१३	अजपा गायत्री प्रयोगः	"	-	५ "	" १९३५ माघ शु. ५ रवौ	
१४	अजपा विन्यास मालाः	"	-	३ "	" १८०९ प्रा.	
१५	अजपा गायत्री प्रयोगः	"	-	४ "	" १९४९ श्वेद शु. १५ रवौ	
१६	अजपा गायत्री विधिः	"	-	१ "	" १९९१ प्रा.	
१७	अजपा गायत्री प्रयोगः	"	-	६ "	" १८१९ "	
१८	अतिक्रम संस्कारः जातकमादि	"	-	७ "	" १८१७ "	
	पंच कर्ममते संस्काराः					
१९	अंत्येष्टि विधि	अपूर्ण	-	६ "	" १९४२ आश्विन व. ५ शुके	
२०	अधिवासन विधिः	"	-	५ "	" १७३९ प्रा.	
२१	अनंतपूजा	"	-	१ ओळिपुं	" १९३७ "	
२२	अनंत पूजा विधिः	"	-	२ "	" १९०५ माघ १	
२३	अनंतव्रत पूजा	"	-	१४ "	" १९०५ माघ शु. १४ रवौ	
२४	अनंत पूजा विधिः	"	-	९ "	" १८९५ माघ शु. मीर १४ सोमे	
२५	"	"	-	१ "	" १९३१ प्रा.	
२६	अनंत पूजा पद्धतिः	"	-	६ "	" १८७१ "	
२७	अनंतव्रत विधिः	"	-	४ "	" १८९० माघ. वद १४ गुरौ	
२८	अपामार्जनन्यासः	विष्णु	-	८ "	" १८७८ प्रा.	
२९	अपामार्जन न्यासः	वायु	-	४ "	" १९४५ का. वद ३	
३०	अपामार्जन विष्णु स्तोत्रं	पुलस्त्य	-	४ "	" १९११ प्रा.	
३१	अपामार्जन	"	-	१ "	" १९९० "	
३२	अपामार्जन विष्णु स्तोत्रं	"	-	३ "	" १९८० "	
३३	अपोशन विधिः	रत्नदीपे	-	३८ "	" १९२९ "	
३४	"	"	-	१४ "	" १९३१ "	
३५	अभयवैतरणी व्रतोद्यापन विधिः	"	-	२४३१५ "	" १९०४ "	
३६	अमावास्या आद्य	"	-	१४ "	" १९३९ "	
३७	अरिष्टशान्तिः	रुद्रयामसे	-			
	३ प्रधानांदाविधिः					
	४ संतानाभावेप्रहवाधा परिहारः					

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पन्नाणि No. of Leaves	भाषा- लिपिः Language & Script	लेखक-मितिः Scribe & Date
	५ उत्तरकथांतिः					
	६ काकथांतिः					
	७ कपोत कथांतिः					
३८	अर्घ्यपुत्रविधानं	अपूर्ण	-	५	"	सं. १७३२ माघ शुद्ध ३ शुक्ल
३९	अवतं कनोत्रादि नक्षत्रा श्रीमाली ब्राह्मणना		-	१	"	" १९८० प्रा.
४०	अवधुयेष्टिः	अपूर्ण	-	१२	"	" १९७९ "
४१	अवधुयाभिषेकः	"	-	१	"	" १७०२ का. शु. १० शुक्ल
४२	अवसान विधिः पटत्रिंशः	संपूर्ण	-	५	"	" १९१५ माघ शु. १० शुक्ल
४३	अव्यक्त गायत्रीः	"	-	१८	"	" १८५२ प्रा.
४४	अश्वत्थप्रलदान विधिः	अपूर्ण	-	१	"	" १८१५ "
४५	अश्वत्थ पूजनं	"	-	१	"	" १८१५ "
४६	अश्वत्थ पूजा विधिः	"	-	१ ओलीयु	"	" १९३१ "
४७	अश्वत्थ पूजनं	"	-	१ ओलीयु	"	" १९०१ "
४८	अष्टादान विधिः	"	-	५	"	" १९४५ "
४९	"	"	-	१	"	" १९०५ "
५०	अष्टमूर्तिपूजनं	"	-	१	"	" १७९९ "
५१	अष्टोत्तरशत सप्ताह यक्षपूजा	"	"	१ ओलीयु	"	" १८७१ "
५२	अष्टि संस्कार विधिः	"	"	१	"	" १९०७ मार्ग शु. १२ शुक्ल
५३	अक्षय तृतीया संस्कारः	"	"	१	"	" १९४० प्रा.
५४	आने भद्रा	बाह्यरत्न	"	१	"	" १८४९ मार्ग शु. १२ शुक्ल
५५	आने भद्रास्तुतं	"	"	१	"	" १७९७ प्रा.
५६	आपस्तम्बानां अग्निहोत्रप्रयोगः	अपूर्ण	"	१	"	" १८५१ प्रा.
५७	आम्युक्तिक आरंभ	संपूर्ण	"	१०	"	" १८१२ प्रा.
५८	आवस्ययाचनं	"	"	१५	"	" १८१३ प्रा. शु. १० शुक्ल
५९	आशीर्वादः	"	"	१	"	" १९३१ प्रा.
६०	"	"	"	१	"	" १९३३ प्रा.
६१	आश्लेषाविधानं कथांतिः	"	"	४	"	" १८४० रे. शु. १२ शुक्ल
६२	आह्निकं आपस्तंबीयं श्रोतृ शु. १७७९ मन्त्रे लिखितं	"	"	३४	"	" १८८० अश्विन शु. १२ शुक्ल
६३	"	संपूर्ण	"	६	"	" १९७४ प्रा.
६४	"	अपूर्ण	"	१३	"	" १९९० प्रा.
६५	उत्क्रांत्यादि काम	"	"	११	"	" १३३२ प्रा.
६६	उत्तरकुशांडी	"	"	१	"	" १९१३ प्रा.
६७	उत्पात्तकथांतिः	"	"	१ ओलीयु	"	" १९१६ प्रा.
६८	उपनयनकर्म	"	"	१	"	" १९३१ प्रा.
६९	उपनयन कर्म	"	"	१	"	" १९३० प्रा.
७०	"	"	"	३०	"	" १८०४ प्रा.
७१	"	"	"	११	"	" १८१४ द्वितीय भाद्रपद शु. १२ शुक्ल
७२	उपनयन पद्धतिः	"	"	१०	"	" १८१९ वैशाख शु. ११ शुक्ल
७३	उपवीत कर्म	"	"	१५	"	" १८१३ प्रा.
७४	उपनयन पद्धति	अपूर्ण	"	४	"	" १८९० प्रा.
७५	"	"	"	१	"	" १८९५ प्रा.
७६	"	"	"	१	"	" १८९० प्रा.
७७	उपवीत धारणातुकरः	संपूर्ण	"	१	"	" १९१५ प्रा.
७८	उत्तरकथांतिः	"	"	१	"	" १९३६ प्रा.

सामा पेज १०८ उपर (१) छुट्टपसे पंचम्या शुभ रात्रि लिखित लिखित।

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્તલિખિત ગ્રંથ મંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: KARMAKANDA 28

વિષય: કર્મકાંડ: ૨૮

ક્રમાંક Serial No.	ગ્રંથ નામ Name of the work Title	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અસંપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાણિ No. of Leaves	ભાષા-લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ: Scribe & Date
૭૧	૩૫૧ કર્મ	"	-	૭	"	સં. ૧૭૫૩
૮૦	"	"	-	૨	"	" ૧૯૪૫
૮૧	"	"	-	૧	"	" ૧૯૨૦
૮૨	કમલમુખીવાન	"	-	૧	"	" ૧૯૩૦
૮૩	પદ્માવતીન્યાસ:	"	-	૭	સંસ્કૃત	" ૧૮૧૧ પ્રા.
૮૪	પદ્માવતીન્યાસ પદ્યતિ:	"	-	૨	"	" ૧૯૧૬
૮૫	પદ્માવતીન્યાસ પદ્યતિ:	"	-	૧	"	" ૧૮૪૫
૮૬	પદ્માવતીન્યાસ પદ્યતિ: રત્નમયે સંપૂર્ણ	"	-	૫	"	" ૧૯૧૬ બાણી વદી ૭ ગુણે
૮૭	પદ્માવતીન્યાસ પદ્યતિ	"	-	૪	"	" ૧૯૨૬ પ્રા.
૮૮	"	"	-	૧૦	"	" ૧૮૭૨
૮૯	પદ્માવતીન્યાસ	"	-	૮	"	" ૧૯૧૬
૯૦	પદ્માવતીન્યાસ પ્રયોગ:	"	-	૧૩	"	" ૧૯૧૬ બાણી વદી ૭ ગુણે
૯૧	પદ્માવતીન્યાસ પ્રયોગ:	"	-	૬૮	"	" ૧૯૨૩ કાશ્મીર ગુ. ૫ ગુણે
૯૨	પદ્માવતીન્યાસ પદ્યતિ: મારાણ મંત્ર	"	-	૧	"	" ૧૮૬૬ પ્રા.
૯૩	" કર્મ	"	-	૧ બોલીયું	"	" ૧૮૭૧ પ્રા.
૯૪	"	"	-	૨	"	" ૧૮૭૧ પ્રા.
૯૫	કમલમુખીવાન પ્રયોગ: પુસ્તક	"	-	૧૩	"	સં. ૧૮૧૩ પ્રા.
૯૬	કમલમુખીવાન ન્યાસ:	"	-	૨	"	સં. ૧૯૦૬
૯૭	કમલમુખીવાન રચનાકાલ સંવત ૧૫૦૬	પં. રામ: કુલપ્રકાશિકા	-	૧૩	"	સં. ૧૯૦૬ વર્ષ (1)
૯૮	કમલમુખીવાન પુસ્તક ૫	રાજગુરુ (2)	-	૪૦	"	સં. ૧૮૬૪ બાણી વદી (3)
૯૯	કમલમુખીવાન પુસ્તક ૫	નિરુલલીલિત: ગુરુ ટીકા	-	૭	"	સં. ૧૮૬૬
૧૦૦	" સ્ટોકા રચનાકાલ: શાકે ૧૫૪૧	સંસ્કૃત ટીકા	-	૨૩	"	સં. ૧૮૭૧ પ્રા.
૧૦૧	" સ્ટોકા	"	-	૨૪	"	સં. ૧૯૧૬ બાણી વદી (4)
૧૦૨	" મુલ	"	-	૪	"	સં. ૧૮૭૮ બાણી વદી (5)
૧૦૩	કુમારિકા પૂજન	"	-	૧	"	સં. ૧૮૬૬
૧૦૪	કુમારિકા પુસ્તક ૬	પુણેશભગવાતરજા	-	૮	"	સં. ૧૮૭૮ બાણી વદી
૧૦૫	માનસોક્તા	"	-	૫	"	સં. ૧૮૭૫ બાણી વદી ૭ ગુણે
૧૦૬	કુમારિકા પૂજન	"	-	૧૧	"	સં. ૧૯૧૦ બાણી વદી ૭ ગુણે
૧૦૭	કુમારિકા પૂજન	"	-	૧	"	સં. ૧૮૧૦ પ્રા. [મહાદેવજી]
૧૦૮	કુમારિકા પૂજન	"	-	બોલીયું	"	સં. ૧૯૨૪
૧૦૯	કોલિક ભાદ્ય તપન	"	-	૩	"	સં. ૧૭૫૪
૧૧૦	કેશવદિ ન્યાસ:	"	-	૪	"	સં. ૧૮૬૧
૧૧૧	ક્રિયાવિધાન પદ્યતિ:	રામચંદ્ર:	-	૧૨	"	સં. ૧૫૧૨ વૈષ્ણવ કુળ ૧૦ ગુણે
૧૧૨	ક્રિયાવિધાન પદ્યતિ:	"	-	૩૭	"	સં. ૧૯૨૮ કાશ્મીર વદી (6)
૧૧૩	"	"	-	૨૩	"	સં. ૧૫૨૦ પ્રા.
૧૧૪	આત્મપૂજન ૧, આત્મપૂજા ૨,	"	-	બોલીયું	"	સં. ૧૯૨૫
૧૧૫	ગંગાચર પદ્યતિ: ગંગાચર	"	-	૩	"	સં. ૧૮૬૧
૧૧૬	ગંગાચર પદ્યતિ: ગંગાચર	રામામિહોશી પુત્ર	-	૩૯	"	સં. ૧૯૧૬ વર્ષ લિખિત
૧૧૭	ગંગાચર પદ્યતિ: ગંગાચર	[૧ ગંગાચર:	-	૪૦	"	"

(1) વર્ષે બાણી વદી ૭ ગુણે (2) રાજગુરુ: મહાદેવજી રાજકુલ પૂજિત: કાન્હજીકુલ: મુજ નિવાસી (3) ગુણે ૫ બોમે શ્રી અંજાર મધ્યે ચારલ્લત જ્ઞાતીય જોષી કલ્યાણ લિખિત (4) શાકે ૧૭૮૧ બાણી વદી ૬ ગુણે ગંગાચર ગોપાલ બહેન સમીપે લિખિત (5) ગુણે ૧૫ સોમે ગોપાલ વર્ષે હરિજીવ જામારમજ (6) વદી ૨૦ રામજી જોષીરામ રંગનાથ રાજકોટ (7) શિદ્ધિ મિનાય પૂજા મંત્રમંડલ પુસ્તક ૧

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GBANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : Karmakanda 28

विषय: कर्मकांड : २८।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टोका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि Language & Script	लेखक मिति Scribe & Date
११८	गणेश चतुर्थी विधि:	भाष्यपद शुद्ध	-	१	सं. १८७० आश्विन ५	
११९	" "	भाष्य वद	-	४	सं. १८३४	
१२०	" "	वैशाख शुद्ध	- ओळीयु	"	सं. १९३७	
१२१	गायत्रीपञ्चाद पद्धति: पुस्तक १	नारायणमठ: मिश्रमहास्वति	४९	"	सं. १८११	
१२२	गायत्री करप: गायत्री स्वरूपगोविन्द	विद्यामिश्र:	-	१	सं. १९०२ना ज्येष्ठ शुद्ध (१)	
१२३	गायत्री जपविधि: काम्य: इहलोकार्थ	"	-	१२	सं. १८३९	
१२४	गायत्री पूजनविधि:	बालकृष्णसुन्दरनाथपरचित:	५१	"	सं. १९५० ज्येष्ठे	
१२५	गायत्री पुरश्चरण पद्धति: पुस्तक १	याज्ञवल्क्य:	- १९-३-३५	"	सं. १९३८ना फागुन वद (२)	
१२६	गायत्री पूजापद्धति: १	"	- ७०-३९	"	सं. १८८९ भाद्रपद ४ औष	
	" प्रयोग: २	अपूर्ण	-	X	X X X	
१२७	गायत्री विवरण	संपूर्ण	-	३	सं. १८८२	
१२८	गृहदान विधि	"	-	५	सं. १८५८ मार्गशीर्ष शुद्ध १ वनौ	
१२९	गृह पद्धति:	संपूर्ण गोमिळ:	-	२५१	देवनागरी सस्कृत संवत् १७४१	
१३०	गृहसूत्र पुस्तक १	"	-	२०	सं. १७४८	
१३१	गोत्रिरात्रि व्रतपूजन	"	- ओळीयु	"	सं. १९३७ प्रा	
१३२	गोपूजन दान पुस्तक १	"	-	१२	सं. १९३८ प्रा.	
१३३	गोपाल संतान यंत्र पूजन	"	-	२	सं. १८९४ भाद्र शुद्ध २ वनौ ले	
१३४	ग्रहणशान्ति: दानानि पुस्तक ४	"	-	९	सं. १९२८ प्रा [ईश्वरसुत कर्मोपम	
१३५	ग्रहणशान्ति नवग्रह पूजादि (३)	"	-	३४	सं. १८९८ना वर्षे शाके (४)	
१३६	"	"	-	३७	सं. १९०४ शाके (५)	
१३७	"	"	-	७०	सं. १८९९ शाके (६)	
१३८	ग्रहशान्ति पद्धति:	"	-	५५	सं. १७१९ वर्षे (७)	
१३९	" दानपूजादि पुस्तक २	"	-	८	सं. १९१३ प्रा.	
१४०	घटस्थापन पूजन यंत्र	"	-	४	सं. १९३१ प्रा.	
१४१	घृततुला	"	- ओळीयु	"	"	
१४२	चतुर्थ्या: कर्मपद्धति: विवाहादी	"	-	१०	सं. १९१४ भाद्र शुद्ध (८)	
१४३	चतुर्थ्या योगिनीमां स्वाध्याय प्रतिष्ठा	"	-	२	सं. १९२१ प्रा.	
१४४	चातुर्वेदीयपवित्र	"	-	४	सं. १९२८ कार्तिक शुद्ध (९)	
१४५	चातुर्वेदीय प्रयोग:	अपेक्षित	-	१६	सं. १७१९ प्रा.	
१४६	चातुर्वेदीय विष्णुपूजनादि	"	-	३	सं. १९२९ प्रा.	
१४७	चितामणि पायिबेधवद: पार्थिव अपूर्ण	[१] चितामणि पुस्तक-	-	६	सं. १९२३ प्रा.	
१४८	चूडाकर्म बाळानां केशवपन संपूर्ण	"	-	३	सं. १९१२ प्रा.	
१४९	चौल संस्कार: उपनयन वनोई	"	-	१५	सं. १८१७ भाद्र शुद्ध १०	
१५०	" पुस्तक २	कौस्तुभे	- ११-३५	"	सं. १९१५	
१५१	छंदोगानामाहिक	शिवराय	-	११	सं. १८९९ भाद्र शुद्ध १४	
१५२	जनोई	अपूर्ण	-	१२	सं. १८८८ वैशाख शुद्ध १५ वनौ	
१५३	जन्मदिन पूजनोपायन	"	-	४	सं. १७५१ भाद्र शुद्ध १७ वनौ	
१५४	जन्माष्टमी प्रयोगोपायन पुस्तक	"	-	२४	सं. १८९० भाद्र शुद्ध २० वनौ	

(१) शुद्ध १ भौमे लिखित दवे कचरात्मक केरकेन भुव- (२) वद भौमे लिखित दवे दवाधर केरके (३) पूजनादि इतिथी जगदेव प्रोक्त ग्रहयज्ञामृत (४) शाके १७६३ प्रथम भाद्र शुद्ध १४ बुधवासरे लि. दवे कचरात्मक केरकेन (५) शाके १८७० वैशाख अमावस्या। लि. भाद्र गोपाल: (६) शाके १७३४ वर्षे सौराष्ट्र देशे पवित्रकोशे हामारमठके जगदेव इत्यादि श्री गोंडलपुर मध्ये पूर्वे खरेडी ग्राम निवासी व्यासश्री प्रयागात्मक-शिवरायात्मक-भाद्रवर्मात्मकेन लि. (७) वर्षे भाद्र मासे शुद्धपक्षे ७ म दवाधरे (८) शुद्ध १४ वनौ लि. रावळ ज्येष्ठराय रघुनाथजी टकारावाळा (९) शुद्ध ८ राविसारे गोमनाम शांति वीरेश्वरे।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र

SHRI BHUVANESHWARI PITH, M.S., GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: Karmakanda 28

विषय : कर्मकांडः । २८

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपिः Language & Script	लेखक-मितिः Scribe & Date
१५५	जलयात्रा	"	-	ओळीयु	देवनागरीसंस्कृतम्.	१९११ प्रा.
१५६	जलाशयारम्भोत्सर्ग पद्धतिः	"	-	७३	"	सं. १९१८ प्रा.
१५७	जातकमार्ग संस्काराः	"	-	१५	"	सं. १९९९ [उदय वाकरेण]
१५८	जीर्णोद्धार विधिः	"	-	२	"	सं. १९९३ ना. वेण्णाड श्रु २. सोपे २८
१५९	तर्पणं नित्यनैमित्तिकं पुस्तक १०	" कात्यायन	-	३०	"	सं. १९८८ प्रा. १८९४ भगवत् (१)
१६०	तर्पण आद्य पद्धतिः	"	-	१४	"	सं. १९०५ भा. को. वही (२)
१६१	तांत्रिक होमविधिः	"	-	८	"	सं. १९११
१६२	तीर्थआद्य विधिः	"	-	२१	"	सं. १९३४
१६३	तुलसी विवाहः पुस्तक ४	"	-	१३	"	सं. १९२५ यो. डल मड गोपालजी
१६४	तुलादान पद्धतिः	" रामेश्वर भट्टराज	-	५९	"	सं. १८०३ वर्षे वेण (३)
१६५	त्रयोदश्याह आद्य	" [† नारायण भट्टराज]	-	४	"	सं. १९२८ ना. प्रथममासपद. पुस्तक ५ वही
१६६	त्रिपिंडी आद्य पुस्तक ५	संपूर्ण	-	२५	"	सं. १८९५ ना. का. को. (४)
१६७	त्वरित वस्त्रजप प्रयोगः	"	-	११	"	सं. १८३८ प्रा.
१६८	दंडविसर्जन	"	-	२	"	सं. १९५१
१६९	दशायुधः	अपूर्ण	-	७	"	सं. १९९१
१७०	दशायुधमात्र प्रयोगः	संपूर्ण	-	२४	"	सं. १९२९ उषे. शुद्ध
१७१	" उत्तमाधराः	"	-	२३	"	सं. १९२९ प्रा. [† श्री शिवराज]
१७२	दशदिक्पाक पूजनं इति (५)	"	-	१३	"	सं. १९९८ प्रा.
१७३	"	"	-	४	"	सं. १९२९ प्रा.
१७४	"	"	-	१०	"	सं. १८९८ ना. अषाढ शु १ (६)
१७५	दानकांड विषयाः	"	-	४३	"	सं. १९२५ प्रा. वशास बाबुदेव गोड
१७६	दानवाक्यं शुद्धत दानानां १० विधानानि,	"	-	६२	"	सं. १८५८ प्रा.
१७७	" लघु	"	-	५	"	सं. १९३० मार्गशीर्ष शुदि (७)
१७८	दीपदान	"	-	ओळीयु	"	सं. १९३०
१७९	द्वितीयान विधिः	"	-	२	"	सं. १९२९ प्रा.
१८०	देवपूजाविधिः	"	-	२०	"	सं. १९३२ प्रा.
१८१	"	"	-	७	"	सं. १८९९ प्रा.
१८२	दुर्वापूजा	"	-	२	"	सं. १९१२ [† डा. के. वेल्ले]
१८३	देवप्रतिष्ठा पद्धतिः	" मत्स्यपुराणे	-	६	"	सं. १९०० ना. वेण्णाड श्रु ८ शुको
१८४	"	"	-	१२	"	सं. १९०५ वर्षे वा. के (८)
१८५	"	"	-	१२	"	सं. १८९७ वा. के (९)
१८६	देवस्नान विधिः	"	-	४	"	सं. १९०० वर्षे डा. के. वेल्ले
१८७	देवीपूजन विधिः	"	-	ओळीयु	"	सं. १९११ प्रा.
१८८	देहशुद्धिः	"	-	३	"	सं. १९२९
१८९	दोषावली	अपूर्ण	-	२	"	सं. १८८३
१९०	द्वाविंशद्देवता स्थापनानुक्रमः संपूर्ण	"	-	ओळीयु	"	सं. १९१७
१९१	धर्मशास्त्र सूत्राणि	"	-	३	"	सं. १९३४
१९२	नवग्रह आहुतिः	"	-	६	"	सं. १९३७
१९३	नवग्रह दानमंत्रः	"	-	८	"	सं. १८०५

(१) आषाढ शुद्ध ७ शनी । कि. व्यास उकरडा काळजी सेवावा. (२) वही १४ शनी हलवदवाळ. क. वाराम वि. हरिराम (३) पोष मासे कृष्णपक्षे तिथि ६ भौमे लकी से मुचनगर वा. वा. वा. औपाधनिक दवे श्री. ५ का. वहीदात्मज क. मुना. लक्ष्मि. समस्त प्रातः पठनाथ. (४) कार्तिक शुद्ध १५ शनी के काळ अंतारामेव (५) इति दशदिक्पतीनां तथा क्षेत्रपाक वदकथैरव गणपतियोगिनी पूजनं बलिदानं (६) शुद्ध ११ भौमे लिखित जेको ईश्वरसुत कावेन. (७) शुद्ध शनी श्रावणपक्षे केवलामेव (८) वा. के १७७० प्रवतमाने चंद्र शुद्ध दशमी शुद्ध कि. दवे हरी भगवानजी (९) वा. के १८१२ माघ वदि ४ गोंडल मध्ये वशास माधवजीदारमजेन

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author	टीका	पत्राणि	भाषा- लिपिः	लेखक-मितिः
Serial No.	Name of the work Title	संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Date
१९४	नवग्रह न्यासाः मंत्राः अपदानादिः	संपूर्ण	-	२५	देवनागरी संस्कृत सं.	१९४१
१९५	" वेदोक्ताः	"	-	८	" सं. १९१५ ना. अष्टाद वद (1)	
१९६	नवग्रह पूजा	"	-	१४	" सं. १९१४ ज्येष्ठ शुदि (2)	
१९७	" पुस्तक १	"	-	२०	" सं. १९११ कच्छराज वंशावली (3)	
१९८	नवग्रह प्रयोगः	"	-	२८	" सं. १९१९	
१९९	नवग्रह मन्त्रः	संपूर्ण	-	१९	" सं. १९१९	
२००	नवग्रह मन्त्र पद्धतिः	"	-	२६	" सं. १७११ ना.	
२०१	नवग्रह यंत्र चित्राणि गुरु (4)	" चित्र	-	९	" सं. १७२१ प्रा.	
२०२	नवग्रह शांतिः	"	-	१९	" सं. १९२९ प्रा.	
२०३	नवग्रह विधानं अथ (5)	अपूर्ण	-	१३	" सं. १९३९ प्रा.	
२०४	नवरात्र विधानं पूजनं (6)	"	-	९	" सं. १९४५ माघ वद	
२०५	नवरात्र पूजनं पुस्तक १	संपूर्ण	-	८	" सं. १९२८ का. १० गु.	
२०६	नागपंचमी विधिः	"	-	३	" सं. १९१९ आ. शु. ५ शुके	
२०७	नागबलिः संपन्न प्रायश्चित्तं	" बौधायन	-	८	" सं. १७३५ प्रा.	
२०८	मांदीश्राद्धं प्रथ १	"	-	२४	" सं. १९३०	
२०९	नारायण बलिः	" शकहतानी कृते	-	४	" सं. १७१९ प्रा.	
२१०	नागरी नातनी लग्न लक्ष्मणी पद्धति	"	-	ओळीतु	" सं. १९५९ प्रा.	
२११	नित्यकर्म	"	-	४	देवनागरी गुज. सं. १९१४	
२१२	"	"	-	११	देवनागरी संस्कृत सं. १९१४ (खुनाचि दंकारा)	
२१३	नित्यतर्पणं	"	-	९	" सं. १९१९ रावल ज्येष्ठाराम	
२१४	" अग्नेयीयानां	"	-	ओळीतु	" सं. १९०८ ना. पोष शुदि (7)	
२१५	" पार्वण आद्य पद्धतिः	" (सामवेदीयानां)	-	ओळीतु	" सं. १९५१ प्रथम का. (8)	
२१६	नित्य नियमपूजा सेवी	"	-	८	" सं. १७०९ प्रा.	
२१७	नित्य पूजाविधिः	"	-	४	" सं. १९१५	
२१८	नित्यआद्य पद्धतिः प्रथ १	"	-	ओळीतु	" सं. १९१९	
२१९	नीलोत्सर्ग पद्धतिः	"	-	११	" सं. १७६८ वद (9)	
२२०	"	"	-	३०	" सं. १९०५ कार्तिकदि (10)	
२२१	"	"	-	२५	" सं. १९०५ प्रा.	
२२२	"	"	-	ओळीतु	" सं. १९०४	
२२३	"	"	-	ओळीतु	" सं. १९०८ आषाढ कृष्ण १४	
२२४	"	"	-	१८	" सं. १९२७ (आषाढ गोपालजी)	

(1) वद २ मीमे के. रावल ज्येष्ठाराम रगनाथ दंकारा (2) शुदि ४-१५ वद ज्येष्ठाराम दंकारा (3) वंशावली पक्षि
भरतखंडे कच्छदेशे भुवनगर मध्ये कच्छदेशाधिपतयः । तयोर्दौ राजा हमीरजी । राजा खेगारजी । तयो महापुत्राभ्यां प्रसूतमकरो
राज्ये वर्ष ४४१ । ततो राजा श्री भोजराजजी राज्यं वर्ष १४ । ततः संवत् १७०९ वर्षे अश्विना, रात्रि खेगारजी राज्यं वर्षे
९ । ततः महाराजाधी तमाचोबी राज्यं वर्ष ११ । ततः श्री रावणजी राज्यं वर्ष ३३ मास ३ दिन ११ । ततः राजा
प्रायः राजा राज्यं वर्ष १८ मास ३ दिन २१ । ततः श्रीराजजी राज्यं वर्ष ३३ । ततो राजा देशजजी राज्यं वर्ष ३५ मास
१ दि. ७ । ततो देशजजीये बंदरधी मांजी तथा सुंदरो तदा भुवनगरतो प्रथम गढ चडावने । शिररामे मंदर स्मि
तुलादान दिक् तथा बिलदखान नवाननी कोत्र मांजी काठी भणु भुव कीषा । तस्यामे पटराजी बाई बाघेजी महं भणु बाईराज
तस्या सुकलं पात्र श्री नारणवरजी वंशावी । देवां शिखरवंध २ कीषा सेवा देव १ श्रीकवजी वंजु लक्ष्म नार यणतु चनायु
तुलादान किण । (4) गुरुत यंत्र बहर छे केटी कई चिवाणु छे (5) अन्य विशेष पुस्तकानि तत्र विभागे संति (6)
पूजनं । पुस्तक २ अथ प्रथाः तत्र विभागे (7) शुदि १३ वद लेखितं भट कल्याणी नवजी (8) कात्तु शुदी व्यास
माधवजीतुत बायुदेव (9) वर्षे श्रितियाबाळ हाते गुरुपक्षे श्रितिया नवरात्रे लखितं उदीचर इतीय जयपुरे बासभ्य भट
नायकभासज माधव (10) वदि ४ चै शिखरप्रज व्यास तुलाजी

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र।

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: Karmakanda 28

विषय : कर्मकांड २८।

क्रमांक Serial No	ग्रन्थ नाम Name of the Work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक-मिति: Scribe & Date
२२५	नृपाणां विवाहानुक्रमः	"	-	१	देवनागरी संस्कृत	सं. १९३९
२२६	तैमिस्तिक तर्पण	"	-	५	"	सं. १७१८ प्रा.
२२७	पंचक विधि ३ पुस्तक	"	-	८	"	सं. १९१८
२२८	पंचदेव तर्पण १ (1)	"	-	४५	"	सं. १८०६
२२९	पंचवक्त्र शिवपूजा ८ पुस्तक	"	-	२६	"	सं. १९१९
२३०	पंचायतन षोडशो पूजा १ *	" (*संज्ञगायत्री)	-	११	"	सं. १९१५
२३१	पडल निरयकर्म	अपूर्ण	-	११	"	सं. १९१६
२३२	पयोमतं	संपूर्ण	-	१	"	सं. १९४१
२३३	पर्णशर निर्माण और्ध्व दैहिक*	" (मरणोत्तरविधि)	-	१०	"	सं. १९१४ भावण क. ८ पु.
२३४	पल्लोशरट शांतिः	"	-	७	"	सं. १९१३ जेष्ठ वदि (2)
२३५	पवमान प्रयोग होमः	"	-	६	"	सं. १७०६ प्रा.
२३६	पारस्कर गुह्यसूत्रं कर्म पद्धतिः	"	-	२०	"	सं. १८१०
२३७	पार्थिवेश्वर चित्तामणि पूजा संपूर्ण	"	-	१४	"	सं. संवत् १७९१ प्रा.
२३८	" " "	"	-	१६	"	सं. १९०३ प्रा.
२३९	" " "	"	-	१८	"	सं. १९१० प्रा.
२४०	" " "	"	-	६	"	सं. १८६९ भावण वद-७ पु.
२४१	" " "	"	-	७	"	सं. १८७९ प्रा. [संज्ञमोराजी]
२४२	" " " १ (3)	"	-	१८	"	सं. १९३२ प्रा.
२४३	" लिग पूजा कथु †	" [पुस्तक ५]	-	१५	"	सं. १९१२ प्रा.
२४४	पार्वण भास्व	"	-	११	"	सं. १७८७ चैत्र छदि ९ गुरी
२४५	पिंडप्रदान विधिः	"	-	४	"	सं. १९१० प्रा. [संज्ञाशिवराजसेन]
२४६	पुण्याह मंडल	"	-	१	"	सं. १९३२ प्रा.
२४७	पुण्याहवाचन तैत्तिरीयानां	"	-	१२	"	सं. १८११ प्रा.
२४८	" " "	"	-	१२	"	सं. १९१८ प्रा.
२४९	" " "	"	-	ओळीयु	"	सं. १९४९ प्रा.
२५०	" " " अपूर्ण	"	-	८	"	सं. १९२१ प्रा.
२५१	पितृसंहिता	संपूर्ण	-	५	"	सं. १९३१ भा. भावना वदी (4)
२५२	पुतलक विधान देशांतरमरणे*	" [और्ध्वदैहिक]	-	३	"	सं. १८०८ चैत्रवदि १ के. सदाशिवजी
२५३	पुतलक विधिः और्ध्वदैहिक (5)	"	-	९	"	सं. १९२३ कार्तिक पुदी १२
२५४	" " "	"	-	१५	"	सं. १९१९ भा. माहा छदि (6)
२५५	" " "	"	-	९	"	सं. १९२३ भा. कार्तिक छदि १२
२५६	" " " सामवेदीय	"	-	३	"	सं. १८०८ भा. चैत्र वदि २ के.
२५७	पुरश्चरण चंद्रिका	" देशेष्टाश्रम परिमाण भावार्थ	-	३८	"	सं. १७५४ प्रा. [संज्ञाशिवजी]
२५८	पुरुषोत्तमस्त विधिः	" भविष्ये	-	६	"	सं. १९३४ प्रा.
२५९	" " " वयोवाचन	"	-	ओळीयु	"	सं. १९३९ प्रा.
२६०	पुष्पांजलिः	"	-	४	"	सं. १९२० भा. भावना वदी ३
२६१	पूजाविधिः पुस्तक ४	"	-	ओळीयु	"	सं. १९३९
२६२	पृथ्वीपूजा	अपूर्ण	-	४	"	सं. १८८३ प्रा.
२६३	प्रतिष्ठा कर्म	संपूर्ण	-	१०	"	सं. १९२० प्रा.

(1) १ पंचदेव तर्पण २ पंचसूत्र ३ कुशादी ४ पंचमाह ५ भूषारमः ६ एकदशाह भास्व (2) वदि भृगुशिवजी
मंदवापदे भुवनेश्वरी मन्थे लि. व्यास शिवराजभोज विष्णुपुत्र वीरेश्वरेण (3) १ पार्थिवेश्वर चित्तामणि पूजा २ कपराज कृपा
स्वोत्तर ३ संज्ञाशिवजी ४ जयशंकर (4) वदी ११ मंगल सखितंग रावल जेष्ठाराम मंगलाय राजकोट सुभाष कर्मण
आशामा परामा रहे छे (5) और्ध्वदैहिक देशांतरमरणे अस्ति दाहादि विधि (6) छदि ७ पु. के. हरिकान्त के. राम

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपिः Language & Script	लेखक-मितिः Scribe & Date
२६४	प्रतिष्ठा पद्धति देव प्रतिष्ठा पद्धतिः	"	-	१९	देवनागरी संस्कृत	सं. १८०३ वर्षे (१)
२६५	"	" प्रथमावः	-	७२	"	सं. १९१९ माघ (२)
२६६	प्रतिष्ठा मयूखः	" श्री शंकर (३)	-	२६	"	सं. १८९३ मधु मासे (४)
२६७	"	"	-	२१	"	सं. १८९७ मार्ग मास कृष्णपक्षाष्टमी
२६८	प्रतिष्ठा विधिः लिगादीनां	"	-	७	"	सं. १९१३ रासखरवरे पौष (५)
२६९	प्रतिष्ठा संप्रदायः देवप्रतिष्ठा	" [संप्रदाय पद्धतिः	-	७४	"	सं. १९९८ वर्षे (६)
२७०	प्रत्यक्षरोण	"	-	३	"	सं. १८९४ प्रा.
२७१	प्रदेश पञ्चाविधिः	"	-	४	"	सं. १९०२ प्रा.
२७२	प्रयोग पद्धतिः वैजल (७)	" शिवायसुरि विरचितार्थे जल	-	५९	"	सं. १७८९ भाद्रपदे शुद्ध चतुर्थी
२७३	"	" वाचस्पति (८)	-	३४	"	सं. १९४१ प्रा.
२७४	प्रयोग रत्न	" अपूर्ण	-	१६८:६९	"	संवत् १७३९ प्रा.
२७५	प्रयोगसारः प्रेतकर्म	"	-	५०	"	"
२७६	प्राणप्रतिष्ठा पुस्तक १	" संपूर्ण	-	१०	"	सं. १८९८ प्रा.
२७७	प्रातःकृत्य	"	-	५	"	सं. १९४९ प्रा.
२७८	प्रातर्होम	" तैत्तिरीयानां	-	३	"	सं. १८११ प्रा.
२७९	प्रायश्चित्त प्रयोगः । कर्माधिकारविधिः	"	-	ओळीयुं	"	सं. १९४९
२८०	प्रेतकर्म पद्धतिः	"	-	१०	"	" प्रा. [१८ व १० वर्षे
२८१	प्रेतचंद्रिका	" प्रयागपुत्र (९)	-	५६	"	सं. १९८९ के साल वैशाख
२८२	बलिदीपदान विधिः दीपदान प्रयोगः	"	-	४	"	सं. १९४४ प्रा.
२८३	बलिदान विधिः	"	-	५	"	सं. १८९९
२८४	बालक रक्षण	"	-	९	"	सं. १९१४
२८५	चिन्मयपत्र पूजा	"	-	३३	"	सं. १९२३ आषाढ ११
२८६	बृहस्पति पूजनं १*	" [अश्वमेधा शांतिः २	-	११	"	सं. १८१७ प्रा.
२८७	बृहस्पति शांतिः पूजनं	" [अश्वमेधा शांतिः	-	१५	"	सं. १९१६ प्रा.
२८८	ब्रह्मचारिणां संप्रदायानां	" [अश्वमेधा शांतिः	-	३	"	सं. १८४१ प्रा.
२८९	ब्रह्मयज्ञ विधिः तैत्तिरीयानां	"	-	४	"	सं. १९२४
२९०	" सर्वेषां पुस्तक १	"	-	१९	"	सं. १९३८
२९१	भागवत पुराणार्थ पूजनं विधिः	"	-	८	"	सं. १९४१
२९२	भूतबलिः काकबलिः	"	-	५	"	सं. १९९९ महा शुद्ध (१०)
२९३	भूतशुद्धिः भूतशुद्धिः प्राणः (११)	"	-	७४	"	सं. १७७४ प्रा.
२९४	भोजन विधिः निर्णयः	"	-	१५	"	सं. १९२१ वर्षे (१२)
२९५	भौम-मंगल विधानं पूजनं (१३)	"	-	५०	"	सं. १८०७ आषाढ कृष्ण
२९६	मंगल विधानं पूजनादि	"	-	२५	"	" [३०] गुरौ
२९७	मठ स्नायः	" श्री शंकराचार्याः	-	४	"	सं. १९१८ मिश्रानंद महाचारी
२९८	मठ कुंडलिनिः	" विठ्ठलवीक्षित	-	ओळीयुं	"	सं. १९३४ प्रा.

(१) वर्षे वैशाख शुद्ध ७ भौमे लिखितं हरे हरिराम (२) माघ शुद्ध १० सुगन्धरे गोंडल मध्ये गोपालजी (३) श्री शंकर महात्मज नीलकण्ठेन कृत भास्करे प्रतिष्ठा मयूखोऽष्टमः (४) माघे कृष्णे १३ रात्री (५) पौष वद्यो १३ शुभे भाद्रपद माघेदार अश्वमेधः तेन कात्यायनं उग्रहस्तद्वयं लिखितं (६) वर्षे कार्तिक विद १ गुरौ लि. हरे केवलाम् कचराणीकृत (७) वैजलं मं चनाचार्यकृतः शिवायसुरिः ॥ प्रयोग पद्धति पद्धतिः..... १ ॥ (८) वाचस्पति कृतः वैजलं विधानं प्रयोगः । (९) प्रयागपुत्रः केनेरदेवतस्तुताः रामचन्द्रसेन रचितः (१०) शुद्ध ८ गुरौ लि हरे कचराचार्य केवलाम् (११) प्राणप्रतिष्ठा अश्वमेधादि विहितपुस्तक १० (१२) वर्षे शंकराचार्य मध्ये रावळ जेठाराम रघुनाथ (१३) पूजनं शांतिः रत्न माधवो इत्यादि पुस्तक १०

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્તલિખિત ગ્રંથ મંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : Karmakanda 28

વિષય: કર્મકાંડ : ૨૮ ।

ક્રમાંક Serial No.	ગ્રંથ નામ Name of the work (Title)	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પૃષ્ઠાણિ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક મિતિ Scribe & Date
૨૯૯	મંદપ પ્રતિષ્ઠા પૂજન	"	-	૧	દેવનાગરી સંસ્કૃત	સં. ૧૮૭૭ પ્રા.
૩૦૦	મંદપ યંત્રાણિ	"	-	૧૦	"	સં. ૧૮૨૨ પ્રા.
૩૦૧	મંદલ પૂજા	"	-	૬	"	સં. ૧૭૧૪ પ્રા.
૩૦૨	મધુપર્ક: પુસ્તક ૫	"	-	૩૫	"	સં. ૧૯૨૪ માષ શુ. ૧૧ શુક.
૩૦૩	મરણોત્તર વિધિ:	અપૂર્ણ	-	૧૦	"	સં. ૧૯૨૧ પ્રા.
૩૦૪	મહાકરૂ જપવિધિ શાસ્ત્રાર્થી	" [શિવકૃત્રીય હોમ:	-	૧૬	"	સં. ૧૯૨૧ પ્રા.
૩૦૫	મહાકરૂ પદ્ધતિ:	સંપૂર્ણ લેખિત (1)	-	૨૫	"	સં. ૧૮૫૬
૩૦૬	"	" મદ રામેશ્વર શુભ	-	૪૦	"	સં. ૧૯૦૭ કા.શુ. ૧૧ ગુરો.
૩૦૭	મહાકરૂ હોમ:	" [નારાયણકૃત	-	૭	"	સં. ૧૮૧૯ આષાઢ શુ. ૭ સોમે
૩૦૮	મહાલય આદં	"	-	૨૭	"	સં. ૧૭૫૧ વર્ષ (2)
૩૦૯	મહાલક્ષ્મી યંત્ર	"	-	૧	"	સં. ૧૯૨૭
૩૧૦	મહિપદાન વિધિ:	"	-	૨	"	સં. ૧૯૦૪
૩૧૧	માતૃકા ન્યાસ સ્થાપન પૂજન	"	-	૬	"	સં. ૧૮૮૦ માષ શુ. (3)
૩૧૨	"	"	-	બોલીયુ	"	સં. ૧૯૧૪ પ્રા.
૩૧૩	માતૃપોષથી પિંડદાન વિશેષ:	સંપૂર્ણ	-	૨	"	સંવત ૧૯૪૫
૩૧૪	માર્કંડેયોદિનચરિત્રજીવીનાં પૂજા	"	-	૧૧	"	સં. ૧૮૭૨ પ્રા.
૩૧૫	માર્કંડેય પૂજા તૈત્તિરીયાણાં	" પ્રતિવર્ષ જન્મદિન કર્તવ્ય	-	૫	"	સં. ૧૮૫૬ના માગશિર શુ. (4)
૩૧૬	માલાપૂજન સંસ્કાર:	"	-	૨	"	સં. ૧૯૨૬
૩૧૭	મિત્રવિદ્યાવિદિ: શ્રી રામભિન્નાયુ	" [કામસ્ય	-	૪	"	સં. ૧૭૮૨ દવે વક્ર ઠંડુત મુખથી
૩૧૮	મુદ્રાલક્ષણ	"	-	૨	"	સં. ૧૯૨૧
૩૧૯	મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા પૂજા	"	-	૬	"	સં. ૧૮૬૪
૩૨૦	મૂલવિધાન મૂલનશ્ચે જાતાનાં	" [શિવકૃત	-	૧ બોલીયુ	"	સં. ૧૮૬૨
૩૨૧	મૃત્યુંજય જપવિધિ:	"	-	૩	"	સં. ૧૮૦૧ના વર્ષે શાકે (6)
૩૨૨	મૈત્રાવરુણ પ્રયોગ: પશુવંશ	"	-	૭	"	સં. ૧૭૮૨ શાકે (6)
૩૨૩	મૌંજી પદ્ધતિ:	"	-	૨૬	"	સં. ૧૯૧૩ પ્રા.
૩૨૪	યજુર્વેદીયેદિ:	"	-	૧૧	"	સં. ૧૯૫૫ વર્ષે માષ (7)
૩૨૫	યંત્રાણિ સંસ્કાર:	"	-	૧૦	"	સં. ૧૮૬૯ પ્રા.
૩૨૬	યમલ જનનશાંતિ: મૂલશાંતિ:	" કાસ્યાયન:	-	૫	"	સં. ૧૮૭૧ પ્રા.
૩૨૭	યજ્ઞોપવીત વિધિ:	"	-	૭	"	સં. ૧૮૫૦ના વૈશાખ શરિ (8)
૩૨૮	યાત્રાનુક્રમ: ૧૪ યાત્રા	"	-	૩	"	સં. ૧૮૫૧
૩૨૯	સ્થાપન પ્રયોગ:	"	-	બોલીયુ	"	સં. ૧૯૧૧ પ્રા.
૩૩૦	રઘવતોષાપન	" સ્કંદ	-	૪	"	સં. ૧૯૧૧ પૌષ (9)
૩૩૧	રક્ષાકરં આદિકં ૧, રક્ષોદાન ૨	" વલ્લભ:	-	૭	"	સં. ૧૯૧૬ પ્રા.
૩૩૨	રાજ્યાભિષેક પદ્ધતિ:	"	-	બોલીયુ	"	સં. ૧૯૪૬
૩૩૩	"	"	-	૨૫	"	સં. ૧૯૨૬
૩૩૪	રામનવમી વ્રતોષાપન	"	-	બોલીયુ	"	સં. ૧૯૨૧
૩૩૫	"	" [પરમ રહસ્યે	-	"	"	સં. ૧૯૧૫
૩૩૬	રામમાનસ પૂજા	" અગસ્યસંહિતાથી	-	૪	"	સં. ૧૭૫૧ શાકે ૧૯૧૫ કાર્તિક

(1) લેખિત અન્યેન વિધનાયત્તમેન રચિત (2) વર્ષે આવળ વદિ ૫. રવૌ લિખિત બીજાપુત્ર સિવસ્તેન (3) શુક. ૧૦. સોમે દવે હરિકૃષ્ણેન શામાત્મજેન માર્ગે મદનજી તથા પ્રેમાનંદ પઠનાય (4) શુક. ૨. કલિતમ અલ્પ મુખ્ય (5) શાકે ૧૯૧૬ ઉષ્ણ કૃષ્ણ ૧૧ શુ. મદ કૃષ્ણજીવુત રામેશ્વરે (6) શાકે ૧૯૫૨ પૌષ શુક. ૧૧ ચંદ્રાસરે લિખિત (7) સરસ્વતીપુપામ્ના અંશુ મટેન (8) માષ માસે કૃષ્ણપક્ષે દશમ્યાં શની પેલવદ વાસવ્ય સદીવ્ય ક્ષાત્રીય વ્યાસ થે મેગાસ્મનેન (9) વદિ ૧૦ રવૌ લિ. વાસ રતનબીજુત દવેજીવુત પીઠાશુત જૂઝા (9) પૌષ કૃ. ૨ રવૌ શ્રી કાશ્યાં મેમસન ઉપાધ્યાયેન ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र.

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL (SAURASHTRA) INDIA.

Subject : Karmakanda 28

विषय: कर्मकांड : २८ ।

क्रमिक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टोका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपि: Language & Script	लेखक मिति Scribe & Date
३३७	रामपूजा	„ नारद पंचरात्रे	-	१०	देवनागरी	सं. १७२१
३३८	रुद्रजप फलं	„	-	ओळीयुं	„	सं. १९३१
३३९	रुद्रार्चन पद्धति: महासुवार्चन पद्धति:	„ नारायण	-	२५	„	सं. १९१३ शाके (1)
३४०	„ पुस्तकं १	„ परशुराम	-	२९	„	सं. १८१५ प्रा.
३४१	रुद्रयंत्र	„	-	४	„	सं. १७१४
३४२	रुद्रपूजा पुस्तकं २	„	-	१०	„	सं. १७४३ भास्विन कृष्ण १ मोमे
३४३	लक्ष्मण पद्धति:	„ मात्से	-	१६	„	सं. १८३१ प्रा.
३४४	लक्ष्मीनारायण पूजा	„	-	ओळीयुं	„	सं. १९१४
३४५	त्रिग प्रतियुगा विधि:	„	-	१५	„	सं. १८२६
३४६	लेखाभिचारिकं कर्म राजचिन्हः	„ [संज्ञ चामरादीनां पूजा -	-	ओळीयुं	„	सं. १९४८
३४७	वटसावित्री पूजा व्रतविधि:	„	-	„	„	सं. १९३६ प्रा.
३४८	„	„	-	„	„	सं. १९४१
३४९	„	„ कथा, स्कंदे	-	„	„	सं. १८२३
३५०	वैष्णवमिथेय विधि:	„	-	„	„	सं. १८३४ वर्षे लि.
३५१	वक्रवर्ण आर्द्र	संपूर्ण	-	१	„	सं. १८८२
३५२	वर्षापन विधि:	„	-	२	„	सं. १८७५
३५३	वाग्दान प्रयोग:	„	-	ओळीयुं	„	संवत् १८६८
३५४	वाग्पेयहोत्र प्रयोग:	„	-	१३	„	सं. १८५२ क्षयनाम (2)
३५५	वाग्कूपनडागादीनां प्रतिष्ठा	„	-	४	„	संवत् १८६९ प्रायः
३५६	„	„	-	ओळीयुं	„	संवत् १८७२
३५७	वासिष्ठो-नवग्रह मन्त्रः	„	-	१५	„	सं. १९१५ना अषाढ वद (3)
३५८	वास्तु मंडलानि	„	-	१०	„	संवत् १९४२ प्रा. [संज्ञ चतुर्थी
३५९	वास्तु पद्धति:	„	-	६	„	सं. १७९० शाके १९५५वाषः
३६०	„	„	-	८	„	सं. १८१९ ज्येष्ठ शुद्ध १ शनी
३६१	„	„	-	१२	„	सं. १८९० प्रा.
३६२	„	„	-	१३	„	सं. १९१३ना शाके (4)
३६३	„	„	-	१६	„	सं. १९२७ना अषाढ वदि (5)
३६४	„	„	-	२४	„	सं. १८९९ प्रा.
३६५	„	„	-	२०	„	सं. १९९९ प्रा.
३६६	„ यंत्र च	„	-	९	„	सं. १७६५ प्रा.
३६७	विच्छिन्नापासनस्य पुनः संधानं	„	-	५	„	सं. १८७१ प्रा.
३६८	विनायकाला शास्त्र (6)	„	-	३५३	„	सं. १८८९ना वर्षे (7)
३६९	विनायक शांति:	„	-	११	„	सं. १८४८
३७०	„	„	-	ओळीयुं	„	सं. १८५६
३७१	विवाह पद्धति: विवाह कर्म	„	-	२३	„	सं. १९९८ समये (8)

(1) शाके १७७८ना भावण शुद्ध ५ मोमे अर्वाती नगरे । (2) क्षयनाम: संवत्सरे भावण शुद्धाष्टमी शुक्लपक्षे
अष्टम्यक्षरेपञ्चमक नारायण वीक्षितस्व (3) वद ५ शुक्लपक्षे लिखितं टांकारा मध्ये रावल ज्येष्ठाराम रगतान पठकार्यं शुभ
वेणीराम तथा प्राणशंकर तथा गोरीशंकर (4) शाके १७७९ना पौष कृष्ण १४ शनी (5) वदि २ चैत्र सरपंचपुरे मह
भारगजोत्तुत गोरीशंकरेण (6) शास्त्र अनुक्रमणिका संहिता १४० विधानानि इतिथी वसिष्ठ मह विरचिता विधानमाला (7) वर्षे
भास्विनमासे कृष्ण पक्षे २ श्री शुक्लपक्षे लिखितं विरिनारायण शास्त्रीय अष्ट षोडशत मन्त्रकेसरेण । ब्रह्म विषयोऽपि चन्दनगिरिस्थितः
मात्रं पुरं देव्याः प्राक् शुभनेहरं वसुमती तीरे प्रद्वारं महत् ॥ तत्रायो त्रिकुण्डलमथो गुणनिधिः श्रीमान् वसिष्ठो विप्रबलं शास्त्रविद्
वृणाशुपद्धति संधाय चित्ते निजे ॥१॥ (8) समये भास्विन कृष्णे वसुमती शनिवारं दिनमभिरासेन लिखितं

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्तलिखितग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र

SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: Karmakanda 28

विषय : कर्मकांडः । २८

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता Author	टीका	पत्राणि	भाषा- लिपिः	लेखक-मितिः
Serial No.	Name of the work (Title)	Complete or Incomplete	Commentary	No. of Leaves	Language & Script	Scribe & Date
३७२	विवाह पद्धतिः	"	-	१४	देवनागरी संस्कृत	सं. १७३५ प्रा.
३७३	" विवाहप योगः	"	-	३८	"	सं. १३२ कार्तिक (१)
३७४	"	"	-	१२	"	सं. १८१२ अश्विन शुक्ल (२)
३७५	"	"	-	७	"	सं. १८१९ चैत्र शुद्ध (३)
३७६	" पुस्तक ४	"	-	१०	"	सं. १८५० प्रा.
३७७	विवाह मंत्राक्षताः तैत्तिरीयानां	"	-	१८	"	सं. १४९१ मार्गशीर्ष वद १० रोमे
३७८	विवाहप्रचार चंद्रोदयः	"	-	११	"	सं. १७२२
३७९	विश्वप्रकाश पद्धतिः	"	-	१२८	"	सं. १९४८ प्रा.
३८०	विश्वप्रकाश शास्त्रं (४)	" विश्वनाथकृत	-	२५९	"	सं. १८९० प्रा. काश्या (५)
३८१	विष्णु तर्पण पुजा	"	-	१५	"	सं. १९५० ना शाके (६)
३८२	विष्णु पूजा पद्धतिः पुस्तक ५	अपूर्ण	-	१६	"	सं. १८३१ प्रा.
३८३	विष्णुयाम पद्धतिः	"	-	२७	"	सं. १९३९ प्रा.
३८४	" नारदपराशरयोः	"	-	१४	"	सं. १८४८ प्रा.
३८५	वृद्धिशास्त्रं आश्विनिक पुस्तक ५	"	-	८	"	सं. १८०४ वर्षे माहा शुदी ४
३८६	वृद्धिस्वस्तिवाचनं	"	-	१८	"	सं. १८६० वर्षे (७)
३८७	"	"	-	११	"	सं. १९१९ ना कार्तिक वद (८)
३८८	वृषोत्सर्गः पुस्तक १	अपूर्ण	-	१८	"	सं. १८२९ प्रा.
३८९	वेदाङ्क रक्षणम्	अपूर्ण	-	२	"	सं. १८४७ प्रा.
३९०	वैतरणी व्रतोद्यापनं	"	-	ओळीधु	"	सं. १८७८
३९१	वैश्वदेवः पुस्तक १४	"	-	५०	"	सं. १८५१ मङ्गल अमास मंगळ
३९२	व्यासपूजा पद्धतिः	"	-	५	"	सं. १९१८ प्रा.
३९३	व्रतकाण्डः तृतीयः	" कमलाकरभट्टन तर्कतः-	-	८४	"	सं. १७६१ प्रा.
३९४	व्रतकाण्डः	अपूर्ण	-	६	"	सं. १९३९ प्रा.
३९५	व्रतकाण्डः	अपूर्ण	-	८	"	सं. १८३० प्रा.
३९६	व्रतोद्यापन विधिः	"	-	४	"	सं. १८३९ प्रा.
३९७	व्रतचंडी-सहस्रचंडी विधानं (९)	" स्कन्दे २	-	३	"	सं. १८३१ प्रा.
३९८	शनिव्रतं	" शिलाद्वयगणने	-	४	"	सं. १८२९ वर्षे शाके (१०)
३९९	शमीपूजनं आयुषपूजनं विजयादशमीदिने,	"	-	५	"	सं. १८९८ ना प्रथम चैत्र शुद्ध (११)
४००	" पुस्तक १	"	-	१५	"	सं. १८४८ व्यास वासुदेव
४०१	शान्तिराम पद्धतिः	" वसिष्ठोक्त	-	३४	"	सं. १८४१ व्यास मार्गशीर्ष शुक्लवासुदेव
४०२	" पुस्तक ५	"	-	१९	"	सं. १८१९ ना वर्षे (१२)

(१) कार्तिक शुक्ल ५ विवाहसरे लिखितं ब्राह्मण अमरचंजी बंसीलाल सोका सवाईजयपुर मध्ये (२) शुक्ल १ भौमे लिखितं उदीच्य ज्ञातीय दशे श्री ५ बलभजी तत्पुत्र सामजीयेन (३) शुद्ध ११ शुक्ल लिखितं व्यास शिवरामपुत्र व्यास विष्णुजीपुत्र वीरेश्वरेणभाई वासुदेव पठनार्थं (४) शाक पराशरयोः नारायणपुत्र त्रिविक्रमपुत्र पुरुषोत्तमपुत्र विश्वनाथः तन्माता चौडका तन्म भार्या पार्वती तत्पुत्रः नारायणः काशीनाथश्च विश्वनाथ जन्म संवत् १५३४ शुचि मासे सित दशमी भार्या अत्र स्वकीया जन्मकुंडली श्लोकः (५) कस्यां विश्वप्रकाशस्या विश्वनाथेन पद्धतिः ॥ आश्विपुस्तम्बमतं सूत्रमार्गद्विरव्यते ॥१॥ (६) शाके १८३१ ना वैशाख १३ शुक्लसरे (७) वर्षे चैत्र शुद्ध १ भौमे ले जाशी लालजी गोंडल मध्ये (८) वद ४ सोमे लिखितं व्यास गौवर्धन वनमाळी गोंडल मध्ये (९) विधानं व्रतचंडी विधान ग्रन्थास्तत्र शास्त्रं विभागे सन्ति (१०) शाके १९८७ माघ मासे शुक्लपक्षे ८ शनी कृष्णार्त्तमज मयाशंकरेणलेखि (११) शुद्ध १० चैत्रे । लि मठ अगुजीवन श्री सरदार वास्तव पठनाथ मोरारजी तथा देवराज (१२) वर्षे पुरुषोत्तम मासे कृष्णपक्षे ९ शुक्ल व्यास भूषेन ।

श्री भुवनेश्वरी पीठ, हस्त लिखित ग्रन्थ भंडार, गोंडल - सौराष्ट्र
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.
Subject : KARMAKANDA 28 विषय : कर्मकांडः २८।

क्रमांक Serial No.	ग्रन्थ नाम Name of the work (Title)	कर्ता Author संपूर्ण-अपूर्ण Complete or Incomplete	टीका Commentary	पत्राणि No. of Leaves	भाषा- लिपिः Language & Script	लेखक-मितिः Scribe & Date
४०३	शांति मयूखः भगवत (1)	„ भट नीलकण्ठः	-	१८३	„ सं. १८८७ मिति (2)	
४०४	शारदा पूजनं लक्ष्मी पूजनं पुस्तक ४	„	-	१५	„ सं. १८४१	
४०५	शिखपाधिष्ठातृदेवपूजनं	„	-	३	„ सं. १९२८ना फारुण शुक्र (3)	
४०६	शिवपञ्चाक्षर होमाधिधिः	अपूर्ण	-	३	„ सं. १९३१	
४०७	शिवपूजा-उद्यापनं शिव (4)	संपूर्ण	-	२५	„ सं. १८३४	
४०८	शिवप्रतिष्ठा पद्धतिः	„	-	भोळीयु	„ सं. १९३४	
४०९	शिवरात्रि पूजनं	„	-	१५	„ सं. १८३२गाववे (5)	
४१०	„ व्रतेशोपानं पुस्तक २	„	-	भोळीयु	„ सं. १९३७ [दामोदरसुतहरजीवन]	
४११	शिवाचन चंद्रिका	अपूर्ण	-१९८त७३७	-	„ सं. १८८९ पोष सुद १२ लि *	
४१२	शिवाह्निकं	संपूर्ण	-	९	„ सं. १९८९ कार्तिकरविविषये (6)	
४१३	शुद्धाचारः शिव तर्पणं	„	-	१	„ सं. श्रवण वदि ११ मी	
४१४	शुद्धाचारं पुस्तक २	संपूर्ण	-	१५	„ सं. १८९३ कागणवद-धानौ	
४१५	शुद्धस्वस्ति घाचनं पुस्तक ३	„	-	५	„ सं. १८७५ कागण सुद ११*	
४१६	शुद्धस्नान विधिः	„ कमलकरः	-	३	„ सं. १८८१ प्रा. [भट अणुमाना]	
४१७	शुद्धाणां प्रस्थापन	„	-	५	„ सं. १८८४ प्रा.	
४१८	आद्य कारिकानुक्रमः पुस्तक २	„ भटजीदीक्षितः	-	३	„ सं. १९१९ प्रा.	
४१९	आद्य मंत्र व्याख्या	„ हलायुधः	-	११	„ सं. १८०५ प्रा.	
४२०	आद्येमांसदानादानविचारः उत्तमाक्षरं	„ नारायणभट्टः	-	१०	„ सं. १९४४ प्रा.	
४२१	आद्यविधिः लक्ष्मण (7)	„ कात्यायनः	-	९	„ सं. १९३७ प्रा.	
४२२	आद्य पद्धतिः भट नारायण (8)	„ भटः रघुनाथः मंड	-	३१	„ सं. १९४१ प्रा.	
४२३	„ वशाह्वाद्य मारभ्यवर्ष आद्यः, [माधवाभट्टः]	„	-	भोळीयु	„ सं. १९४०ना फारुणवद-चंद्र	
४२४	आवणी प्रयोगः	„ संयत पुस्तक ८	-	५३	„ सं. १८९९ मिति वैशाखवद-श्रव	
४२५	„ इति आवणी उत्सव नैपाकर्म, [अपुस्तक ३]	„	-	४५	„ सं. १९०१ मिति (9)	
४२६	श्रौत सागरः चातुर्मास्य प्रयोगः	„	-	३३	„ सं. १९९१ प्रा.	
४२७	चष्टिपूजनं तैत्तिरीयाणां पुस्तक ३	„	-	१३	„ सं. १९०२ माघ शोष सुद १ शीमे	
४२८	पोडशोपचार पद्धत्याद्यः	„	-	४	„ सं. १८७३	
४२९	पोडान्यासः शिवार्चन कीर्तिकावां	„	-	१२	„ सं. १९५५ डा.	
४३०	संकल्पः पुस्तक २	„	-	५	„ सं. १८९८ना माघ वद (10)	
४३१	संकल्प चातुर्थी व्रत संकष्ट हरणी, [चतुर्थी व्रत]	„	-	९	„ सं. १८०८ प्रा.	
४३२	संक्रांतिपञ्चपूजादानादीनिकथानं	„ हमादौस्कादे	-	३	„ सं. १८७३ प्रा.	
४३३	संतान गोपाल विधिः	„	-	५	„ सं. १८३२	
४३४	संध्या तर्पण वैश्वदेवादि+	„ [+ निखलम् पुस्तक १९-	-	७५	„ सं. १९७१ रे राववेपजी का. गोंडल	
४३५	संध्या तैत्तिरीयाणां	„	-	१६	„ सं. १९४३ प्रा.	
४३६	संध्या रत्न प्रदीपः किरण ३३	„ आशाधर भट्टः सभ्या	-	२८	„ सं. १८५१ प्रा.	
४३७	संध्या	„ [३ प्रतिपादन शास्त्राः-	-	२४	„ सं. १८९९ मिति कार्तिक शुक्ल ३ भद	

(1) भगवत भास्करान्तर्गतः। ग्रन्थप्र ३५ • लक्ष्मणैः शतमुल्लेखैः होमादि १५ प्रयोगः शांतिकर्मणां। अनु-मणिका। पितृ मह पुत्र काश्यप विमांड ६-कृष्णशुभ श गितद्वे से कर्णस्तस्य विशोकदेव-अजातशत्रुः ख. वैराटराजः श्रीहराजः-मन्युदेवः चंद्रपालः शिवगणः -रोलिचंद्र कर्मसेन नरहरिः-रामचंद्रः-वशोदेवः-साराचंद्रः-चक्रसेनः-जबप्रहः-साहिदेवः-तपुजो भगवतदेवः भगवतदेवनाम्नः दाक्षिणात्य भट्टा नीलकण्ठः भगवत भास्करग्रन्थपरचयत् तवर्तमानं शांति मयूखः (2) मिति फारुण शुक्र अमावास्या शनिवारे इति श्री विश्वामित्र वंशावत समहाराजाधिराज न पुजितवरणः भट्ट शांकरात्मज भट्ट नीलकण्ठः भगवतभास्कर शांति मयूखः। (3) शुक्र ४ शीमे दिने लि. गोपलजी वनमाली (4) शिव मन ५ पूजा। शिव पोडशोपचार पूजा। पुस्तक ११ (5) वषे आश्विने अष्टि चतुर्थ्यां रात्रिवासे लिखित आचार्य मकनजी लालजी (6) विवे पक्षे नवम्यां भगुगवरे अपाहणे भीमवते पनमक दामोदरतनय शिवरात्रि लिखित। (7) लक्ष्मणशोपिपालस्य धर्मप्यक्षो हलायुधः ॥ निखिलभाट्ट मन्त्रागो व्याख्या व्यापितवानिमां ॥ (8) भट्ट नारायण नरवा पितरौ दुदिराधयोः। रघुनाथः वविचार्य रजुते आद्यपद्धति ॥ १॥ (9) मिति मागसि रूरी ६ राववार वद पुस्तक लिखी सनाढ्य ब्राह्मण छोतरमेज श्री गोकुल। (10) वद १० भीम वषे गोपालजी विद्यमान पीतांबर जामकठोरणा

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ, હસ્ત લિખિત ગ્રંથ ભંડાર, ગોંડલ - સૌરાષ્ટ્ર.
SHRI BHUVANESHWARI PITH, Mss. GRANTH BHANDAR, GONDAL, (SAURASHTRA) INDIA.

Subject: KARMAKANDA 28

વિષય : કર્મકાંડ : ૨૮ ।

ક્રમાંક Serial No.	ગ્રંથ નામ Name of the work Title	કર્તા Author સંપૂર્ણ-અસંપૂર્ણ Complete or Incomplete	ટીકા Commentary	પત્રાણિ No. of Leaves	ભાષા- લિપિ: Language & Script	લેખક-મિતિ: Scribe & Date
૪૩૮	સંખ્યા ઉત્તમશ્લોક	"	-	૧૬	"	સં. ૧૮૮૦ના અષાઢ શુદ્ધ (1)
૪૩૯	" કૃષ્ણ દેવાયનાંકા	"	-	૮	"	સં. ૧૭૭૯ પ્રા.
૪૪૦	સંખ્યાસ પદ્ધતિ:	" શૌનક	-	૨૫	"	સં. ૧૮૪૬ના શાકે (2)
૪૪૧	" પુસ્તક ૫ સંખ્યાવિના=	" [=અશ્વકર્મ]	-	૧૬	"	સં. ૧૮૫૧ શાકે (3)
૪૪૨	સપિંચાસુ નિર્ણય:	"	-	૬	"	સં. ૧૯૨૨ વૈશાખ વસંત ૧૫
૪૪૩	સતમંડલ ચિત્રાણિ	"	-	૨	"	સં. ૧૮૨૫ પ્રા.
૪૪૪	સર્વ વલિ:	"	-	૨	"	સં. ૧૮૨૫ પ્રા.
૪૪૫	સર્વવતી પૂજા	" [શિવરામકૃતા	-	૬	"	સં. ૧૮૧૧ પ્રા [માધવજીસુતમસુદેવેન
૪૪૬	સર્વદેવ પ્રતિષ્ઠા	" વિશ્વામાત્રમજઃ	-	૯	"	સં. ૧૮૬૭ માધવજીમૈયાશ્રી
૪૪૭	સર્વદેવ પ્રતિષ્ઠા	અપૂર્ણ નીલકંઠ:	-	૧૧	"	દેવનાગરી સંસ્કૃત સંવત ૧૮૩૩
૪૪૮	સર્વદેવ પૂજા	સંપૂર્ણ મંત્રમહોદય	-	૧૮	"	સં. ૧૮૫૨
૪૪૯	સર્વભોગદ્ર દેવતા પ્રતિષ્ઠા:	" [-પુસ્તક ૨ મંડલ પૂજન	-	૧૧	"	સં. ૧૮૪૧
૪૫૦	સહગમન વિધિ: સતી હોનેકા	" [વિષ પુસ્તક	-	૨૭	"	સં. ૧૬૨૦ પ્રા.
૪૫૧	સામગ્રીસીનોધકમ' અર્ચનાપેક્ષિત,	"	-	ઓઢીયું	"	સં. ૧૮૩૦
૪૫૨	સૂર્યાધિવાન પૂજાવિધિ પુસ્તક,	" અ દિશ્યપુરા	-	૪૦	"	સં. ૧૮૬૪ પ્રા.
૪૫૩	સોમયુક્તા-અમાપૂજન =	" [=સોમરાહુ પૂજન	-	૨	"	સં. ૧૯૨૮ મીનાર્કતવિષ્ટેશ્વરિની
૪૫૪	સોમવાર વ્રતવિધિ: ઉચાપન	"	-	ઓઢીયું	"	સં. ૧૯૨૬
૪૫૫	સોમવાર સુંદરીવ્રતોચાપનવિધિ:	" [અન્નો દેહશુદ્ધિ પ્રાચરિત	-	૬	"	સં. ૧૮૬૧
૪૫૬	સ્થાનિક વિધાન નિત્યનૈમિત્તિક,	"	-	૨	"	સં. ૧૯૨૯
૪૫૭	સ્નાન પદ્ધતિ:	" કાશ્યાપન:	-	૧૨	"	સં. ૧૯૦૪ વર્ષે દેવમાસે સિદ્ધેશ્વરે
૪૫૮	સ્નાનવિધિ: મધ્ય દિનીશાલોચ:	" કેશવ:	-	૧૭	"	સં. ૧૮૦૨ પ્રા.
૪૫૯	સ્વસ્તિ વાકન પુણ્યપુસ્તક	"	-	૨૯	"	સં. ૧૮૫૦ વૈશાખ શુદ્ધ ૧૫
૪૬૦	હસ્તશ્રાદ્ધ	"	-	૧૨	"	સં. ૧૭૫૪
૪૬૧	"	"	-	૬	"	સં. ૧૮૬૧ માધવજી ૧૪ શકે
૪૬૨	હંસોપાસના	" પ. વ. ને. વિન્દ્યાચાર્ય:	-	૨	"	સં. ૧૮૫૮
૪૬૩	હરિતાલિકા વ્રત	"	-	૪	"	સં. ૧૯૨૭ માર્ગ
૪૬૪	હાથજોડય	"	-	૪	"	સં. ૧૯૨૦ કારતિક ૧૫ શુક્ર
૪૬૫	હવન પદ્ધતિ:	"	-	ઓઢીયું	"	સં. ૧૯૨૨ પ્રા.
૪૬૬	હિરણ્યશ્રાદ્ધ તેત્તિરીયાણાં	"	-	૧૬	"	સં. ૧૭૧૪ પ્રા.
૪૬૭	હુતાશની પૂજા માહારકય	"	-	૪	"	સં. ૧૮૨૧
૪૬૮	હેમાદ્રિ પ્રયોગ: પુસ્તક ૧	"	-	૫૦	"	સં. ૧૮૮૬ નામાવળશુદ્ધ ૧૫ મિ
૪૬૯	દોમવિધિ: સંકલ્પપ્રત્યાદિનિર્ણય	" [મંત્રા: નિત્યદોમ: પુ. ૭	-	૨૪	"	સં. ૧૮૫૭ આશાઢ શુદ્ધ ૧૫ શકે
૪૭૦	કેત્રપાલ પૂજન ચંદ્ર	" [કેત્રાલોચ વલિપૂજન	-	૫	"	સં. ૧૭૫૭

(1) શુદ્ધ ૧૫ મૌમવાસરે લિખિત આચાર્ય કાનજીકેન (2) શાકે ૧૭૧૧ પ્રથમ અષાઢમાસે શુદ્ધપક્ષે તિથી પૌર્ણમાસિ મૌમે ।
લિ મટ જીવન તથા મોહનજી તથા જગુ (3) શાકે ૧૭૧૬ પ્રથમ વૌ. શુ. ૧૪ ર. ૧

इति। उपराणां स्तोत्रादि विषयाणां तथा बंगभाषया लिप्या च कागदे लिखितानां तादृशेषु सुख्या-
आरया च भुक्तानां, बहोपरिलिखितानां तेलुगु, तामिळ, मलयाळ: दिवेदियम लिपिमतां
हस्तलिखितग्रन्थानां सूचिपत्रकं (केटलोग) चात्र न मुद्रितमनुकूलतया च परस्तात् कविसन्मुद्रणं
अविष्यति । इति दिव मंगल ।

निवेदक : अधिकारी

શ્રી ભુવનેશ્વરી પીઠ-ગોંડલ

Resolution of the Congress
adopted at its Nagpur
Session in the year 1920

"This Congress is of the opinion that, having regard to the wide prevalence and generally accepted utility of Ayurveda and Unani Systems of medicine in India, earnest and definite efforts should be made by the people of this Country to further popularise these systems by establishing schools, colleges and hospitals for instruction and treatment in accordance with the indigenous Systems."



श्री भुवनेश्वरी पीठ, गोंडल - सौराष्ट्र ।

SHRI BHUVANESHWARI PITH,
GONDAL - (Saurashtra.) INDIA

प्रमाणित किया गया गोंडल नं. २६/५५, २-५-६०.